सितारे-पेशानी दोष, खरीद समयकी शुभाशुभ चेष्टा, श्यामताल्भौंरी, अंगपहिचान, दंतविचार, युद्धसमय घोड़ा साजनेके शुभाशुभ लक्षण, वेगवर्ण सवारीवर्णन, कदम-वर्णन आदि सैकड़ों परमोपयोगी विषय वर्णित हैं।

द्वितीयकाण्डमें-घोड़ेकी सर्वोत्कृष्ट चिकित्सा (सर्वप्रकारके रोगों और आधि व्याधि आदि वहुतेरे दैहिक दैविक निमित्तोंकी) विस्तारपूर्वक विधि विधान सहि वर्णित है तथा अश्व ताजा, तैयार, तेज, चालाक बनानेके अनेकों चूर्ण औ मसाले हैं। सारांश यह कि घोड़े सम्बधी कोई वात शेष नहीं है।

इस प्रकार यह सर्वथा श्रेष्ठ और परम मान्य अपूर्व चमत्कारिक शि शालहोत्र ग्रंथ है, यदि निरंतराभ्यासी भारतवासी सुजन जन चाहेंगे तं वह इससे अनायास ही कुछ गुण ढंग सीखकर वड़े भारी द्रव्योपार्जनवं भागी बनेंगे। प्रायः लोगोंके व्यवहारमे घोड़ा आता है, उसमें भारतवार्स तो घोड़ेका रखना बड़ा हा उच्चतर समझते हैं। यह परम दुष्प्राप्य दुर्लभ ऋषि-मुनि-प्रोक्त ग्रन्थ (घोड़ेके क्रय, विक्रय और व्यवहारमे) आपहीके लिये परम हितैषी सत्यवक्ता साक्षी और सच्चा सहायकामित्र होकर प्राप्त हुआ है स्वल्प मूल्यहीमें कड़ा, दुस्साध्य, भयानक काम शालहोत्र पास रखनेसे सहज ही दमड़ियोंमें सिद्ध होता है।

इस ग्रन्थमें घोड़ोंके अनेक चित्र हैं। प्रति चित्रमें नम्बर पड़ा हुआ है, पाठक जब चाहेंगे सहजहीमें ग्रन्थके पृष्ठ लिखित घोड़ाके नम्बरसे ग्रन्थके आदिमे सम्मिलित चित्रदर्पणके चित्रोंमें उसी नम्बरका घोड़ा खोज लेंगे।

फलतः घोड़ोंके प्रेमी और व्यवसायियोंको यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है, क्योंकि जो हुनर सर्वस्व देकर भी न पावें वह इससे अनायास ही सीखेंगे। घोड़ा पास होते हुए मार्गमें चलते समय भी यह पुस्तक अवश्य पास होनी चाहिये। क्या राजा, क्या रंक, क्या धनी, क्या कंगाल, क्या साधु, क्या गृहस्थ यह पुस्तक सबको समान सुखदायी है। अन्ततः घोड़ेके दलाल, व्यवसायी, धनिक और जन साधारण सभी इस पुस्तकसे बहुत कुछ शिक्षा प्राप्त करेंगे और बड़ा लाभ उठावेंगे। शुभम्।

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

सुरंग गुंजारग घोड़ा नं०९ (दे०पृ० ३९)
श्वानसुरग घोड़ा नंबर १० (देखो पृष्ठ ३९)
तैलसुरग घोड़ा नबर ११ (देखो पृष्ठ ३९)
केहरी सुरंग घोड़ा नंबर १२ (देखो पृष्ठ३९)

शालहोत्रसंग्रहका विषयानुक्रमणिका ।

पिंगाक्ष ज्वर नं. ११०
(दे. पृ. १३१)
लबोदर ज्वर नं. १११
(दे. पृ १३१)

वायशूल घोड़ा नंबर ११६ (देखो पृष्ठ १६०)
दूसरा वायशूल घोड़ा नंबर ११७ (देखो पृष्ठ १६०)

इत्यनुक्रमणिका समाप्त ।

यज्ञशाला चित्र नंबर १ (देखो पृष्ठ ३)

आश्रम चित्र नंबर २ (देखो पृष्ठ ४)

श्यामकर्ण घोडा नंबर१ (देखो पृष्ठ ३)

द्वितीय श्यामकर्ण घोड़ा नंबर २ (देखो पृष्ठ ३८)
संदली रंग घोड़ा नंबर ३ (देखो पृष्ठ ३८)
प्रथम समुद्रंग घोड़ा नंबर ४ (देखो पृष्ठ ३८)
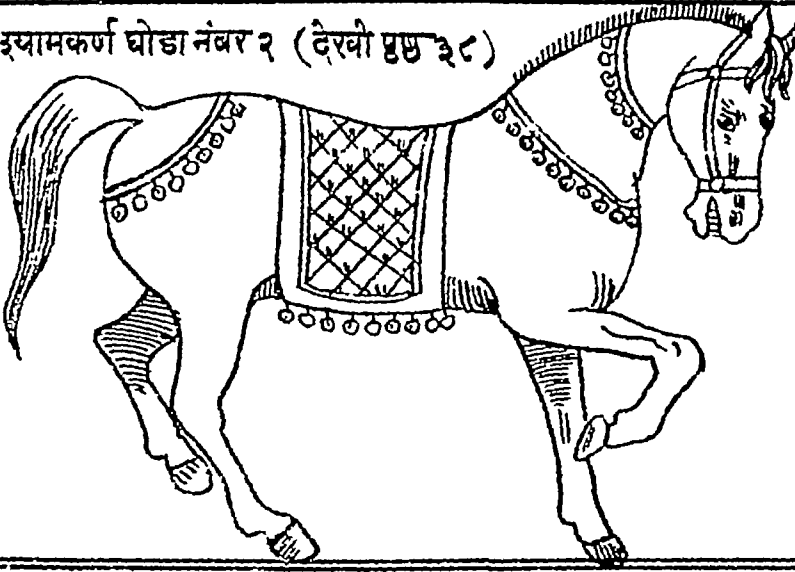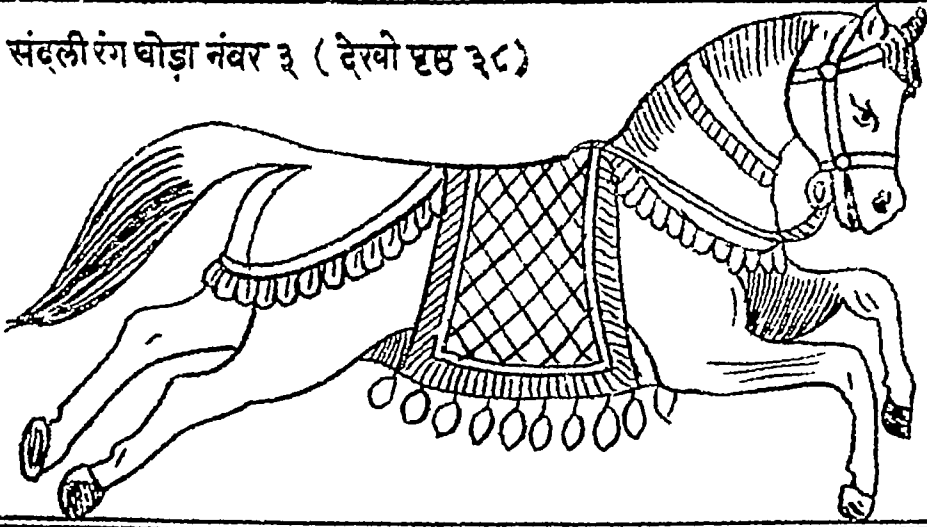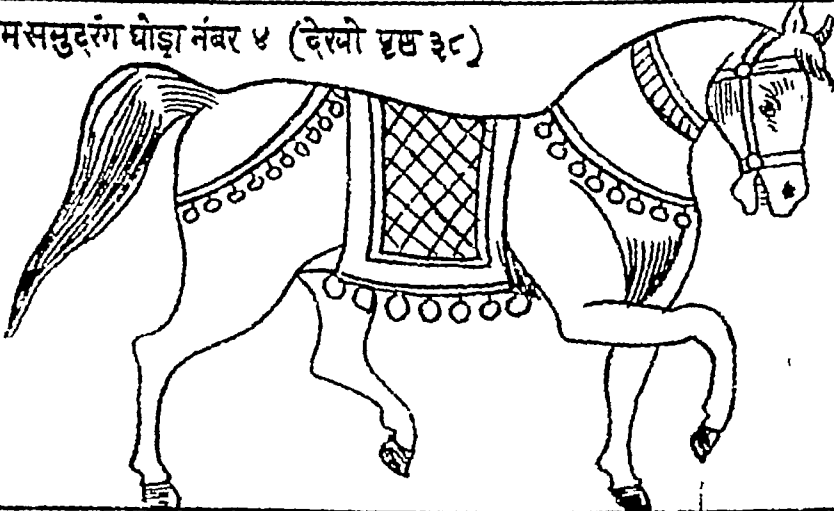
द्वितीय समुंदरंग घोड़ा नंबर ५ (देखोपृष्ठ ३१)

तृतीय समुंदरग घोड़ा नंबर ६ (दे॰ पृ॰ ३१)

शूररग अशुभ घोडा नंबर ७ (दे॰ पृ ३१)

सुरखारग शुभ घोडा नं॰ ८ (दे॰ पृ॰ ३१)

चिनीरग घोड़ा नंबर १३ (देखो पृष्ठ ४०)
चौघरग घोडा नं. १५ (दे. पृ. ४०)
संजाफरंग घोड़ा नंबर १४ (देखो पृष्ठ ४०)
नीलरग घोडा नंबर १६ (देखो पृष्ठ ४०)
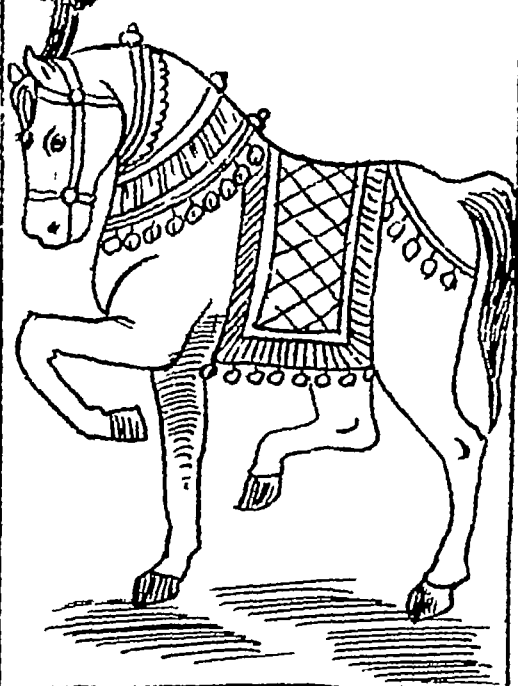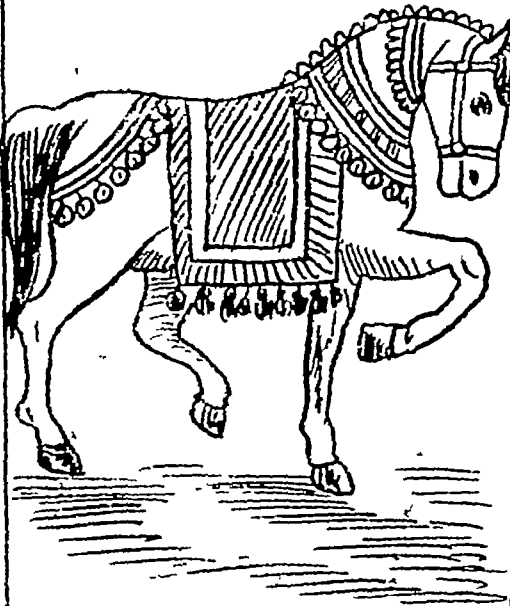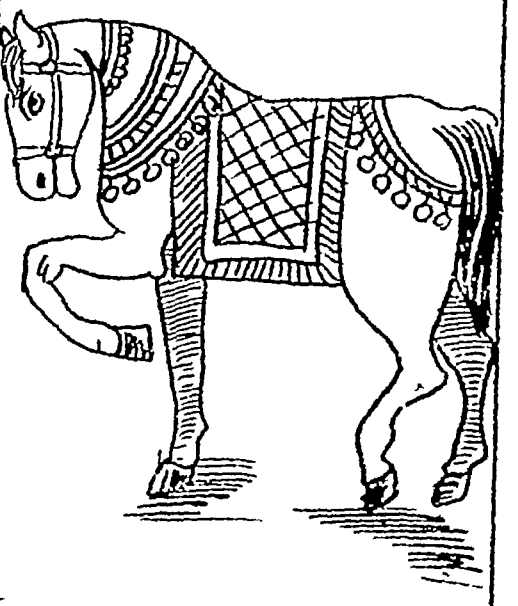
शालहोत्र संग्रह।
मकसी रंग घोड़ा नंबर १७ (देखो पृष्ठ ४०)
तांबड़ा रंग घोडा नंबर ११ (देखो पृष्ठ ४०)
हरदल रंग घोडा नंबर १८ (देखो पृष्ठ ४०)
अरुणरंग घोडा नंबर २० (देखो पृष्ठ ४०)
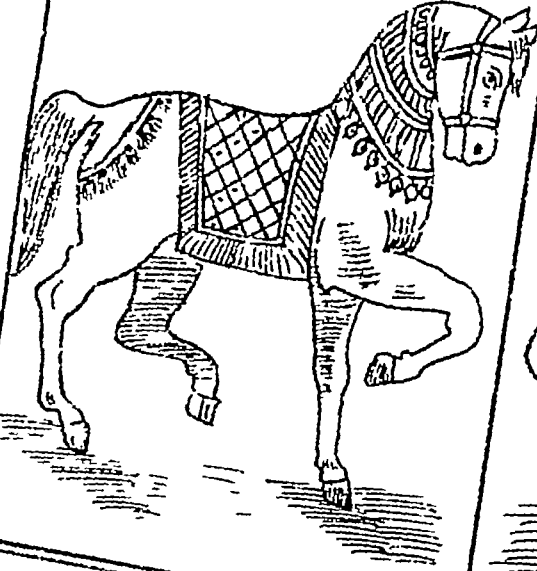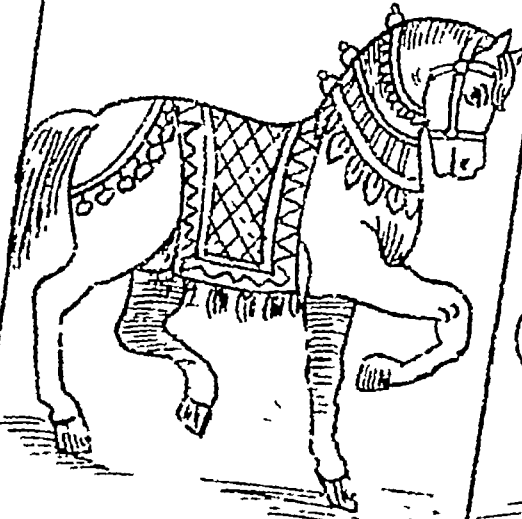
श्यान कर्ण घोड़ा नंबर २१ (दे॰ पृ॰ ४१)
मोमिया रंग घोडा नंबर २३ (दे॰ पृ॰ ४१)
अबलख रग घोड़ा नंबर २२ (दे॰ पृ॰ ४१)
मटिहा रंग घोड़ा नबर २४ (दे॰ पृ॰ ४१)
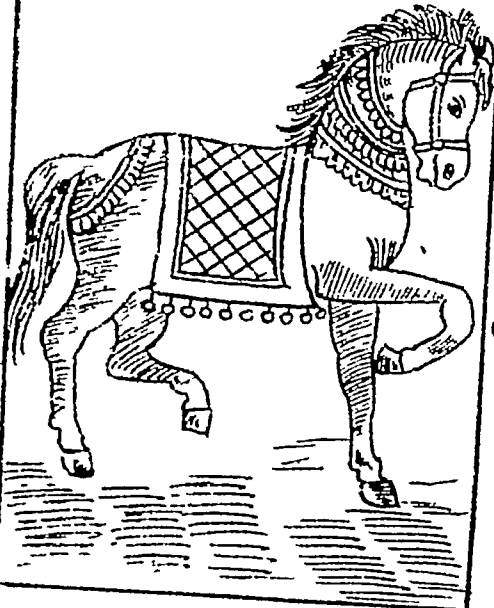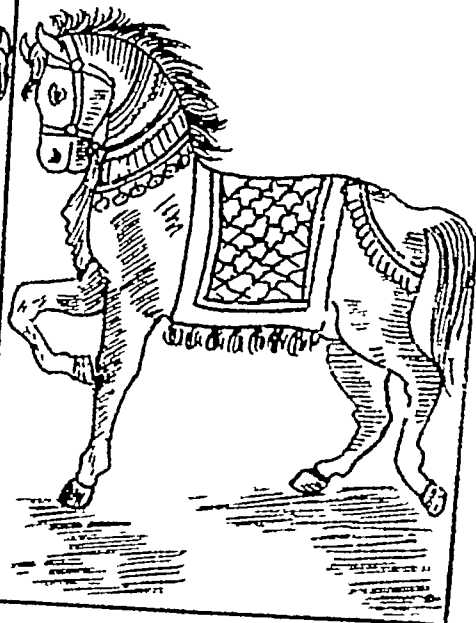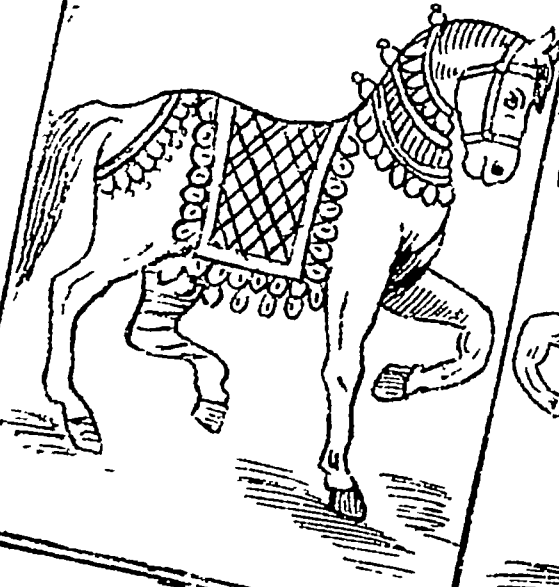
महुवा रंग घोडा नंबर २५ (दे पृ ४१)
फुलवारी रंग घोड़ा नंबर २७ (दे पृ ४१)
कुल्ला रंग घोडा नं० २६ (दे॰पृ॰४१)
कुमईत रंग घोड़ा नंबर २८ (दे॰पृ॰४२)
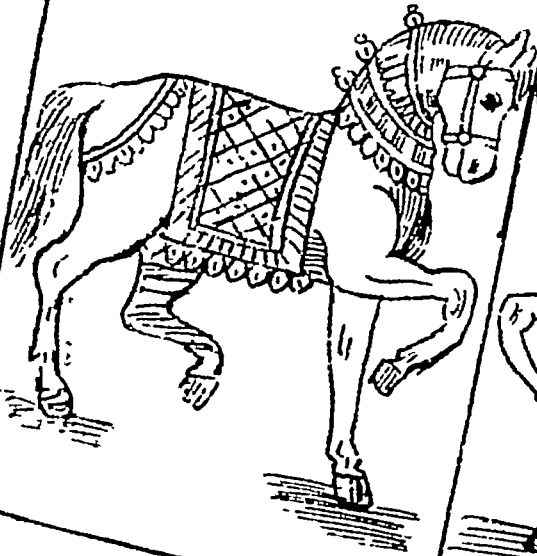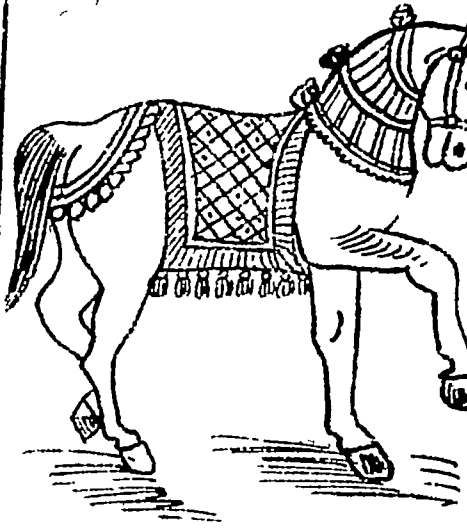
तैलिया कुंमयत रग घोड़ा नं.२९ (दे.पृ ४२)
मुश्की रंग घोडा नंबर ३१ (दे पृ ४२)
टोपरा रग घोड़ा नंबर ३० (दे.पृ ४२)
नोकरा रग घोडा नंबर ३२ (दे पृ ४२)
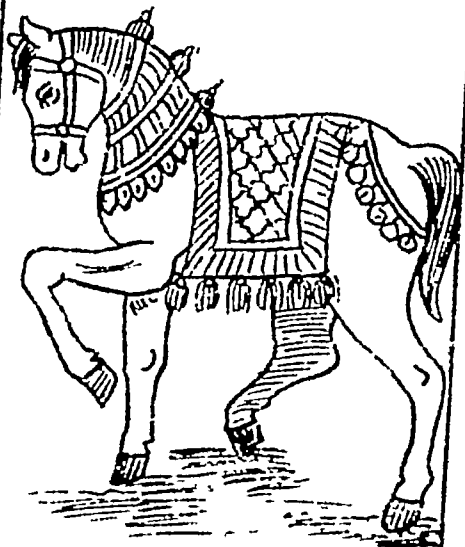
सिरगा रग घोड़ा नंबर ३३ (दे.पृ.४२)
सारो रग घोडा नंबर ३५ (दे.पृ.४२)
द्विविध सब्ज रग घोड़ा नं. ३४ (दे पृ ४२)
सबृजा घोडा नंबर ३६ (दे पृ. ४२)
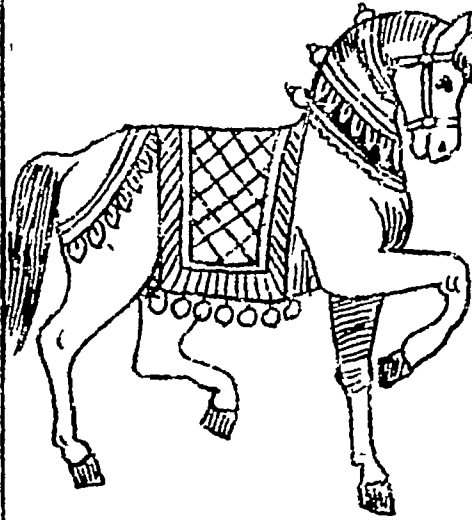
केहरी रंग घोड़ा नंबर ३७ (दे॰ पृ. ४४)
बदामी रंग घोड़ा नंबर ३९ (दे॰ पृ. ४४)
सिराजी रग घोड़ा नंबर ३८ (दे पृ. ४४)
बोस्ता रंग घोड़ा नंबर ४० (दे॰ पृ. ४४)
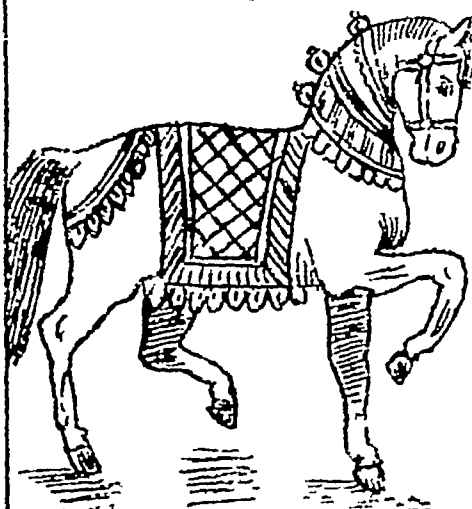
खजरेट रंग घोड़ा नंबर ४१ (दे॰ पृ॰ ४४)
विल्लोरे रंग घोड़ा नंबर ४३ (दे॰ पृ॰ ४५)
कागजी रंग घोड़ा नंबर ४२ (दे॰ पृ॰ ४५)
कपूरी रंग घोड़ा नंबर ४४ (दे॰ पृ॰ ४५)

तुसीरग घोड़ा नंबर ४५ (देखोपृष्ठ४५)
पिग रग घोड़ा नंबर ४७ (देखो पृष्ठ४५)
धूरियारंग घोड़ा नंबर ४६ (देखोपृष्ठ ४५)
कबूतरग घोड़ा नंबर ४८ (दे॰पृ॰४५)
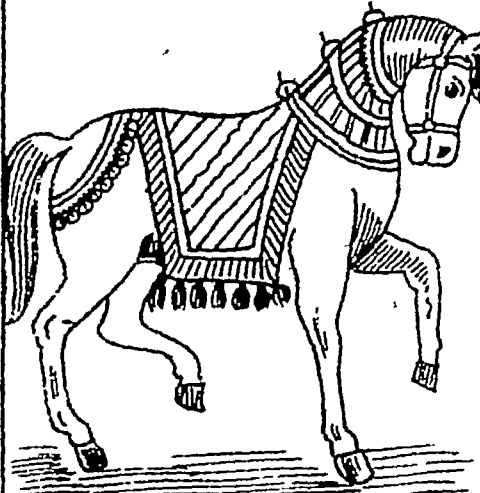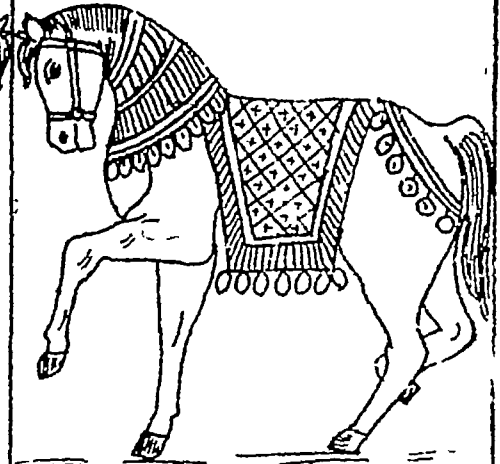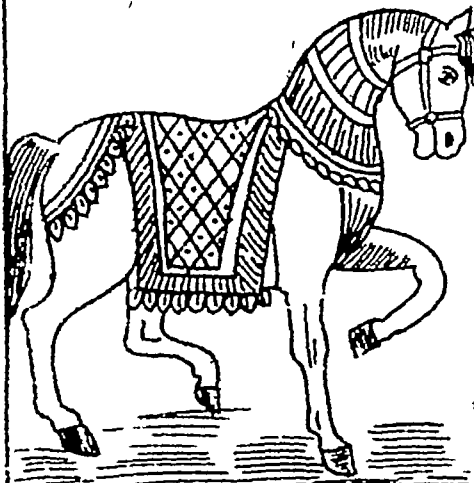
रमनी रंग घोड़ा नंबर ४९ (देखो पृष्ठ ४५)
चाल घार रंग घोड़ा नंबर ५१ (देखो पृष्ठ ४६)
कल्याणी रंग घोड़ा नंबर ५० (देखो पृष्ठ ४६)
चंमा रंग घोड़ा नंबर ५२ (देखो पृष्ठ ४६)
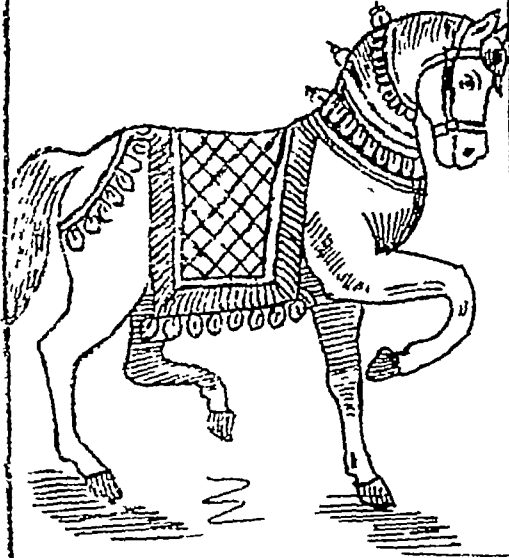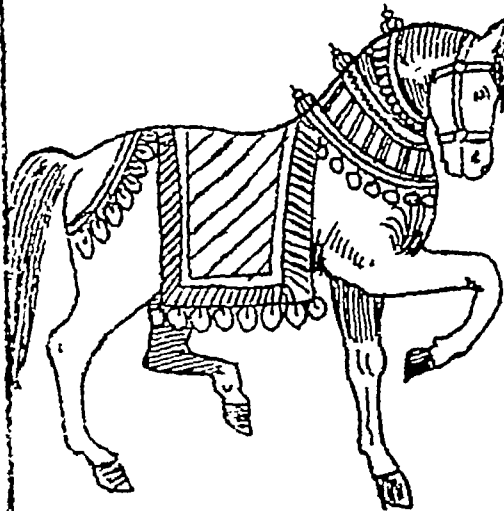
लखवी रंग घोड़ा नंबर ५३ (देखो पृष्ठ ४६)
घूसरा रंग घोड़ा नंबर ५४ (देखो पृष्ठ ४६)
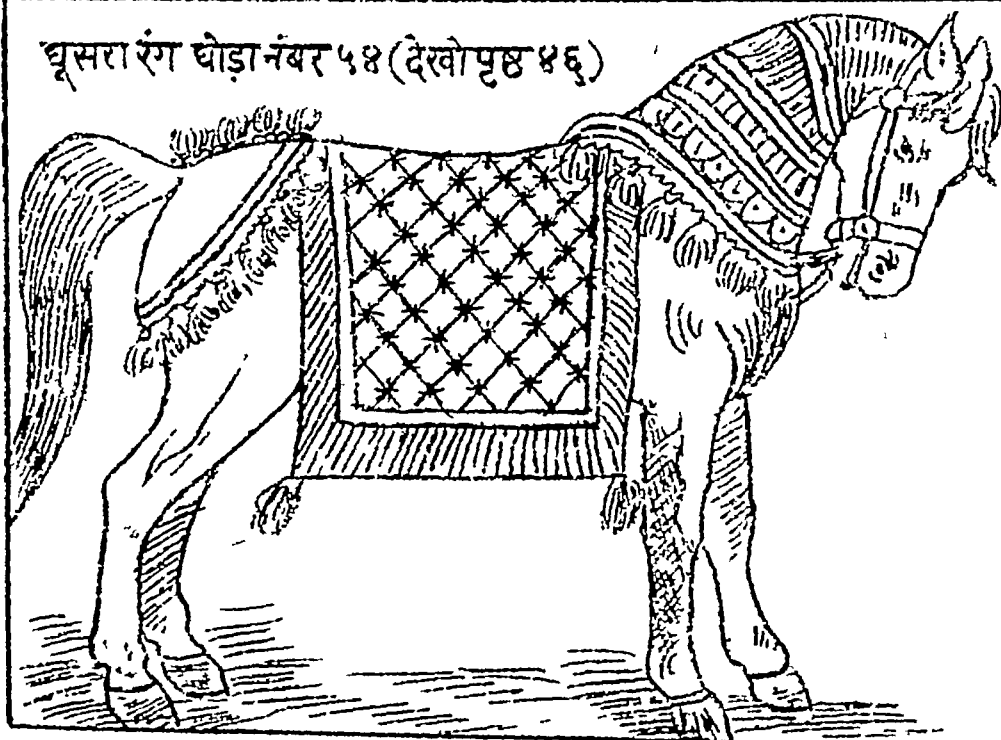
सुंकाली रंग घोड़ा नंबर ५५ (देखो पृष्ठ ४७)
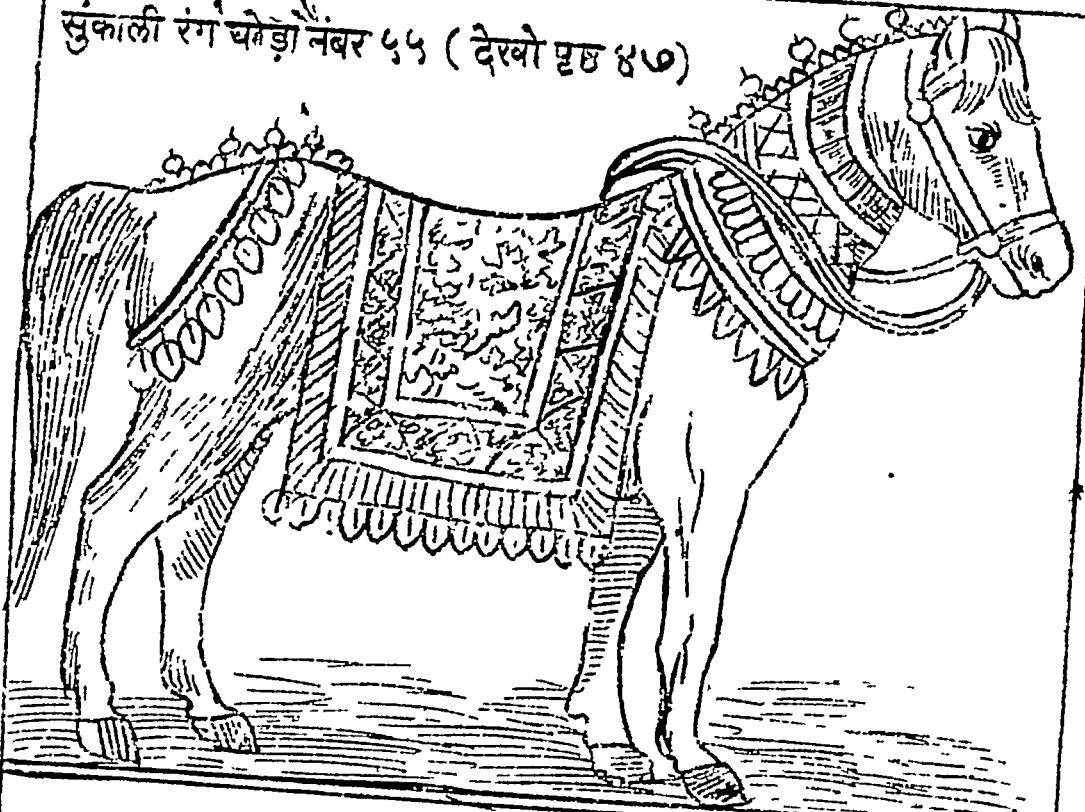
हरदक रंग घोडा नंबर ५६ (देखो पृष्ठ ४७)
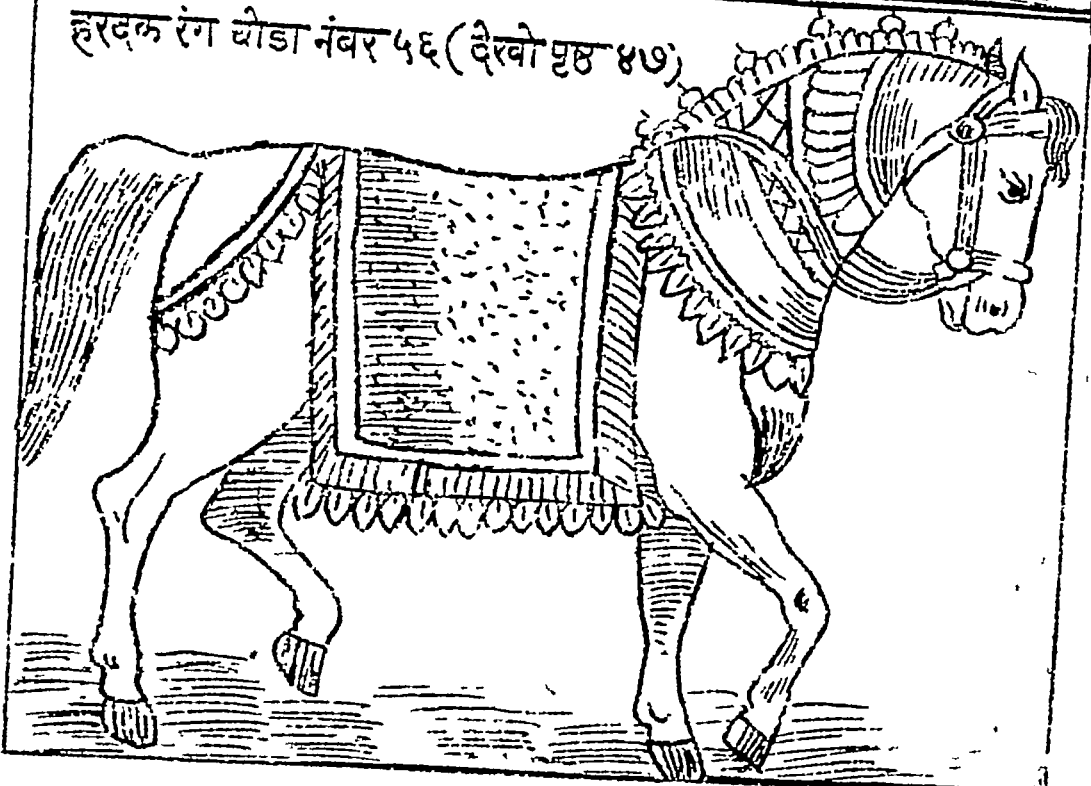
मूसली रंग घोड़ा नबर ५७ (देखो पृष्ठ ४७)

अहि मूसली रंग घोड़ा नंबर ५८ (देखो पृष्ठ ४७)

स्वतंग रंग घोड़ा नंबर ५९ (देखो पृष्ठ ४७)
पंचकल्याण रंग घोड़ा नंबर ६० (देखो पृष्ठ ४७)
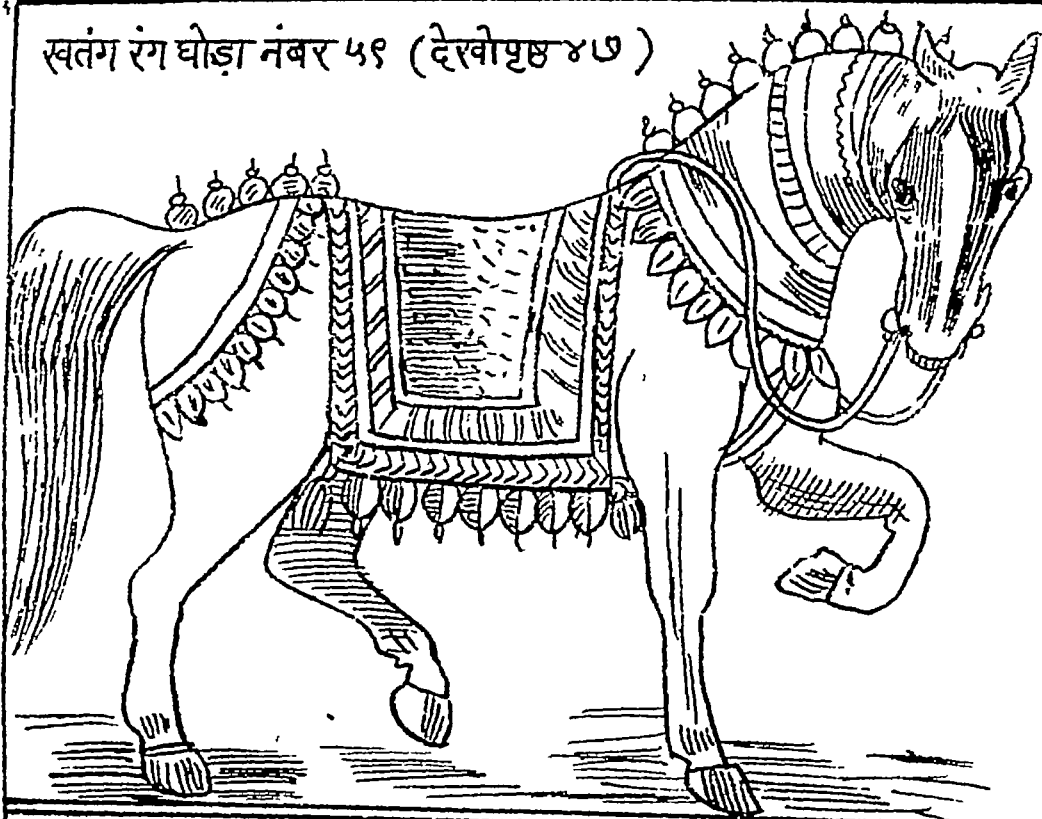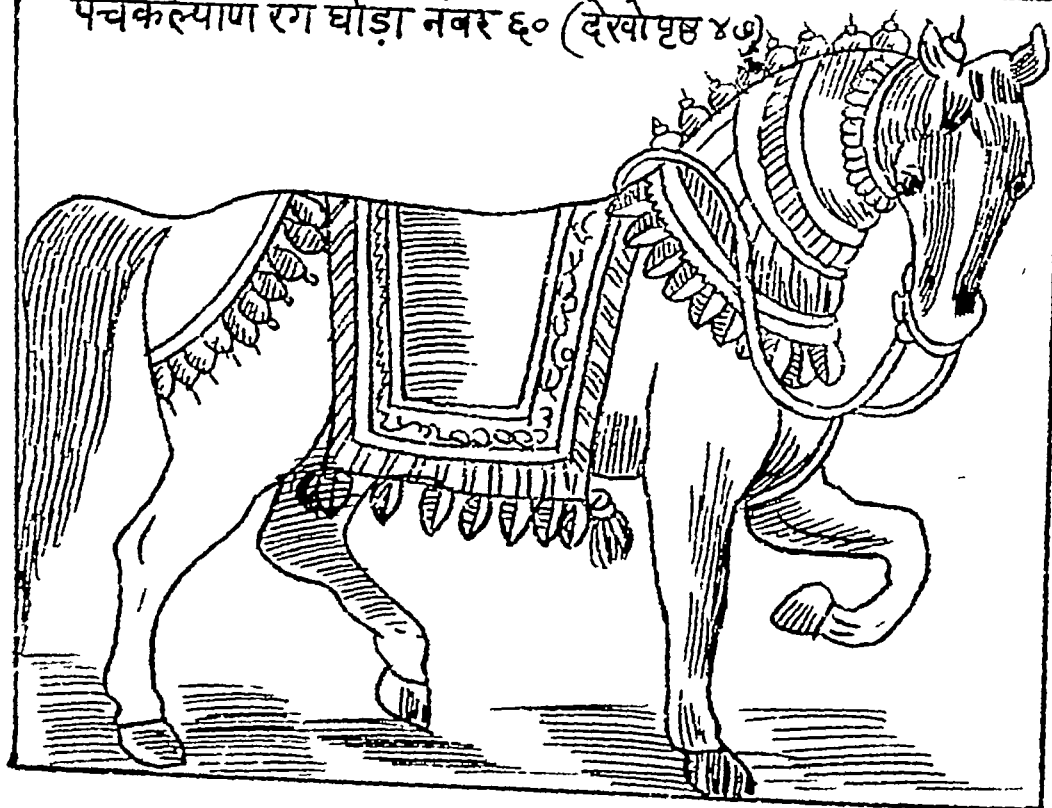
पिस्तई रंग घोड़ा नंबर ६१ (देखो पृष्ठ ४७
चक्रवाक रंग घोड़ा नंबर ६२ (देखो पृष्ठ ४८)
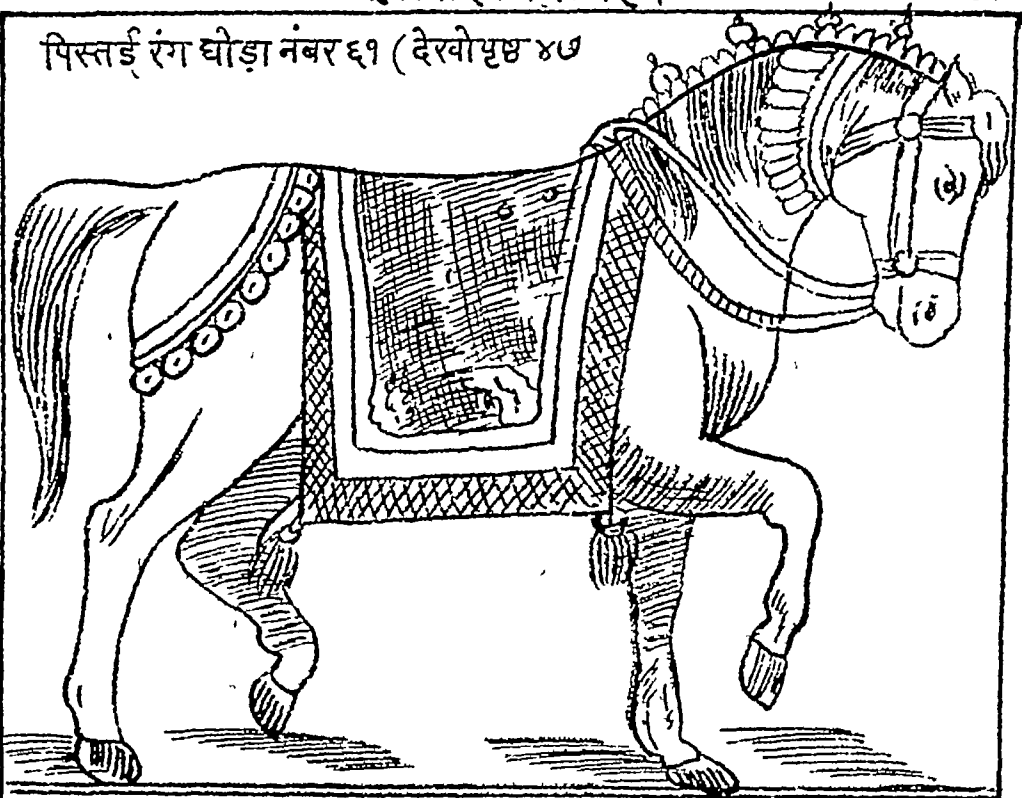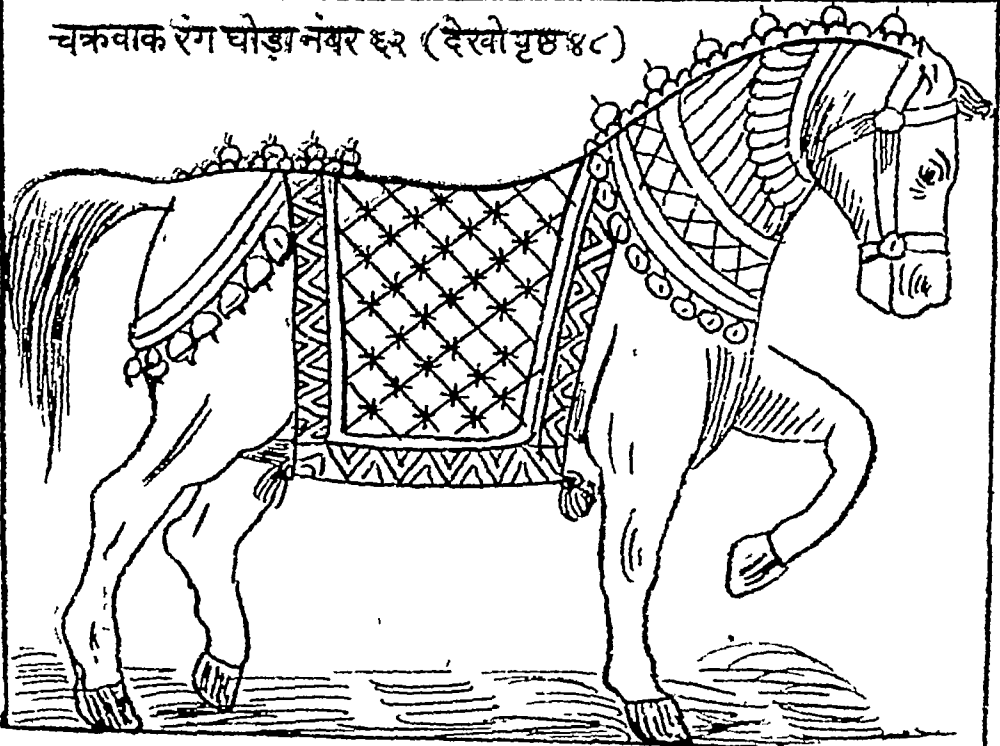
मह्लि कच्छ रंग घोड़ा नं० ६३ (देखोपृष्ठ ४८)
मंगल अष्टक रंग घोड़ा नं० ६४ (दे० पृ० ४८)
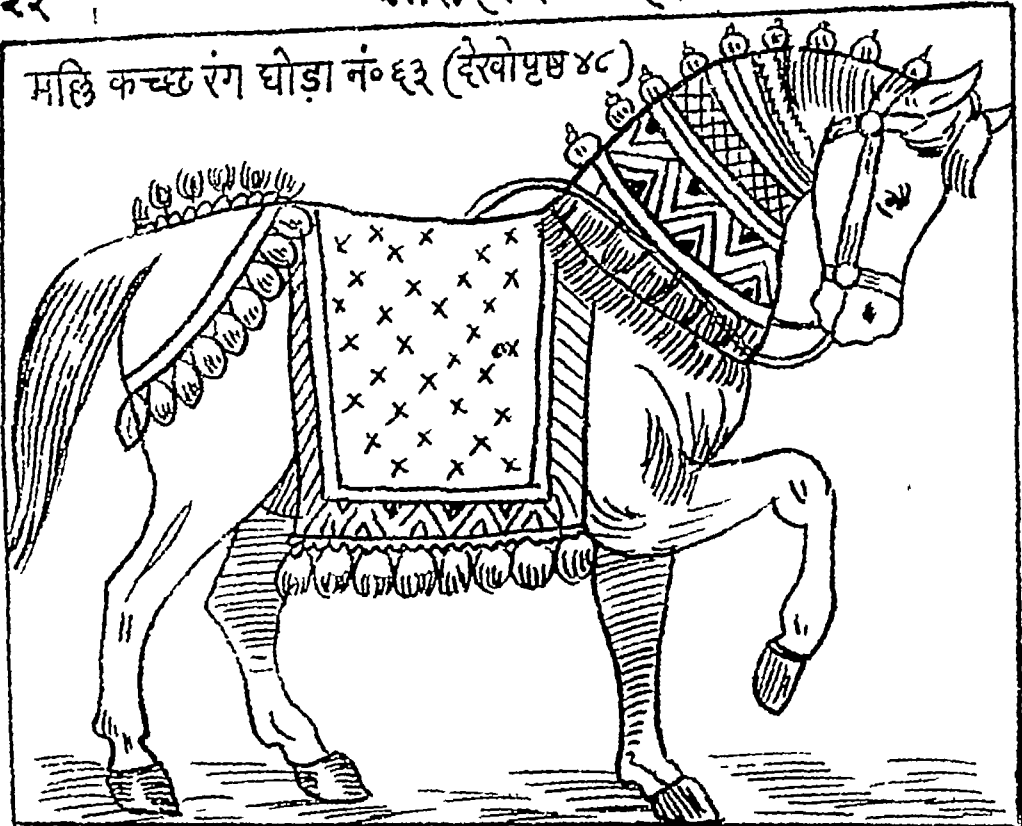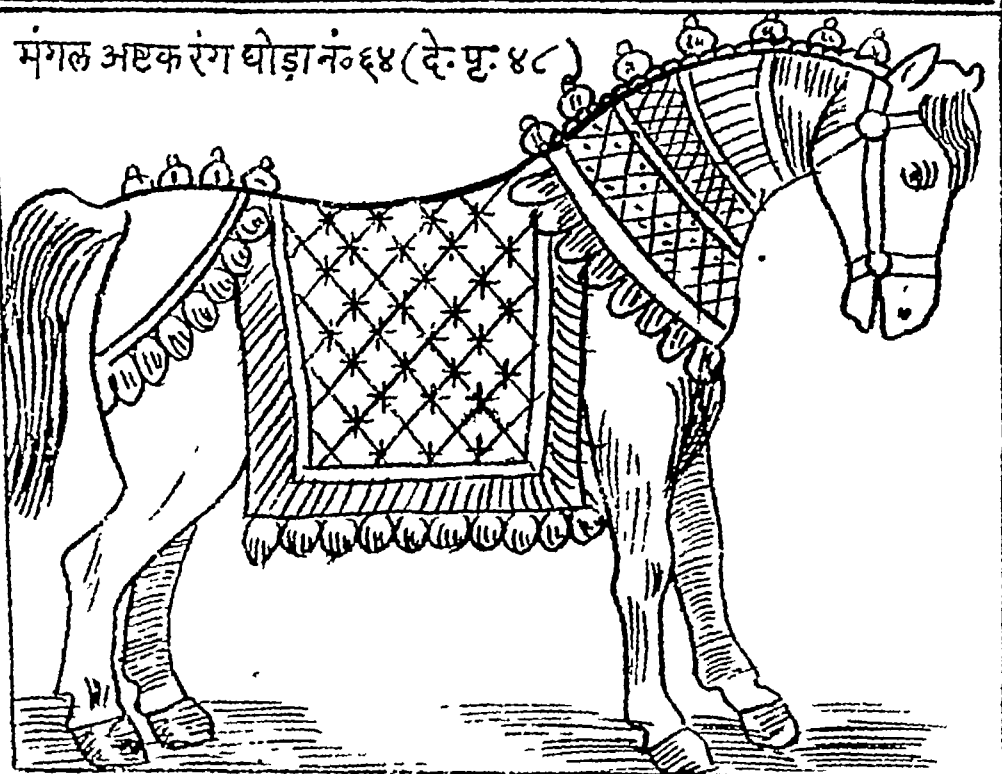
धुगल रन घोड़ा नंबर ६५ (दे. पृ ४८)

वधिक रंग घोड़ा नंबर ६६ (दे० पृ: ४८)

चापदस्त रंग घोड़ा नंबर ६७ (दे० पृ० ४८)
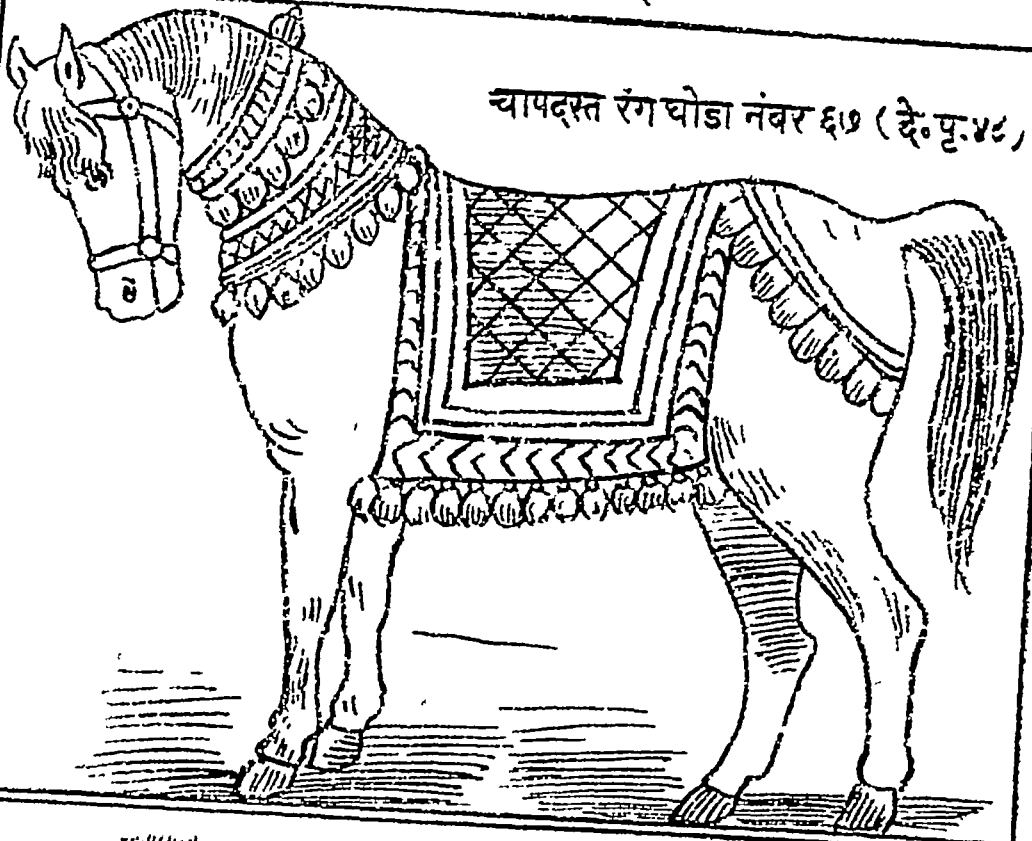
अरजुल रंग घोड़ा नंबर ६८ (देखो पृष्ठ ४९)
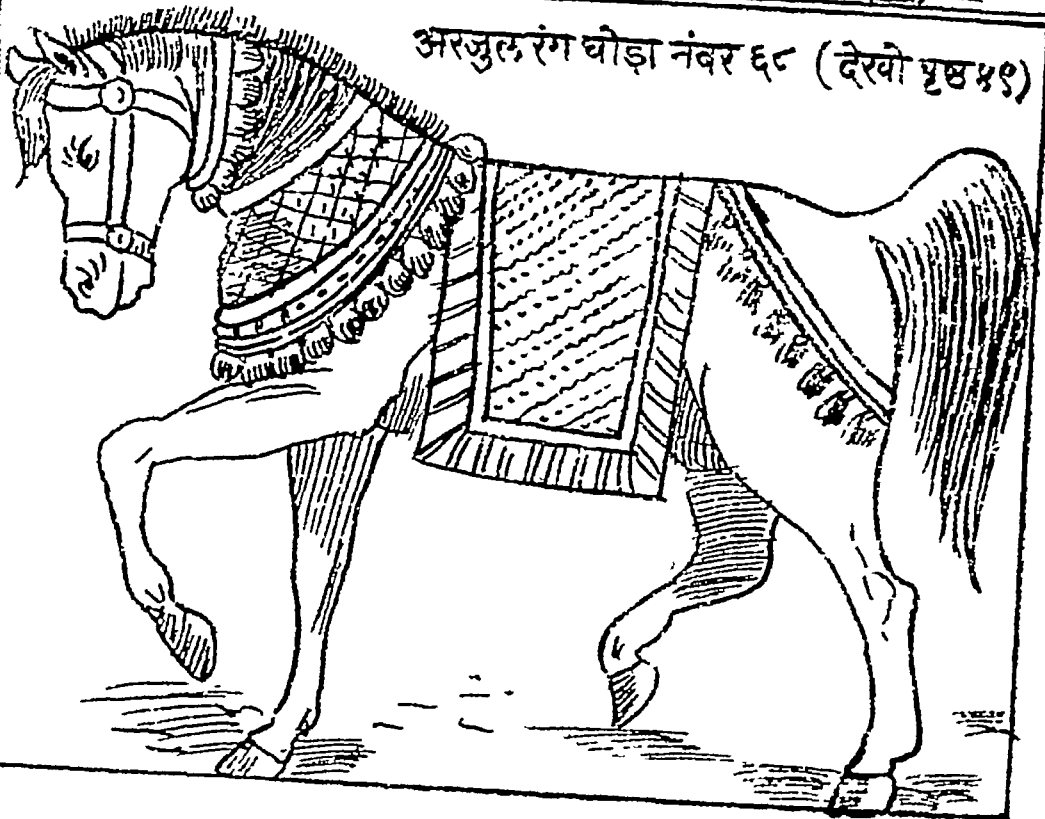
सबुज पांचरंग घोड़ा नंबर ६९
(दे.पृ.४९)
श्वेतचरण घोड़ा नं०७० (दे.पृ ४९)
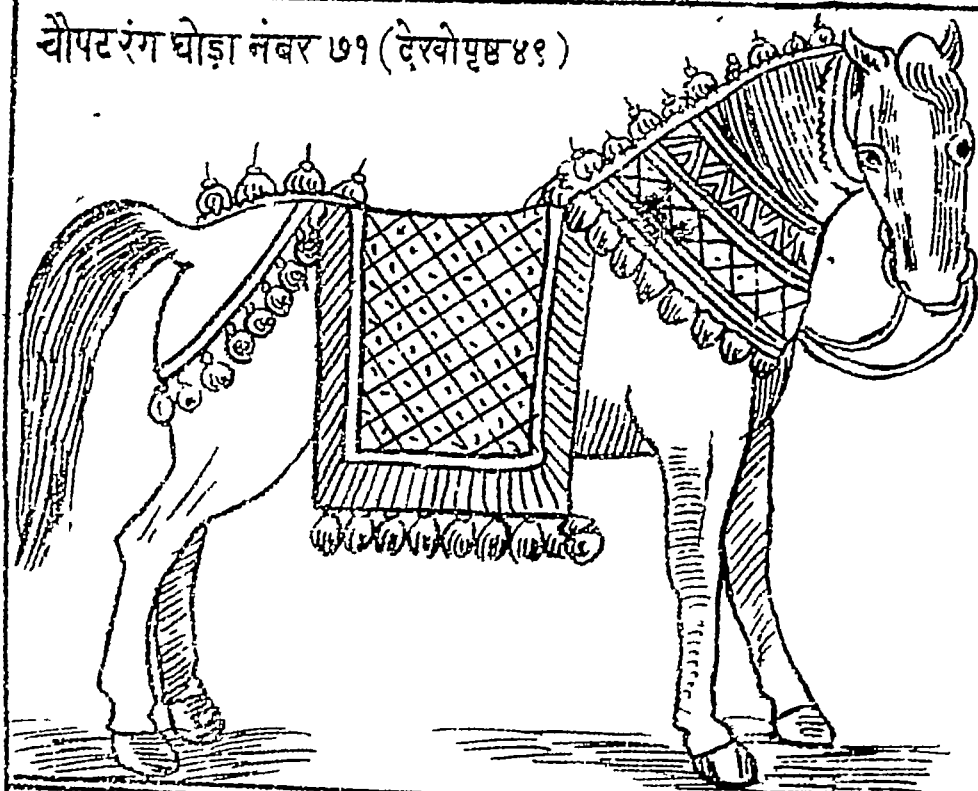
चौपट रंग घोड़ा नंबर ७१ (देखो पृष्ठ ४१)
यमदूत रंग घोडा नंबर.७२ (देखो पृष्ठ ४१)
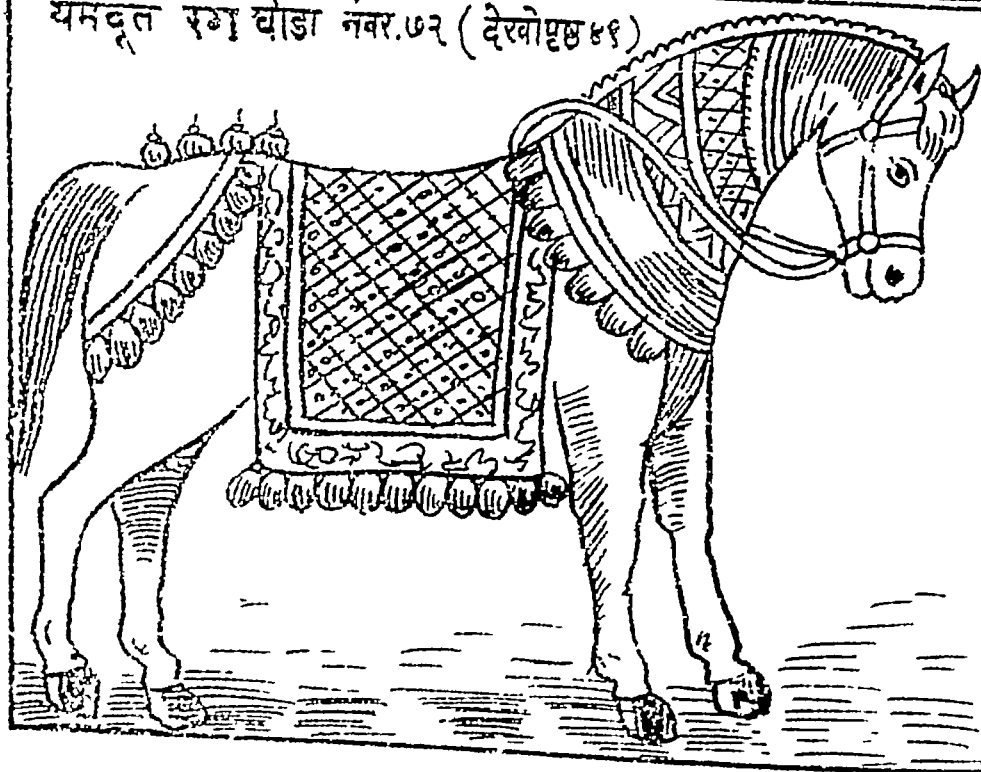
समर दूत रंग घोडा नंबर ७३ (दे.पृ.४१)
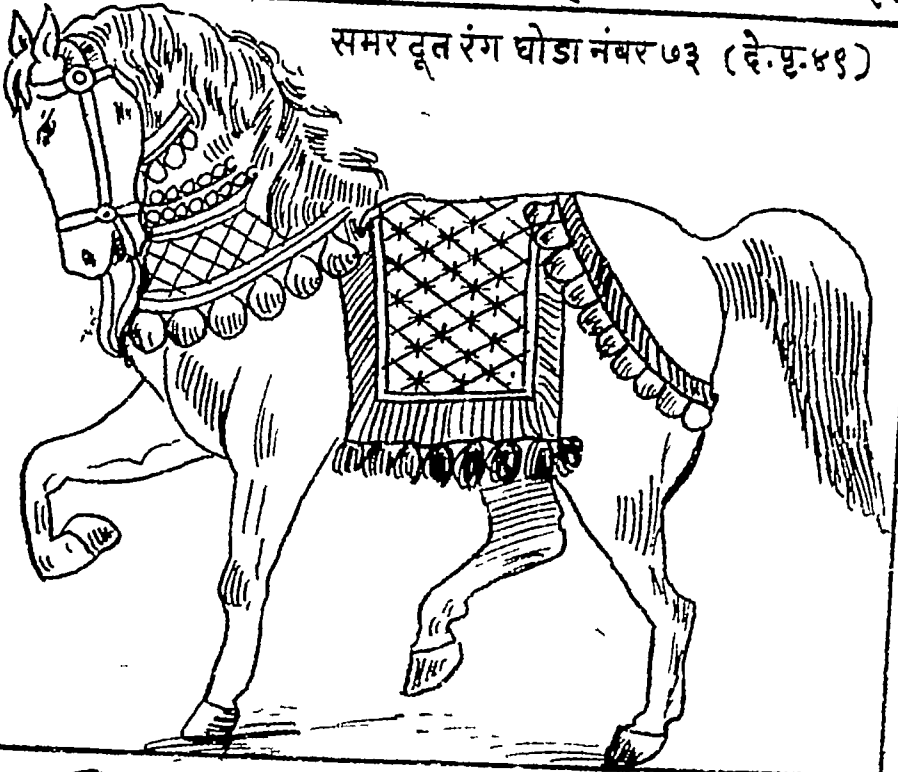
खालदार रंग घोड़ा नंबर ७४ (दे.पृ ४१)
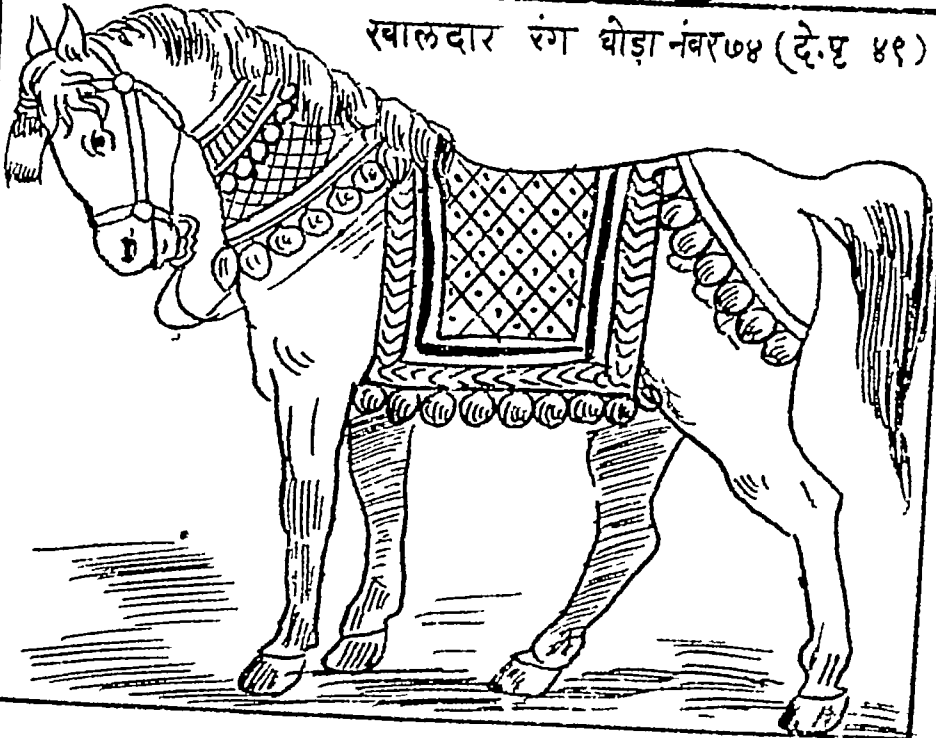
जालिया रंग घोड़ा नंबर ७५ (देखो पृष्ठ ५०)
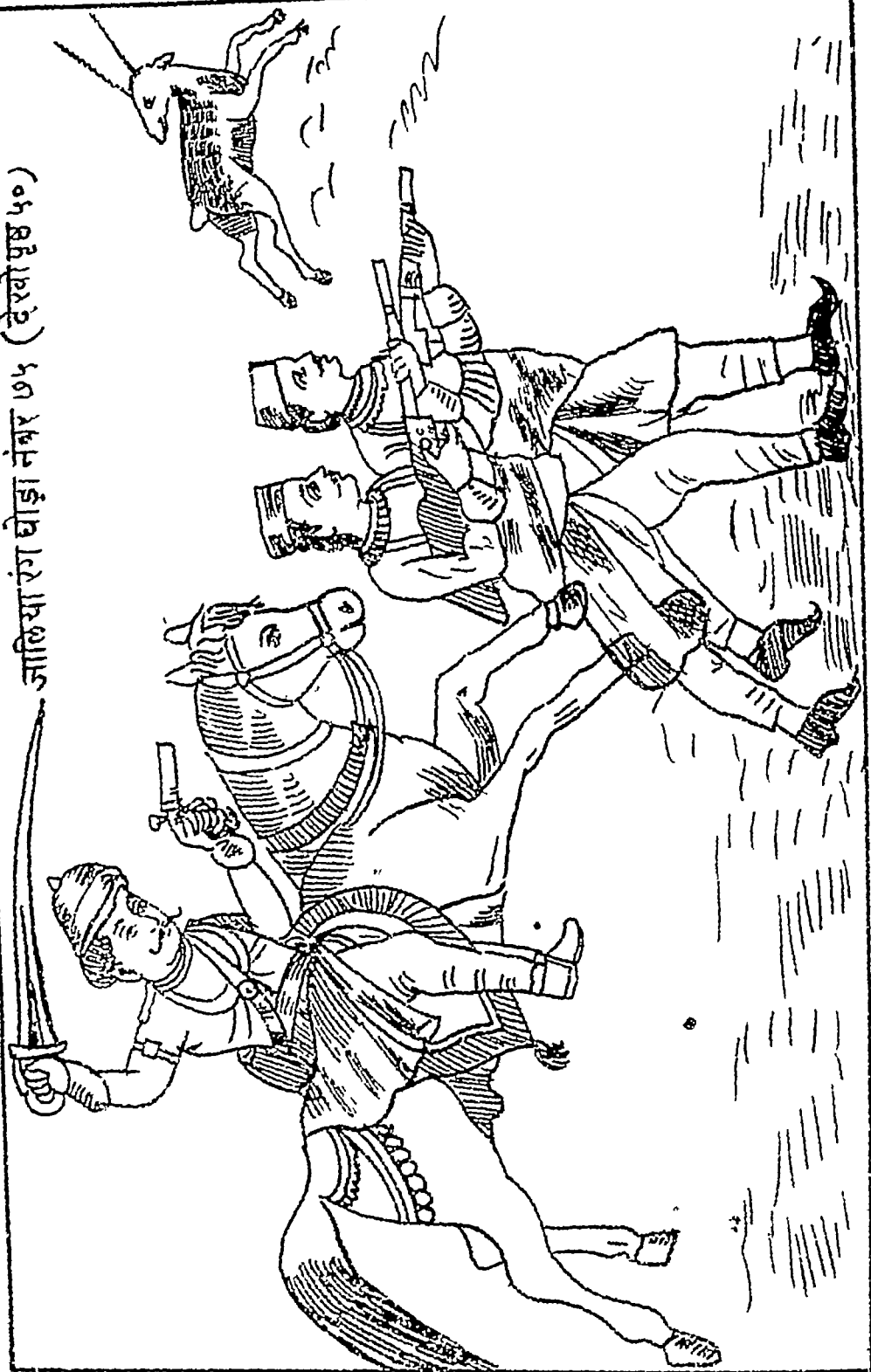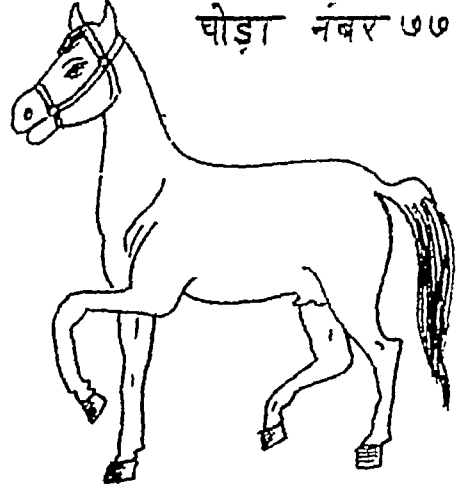
घोडा नंबर ७६
घोड़ा नंबर ७७
घोड़ा नंबर ७८
घोड़ा नंबर ७९
घोडा नंबर ८०
घोड़ा नंबर ८१
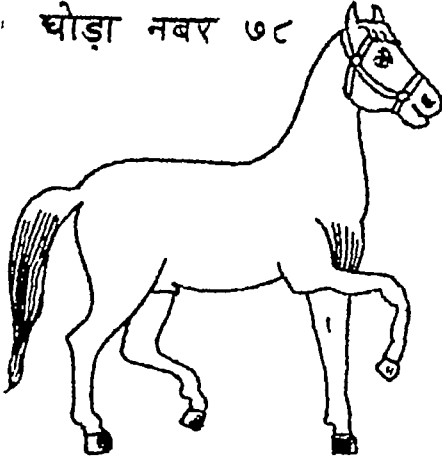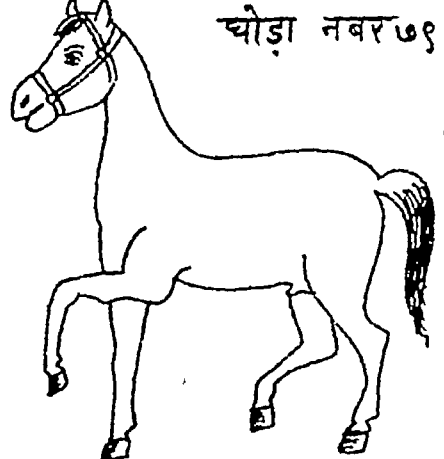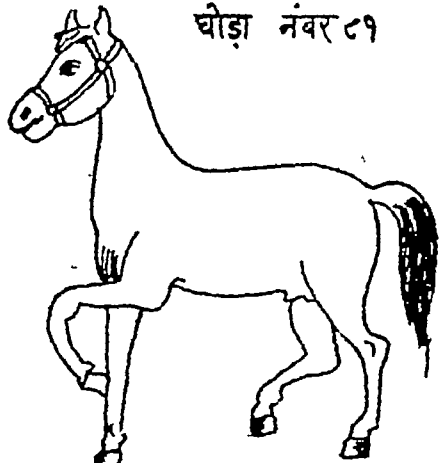
घोड़ी नंबर ८२ (दे. पृ ७२)
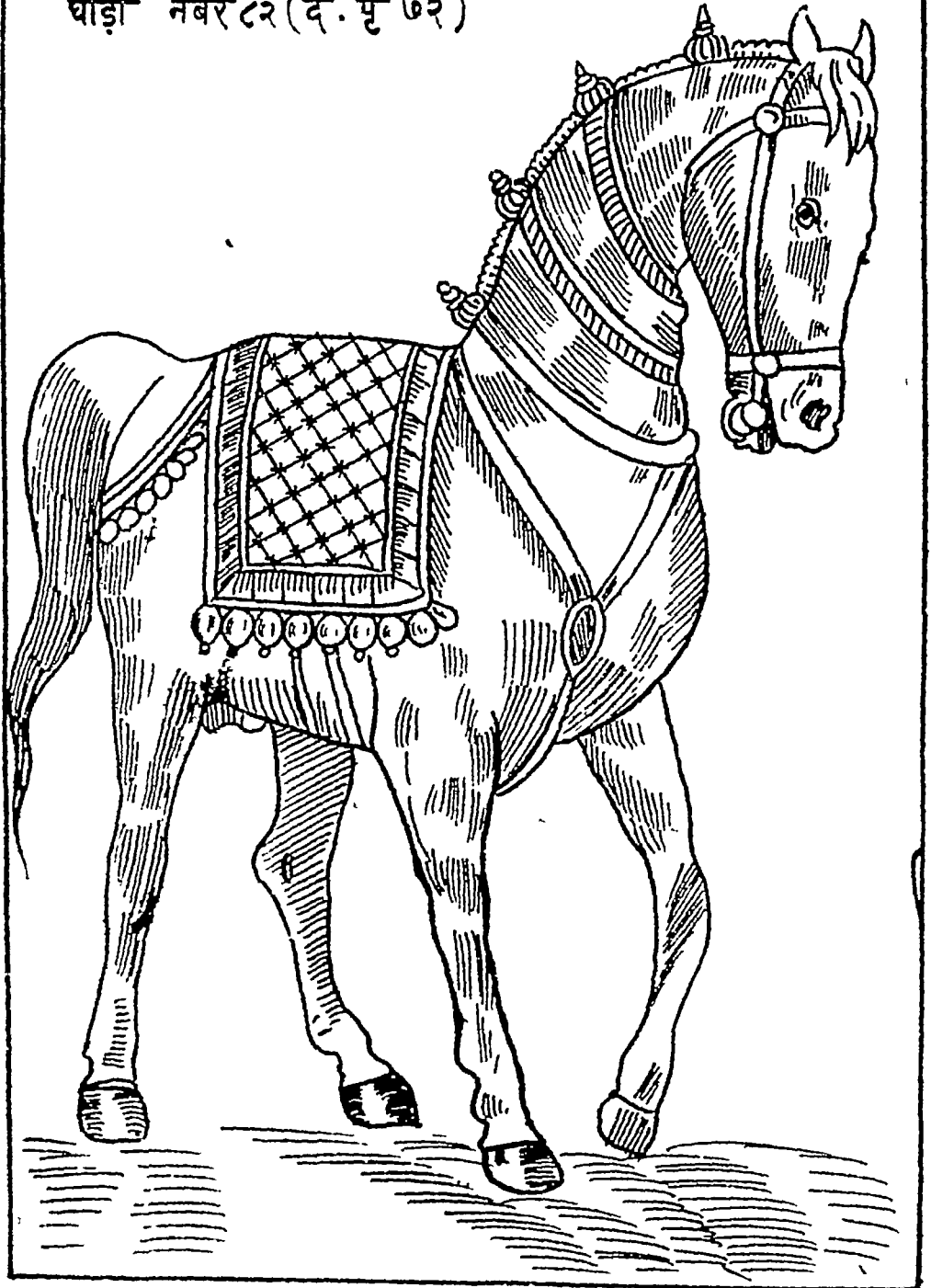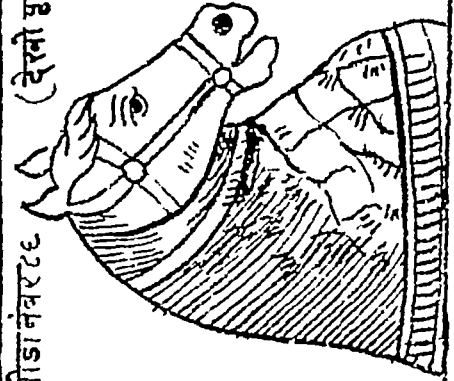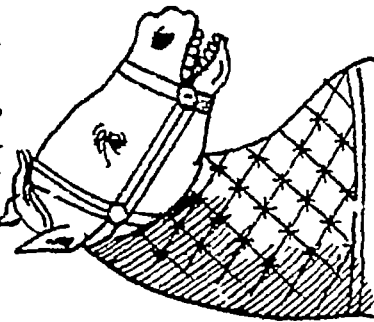
सुतर दंत घोडा नंबर ८३ (दे॰ पृ ७५)

तरन्तगर्दन घोड़ा नबर ८४ (दे पृ ७५)

मुर्गपाव घोड़ा नं ८५ (दे पृ. ७५)

हीन दंत घोडा नंबर ८६ (देखो पृष्ठ ७६)

अहिमुखी घोडा नं ८७ (दे पृ ७७
कराली दोष घोडा नं ८९ (दे पृ ७७
ससाकरण घोडा नं ९१ (दे पृ ७७
गजकरण घोडा नं ९२ (दे पृ ७५
एक छोटा कान एक बडा कान घोडा नं ९३
ताषी घोडा नं ९४ (देखो पृष्ठ ७७
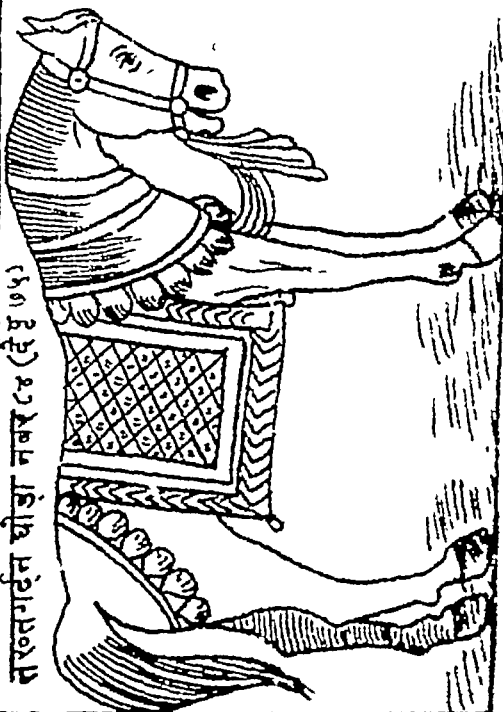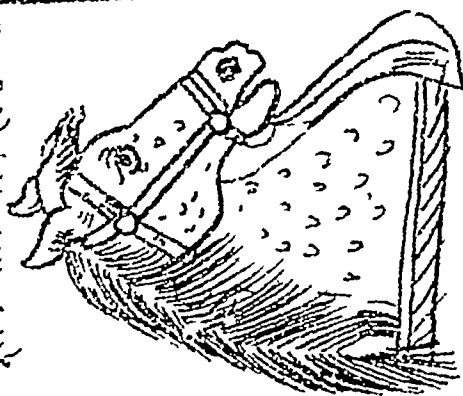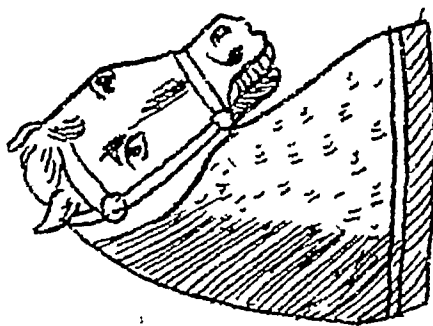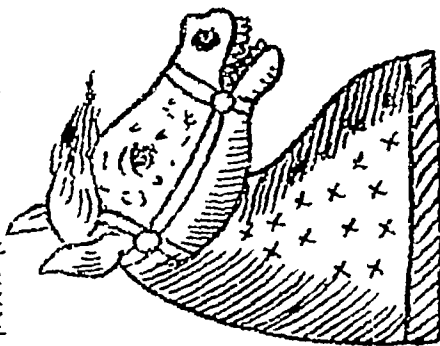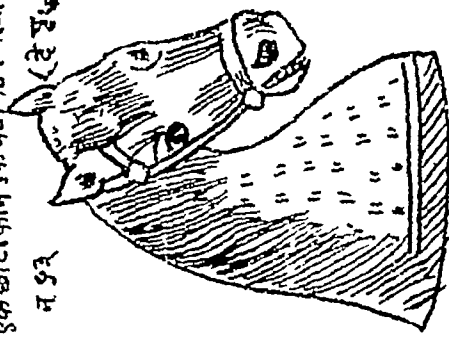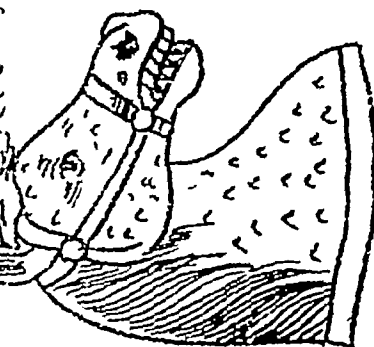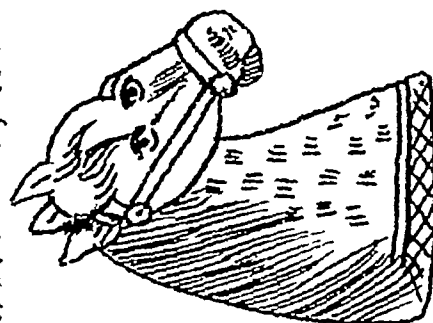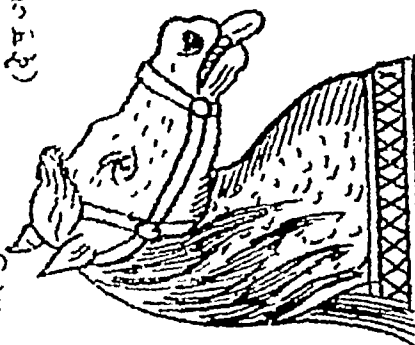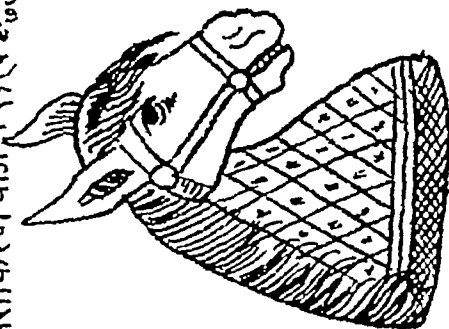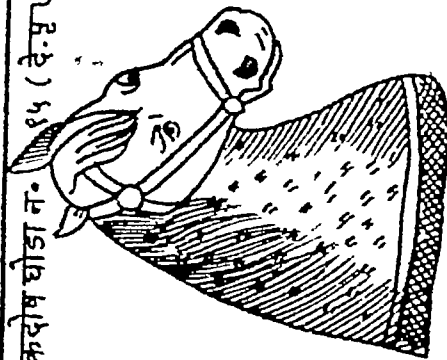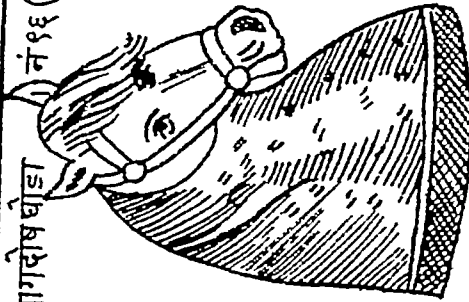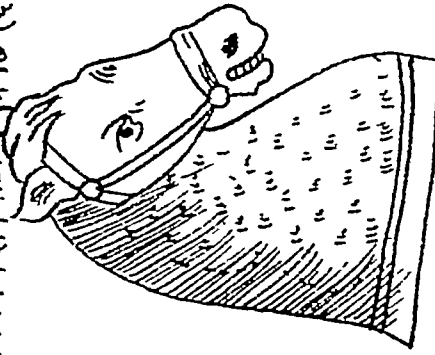
चक्रदोष घोडा नं० ९५ (दे.पृ ७७)
महिषागदोष घोडा नं ९६ (दे पृ ७७)
बिल्ली नेत्रवर्णदोषघोडा नं ९७ (दे पृ ७७)
कामाली भैंलग्रीव मनीदोष
घोडा न ९८ (दे पृ ७७)
कालिज लिंगपर टीका गोदुमी
खुरसुस्मी घोडा नं ९९ (दे पृ ७७)
पूछकी डंडी श्वेत झारूदुमकंठघाटी
घोडा नं १०० (दे पृ ७८)

हयशाला
घोड़ा नंबर १०४(दे. पृ. ८४)
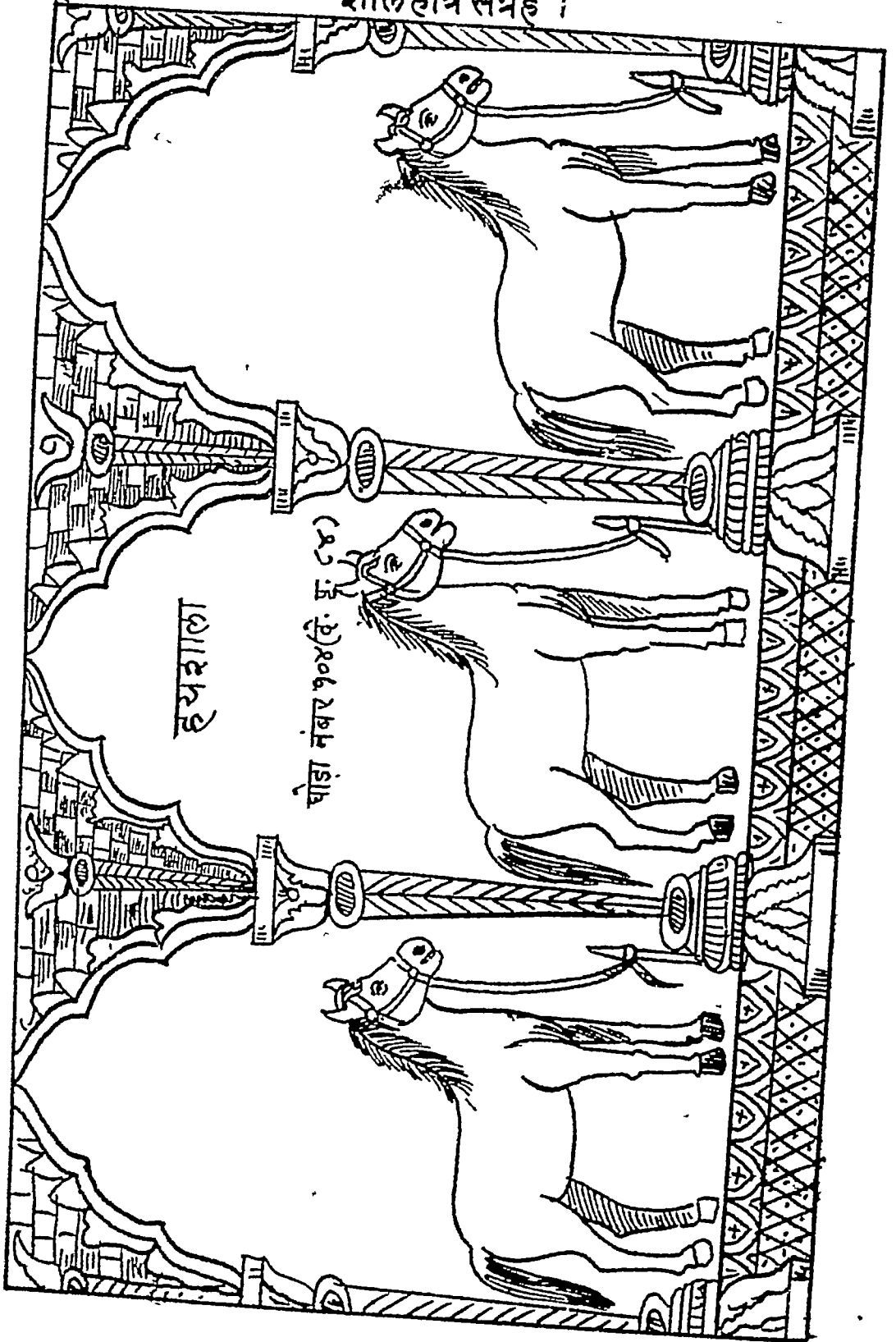
बीभत्सज्वर नंबर १०५

(देखो पृष्ठ १२९)
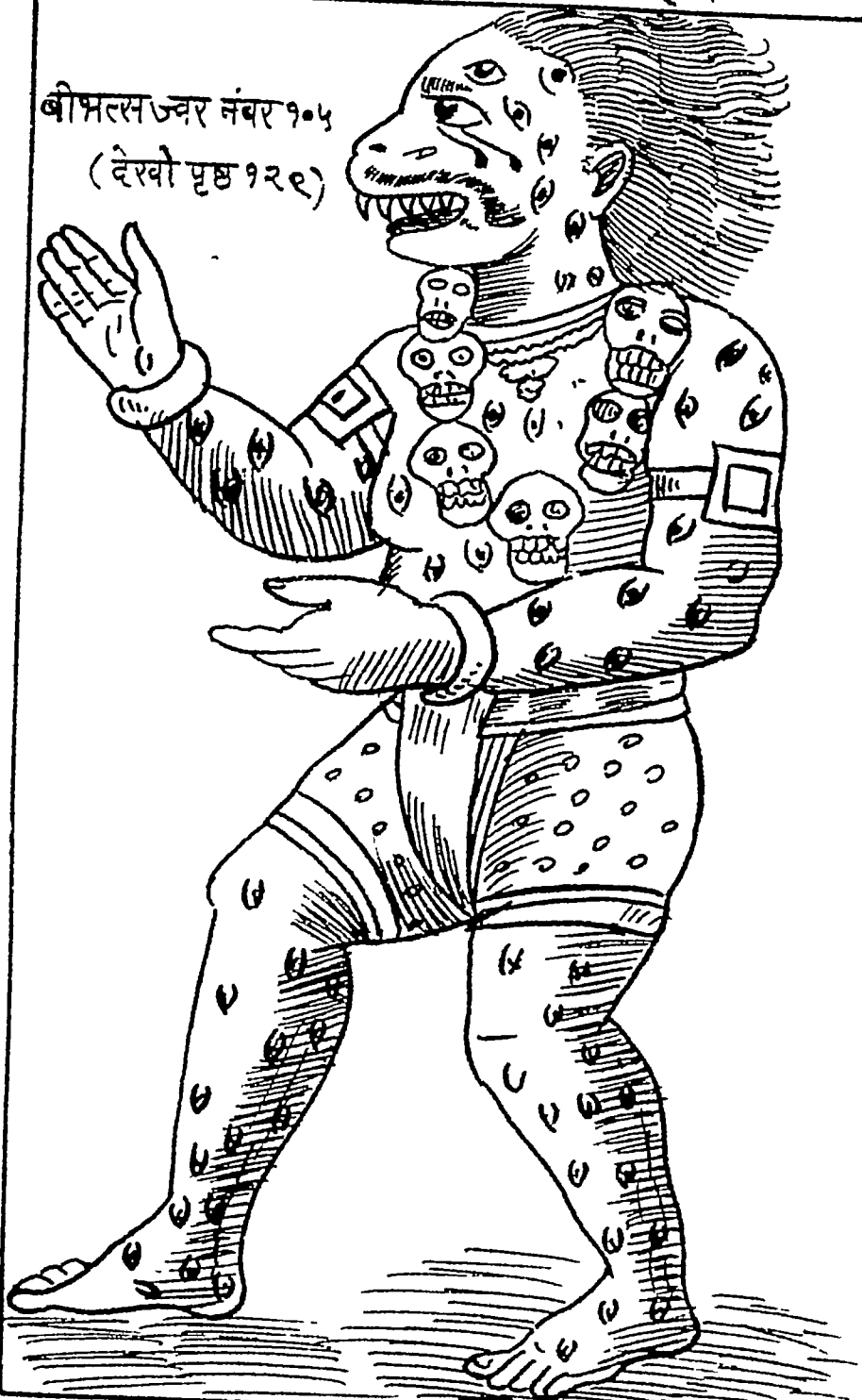
त्रिशिराज्वर नबर-१०६ (देखो पृष्ट १३०
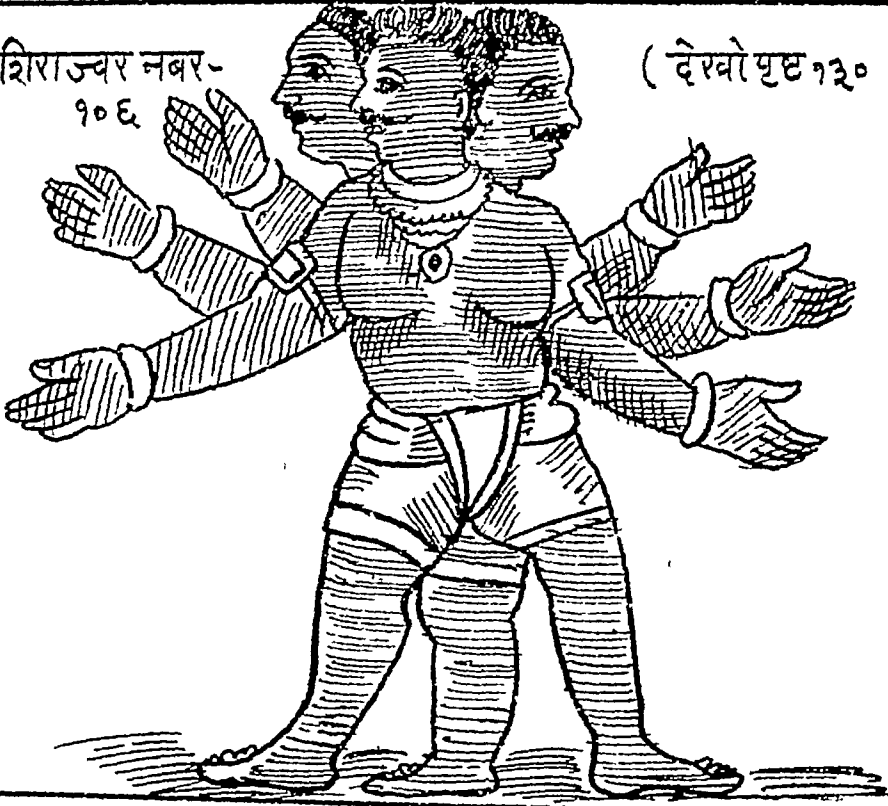
कपिलाज्वर नबर १०७ (देखो पृष्ठ १३०)

भस्म प्रहार ज्वर नंबर १०८
(देखो पृष्ठ १३०)
त्रिपाद ज्वर नंबर १०९
(दे॰ पृ॰ १३१)

भैरौ ज्वर नंबर ११२ (दे॰पृ॰१३२)

मूत्र स्थूल घोड़ा नं० ११२ (दे० पृ० १५८)
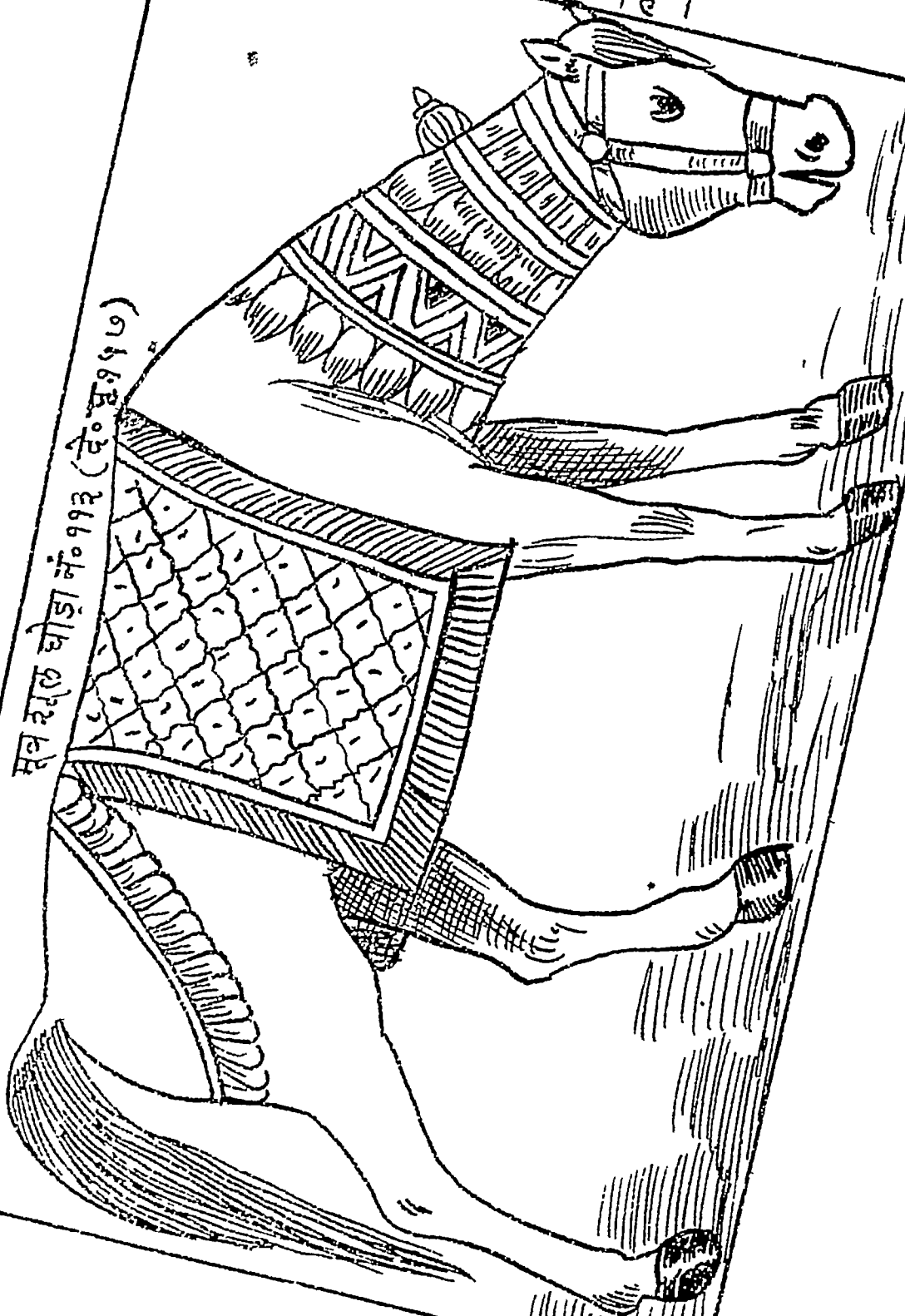
मूत्रप्रवर्तक शूल घोड़ा नंबर ११४ (देखो पृष्ठ १५१)
लीदिबंद शूल घोड़ा नंबर ११५ (देखो पृष्ठ १५१)
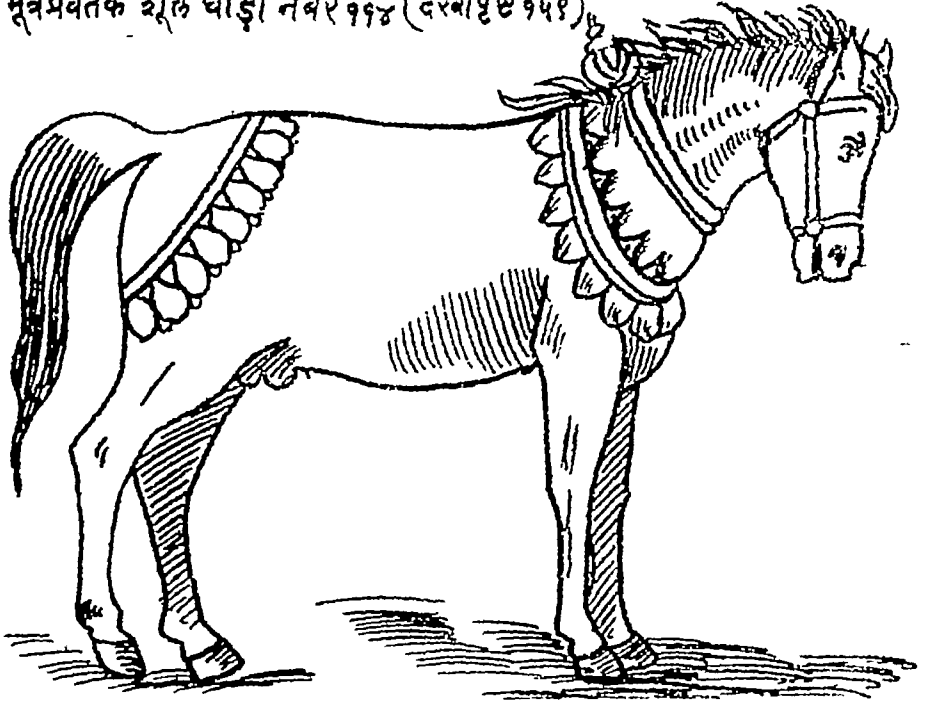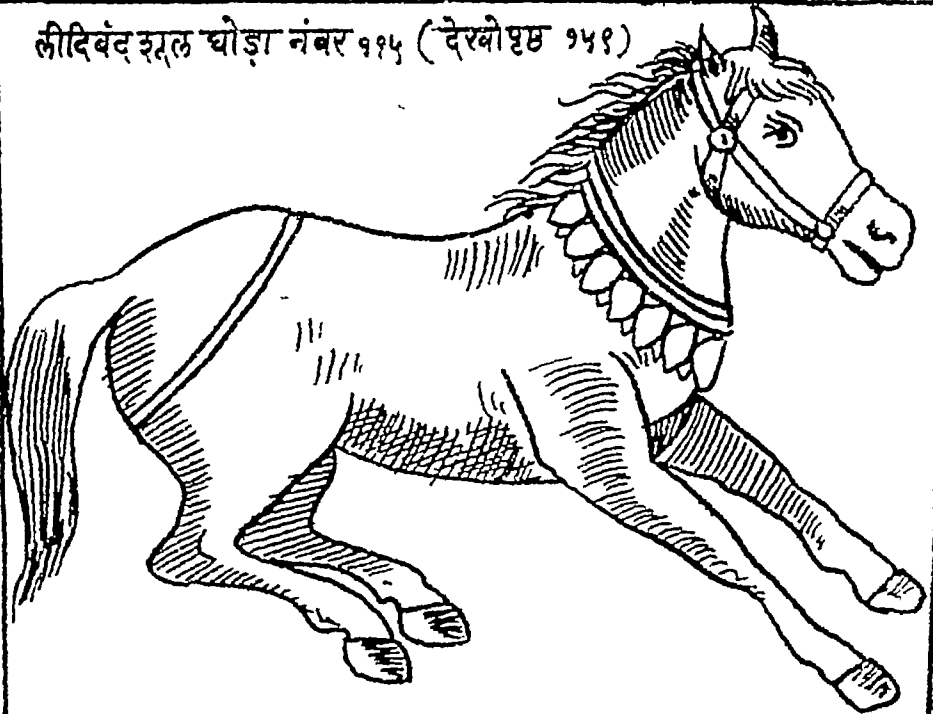
दुम डामरी शूल घोड़ा नंबर ११८ (देखो पृष्ठ १६१)
वायुभक्ष शूल घोड़ा नंबर ११९ (देखो पृष्ठ १६१)
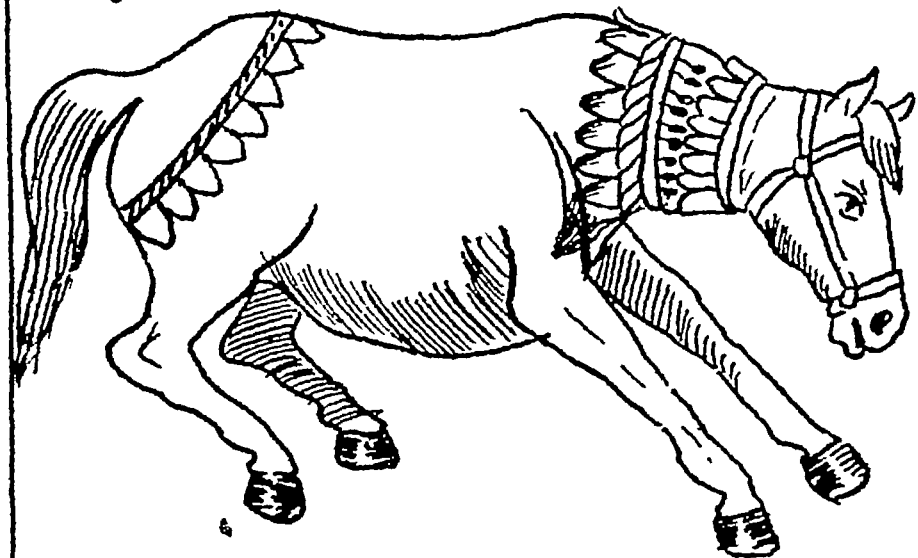
अँतावरि इस्ल घोड़ा नंबर १२० (देखो पृष्ठ १६१)
जीमार इस्ल घोड़ा नंबर १२१ (देखो पृष्ठ १६१)
कुलिंज इस्ल घोड़ा नंबर
१२२ (देखो पृष्ठ १६२)
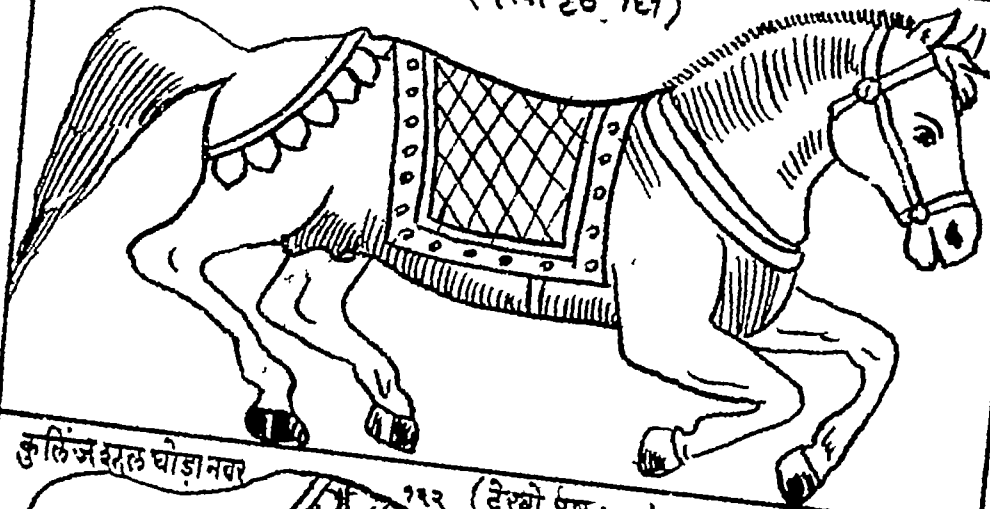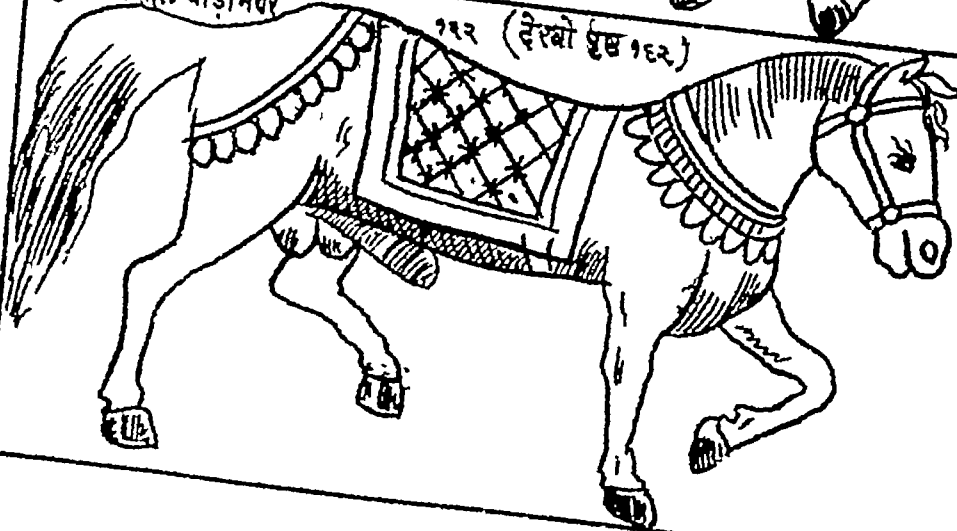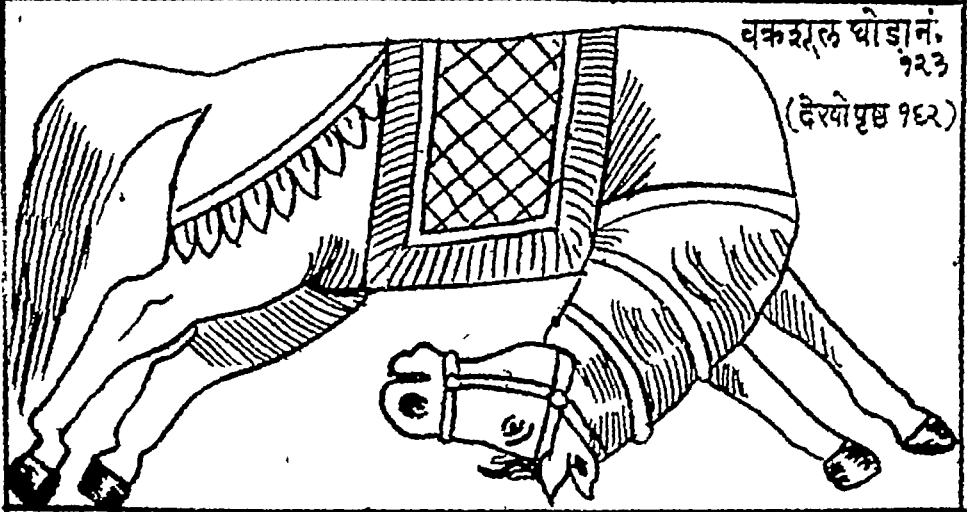
वक्रशूल घोड़ा नं. १२३
(देखो पृष्ठ १६२)
मूर्तिवंत शूल घोड़ा नंबर १२४ (दे. पृ. १६२)
अस्तावर्त शूल घोड़ा नंबर १२५ (दे. पृ. १६२)
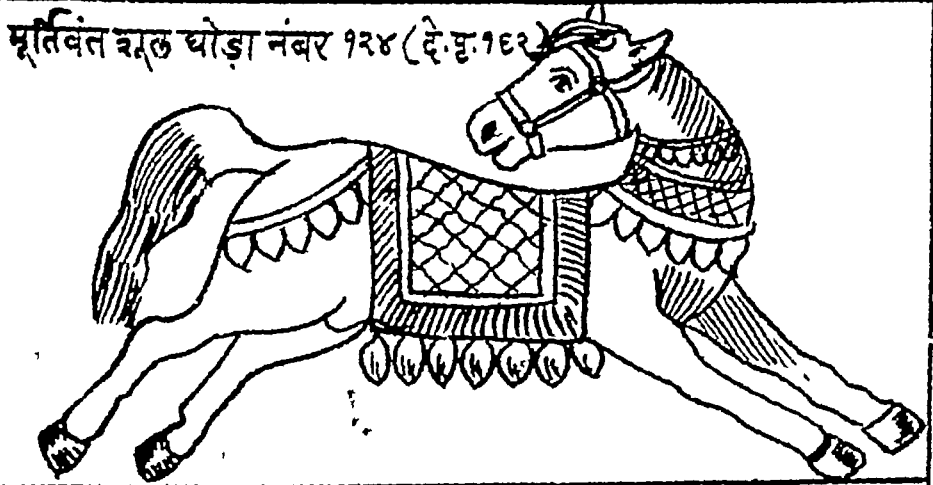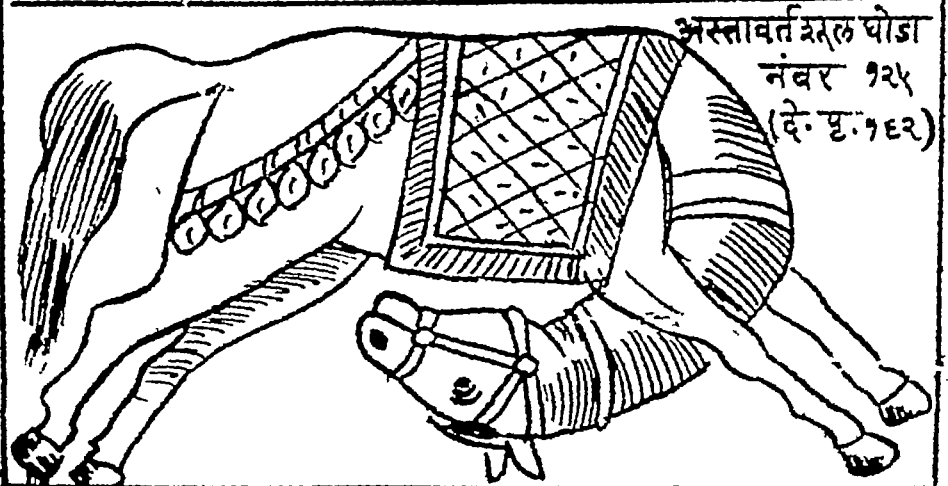
वातशूल घोड़ा नंबर १२६ (देखो पृष्ठ १६३)
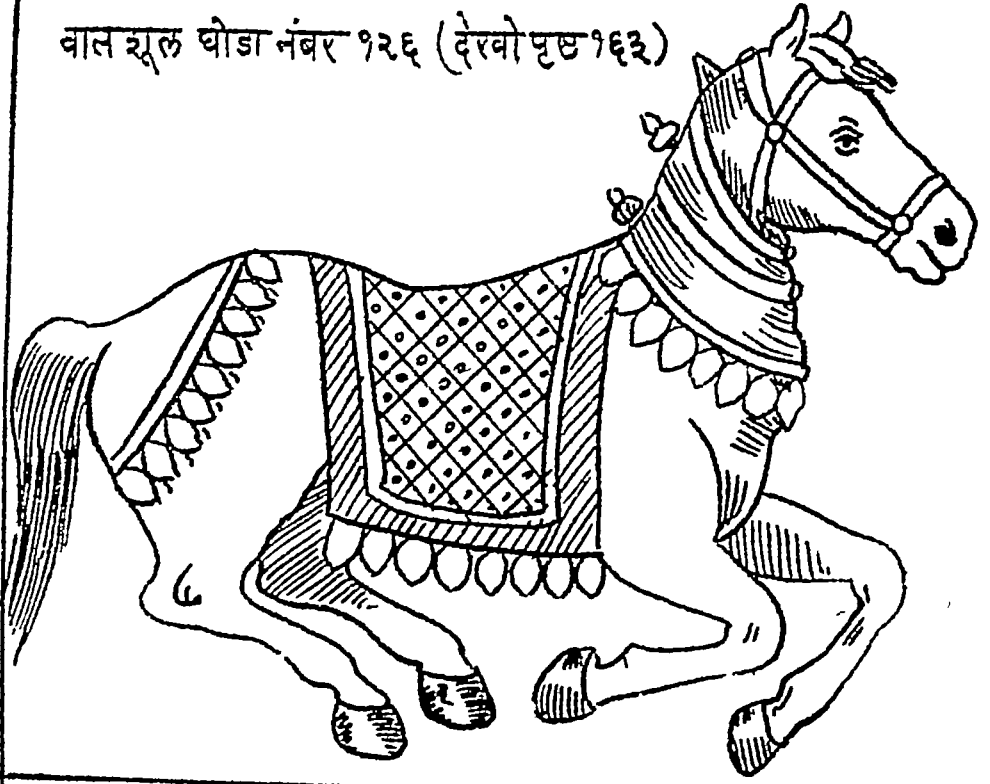
शुद्ध वातशूल घोड़ा नंबर १२७ (देखो पृष्ठ १६४)
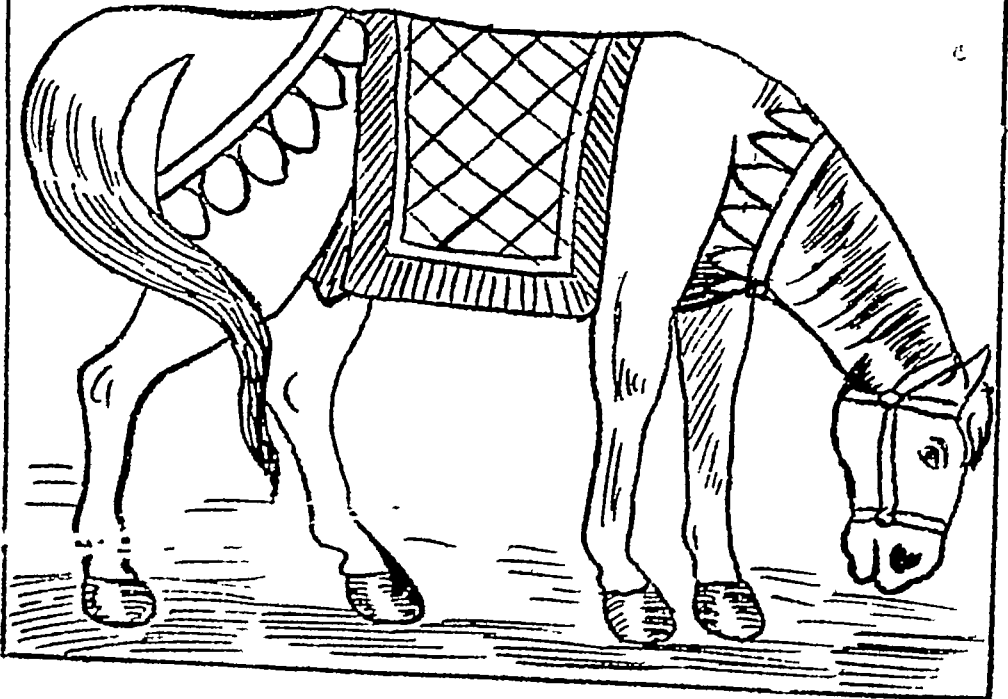
कंठवात शूल घोडा नबर १२८ (देखो पृष्ठ १६४)
सिपिवात शूल घोडा नं. १२१
(देखो पृष्ठ १६४)
अपरशूल घोडा नंबर १३० (देखो पृष्ठ १६५)
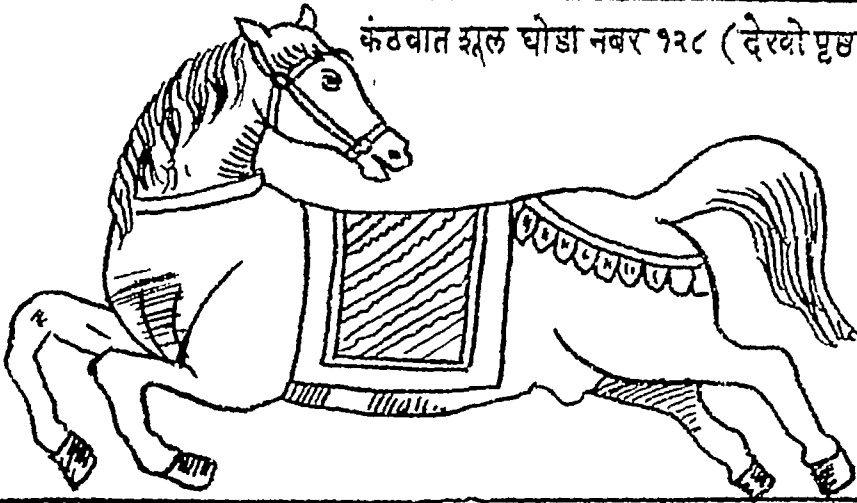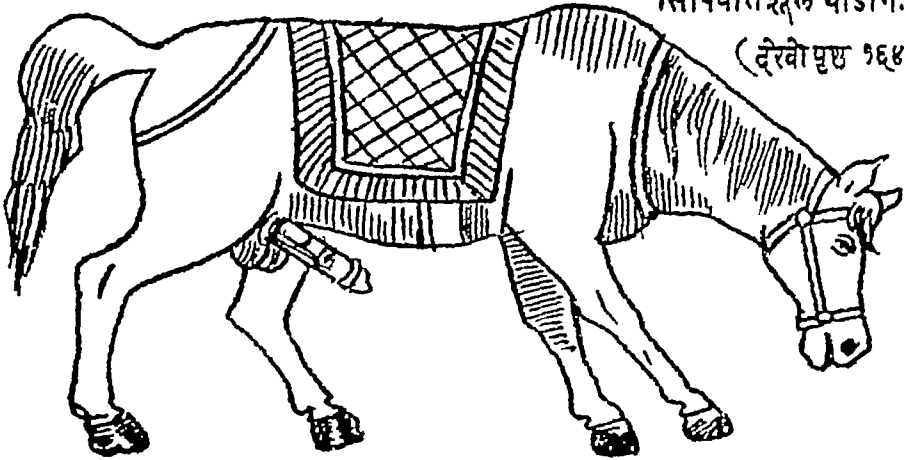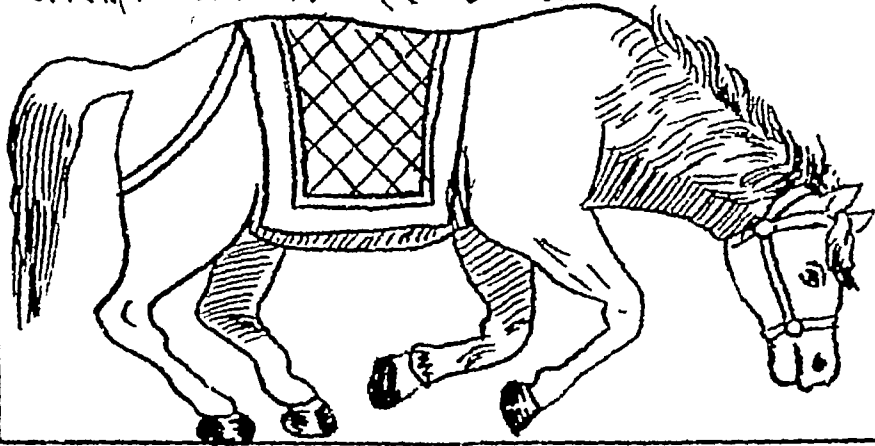
कृमिशूल घोड़ा नंबर १३१ (देखो पृष्ठ १६५)
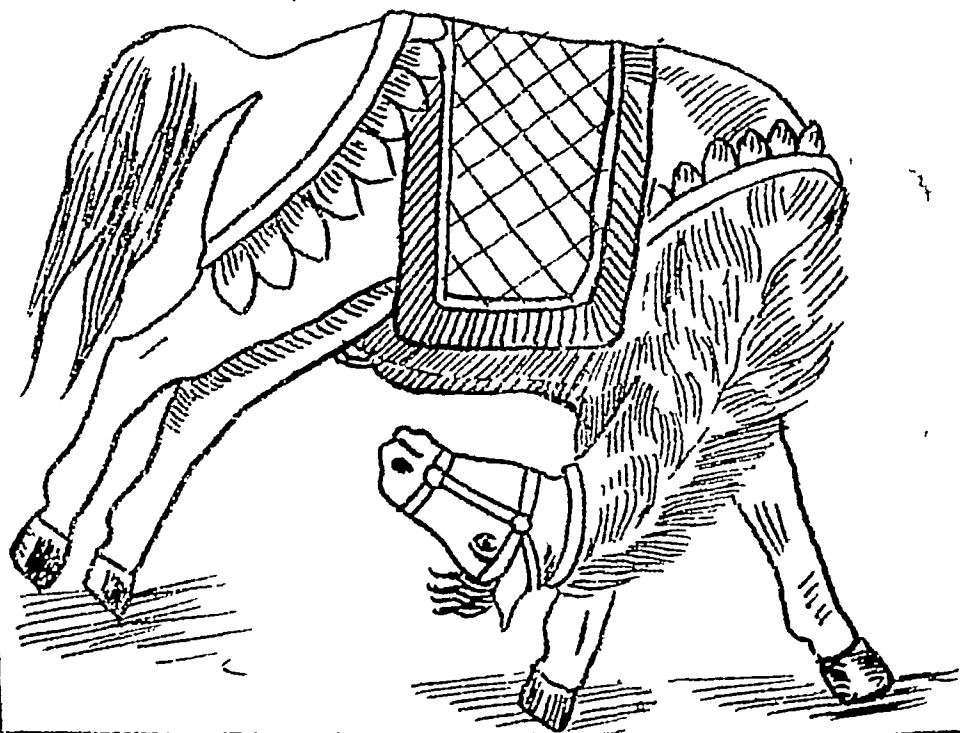
सर्व कृमिशूल घोड़ा नंबर १३२ (देखो पृष्ठ १६६)
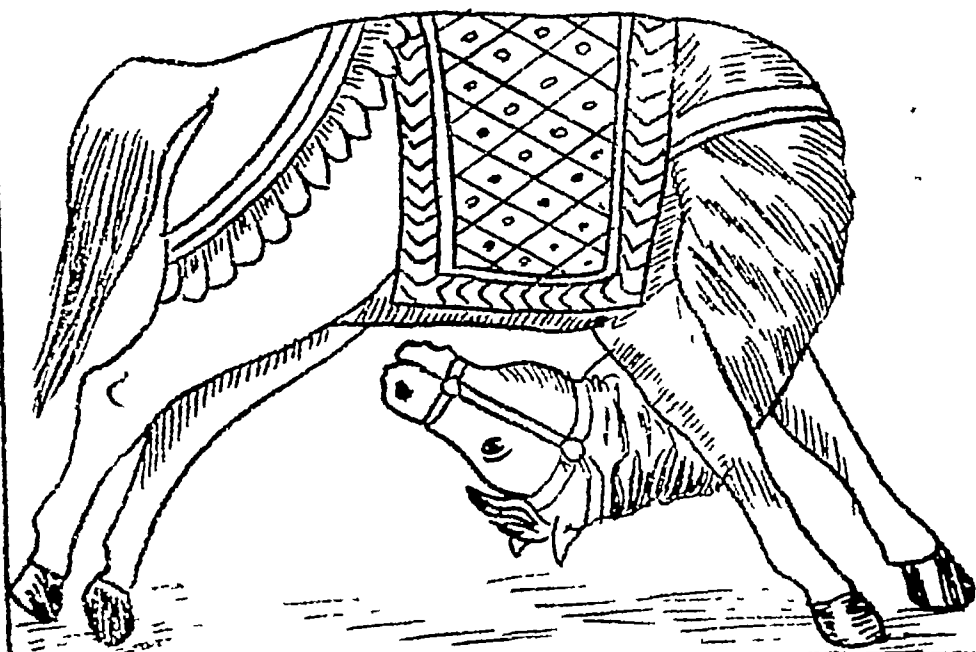
समवर्तशूल घोडा नं. १३३ (देखो पृष्ठ) १६६

वैवर्तशूल घोडा नंबर १३४ (देखो पृष्ठ १६६)
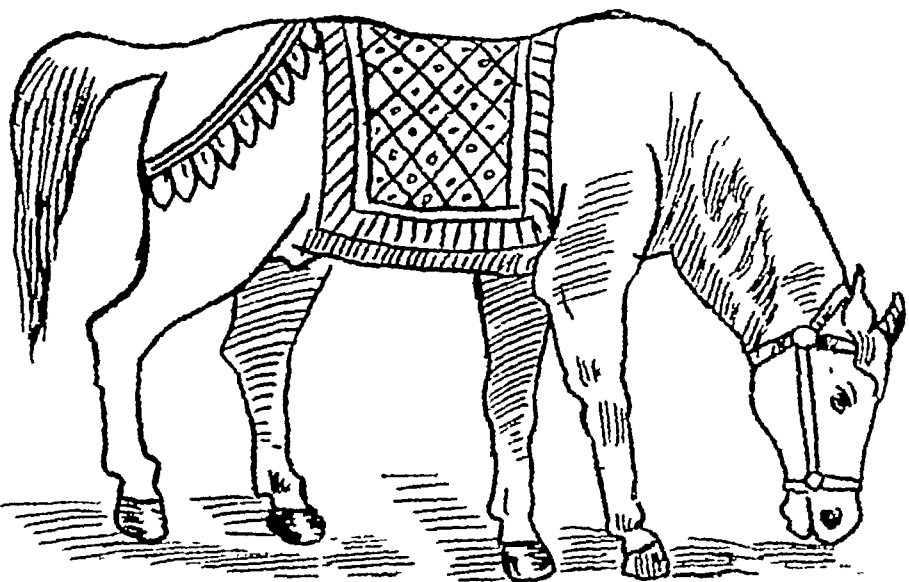
विभ्रम शूल घोडा नंबर १३५ (देखो पृष्ठ १६६)
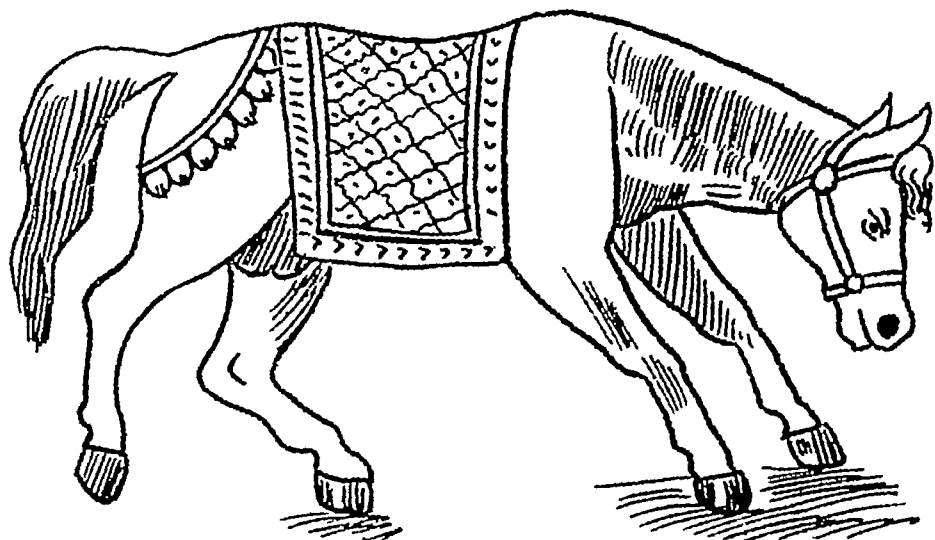
सनंद शूल घोड़ा नंबर १३६ (देखो पृष्ठ १६७)
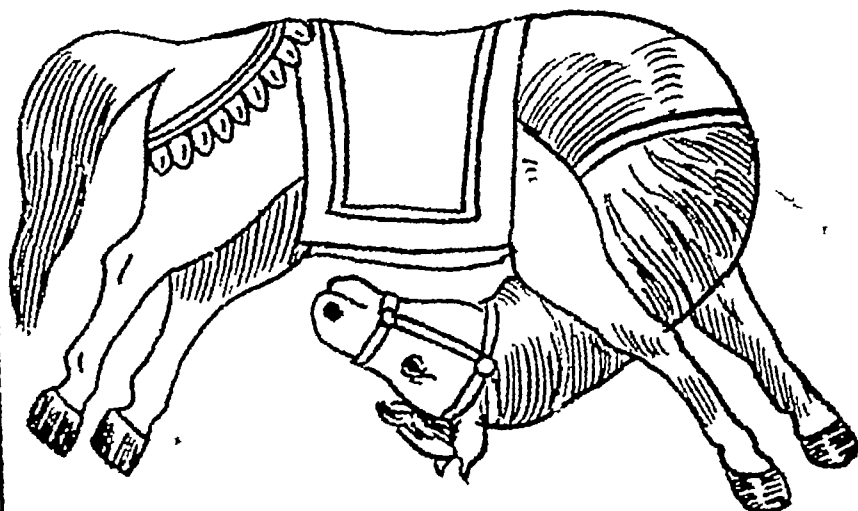
विंबशूल घोड़ा नंबर १३७ (देखो पृष्ठ १६८)
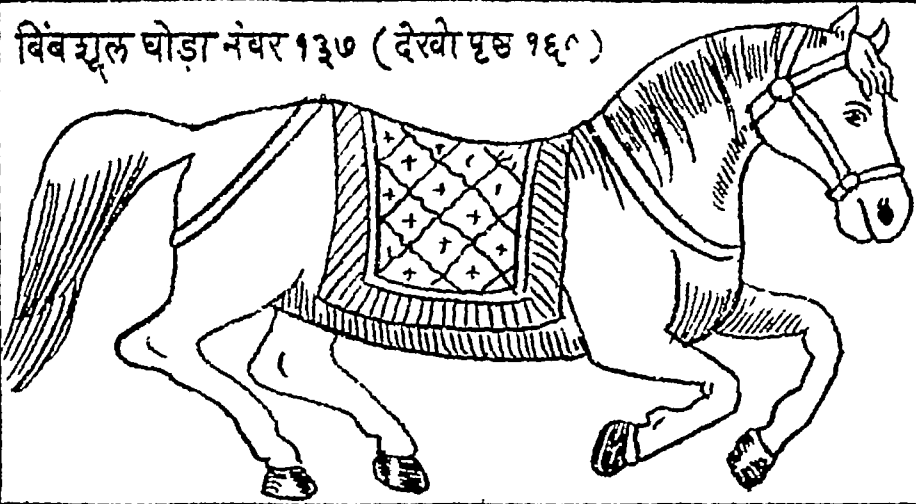
झलदशूल घोड़ा नंबर १३८ (देखो पृष्ठ १६८)
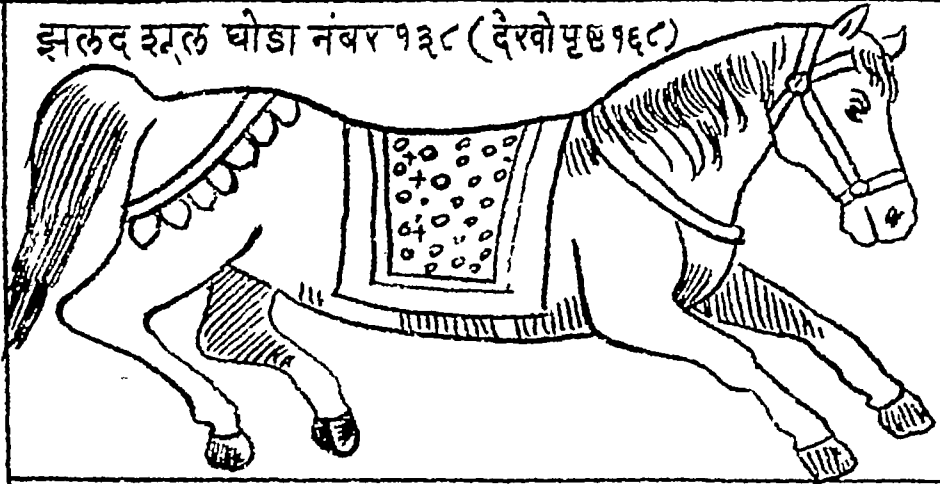
गजशूल घोड़ा नंबर १३९ (देखो पृष्ठ १६८)

राकस शूल घोडा नंबर १४० (देखो पृ १६८)
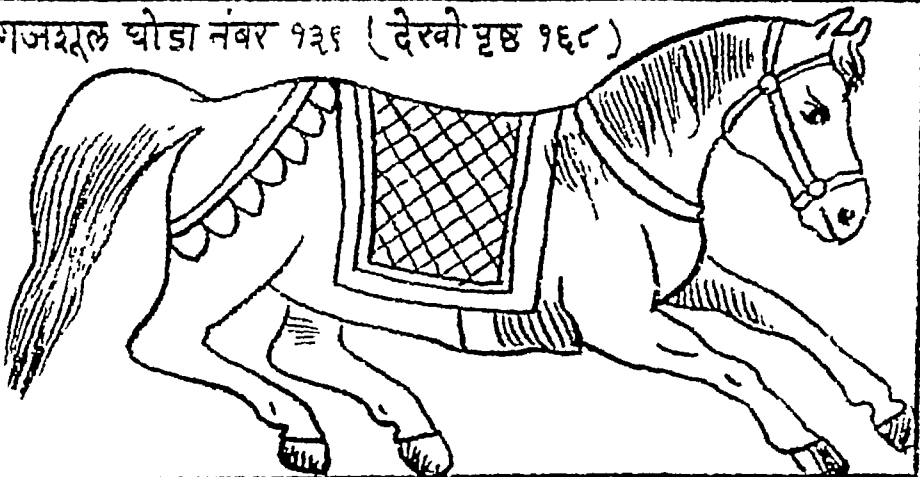
झीलप्रवर्ति शूल घोडा नंबर १४१ (दे. पृ १६९)

श्रवत शूल घोडा नंबर १४२ (दे. पृ १६९)

क्षुधाव्रत शूल घोडानंबर १४३ (दे पृ १६९)
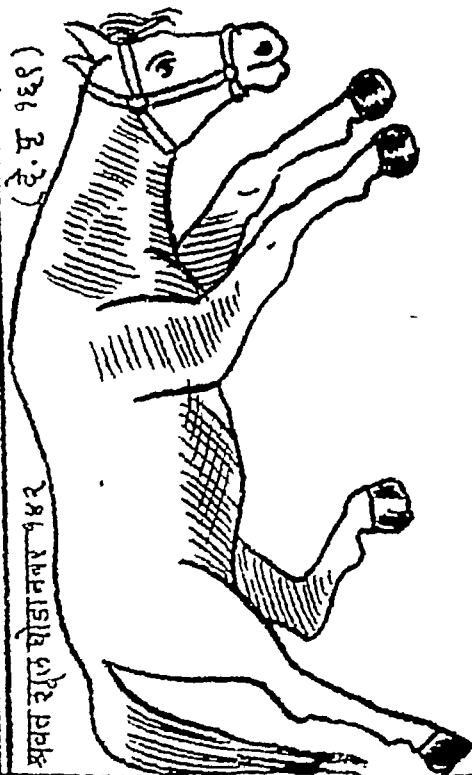
रपड शूल घोड़ा नंबर १४४ (देखो पृष्ठ १६९)
सरवंत शूल घोड़ा नंबर १४५ (देखो पृष्ठ १७०)
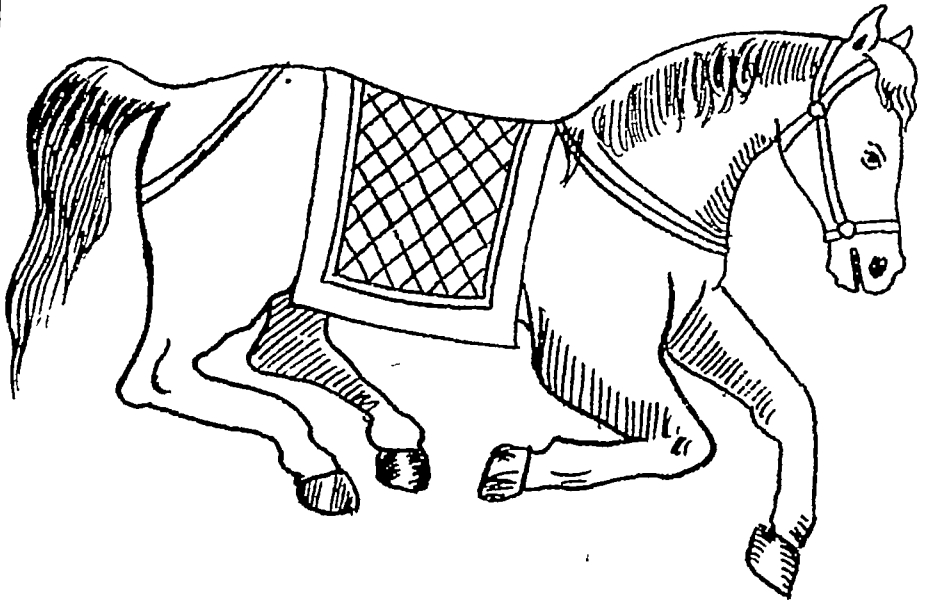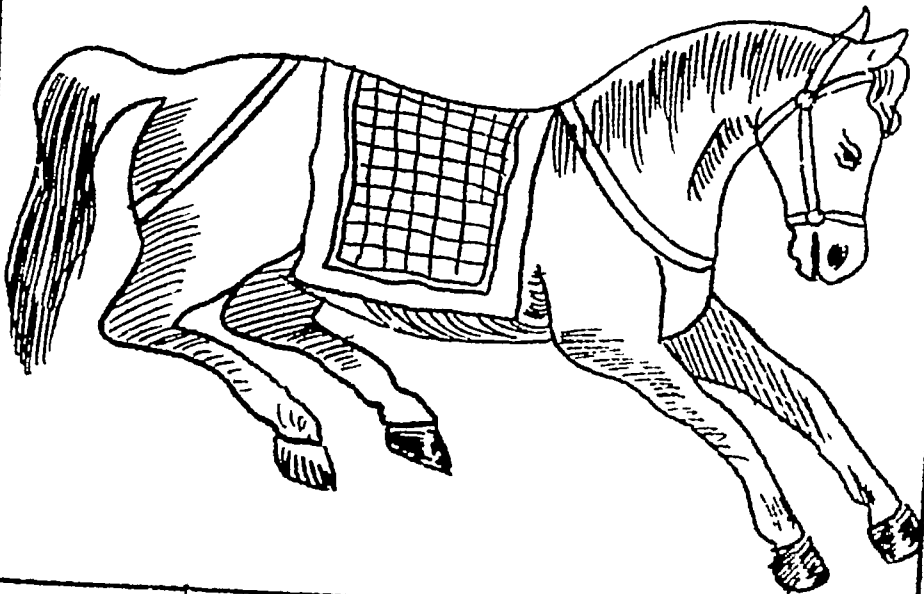
वातोदर शूल घोडा नंबर १४६ (देखो पृष्ठ १७०)
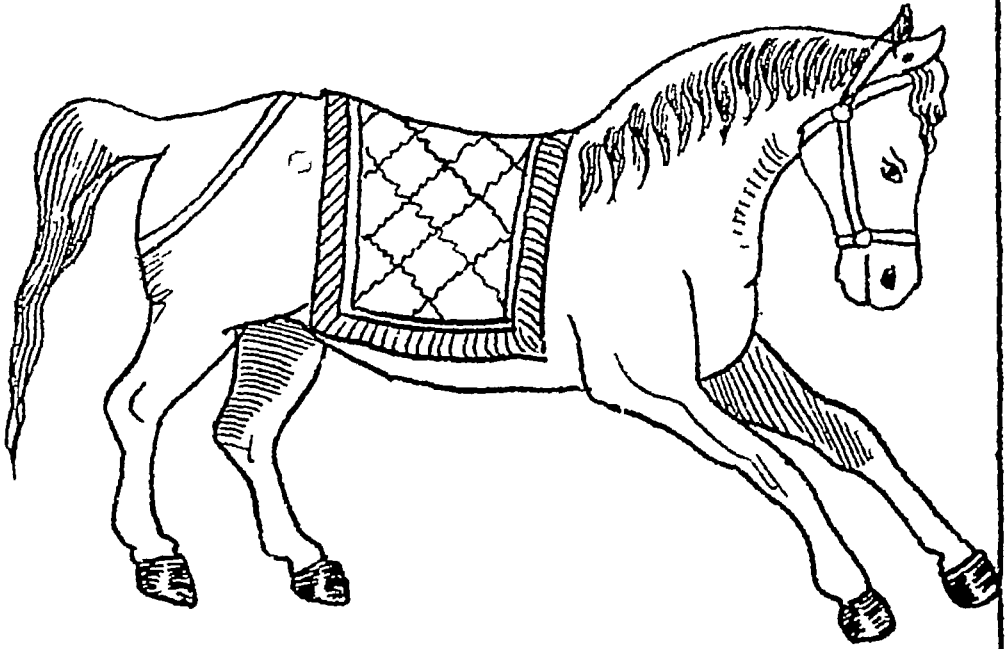
प्रवर्त्ती शूल घोड़ा नंबर १४७ (देखो पृष्ठ १७०)
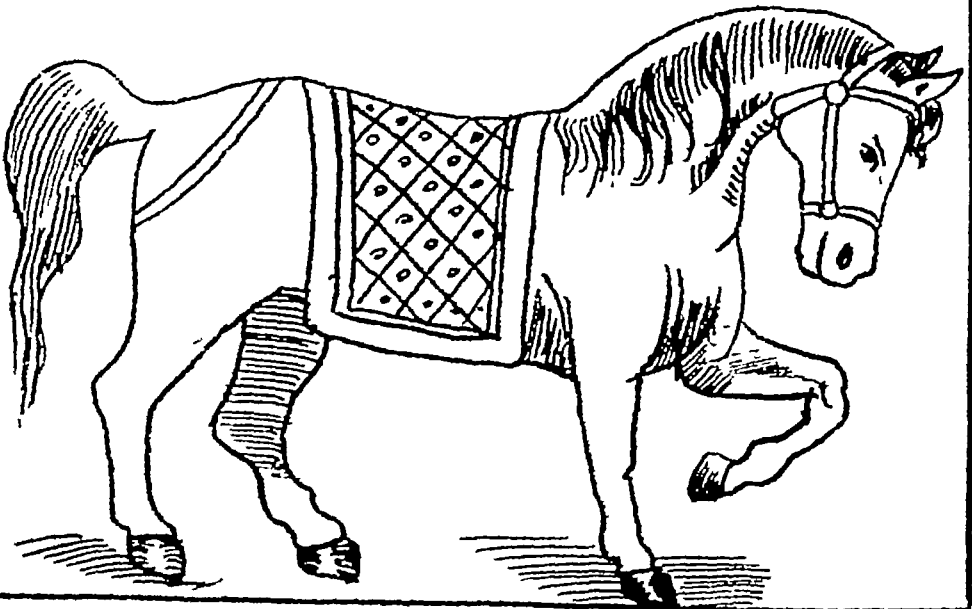
हड्डा घोडा नंबर १४८ (देखो पृष्ठ २७८)
मोतरा घोडा नबर १४९ (देखो पृष्ठ-२८१)
वैजा मोतरा घोडा नबर १५० (दे पृ २८६
गज पैर घोडा नं १५१ (देखो पृष्ठ २८०)
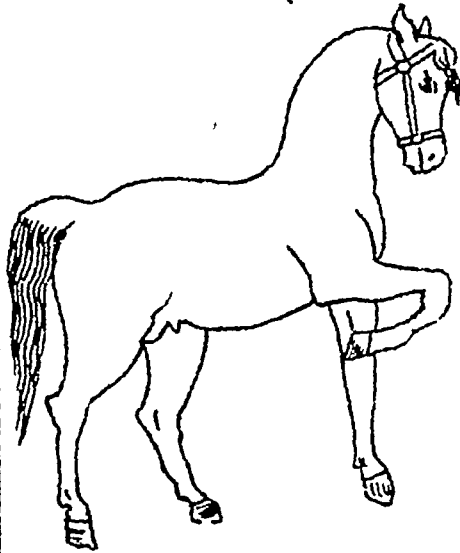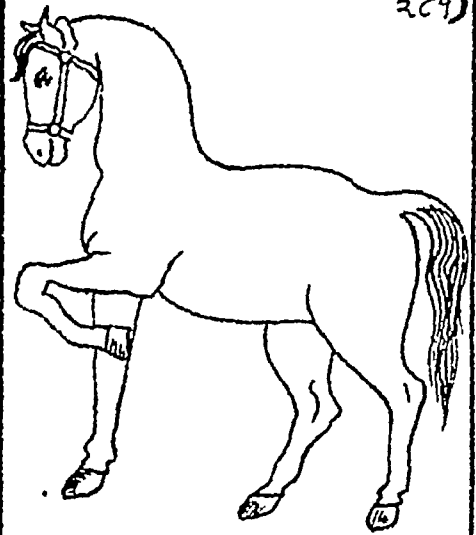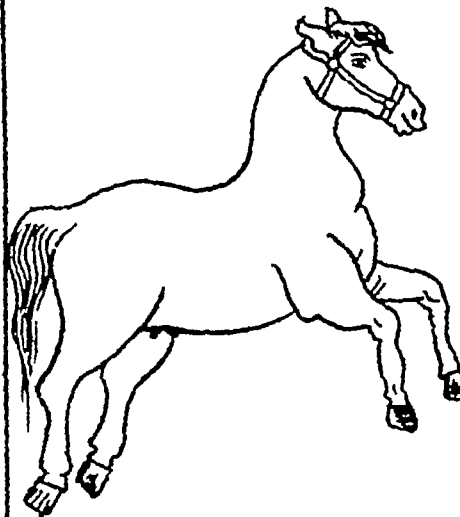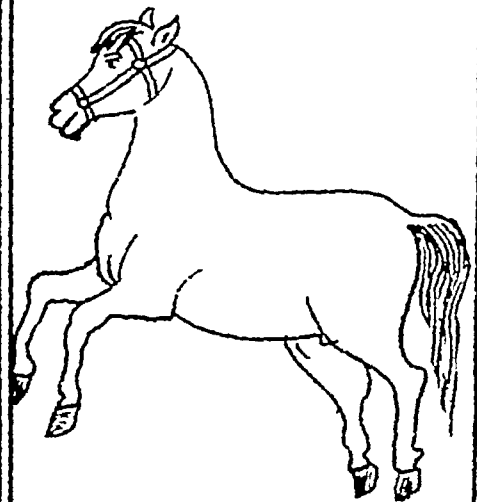
जानुआ घोडा नबर १५२ (देखो पृष्ठ २८८)
बेरहड्डी घोडा नंबर १५३ (देखो पृष्ठ २९०)
जेरवाई घोडा न १५४ (दे. पृ. २९३)
चकावरी घोडा न १५५ (दे. पृ. २९४)
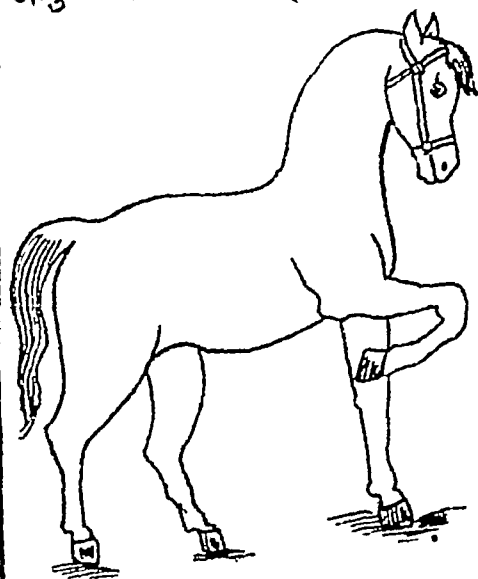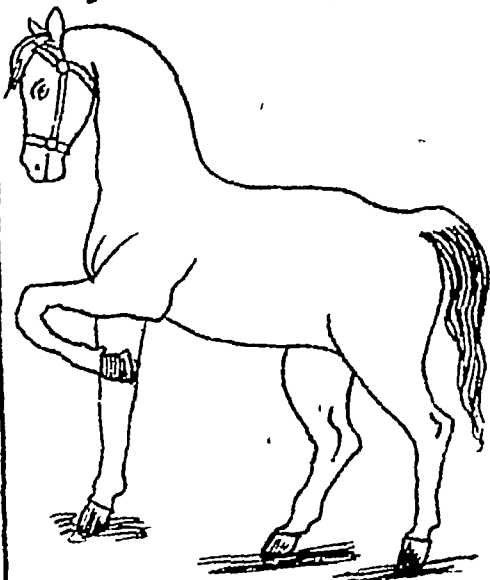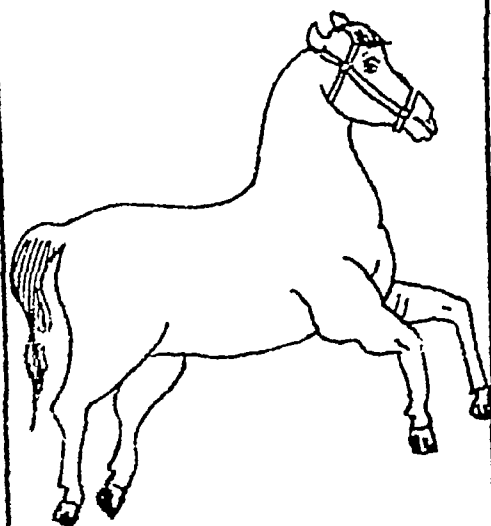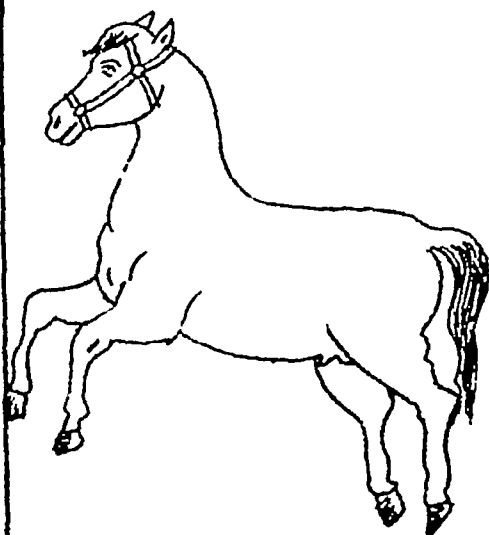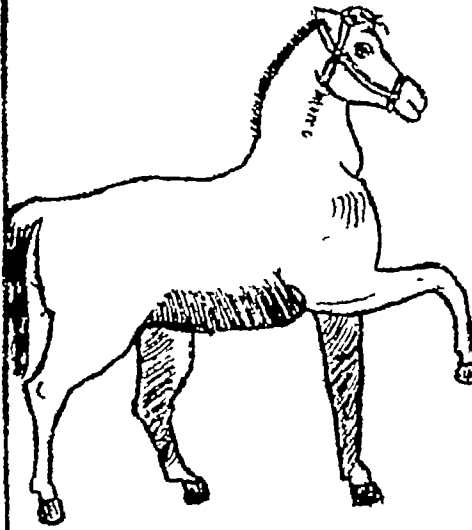
पुस्तक घोड़ा नंबर १५६ (दे पृ-२१५)
गाना रोग घोड़ा नंबर १५७ (दे पृ-२१६)
सुम फाटे घोड़ा नंबर १५८ (दे-पृ २१६)
छाला सुम भीतर घोड़ा नंबर १५९ (दे पृ २१७)
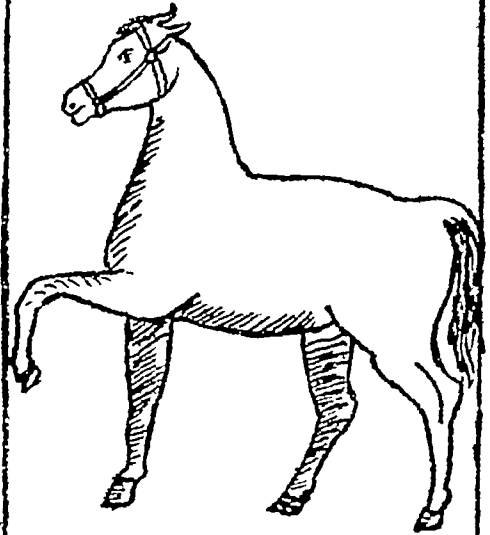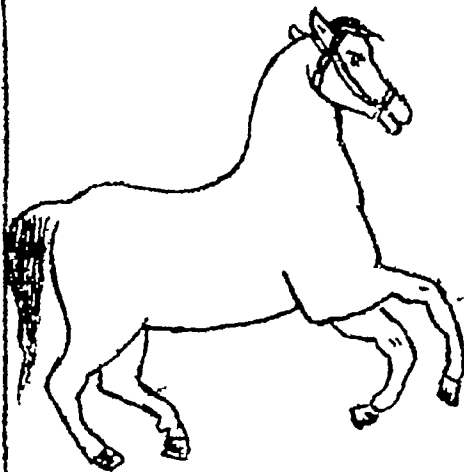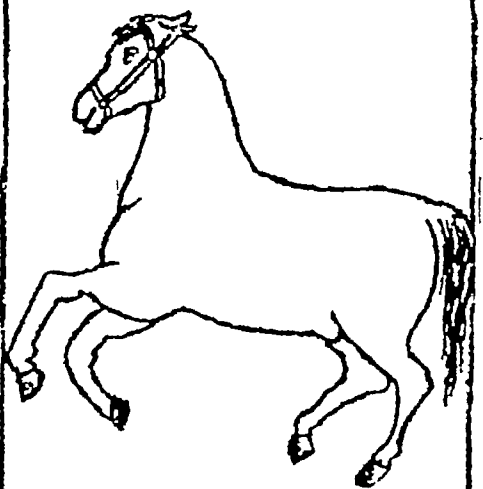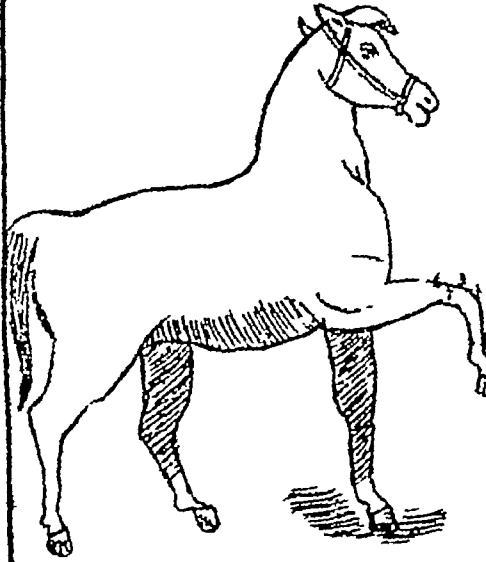
छीवालरोग घोड़ा नं॰ १६० (दे॰ पृ॰ २१७)
मांस वृद्धि घोड़ा नं॰ १६१ (दे॰ पृ॰ २१७)
कफ सीरा घोड़ा नं॰ १६२ (दे॰ पृ॰ २१८)
मधुपंकज रस घोड़ा नं॰ १६३ (दे॰ पृ॰ ३०१)
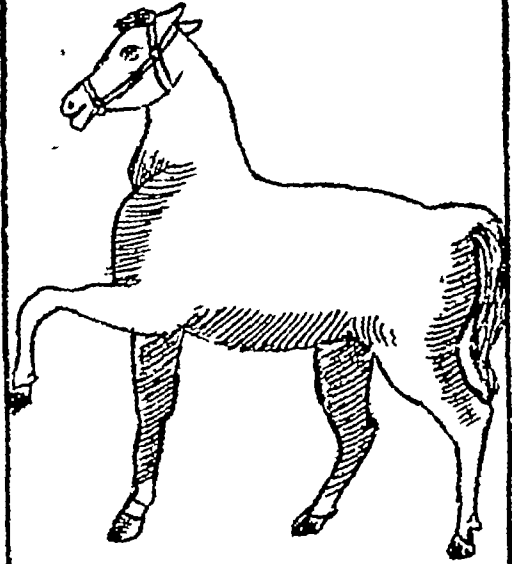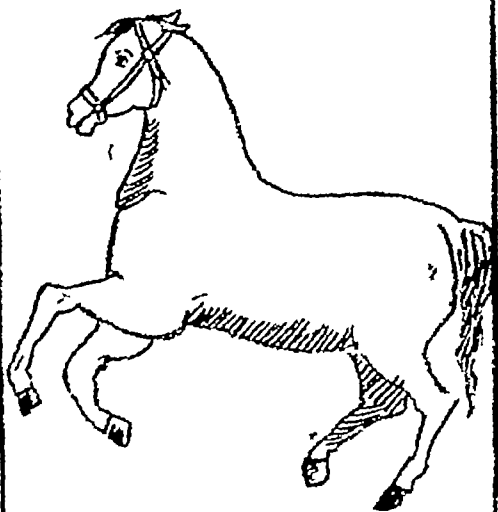
श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

शालहोत्रसंग्रह--प्रारम्भ ।

मंगलाचरण ।

दोहा—सिद्धिकरन अरु दुखदलन, गिरिजातनय गणेश ।
हयचरित्र वर्णन करौं, दाया धरौ हमेश ॥ १ ॥
दुर्गा दुर्गति दुखदलन, भक्तनके सुखहेत ।
दुष्टजननको नाश करि, रचो धर्मश्रुतिसेत ॥ २ ॥
मार्तण्ड ब्रह्मांड यहि, तव प्रताप अधिकार ।
कृपा करौ जन जानि मुहिं, सुमिरौं चरण तुम्हार ॥ ३ ॥
कीन्ह रजोगुण सृष्टि सब, रचना रची अपार ।
चतुराननकी बन्दना, हृदय चरण धरि सार ॥ ४ ॥
तमोगुणी अवतार है, महादेव जगदीश ।
तव चरणनकी बन्दना, नाइ धरणि धरि शीश ॥ ५ ॥
सतोगुणी जो रूप हरि, पालन करन अनन्द ।
तिहि चरणनको ध्यान धरि, वर्णत चेतन चन्द ॥ ६ ॥

कवित्त गंगाजीका ।

निकसि कमंडलुसों नभ सोर लोकनमें, धारा बाँधि छूटीं शिवजटनमें हितै हितै ॥ जाके गुण गावत हैं शारद रु सिद्धि सबै, महिमा अपार सुर ध्यावत नितै नितै ॥ भनत (कवि) निधान गंग तेरही तरंगनसों, भाजत मतंग पाप हेरत इतै इतै ॥ यम आगे दूत रोवैं दूत आगे यम रोवैं, चित्र औ गुपित्त रोवैं कागज चितै चितै ॥ १ ॥

दोहा–सकल सुरनपद वंदिकै, वरणौं अश्वचरित्र ।
कृपा करो जन जानि मोहिं, भाषौं ग्रंथ विचित्र ॥ १ ॥
अवध राजधानी जहाँ, शहर लखनऊ जान ।
ताके पश्चिम जानियो, सोरह कोश प्रमान ॥ २ ॥
जिला लिखौं उन्नावँको, मियागंजके पास ।
आसीवनको परगना, ताहीमें मम बास ॥ ३ ॥

छंद–वैश्य वर्ण गोपनको ग्रामा तीयारि नाम कहायो ।
केशवसिंह तहाँके बासी जिन यह ग्रन्थ बनायो ॥
शालहोत्रसंग्रह करि बहुमत अश्वनको सुखदाई ।
देव पितृ सुरगुरु भूसुर जो सबके चरण मनाई ॥
संवत उनइससै पैंतीसा (१९३५) नौमी तिथि मधमासा ।
जो यह ग्रंथ लिखी विधि करि है अश्वनको दुख नासा ॥

दोहा–पाण्डवसुत कुलकमलरवि, धर्मात्मा धर्मज्ञ ।
सत्यसिंधु धीरज धुरी, राज युधिष्ठिर सज्ञ ॥ १ ॥
भीमसेन अर्जुन अनुज, अरु सहदेव सुजान ।
नकुल स्वकुलभूषण सकल, तुरँग तत्त्व गुरु ज्ञान ॥ २ ॥

ग्रन्थ देखि बहु मुनिनके, कीन्हों नकुल विचार ।
शालहोत्र मत समझिकै, रचना रची अपार ॥ ३ ॥
शालहोत्र पांडवसुवन, प्रथमै रचि सुखकन्द ।
ताहीके अनुसारते, ग्रन्थ बने बहु वृन्द ॥ ४ ॥
सतयुग त्रेता द्वापरे, कलियुग युग सब योग ।
ताहीमें भाषा रची, जो पहिचानैं लोग ॥ ५ ॥
विजयकरण आनँदभरण, गावत चारौ वेद ।
नकुल कहैं सहदेवसों, रविवाहनको भेद ॥ ६ ॥
विविधग्रन्थ अवलोकिकै, और कविन मत जानि ।
केशव यह संग्रह रची, जो तुरगन-सुखदानि ॥ ७ ॥

अथ अश्वोत्पत्तिवर्णन ।

अश्वाऋषिके सुवन इक, शालहोत्र तिहि नाम ।
तिनके चरण कमलद्युति, कविजन करैं प्रणाम ॥ १ ॥
ऋषि कीन्हों आरम्भ मख, होमधूम रह छाय ।
लागो लोचन ऋषिहिके, सलिलवुन्द परे आय ॥ २ ॥
वामनेत्रते अश्विनी, दहिने भयो तुरंग ।
भाष्यो ऋषि तब सुवनसों, हयको करौ प्रसंग ॥ ३ ॥

अथ यज्ञशाला । देखो चित्र नंबर १.

दोहा–शालहोत्र कह तातसों, अशुपति करौं विचार ।
बाजीके गुण दोष कछु, भाषौं मति–अनुसार ॥ १ ॥
नमो निरंजन देवगुरु, मारतंड ब्रह्मंड ।
रोगहरण आनँदकरण, सुखदायक जगपिंड ॥ २ ॥

छंद-बाजी समक्ष मनहरन वेश । श्रीजियकरता राजै हमेश ।
लखिकै भाष्यो यह देवराइ। किहि विधि ये बाहन होइँ आइ॥
यह दिगिशनसों भाष्यों सुरेश । याको उपाइ कहिये सुवेश ।
सब दिगईशन यह विनय कीन। ऋषि शालहोत्र यामैं प्रवीन॥
दोहा-शालहोत्रके पास चलि, विनय करौ बहुभाव ।
शालहोत्रकी बिन कृपा, नाहिंन और उपाव ॥ १ ॥
सब विधि जीमों ठीक दै, लै दिगीश सब साथ ।
शालहोत्रके आश्रमहि, गये सबै सुरनाथ ॥ २ ॥

अथ आश्रमवर्णन । देखो चित्र नंबर २.

छंद-जहँ वेद घोष निज पाप हरैं। शुक सारिकादि मुख कहत ररैं।
पिक हंस सारसन वाद परै । मतद्वैत भेद निर्वेद करै ॥
स०-बाघ बछानिको गाय जियावत, बाघिनियें सुरभी सुत चोषै।
न्योरनको सहरावत सांप, अहारनि देवै उन्हें प्रतिपोषै ॥
व्याधके थानहिमें सुनिये, अपलोकवसै जलकुण्डनि चोषै ।
नैनानि रागमई पिकके अब, विग्रह वैर शरीरके धोषै ॥
दोहा-एक एकते सरस सब, तप पवित्र अवतार ।
शालहोत्र मुनि तिनविषै, जनु दूजो करतार ॥ १ ॥
वेदी वृक्ष अशोकतर, कुशको आसन चारु ।
शालहोत्र मुनि ताहिपर, बैठे तप अवतारु ॥ २ ॥
चारों ओर ऋषीश सब, दंड कमण्डलु चार ।
आनि सतोगुणको बस्यो, सुख पावत परिवार॥ ३ ॥
अतिदुर्बल तनुहू बढ़ो, झलक पुंज परकास ।
सेवन हित जनु व्रतन मिलि, करचो शरीरनिवास ॥ ४ ॥

त्रि०छं०—सन्मुख तब आयो क्षिति शिर नायो टेर सुनायो करजोरे।
मुनि सुरपति जान्यो उठि सन्मान्यो गुणन बखान्यो मनभोरे॥
सादर उर लायो आसन आयो बैठायो सुखमानि सही।
हँसिकै मुनि बूझी प्रेम अरूझी तपबल सूझी कुशल कही॥
दोहा—सकल सुरन शिर मुकुटमणि, मिलत बोध सरसाति।
चरणकमल मुकुतावली, लखत नखनकी पाँति॥ १॥
मुनि भाष्यो मैं धन्य भो, त्रिभुवनमें यशवंत।
आये मो गृह देवपति, करिकै कृपा अनंत॥ २॥
ह०गी०—भाष्यो ऋषीश सुरेशसो तुम तौ सदा सुखसौं रहौ।
केहि हेतु आयो एहि थल अभिलाष सब जियकी कहौ॥
अति कुल तुरंगनको उड़ै बहु पवनते किहि विधि धरौं।
अब आप कहहु उपाइ जातें पकरि मैं बाहन करौं॥
दोहा—यहि उपायके करनको, और न आप समान।
ताते मुनिवर करि कृपा, देहु यहै वरदान॥ १॥
तो०छं०—मुनि शक्र ओर निहारि। दिय मन्त्र शास्त्र विचारि।
हिय काजुभो अवगक्ष। काटिहौं तुरंगन पक्ष॥
मनको मनोरथ पाइ। चलिकै शचीपति राइ।
सगरे तुरंगम डाटि। सब पक्ष डारें काटि॥
छं०रो०—कटे पक्ष व्याकुल अतिबाजी पीडित वचन पुकारैं।
चलै पगनते शोणितधारा लखि लखि धीर न धारैं॥
सुन्यो ऋषीश्वर शालहोत्रके मत मघवा पर खोये।
तब तुरंग घायल हो मुनिके द्वार जाइकै रोये॥
नाहिं कीन्हा अपराध कछू हम निशिदिन दूब अहारी।
बास करैं निरजन जंगलमें विहरें व्योम-विहारी॥

तुम सर्वज्ञ सदा सम देखो सबहीको हरषायो ।
अय मुनि करुणाकर किहि कारण हमै विपक्ष करायो॥
किहि कारण यह दशा कराई हम सगरे निर्दोषी ।
दयासिंधु मुनि सुनिये अरजी को हमको अब पोषी ॥
काँपै तनु घायनकी पीडा व्याकुलता सरसाई ।
तुम गुणसागर बिन त्रिभुवनमें को अब हमै जिआई ॥
तो.छं.-अरजी सुनिकै मुनि बात कही।सब वाजिनके हिय चित्त चही
तुम्हरे तनुके क्षत नीक करौं। अरु औरहु रोग अनेक हरौं॥
दोहा-देव अदेव नृदेव अरु, धनी त्रिलोकी माहि ।
तिनके बाहन होहुगे, रहियो सुखसों चाहि ॥ १ ॥
जे तुमपर करिहैं सदा, अतिसनेह महिपाल ।
तिनके लक्ष्मी गृह बसे, होइ शत्रु-उर-शाल ॥ २ ॥
जो पौषै तव गातको, सुरसमाज चितचाहि ।
ताहि डरैं दिगपाल सब, अपर शत्रु को आहि ॥ ३ ॥
दै वरदान तुरीनको, बिदा कियो मुनिराइ ।
किहि विधि ये सुखसों रहैं, करौ सुतासु उपाइ ॥ ४ ॥
जिहि प्रकार बाजी सबै, निशिदिन रहैं अरोग ।
करौ चिकित्सा याहि विधि, करैं सदा सुखभोग ॥ ५ ॥
प० छ०-तब शालहोत्र संकल्प कीन।सोरहसहस्र अरु काण्ड तीन।
सोई लखिकै श्रीधर सुपन्थ।भाषा भाष्यो सो रुचिर ग्रन्थ॥
दोहा-शालहोत्रकी प्रतिज्ञा, हरिकुलको सुखदानि ।
शालहोत्रकी कृपाते, श्रीधर कह्यो बखानि ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत पचदेववन्दना अश्वऋषि यज्ञ अश्वधरा अवतरणकथन नामक प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

अथ उत्तरायण वा दाक्षिणायन फल ।

दोहा–उतरायण शुभ फल कहौ, दक्षिण मधयम जानि ।
ताहूमें श्रावण विषे, महानिषिद्ध बखानि ॥ १ ॥
उतरायणमों रातिको, वाजी जन्म जु होय ।
रातिकेर जस फल अहै, ताते दूनो जोय ॥ २ ॥
उतरायणमें दिन विषे, बडवा जासु बियानि ।
जैस दोष दिनको कहो, ताते थोरा जानि ॥ ३ ॥

उसकी शांति ।

दोहा--आहुति दीजै व्याहृतिन, सुतौ एकसौ आठ ।
अरु कीजै दश बार फिरि, सहस्रशीर्षा पाठ ॥

अथ दक्षिणायन विचार ।

दोहा--दछिनायनमें दिन विषे, जन्मै घोडी जासु ।
निशिमां जैसा फल कहा, आधा जानौ तासु ॥ १ ॥
दिनमें दूनो दोष है, जैसा दिनको आहि ।
शांती कीजिय तासुकी, दिनकी जैसि कहाहि ॥ २ ॥
फिरि व्याहृतिको होम करि, करै एक गोदान ।
दोष मिटै सब ताहिते, जानौ बात प्रमान ॥ ३ ॥

अथ अमावसका दोष ।

दोहा--जौन अमावस तिथि विषे, निशिमों घोड़ि बिआइ ।
तासु फलाफल कछु नहीं, शालहोत्र मत आइ ॥ १ ॥
उतरायण मावस विषे, निशिमें घोड़ि बिआइ ।
तासु फलाफल कछु नहीं, शालहोत्र मतआइ ॥ २ ॥
चौ०–तिथि मावस उतरायन होई । दिनमें जन्मी घोड़ी सोई ॥
दिनमें शांति कही है जैसी । शांति कीजिये ताकी तैसी ॥

अथ दक्षिणायन अमावसका दोष ।

सोरठा—बडवा होइ बियानि, तिथि मावसकी रातिमें ।
पुनि दछिनायन जानि, दोष होय दिनके समय ॥
दोहा—शांति कीजिये तासुकी, जैसी दिनकी जानि ।
ऐसो योगहि दिन विषे, बडवा होइ बियानि ॥

उसकी शांति ।

दोहा—यम कुबेरको मंत्र जपि, होम करै सुखदाइ ।
और कही जस शांति है, दिनकी देहु कराइ ॥

अथ श्रावणका फल ।

दोहा—श्रावणके महिना विषे, घोड़ी होइ बिआनि ।
निधन करै निजस्वामिको, धनकी हानि बखानि ॥

उसकी शांति ।

दोहा—श्रावणमें जो रातिको, जन्म घोडिका होइ ।
सहित वछेरा विप्रको, घोड़ी दीजै सोइ ॥ १ ॥
श्रावण महिना दिन विषे, कोइ पहर जो होइ ।
सबै दिगीशन कोपसों, जानि लेहु जिय सोइ ॥ २ ॥

उसकी शांति ।

दोहा—दिगपालनके मंत्र जे, पृथक् पृथक् जपवाइ ।
अरु व्याहृतियुत होम करि, दुइ गोदान कराइ ॥ १ ॥
और शांति दिनकी कही, जैसी दिनकी आइ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, सबै दोष मिटि जाइ ॥ २ ॥
शांति करैकी स्वामिको, जो सामर्थ्य न होइ ।
यथाशक्ति करि दीजिये, दान विप्रको सोइ ॥ ३ ॥

घोड़ी देवेको लिखी, तहां बछेरा युक्त ।
होय नहीं सामर्थ्य जो, तौ कीजै यह युक्ति ॥ ४ ॥
करै एक गोदान सो, उत्तम विप्र बुलाय ।
यथाशक्ति कछु दीजिये, अन्नदान करवाय ॥ ५ ॥
श्रावण महिना माहिमें, सूर्य कर्कके होय ।
तिथिहि अमावस जो अहै, ऐसो दिन है जोय ॥ ६ ॥
यही योगमें दिन विषे, पहर तीसरो होइ ।
घोड़ी जन्मै पुत्रको, तासु शांति नहिं कोइ ॥ ७ ॥
जाकी घोड़ी होय वह, दोष ताहि अस होइ ।
धन दारायुत पुत्रको, नाश करैगो सोइ ॥ ८ ॥

अथ रात्रिजन्मका फल ।

दोहा--निशामांहि पहिले पहर, बडवा जासु बिआइ ।
शत्रु न जीवे ताहिको, फल यह ताको आइ ॥ १ ॥
ताके होत तुरंग बहु, नितप्रति सुख अधिकाइ ।
निश्चय जानो बात यह, कृपा शक्रकी आइ ॥ २ ॥
पहर दूसरे रात्रिको, घोड़ी बच्चा देइ ।
घोड़ी है जेहि पुरुषकी, जीति शत्रु सो लेइ ॥ ३ ॥
धन अति बाढ़ै ताहिके, जाकी घोड़ी होइ ।
संवतसरके भीतरै, पुत्र तासुके होइ ॥ ४ ॥
सोरठा-पहर तीसरे माहिं, बडवा जन्मै पुत्रको ।
जाकी घोड़ी आहि, होइ तासुके धान्य बहु ॥
दोहा--जानौ चौथे यामको, घोड़ी जासु बिआइ ।
गो अरु महिषी ताहिके, नितप्रति अति अधिकाइ ॥

अथ दिवसका फल ।

दोहा--दिनके पहले पहरमें, बडवा होइ बिआनि ।
ताको मध्यम दोष है, कहत सबै गुणखानि ॥

उसकी शांति ।

दोहा-सुरभी एक मँगाइकै, बोलि विप्रको देइ ।
दोष जाइ मिटि ताहिको, जो यह विधि करि लेइ ॥ १ ॥
घोड़ी पहिले यामसें, जन्मै बच्चा जौन ।
काटै दहिने कानको, कछुक थोर बुधिभौन ॥ २ ॥
होइ बछेरी तौन जौ, बायें कानहि माहिं ।
कछु थोरोसो चीरिये, तहूं दोष मिटि जाहिं ॥ ३ ॥
पहर दूसरे जाहिके, वडवा होइ बिआनि ।
जानौ ताके भ्रातृकी, मृत्यु पहूंची आनि ॥ ४ ॥

उसकी शांति ।

दोहा-निरतदेवके कोपते, ऐस उपद्रव होइ ।
निरतिऋचाको होम जप, दश हजार करिदेइ ॥
चौपाइ-सहसमूर्ति शिवकी पुजवावे । देइ दक्षिणा विप्र जिमावे ॥
और करै दुइ गाइन दाना । तब तौ दोष मिटै विधि नाना ॥
सोरठा-घोड़ी जासु बिआइ, पहर तीसरे दिवसके ।
ताको फल अस आइ, निश्चय जानौ बात यह ॥
दोहा-घोड़ी है जिहि पुरुषकी, नाश तासु जिय होइ ।
कीतौ ताके पुत्रको, नाश सहीते जोइ ॥

उसकी शांति ।

दोहा-पहर तीसरे माहिमें, घोड़ी जासु बिआनि ।
तापर जानो कोप यम, अरु सूरजको आनि ॥ १ ॥

यम अरु सूरजमन्त्रको, अयुत अयुत जपवाइ।
फेरि पूजि यमदेवको, दीजै होम कराइ ॥ २ ॥
अरु सूरजको पूजिये, ब्राह्मण देइ जेंवाइ।
यथाशक्ति सो दान करि, सकल दोष नशि जाइ ॥ ३ ॥
चौपाई—वेदपात्र विप्रहि बुलवावै। दश हजार पारथी पुजावै ॥
ताहि सुवर्ण दक्षिणा देई। शांति पढ़ाइ तासुते लेई ॥

अन्य शांतिविधि।

दोहा—मृत्युंजयको होम जप, शिव मूरति पुजवाइ।
देइ जेंवाइ विप्र बहु, औरौ यह विधि आइ ॥ १ ॥
घोड़ी बच्चासहित वह, नहिं देखै निजनैन।
दीजै काहू विप्रको, कहिकै केवल बैन ॥ २ ॥
दिनके चौथे याममें, वडवा जासु बिआय।
त्रिया मरै ताकी सही, धन स्वाहा ह्वै जाय ॥ ३ ॥

उसकी शांति।

दोहा—जानौ कोप जलेशको, तासु ऋचा जपवाइ।
पूजा कीजै वरुणकी, ब्राह्मण देइ खवाइ ॥ १ ॥
घोड़ी जौन बियानि है, ता बच्चायुत खोलि।
और कछू धन धान्य युत, दीजै ब्राह्मण बोलि ॥ २ ॥
और करै गोदान यक, सबै दोष मिटिजाइ।
शालहोत्र मुनि यों कह्यो, या विन कुशल न आइ ॥ ३ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहकेशवसिंहकृतवाजिजन्मशुभाऽशुभशांतिकथन नाम द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

अथ घोडीके प्रसव समयमें बछरेके रखनेकी विधि ।

दोहा–घोड़ी करे प्रसवको, समय आनि जब होइ ।
तबहीं या विधिसों करै, वर्णत हौं अब सोइ ॥ १ ॥
बच्चा निकसै पेटसों, कम्मर पर ले लेइ ।
लिये ताहि ठाढो रहे, भूमि न आवन देइ ॥ २ ॥
घोड़ी ताके तनुहिको, लेट चाटि सब लेइ ।
लिये रहै तेहि ऊपरै, तौलौं भुइँ नहिं देइ ॥ ३ ॥
होइ बछेरा जलद अति, पवन समान उड़ाइ ।
रोग होइ नहिं देह तेहि, ऐसी विधि यह आइ ॥ ४ ॥
यहि विधिमें यक खौफ है, देइ बछेरा छोड़ि ।
तेहि विधि दूसरि कहौं, जानि लेहु मतिजोड़ि ॥ ५ ॥
जो यह विधि नहिं है सके, तौ यह यत्न करेइ ।
धरामाहिं नहिं आवई, थाँभि ऊपरैं लेइ ॥ ६ ॥
की कमरी की घासपर, बच्चाको धरि देइ ।
लेट ताहिकी देहको, चाटि घोड़िका लेइ ॥ ७ ॥
देहमाहिं रहिजाय जो, पोंछिलेइ निज हाथ ।
लेट रहन नहिं दीजिये, यह भाष्यो मुनिनाथ ॥ ८ ॥
ठाढ़ो बच्चा होय जब, धरामाहिं निज पाँय ।
तब तौ ताको दोष नहिं, भूमि विषे जो जाय ॥ ९ ॥
तबहूँ होय चलाक यह, पै तासम नाहिं होय ।
ये दुइ विधिको छोडिकै, नीकी विधि नहिं कोय ॥ १० ॥
बच्चा निकसत पेटसों, जब आधा दरशाय ।
अवसर की उठिकै तबै, घोड़ि ठाढ़ि होजाय ॥ ११ ॥

गिरत बछेरा भूमिपर, तासु ऐसि गति होय।
झटका लागत कमरमें, याती कमरी जोय ॥ १२ ॥
बच्चा ओदो लेटसों, भूमि परश तेहि होय।
धीम होत है ताहि ते, कहत सयाने लोय ॥ १३ ॥
यासे औरौ कहत हौं, यत्न एक परमान।
बच्चा जननेके समय, कीजै यहै विधान ॥ १४ ॥
कमरी एक मँगाइकै, चारौ कोन पसारि।
बच्चा जब निकरन लगै, उपरै लेवै धारि ॥ १५ ॥

अथ खूझा निकालनेकी विधि।

दोहा–घोड़ीकेरे पेटसों, बच्चा बाहर होइ।
खूझा ताके सुमनसों, काढ़ि डारिये सोइ ॥ १ ॥
खूझा ताको कहत हैं, नीचे सुमके होइ।
सुममें लागो होत है, सुम समान है सोइ ॥ २ ॥
श्वेतरूप सुमके तरे, प्रकट देखाई देत।
सुमके टेढ़े होनको, ताहि जानिये हेत ॥ ३ ॥
जो खूझा नाहिं काढ़िये, औरौ दोष लखाय।
रस गंधादिक रोग जे, होत तुरीके आय ॥ ४ ॥

इति श्रीशालिहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत घोड़ीके प्रसवसमय बछेराकी विधिकथन नाम तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

अथ बच्चेके दूध पिलानेकी विधि।

दोहा–प्रथमै घूंटी देइ करि, पीछे दूध पिआइ।
दोष करत नहिं दूध तब, जानौ सत्य उपाइ ॥

घूँटीविधि ।

दोहा–करुव तेल अतिही खरो, पैसाभरि मँगवाइ ।
नींबपातको अर्क सम, दोऊ लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
तप्त कीजिये अग्निपर, चौथभाग जरिजाइ ।
तेहि उतारि ठंढो करौ, बच्चाहि देउ पिआइ ॥ २ ॥

अन्य विधि ।

दोहा–पैसाभरिकै नींबको, रँगनु लेउ मँगवाइ ।
तिहिको आधो लेउ गुड़, तामें देउ मिलाइ ।

अन्य विधि ।

चौ०–केवल करुवा तेल मँगावे । तुरी बछेरहि आनि पिआवे ।
पीवे दूध रोग नहिं होई । घूँटी तीनि कहीये सोई ॥

अथ बछेरेके स्नानकी विधि ।

दोहा–लेट रहति है देहमें, बाजि बड़ो जब होइ ।
होत खोरस्ति सु ताहिके, सही जानियो सोइ ॥ १ ॥
जबहिं बछेराके बदन, लेट सूखि सब जाइ ।
तप्त जलहि करवाइके, देहु ताहि अन्हवाइ ॥ २ ॥

जो घोडी बच्चेको छोड दे तो उसके ले लेनेकी विधि ।

दोहा–लोनु लहौरी लेइकरि, ता सम खैरु मिलाइ ।
बच्चाकेरी पीठिपर, दीजै ताहि मलाइ ॥ १ ॥
ताहि चटावैं घोड़ि वह, बच्चाको लैलेइ ।
जो यहि विधि ते लेइ नहिं, तौ यह विधि करि देइ॥२॥

अन्य विधि ।

दोहा–घोडीको ठाढ़ी करै, बंधन देइ छँड़ाइ ।
ताके सम्मुहे दूरि कछु,बच्चाको ठडिहाइ ॥

सोरठा–श्वान एक अँगवाइ, बच्चाकेरी पीठिपर।
दीजै ताहि छँड़ाइ, भाजि चलैं नर होंइ जे॥
दोहा–श्वानहिं काटनको तबै, दौरत घोड़ी आहि।
लेत बछेराको सही, उपजत ममता ताहि॥ १॥
होइ दूध नाहिं घोड़िके, की तौ नहीं बिआइ।
रोग औषधी जहँ कही, तहँ है तासु उपाइ॥ २॥

अथ दूधके अजीर्णकी दवाई।

दोहा–आधा पैसा तौल भरि, अजवाइनिको लाइ।
ताते दूनो लेउ गुड, दूनौ पीसि मिलाइ॥ १॥
होय बछेरा छोट जो, दोइ बखतमहँ सोइ।
नाहिंन यक मौताज है, देत अजीरण खोइ॥ २॥
और अजीरन ओषधी, जेती वर्णी आइ।
कदहि देखि सो दीजिये, तहूं अजीरन जाइ॥ ३॥

अथ दूध पिलानेकी विधि।

दोहा–मास एकको होइ जब, घोड़ीकेर बछेर।
तबै पिआवै दूधको, नहिं कीजै अतिदेर॥ १॥
उत्तम अजया दूध है, मध्यम गऊकी जानि।
और दूध नहिं दीजिये, करत रोग यह मानि॥ २॥
चौपाई–बरतन एक लीजिये ताता। तामैं यह विधि कीजै माता।
सैंधव लोनु धरै बरतनमैं। ऊपर दूध डारिये तामैं॥
वही दूधको देइ पिआई। लोनु बछेरहि देइ चटाई।
सोरठा–खील सोहागा लाइ, दूध धार सँग छोड़िये॥
पियत बछेरा जाइ, करत बहुत गुणको अहै॥ १॥

धेला भरिसे लाइ, पैसा भरि तक दीजिये ।
उमरि देखिकै ताइ, खील सोहागा देहु तेहि ॥ २ ॥

दोहा–दूध पियेते अश्वतनु, होत वात अधिकार ।
दिये सोहागा होत नहिं, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
प्रथमहिं दीजै दूधको, पावसेरसों लाइ ।
फिरि जितना वह पीजिये, वतना देहु पिआइ ॥ २ ॥
जो यतना नहिं दीजिये, जबते दाना खाइ ।
दाना दूध भिगोइ करि, दीजै ताहि खवाइ ॥ ३ ॥
चनाको दाना दूधमें, दीजै ताहि भिगोइ ।
दिनामातु भीजा करै, अश्वहि दीजै सोइ ॥ ४ ॥

अथ मक्खन देनेकी विधि ।

दोहा–दोइ टकाभरि दीजिये, प्रथमहि माखन लाइ ।
दिन दिन ताहि वढ़ाइये, एक सेर लगुजाइ ॥ १ ॥
मक्खन दीजै अश्वको, सैंधव लोन मिलाइ ।
देइ टकाभरि लोनको, मक्खन सेरहि माइ ॥ २ ॥
एक सालभरि अश्वको, माखन देइ खवाइ ।
ताको बल औ पौरुषौ, घटत कबहुँ नहिं आइ ॥ ३ ॥
तुरी दूध जबलौं पियै, कीतों माखन खाइ ।
पैसा भरि अजवाइनिहि, देत निताहि प्राति जाइ ॥ ४ ॥

वछेरेको मुसव्वर देनेकी विधि ।

दोहा–अलुआ मासे दोइलै, दूधमाहिं पकवाइ ।
कद अरु वैस विचारिकै, दीजै ताहि खवाइ ॥ १ ॥

दिये मुसब्बर अश्वको, सगरे रोग नशाइँ।
शरदी बलगम वातते, जनित रोग सब जाइँ॥ २॥
मक्खन पयके दियेसे, जो अवगुण कछु होइ।
दिये मुसब्बर अश्वको, पचत सकल है सोइ॥ ३॥
कद अरु बैस विचारिकै, देइ मुसब्बर ताहि।
कम ज्यादा मौताजसे, करदीजे सो बाहि॥ ४॥
दूध परत जहँ होइ नहिं, शरद मुलक अतिहोइ।
दूनि देइ मौताज यह, मूसब्बरकी सोइ॥ ५॥
होत जनुवाँ नहीं तिहि, सो जानौ मतिवान।
शालहोत्रमत देखिकै, कह्यो सुतौन विधान॥ ६॥

अथ बछेरेकी चौवंदी दागनेकी विधि।

दोहा-मास ग्यारहें ऊपरै, दागिय बाजी सोइ।
तब चौबंदी दागिये, मौसम जाड़ा होइ॥ १॥
दोइ साल पर्यंतलौं, दागत हय सबकोइ।
ताते बढ़िकै वैसमहँ, दागे गुण नहिं होइ॥ २॥
ऊपर आंगुर चारिसों, चारिउ गांठिन माहिं।
रगैं देखाई देतिहैं, तरफ भीतरी आहिं॥ ३॥
तहां दागिये अश्वको, ताते बहु गुण होइ।
दुइदुइं लीकै कीजिये, कहत सयाने लोइ॥ ४॥
और रगैहैं अश्वके, तेऊ दागी जाइ।
ते अब वर्णन करत हौं, ताको गुण दरशाइ॥ ५॥
दाढ़ पिछारी शिरहितर, गर्दनिको जहँ जोर।
रगैं दोइ तहँ होति हैं, तहां दागिये घोर॥ ६॥

शिरके जेते रोग हैं, सो हयके नहिं होइ ।
दागी जाकी रगैं वे, विरले जानत कोइ ॥ ७ ॥
दोऊ तरफन दागिये, पारा करिये चारि ।
आँगुर तीनिके होंय सो, याही भांति विचारि ॥ ८ ॥
दोऊ अगिले भुजनपर, बन्द होंइ तहँ दोइ ।
जहाँ हाड़को जोर है, तहाँ दागिये सोइ ॥ ९ ॥
ताकी छाती भरति नहिं, ये बन्द दागे जाहि ।
दागै पारा चारिकरि, शालहोत्र मत आहि ॥ १० ॥
दोइ बन्द कोखिनविषे, बाज़ीके सो होइ ।
जहँ भौंरी है कोखिकी, ताके पीछे सोइ ॥ ११ ॥
तहाँ दागिये अश्वको, ताको फल अस आइ ॥
होत कुरकुरी ताहि नहिं, उदररोग नशि जाइ ॥ १२ ॥
रगैं चारि औरौ अहैं, बाजी पाइनमाहि ।
होत सुजम्मा ऊपरै, तरफ भीतरी आहि ॥ १३ ॥
मोजाको जो जोर है, तापर जानौ सोइ ।
तहाँ दागिये अश्व जो, यतने रोग न होइ ॥ १४ ॥
पुस्तक और चकावरी, ता हयके नहिं होइ ।
बन्द एक है औरऊ, भाषत हौं अब सोइ ॥ १५ ॥
लिंग अगारी पेट तर, नसैं जौन दरशाइ ।
तहाँ दागिये अश्वको, ताको गुण यह आइ ॥ १६ ॥
अंडकोश ता वाजिके, कबहूँ नहिं घटि जाइ ॥
उतरत नाहिन आँत है, ता बाजीकी आइ ॥ १७ ॥

दागेते इन वदनको, गुणतौ येतें आहिं ।
याते दागत हैं नहीं, अवगुण कुछ दरशाहिं ॥ १८ ॥
रोग होत है वाजिके, कोउ यक ऐसो आइ ।
फस्त खोलना परति है, विना फस्त नाहिं जाइ ॥ १९ ॥
जेती दागी नसै हैं, ते नाहिं खोली जाहिं ।
हठ करिकै जो खोलिये, लोहू निकसत नाहिं ॥ २० ॥
दागत नाहिं सो ताहिते, वाजीको सव कोइ ।
जो कदाचि कोइ दागि है, अवगुण और न सोइ ॥२१॥
चौवंदी जो दाग है, दागौ ताहि जरूर ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानि लेउ जारूर ॥ २२ ॥

अथ वछेरेकी परीक्षा (कैसा घोड़ा होगा यह जाननेकी रीति)

दोहा–कर्ण जासुके लघु लसैं, छाती चौड़ी होइ ।
बीचु जाहिके अधिक है, दुहूँ कानते सोइ ॥ १ ॥
गर्दन लम्बी होइ अरु, चौड़े सुम हैं जाहि ।
कर्ण होइ ढीले नहीं, लम्बो मुख है ताहि ॥ २ ॥
पातर मुखको वा सुछम, आँखि बड़ी जव होइ ।
थुथुनी होइ नुकीलि अरु, बाँसा ऊँच न सोइ ॥ ३ ॥
पूँछ पातरी अश्वकी, गुदा चाकली होइ ।
चढ़िकै जामैं पूँछ अरु, चौड़े पुट्ठन सोइ ॥ ४ ॥
ये लक्षण जामें अहैं, नीक तुरी सो होइ ।
इनते होइ विरुद्ध जो, मध्यम जानौ सोइ ॥ ५ ॥
जा वाजीकी देहमें, ये लक्षण नाहिं आहिं ।
होय नहीं सो नीक वहु, ऐसो जानौ ताहि ॥ ६ ॥

होय गाम्रची छोटि बहु, यहू सुलक्षण होय ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानिलेहु तुम सोय ॥ ७ ॥

अथ बेचढ़े अश्वकी परीक्षा कदम चलेगा कि नही ।

दोहा–अगिलो जाको पग जहाँ, परत धरणिमें सोइ ।
तातें पछिलो बढि परै, कदमबाज सो होइ ॥ १ ॥
पछिले पुट्ठा जाहिके, अति ही उतरे जानि ।
सेर कूंच सो होइ हय, कदमबाज सो मानि ॥ २ ॥

बछेराकी उँचाई यानी कितना ऊँचा होगा ।

दोहा–सुम ऊपरकी टाँकते, चौगुण ताको जान ।
तुरी उँचाई होति है, ताको मनमें मान ॥ १ ॥
या तौ कान प्रमाणको, नव गुण कीजै तात ।
अश्व उँचाई जानिये, सही सही यह बात ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत घोडेके सकल उपचार कथन नामक चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

अथ वाजीवर्णवर्णन ।

दोहा–हय अपार बल सहज ही, जानत सकल जहान ।
तिनमें चारिउ वर्ण हैं, तिनको करौं बयान ॥ १ ॥
अश्व सबै समरत्थ हैं, एकै रूप लखात ।
तिनके लक्षण कहत हौं, जाते जाने जात ॥ २ ॥
वर्ण वर्णके भेदसों, भिन्न भिन्न हय होत ।
कितने पाले देह हैं, कितने रण उद्योत ॥ ३ ॥
तिन अश्वनको जानिकै, वर्ण भेदसों कर्म ।
देश प्रभावहि लखि कछू, कहत यथामति मर्म ॥ ४ ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अरु, शूद्र वर्ण हय जानि ।
तिनके लक्षण कहत हौं, शालहोत्र मत मानि ॥ ५ ॥

अथ ब्राह्मणवर्णलक्षण ।

दोहा—स्वच्छ स्वभाव अनूप छबि, जासु तेज अधिकार ।
जाको देखत मोहिकै, नमित होत संसार ॥ १ ॥
भोजनकी रुचि जासुकी, जलसों नहीं सकाइ ।
अग्निपुंज सम ज्वलित अति, रण देखत ह्वै जाइ ॥२ ॥
अरु प्रतिभटको देखिकै, नहिं भय मानै सोइ ।
सरल सुभाव विवेक अति, जल पीवै मुख धोइ ॥ ३ ॥
पुष्पसमान प्रस्वेद तनु, आवै बासु सुबासु ।
श्वेत रंग है तासुको, ऐन नैन सम जासु ॥ ४ ॥
ताते बार गरीब अति, बड़ो जासुको बोल ।
सूरति प्यारी होय अति, ऐसो अश्व अमोल ॥ ५ ॥
रणमें दगा करै नहीं, क्षतते नहिं अकुलाइ ।
विह्वल भे असवारको, घर हि देहि पहुँचाइ ॥ ६ ॥
हठ पकरे छोड़ै नहीं, डरै न त्रासे त्रास ।
विप्रवर्ण पहिंचानिये, रससों आवै रास ॥ ७ ॥
ते दरियाई बाजि वा, नीलसरोके पार ।
श्वेत रंगके जानिये, होत विशेष अपार ॥ ८ ॥

अथ क्षत्रियवर्णलक्षण ।

दोहा—मानै हारि न नेकहूं, करै विरोध जु कोइ ।
संगरमें लखि शत्रुको, अतिशय क्रोधित होइ ॥ १ ॥
युद्ध समय असवारके, मनके साथ उड़ाइ ।
शत्रु शस्त्र निज स्वामिपर, लागत देइ बचाइ ॥ २ ॥

वारवार मुख शब्दको, ललकारै जनु वीर ।
एकीएका शत्रुको, आवै देइ न तीर ॥ ३ ॥
टापे हींसे बल करै, युद्ध समय उत्साह ।
ऐसो बाजी भाग्य सों, पावत हैं नरनाह ॥ ४ ॥
असवारी प्यारी लगै, निशि बासरमो ताहि ।
बंधन तोरत तासुते, ताको दोष न आहि ॥ ५ ॥
रण देखत परचंड है, पवन समान उड़ाइ ।
अस्त्रचोट मानै नहीं, सम्मुखगोल मझाइ ॥ ६ ॥
अगर समान प्रस्वेद तनु, आवत जाके वासु ।
अथवा और सुगन्धको, तनुते होत प्रकासु ॥ ७ ॥
सहजै चौंकत है नहीं, चहुँदिशि चितवत जाइ ।
गनै नहीं उपवासको, सघन तेज सरसाइ ॥ ८ ॥
सदा क्रोध राखै बहुत, जलदी करै अहार ।
पानी पीवै टापिकै, ऐसो तासु विचार ॥ ९ ॥
वेग तासुके तेज बहु, कदम चलै सुखदाइ ।
बोलत बोल सु लगै इमि, मानौ बाघै आइ ॥ १० ॥
अग्नि पवन अरु तोपसों, नेकौ नहीं सकाइ ।
ऋच्छ बाघ गज देखिकै, सम्मुख ताके जाइ ॥ ११ ॥
मरदानो क्रोधी बड़ो, क्षत्रिय वर्ण जु होइ ।
ताके बल अरु पौरुषे, बाजि न दूजो कोइ ॥ १२ ॥
घोड़ी लखि बोलै नहीं, नाहिंन करै सरार ।
दुइपद ठाढ़ो होइ नहिं, करै न पाँय प्रहार ॥ १३ ॥

अड़ै न काटै भूलिहू, अति गरीब सो होइ ।
रससों रस राखे रहै, क्षत्रिय वाजी सोइ ॥ १४ ॥
रंग कुमैत सो होत है, जानौ ताहि प्रमान ॥
व्योषा ईरानी थवा, ईराकी हय जान ॥ १५ ॥

अथ वैश्यवर्णवाजीवर्णन ।

दोहा–सुरत होइ सिमिटै बहुत, मनमलीन बैजात ॥
तंग कसत तरसत अहै, कांपि उठै सब गात॥ १ ॥
रहे अधीन सवारके, क्रोध करे डारि जाइ ।
भीर देखि झझकै बहुत, डरु मानै अधिकाइ ॥ २ ॥
चाबुक मारे क्रोध करि, तबहिं शीघ्रगति होइ ।
मन कपटी अरु मन्दगति, जानिलेहु यह सोइ ॥ ३ ॥
जलदी चलत न दूरिलौं, कितनौ करै उपाइ ।
अरगा अविआ कदम है, जाको जाति सुभाइ ॥ ४ ॥
दाना नीको होइ जो, तौतौ खाइ अघाइ ।
भोंड़ो छाँड़ै तुरत ही, की थोरो सो खाइ ॥ ५ ॥
रण काचो नाचो फिरै, कीतौ जाइ पराय ।
तेज सहै नहिं तोपको, भयते अति सकुचाइ ॥ ६ ॥
चाह करै घोड़ीनकी, बारबार हिहनाइ ।
मारेते सीधो चलै, मोटी खाल लखाइ ॥ ७ ॥
बासु प्रस्वेदहि घीवसम, कै अजया सम होय ।
की तौ आवै बासु नहिं, जानि लेहु जिय सोय ॥ ८ ॥
जल पीवत है ओंठसों, मोटो होइ शरीर ।
ए लक्षण सब जानियो, वैश्यवर्ण तासीर ॥ ९ ॥

सिरगा रंग विशेषकै, वैश्यअश्वको होय ।
तेपरतीके जानिये, निश्चय करिकै सोय ॥ १० ॥

अथ शूद्रवर्णवाजीवर्णन ।

सोरठा–मलिन रंग है जासु, शूद्र वर्ण सो जानिये ।
तासु प्रस्वेदहि वासु, आवत है सम मीनके ॥
दोहा–खाल जासु मोटी अहै, मोटे हैं सब बार ।
लीदि मूत्र युत थानमें, लोटत बारहिं बार ॥ १ ॥
मंदमंद भोजन करत, झझकै पानी देखि ।
पलकै मोटी होंइ अरु, मुखमें गंधि विशेषि ॥ २ ॥
निपटहि धीमो होइ सो, बोलत बारहि बार ।
बोल न प्यारो तासुको, बहुतै करै सरार ॥ ३ ॥
कहा न करै सवारको, मोटो होइ शरीर ।
लड़ै बहुत घोड़ेनसों, आवन देइ न तीर ॥ ४ ॥
काटै मारै लात अरु, दुइ पग ठाढ़ो होइ ।
करै हरामी बहुत विधि, शूद्र वर्ण हय सोइ ॥ ५ ॥
सोरठा–मारे सीधो होय, करै हरामी फेरि बहु ।
फिरि मारै जो कोय, तौ तौ फिरि सीधो चलै ॥
दोहा–कोई रंग जो देहमें, होइ मलीन विशेषि ।
ते खड़हर मड़वारके, जान्यो मनमें देखि ॥

अथ संकरवर्णवर्णन ।

दोहा–मिलि लक्षण जहँ होति हैं, दोइ वर्णके आनि ।
तिन अश्वनको कहत हौं, संकरवर्ण बखानि ॥
चौपाई–संकर वर्ण होहिं बहुतेरे । ते नहिं वर्णे यामधि घोरे ।
तिनके लक्षण बहुविधि जानौं । तासौं कछु संक्षेप बखानौं ॥

अथ उचित अश्वकथन ।

दोहा–विप्र योग ये चारिहैं, तीनि नराधिप चाहि ।
वैश्य सुखद दोई अहै, शूद्रहि एकहि आहि ॥ १ ॥
कोऊ पंडित कहत हैं, भूपयोग ए चारि ।
वर्ण वर्णके काज सब, भिन्नै भिन्न विचारि ॥ २ ॥

चौ०–मंगलकाजसिद्धि द्विज देई । क्षत्रियजाति विजयरण लेई॥
धनके काज वैश्य चढ़ि जाई । औरे काज शूद्र सुखदाई॥
चारौ वर्ण रहैं ये जाके । संपति भवन तजाति नहिं ताके॥
बहुतक सुख आवैं तिहि पाहीं । देखत शत्रु नाश ह्वै जाहीं॥

दोहा–सब बाजिनमें होत नहिं, सब ए लक्षण आनि ।
एक दोइ जो होइ कछु, लेहु वर्ण पहिचानि ॥ १ ॥
सब देशनमें होत हैं, चारि वर्ण जो आनि ।
जौन देशमें जो कहे, ते विशेष करि मानि ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीवर्णकथन नामक
पंचम अध्याय ॥ ५ ॥

अथ गणविचार ।

दोहा–शुभवाजी अशुभै करै, अशुभ करै शुभ आनि ।
ताको कारण गण अहै, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
सब वाजी हैं तीनि गण, सो अब कहौं बखानि ।
देवतागण मानुष्यगण, अरु राक्षसगण जानि ॥ २ ॥

अथ देवतागण वाजी ।

दोहा–देखत ही मनको हरै, ऐसो रूप ललाम ।
देह धरे है वाजिकी, सोहत मानौ काम ॥ १॥
नमित होहिं सब देखि नर, जानौ सरस सुभाउ ।
अंग सुपुष्टित होइ सम, देवजात परभाउ ॥ २ ॥
भौंरी कही अनिष्ट जो, होइ नहीं ते कोइ ।
जे शुभ लक्षण हैं कहे, तिनयुत वाजी होइ ॥ ३ ॥
दहिने नासा भीतरै, परै भँवरि अरु आनि ।
मिलत भाग्यसों वाजि अस, देव जाति सो जानि ॥४॥
बाँधे हाथी युत्थ सो,अस हय जाके होय ।
होनहार निज स्वामिसों, कहत सयाने लोय ॥ ५ ॥

अथ मनुष्यगण वाजी ।

दोहा–भौंरी दुष्ट अनिष्ट जो, होंय नहीं ते कोइ ।
देखत होय सुहावनो, मानुषगण हय सोइ ॥

अथ राक्षसगण वाजी ।

दोहा–भौंरी परै अनिष्ट कोइ, जा वाजीके आनि ।
और चिह्न सब शुद्ध हैं, रौद्र रूप पुनि जानि ॥ १ ॥
टेढ़ो होइ सुभाव सब, पुष्ट बहुत सो आहि ।
क्षुधा तृषा अधिकार बहु, राक्षसगण कहि ताहि ॥

अथ द्वितीय प्रकार गणविचार ।

दोहा–मनुज राक्षस देवगण, सकल नरनको जानि ।
जाते जाने जाहिं गण, सो अब कहौं बखानि ॥ १ ॥
आदि वर्ण जो नामको, जौन ऋक्षको होइ ।
तौन ऋक्ष जेहि गण विषे, गण है नरको सोइ ॥ २ ॥

अथ राक्षसगण ऋक्षकथन ।

दोहा—चित्रा शतभिष ज्येष्ठा, मघा विशाखा जानि ।
अरु अश्लेषा कृत्तिका, मूल धनिष्ठा मानि ॥ १ ॥
ये नक्षत्र सब जानिये, गण राक्षसके आहि ।
मुनिवर वरणो चाउ करि, जानिलेहु मनमाहि ॥ २ ॥

अथ मनुष्यगण ।

दोहा—तीनों पूर्वा रोहिणी, भरणी आर्द्रा मानि ।
और उत्तरा तीनि जे, ये मनुष्यगण जानि ॥ १ ॥

अथ देवतागण ।

दोहा—पुष्य पुनर्वसु मृगशिरा, अश्विनि श्रवण बखानि ।
अनुराधा स्वाती सहित, हस्त रेवती जानि ॥ १ ॥
कहे देवगणके विषे, ये नव नखत बखानि ।
ताहि प्रयोजन अब कहौं, शालहोत्रमत जानि ॥ २ ॥

अथ नर (स्वामी) देवगण, घोडा मनुष्यगण हो उसका फल ।

सोरठा—नरगण बाजी होइ, मोल लेइ सो देवगण ।
ताको फल अस जोइ, तुरी रहै आधीन तेहि ॥

अथ नर देवगण, वाजी राक्षसगण ।

सोरठा—देवगणहि नर जानि, बाजी राक्षस गण अहै ।
ताको फल यह मानि, करै उपद्रव स्वामिघर ॥

अथ नर बाजी दोनो देवगण ।

दोहा—बाजी जानौ देवगण, नरौ देवगण होइ ।
देत अहै निजस्वामिको, पूरण सुखको सोइ ॥

अथ नर राक्षसगण, बाजी देवगण हो उसका फल ।

दोहा–घोड़ा जानौ देवगण, नर राक्षसगण होइ ।
यद्यपि भौंरी शुभ सहित, हानि करै यह सोइ ॥

अथ नर राक्षसगण, घोडा मनुष्यगण हो उसका फल ।

दोहा–राक्षसगण नर होइ सो, नरगण बाजी आइ ।
ताहि खरीदे फल यहै, तुरी सही मरि जाइ ॥

अथ नर राक्षसगण, वाजी राक्षसगण हो उसका फल ।

वाजी राक्षसगण अहै, नर राक्षसगण जानि ।
यद्यपि भौंरी अशुभ युत, तदपि होइ सुखदानि ॥

अथ नर मनुष्यगण, वाजी देवगण हो उसका फल ।

दोहा–अश्व जानि सो देवगण, नरगणको नर लेइ ।
ताहि खरीदै सुख लहै, नितप्रति उत्सव देइ ॥

अथ नर नरगण, वाजी राक्षसगण हो उसका फल ।

सोरठा–हय राक्षसगण होइ, खरीदार मानुष्यगण ।
स्वामी नाशै सोइ, धन दारा अरु कुलसहित ॥

अथ नर वाजी दोनो मनुष्यगण हों उसका फल ।

सोरठा–मोल लेइ नर जोइ, मानुषगणको होइ सो ।
वाजी नरगण होइ, तासु फलाफल कछु नहीं ॥

दोहा–शुभचेष्टा बाजी करै, शुभ भौंरी युत सोइ ।
नहिं दूषित गणभेद सो, तब पूरण फल होइ ॥ १ ॥
वाजी मिश्रित गण अहै, ताहि खरीदै कोइ ।
तहाँ विचारे गण नहीं, शालहोत्र कहि सोइ ॥ २ ॥
भौंरी जे शुभ अशुभ हैं, त्यों गण चेष्टा जानि ।
एक एक ये फलद नाहिं, द्वै त्रिय मिलि सुखदानि ॥ ३ ॥

कहुँ चेष्टा भौंरी फलद, कहुँ चेष्टा गण मानि।
कहुँ गण भौंरी फलद है, कहुँ तीनों ते जानि ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीगणविचारकथन नामक षष्ठ अध्याय ॥ ६ ॥

अथ वाजी आयुप्रमाण दंतपरीक्षा।

दोहा–आयु अश्वकी होति है, बत्तिस वर्ष कि जानि।
याते नाहिन बाढ़ि है, शालहोत्र–मत मानि ॥ १ ॥
कितनी बीती ताहिमें, तासु कहौं पहिचानि ॥
देखि रदन जान्यो परत, ताते रदन बखानि।
कितने दिनमें होत कस, सो अब कहौं बखानि।
जाते सब वाजीनके, साल परति हैं जानि ॥ ३ ॥

अथ दंत वर्णन।

दोहा–प्रथम दिवसके अश्वके, चारि मसूढा होइ।
आठ रोजको होइ जब, दाँत जमति हैं दोइ ॥ १ ॥
चारि महीना होयँ जब, दोइ दोइ अरु आनि।
चारि दाँत तरके लसैं, ऊपर चारिय जानि ॥ २ ॥
दोइ और तरके कढ़ै, दोइ उपरके जानि।
षट तर षट ऊपर लसैं, एक सालको मानि ॥ ३ ॥
ताहि कहत आषंड है, जे जानत हैं कोइ।
दशमहिनाके ऊपरैं, बारह लगु तेहि होइ ॥ ४ ॥
एक सालको अश्व जो, श्वेत रदन तेहि आहि।
षटदश मास प्रयंतलौं, ताही सम दरशाहि ॥ ५ ॥

जौन सफेदी रहति है, षोडशमास प्रमान ।
ता ऊपर जे मास हैं, कीजै तासु बखान ॥ ६ ॥
लागत सत्रह मासते, हीन सफेदी होइ ।
जरदी बाढ़ति जाति है, दोइ साल लगु सोइ ॥ ७ ॥
जरदी दशनन माहिं जो, दोइ साल लगु जानि ।
ताहि कहत नाकन्द है, शालहोत्र मत मानि ॥ ८ ॥
दुइ दांतनमें मैलु जो, मास पचीसै होइ ।
मैलु दियो है दोकको, ताहि कहत सब कोइ ॥ ९ ॥
तीस मास लगु रदनमें, रहत मैलु यह जोइ ।
ता ऊपर जो बाजि है, दोक जानिये सोइ ॥ १० ॥
तीसमासके ऊपरै, छत्तिस मास प्रमान ।
दोइ दाँत तरके गिरैं, दुइ ऊपरके जान ॥ ११ ॥
छतिस मासके ऊपरै, जामि बरोबरि होइ ।
तीनि साल षट मास लै, दोक कहावै सोइ ॥ १२ ॥
संवत साढे तीनिके, जब ऊपर हय होइ ।
दोइ रदन तरके गिरैं, दुइ ऊपरके सोइ ॥ १३ ॥
चारि वर्ष पर्यंतमें, जामि बराबरि होइ ।
ताहि तुरीका कहत हैं, चारि साल सब कोइ ॥ १४ ॥
सोरठा–तब निकसति है नेस, बैस कुमाराहि जानिये ।
चढ़िबे लायक वेश, इच्छासम मेहनति करै ॥
दोहा–चारि सालके ऊपरै, पाँच साल लगु मानि ।
दुइ दुइ रद औरौ गिरैं, तर ऊपरके जानि ॥ १ ॥

पांचवर्ष पर्यंतमें, जामि बरोबरि होइ ।
युवा अवस्था वाजि है, पंज कहावै सोइ ॥ २ ॥
पांच वर्षके ऊपरै, षष्ठ वर्षमें जानि ।
स्याही सब दांतन विषे, रेख समान बखानि ॥ ३ ॥
षट संवतके ऊपरै, सात वर्ष लगु जानि ।
सब दांतनके बीचमें, छिद्र परति हैं आनि ॥ ४ ॥
मलै पंज सो जानिये, शालहोत्र कहि सोइ ।
युवा अवस्था वाजिकी, तहां लगै सो होइ ॥ ५ ॥
सात वर्षके ऊपरै, जहँ लगु अठई वर्ष ।
सब दांतनके शिर विषे, पहुँचत स्याही सर्ष ॥ ६ ॥
बीतत अठई वर्षके, नव वर्षन परयंत ।
सब दांतनके बीचमें, जरद होत दुइ दन्त ॥ ७ ॥
सो वह जरदी यों लगै, जिमि मैलो हटतार ।
और दांत सब स्याह हैं, यह कीन्हों निरधार ॥ ८ ॥
नव वर्षनके ऊपरै, दशवर्षन लगु जानि ।
सब दांतनमें होति है, जरद रेखसी मानि ॥ ९ ॥
जरद होति हैं दांत सब, वर्ष ग्यारहीं माहिं ॥
नेसनकी जो नोक हैं, ते मोटी ह्वै जाहिं ॥ १० ॥
ग्यारह वर्षन बीतते, वर्ष बारहीं माहि ॥
जरदी दांतन शीश जो, कछुक श्वेत दरशाहि ॥ ११ ॥
सोरठा–बीते बारह वर्ष, वर्ष चौदहीलो कहो ।
होत सफेदी सर्स, हयके दशनन माहिसो ॥

दोहा–तीन सफेदी होइ यों, दही रूप ज्यों आहि ।
याहि उमरके ऊपरै, और परीक्षा नाहि ॥ १ ॥
बीतत चौदह वर्षके, वर्ष सत्रहीं जानि ।
बाजीरद्नन परत हैं, जरद बिन्दुसे आनि ॥ २ ॥
जानौ यकइस वर्षते, बीते तेइस वर्ष ।
दशननमें जे बिन्दु हैं, ते वे बाढ़त सर्स ॥ ३ ॥
बीते तेइस वर्षके, वर्ष पचीस समाप्त ।
रदन जातिहैं बढ़ति अति, अरु सीधे ह्वै जात ॥ ४ ॥
दांतनकेरी जर विषे, लीक समान देखात ।
शालहोत्र मुनिके मते, जानि लेहु अवदात ॥ ५ ॥
बढ़ पचीसहिते उमिरि, तीस वर्षलों जानि ।
दांत जाति हैं हालि सब, वाजीके यह मानि ॥ ६ ॥
कटत घास नहिं दशनसों, करत कूचिका तात ।
ता ऊपर बत्तीसलौं, वाजी रदन निपात ॥ ७ ॥
अरबी और इराकके, बहुरौ जानि इरान ।
इन्हैं आदि जे हैं तुरी, दीरघ आयु प्रमान ॥ ८ ॥
तिनके दांतन भेद कछु, कहति अहों अब सोइ ।
तीसमास पर्यन्तलौं, वाजि अखेड़े होइ ॥ ९ ॥
तीनि वर्ष षट मासलौं, सौन कंद कहि जात ।
चारिवर्षको होय जब, तब तोरै दुइ दांत ॥ १० ॥
दोक कहत हैं ताहिको, शालहोत्र कहि सोइ ।
चारि दांत जबहीं गिरैं, आठ वर्षको होइ ॥ ११ ॥

नव वर्षनके ऊपरै, ग्यारहलौं यह मानि ।
होत पंच तब वाजि है, श्रीधर कह्यो बखानि ॥ १२ ॥
ग्यारहते बारह लगे, दशनन रेख लखाइ ।
बारहते तेरह लगे, छिद्र परति हैं ताइ ॥ १३ ॥
बीतत तेरह वर्षके, जहँलगि चौदह वर्ष ।
सब दांतनके ऊपरै, बाढ़त स्याही सर्स ॥ १४ ॥
बीतत सोरह वर्षके, अष्टादश पर्यंत ।
सब दांतनके बीचमें, जरद होत दुइ दंत ॥ १५ ॥
जरद रेख दशनन विषे, बीस वर्षमें होइ ।
एकबीस वर्षाहिं विषे, जरदी व्यापति सोइ ॥ १६ ॥
दोइ औरके बीतते, जरदी कछुक सफेद ।
होत आइ दशनन विषे, जानि लेउ बिन खेद ॥ १७ ॥
बढ़ति सफेदी सो अहै, वर्ष पचीस प्रमान ।
जरद बिन्दु दशनन परै, बत्तिस वर्ष बखान ॥ १८ ॥
दोइ और बीते वरष, बिन्दु स्याह वै होइ ।
सो वह स्याही अति बढ़ै, पैंतिस वर्षन सोइ ॥ १९ ॥
बीते छत्तिस वर्षके, दांत बाढ़ि सब जाहिं ।
हालि जाति सब दांत हैं, अतिस वर्षन माहिं ॥ २० ॥
फिरि चालिस वर्षन विषे, वाजी रदन निपात ।
और तुरिनके रदनते, यतनो भेद लखात ॥ २१ ॥
येती आयु तुरीनकी, रदन भेदसों जानि ।
शालहोत्र लिखि देखिकै, श्रीधर कह्यो बखानि ॥ २२ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीआयुप्रमाण रदनपरीक्षा वर्णन नाम सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

अथ वाजीउत्पत्तिदेशकथन ।

दोहा--वाजी चारि प्रकारके, औरौ होत सुजान ।
देश प्रकृतिके भेदसों, तिनको करौं बखान ॥ १ ॥
उत्तम मध्यम अधम अरु, नीच जानिये और ।
तिन वाजिनके कहत हौं, शालहोत्र मत ठौर ॥ २ ॥
देश प्रभावहिं होत हैं, वाजी प्रकृति सुभाउ ।
देश देशके हय कहौं, करि करि चितमें चाउ ॥ ३ ॥
सब देशनमें होति हैं, वाजी उत्पति आइ ।
ए जे देश विशेष हैं, तेई कहत बनाइ ॥ ४ ॥

अथ वाजी उत्पत्ति उत्तम देशकथन ।

दोहा--नील रोदके पारके, दरियाई पुनि जानि ।
अरबी जाति सुठार है, और इराकी मानि ॥
सोरठा--इनसम जानि इरान, बलख बुखारो द्वै कहौं ।
भक्खर तुरकिस्तान, देश कुरंग तुरंग हैं ॥
दोहा--चक्रवार पुठवार अरु, बहुरि कहौं कंधार ।
सिंधुदेश तिब्बत सहित, जानि लेहु चिन्हार ॥ १ ॥
पुनि ये सौंरो जानिये, धन्नीसो हय मानि ।
अरु पंजाबौ देशको, श्रीधर कहत बखानि ॥ २ ॥
कच्छभुज्ज अरु जानिये, बहुरि काठिआवार ।
फेरि भीमनाथली कहि, इनके हरि सुखसार ॥ ३ ॥
इन देशनके वाजि जो, उत्तम लीजो जानि ।
शालहोत्र मत जानिकै, दीन्हें इहां बखानि ॥ ४ ॥

अथ मध्यदेशवाजीवर्णन ।

दोहा–सतलजके यहि ओरके, जे जंगलके खेत ।
वाजी होत बिशाल हैं, ये मध्यम कहि देत ॥ १ ॥
पूना रजहरिया बहुरि, ग्वालिआरिया मानि ।
एते देशन बाजि जे, पौरुषहीन बखानि ॥ २ ॥
और कही करनाट है, जानौ पुनि गुजरात ।
इन वाजिनमों बल बड़ो, अधिक तेज सरसात ॥ ३ ॥
सोरठा–एक देश कूरंग, इनमें वाजी होत जे ।
तिनके पुष्टित अंग, शालहोत्र मुनिको मतो ॥ १ ॥
बहुत दूरि चलि जाहिं, मानत नाहिन हारिको ।
अतिहि बली सो आहि, पै वै टर्रा होति हैं ॥ २ ॥
दोहा–रंगपुरी झुमिला सहित, और भुटानी जानि ।
इनमें जे टांघन अहैं, ते मध्यम करि मानि ॥ १ ॥
सनीपूर जैता सहिन, कनकाई अरु मानि ।
इन देशनके वाजि लघु, तेऊ मध्यम जानि ॥२॥

अथ अधमवाजीवर्णन ।

दोहा–अधम खेत अब कहत हौं, वाजिनके जे आहिं ।
माडवार खडहर सहित, अति बलहीन कहाहिं ॥ १ ॥
रंगपुरी झुमिला सहित, और भुटानी जानि ।
इनमें बड़े तुरंग जे, तेऊ अधम बखानि ॥ २ ॥

अथ नीचतरवाजीवर्णन ।

दोहा–महानीच तिरहुति विषे, वाजी उत्पति होइ ।
औरो जे पर्वत अहैं, तिनमें नीचे जोइ ॥ १ ॥

और सुदेश कहे नहीं, वाजी सब जग होइ।
जेते देश विशेष हैं, या मधि वर्णे सोइ ॥ २ ॥
सोरठा–नीच देशमें नीच, उत्तम देश न नीच कहुँ।
यह करि जियके बीच, वाजी लेहु विचारि यों ॥

अथ अन्य मत–चौपाई।

उरकर साकर खुरकर मोटा। लंबी गर्दन कमरक छोटा॥
सो अरबी सोई ईरानी। पथरी थोबरी खुंदाकानी॥
चौंड़ी माथ थोबरी पतरी। रोम महीन कनौटी सुथरी॥
थाने सूध चढ़े बहु तलषी। धन्नीखेत सो हय इमि परषी॥
अधिक असाल तलासिक भारी। कूदफांदमें आतुरकारी॥
छवोबंद अति शुद्ध बनो है। सोई भक्खर खेत गनो है॥
ठट्टर भक्खर औ कंधारा। जंगल और काठियावारा॥
सुमको हलुक रोमको मोटा। ना अति सुन्दर ना बहु खोटा॥
तिनके नीचे काबुल भाख्यो। दशमें एक विलाती राख्यो॥
सोइ जटिआला रजपूताने। गर्दन बड़ी बड़ाई कानै॥
कमर गामची अतिको छोटा। दुम सुम भारी मुखको मोटा॥
आगे पाछ बराबरि देखै। ताको सब कोइ तुरकी रेखै॥
तुरकी टांघन घुटकन काई। चारिहुको बँद एकै ठाई॥
कहूँ कहूँ तसवीरन देख्यो। सो तुरंग दरिआई लेख्यो॥
दोहा–जा घोडेकी पीठि बुध, अतिखाली अवरेखि।
ताको कच्छी कहत सब, अति स्वरूपका देखि॥
चौ०–उत्तम वाजी देश बखानौ। चारु बुखारु महामन मानौ॥
खुरासानके होत हैं नीके। राजत साजत काजनहींके॥

करनाटक गुजरात बखानौ। अति अहार सो मध्यम जानौ॥

दोहा—माडवार कसमीरके, उत्तर दिशिके अश्व।
नीच कहे हैं नकुल मत, शालहोत्र सर्वस्व॥ १॥
कहे बाजि जे विपिनके, सिंधनदीके तीर।
और देशके जानियो, हैं कनिष्ठ मतिधीर॥ २॥

अथ देश आयु वर्णन।

दोहा—काशीपूरब दश बरष, हरद्वार लगु बीस।
कहुँ कहुँ जंगलके तुरँग, जियत तीस चालीस॥ १॥
जे असील हैं ठौरके, खुरासान मुलतान।
और इरानी अरबके, कच्छी दीरघ जान॥ २॥
तिनकी तैसी आयु है, दीरघ वर्ष प्रमान।
चंदनसदनते जानियो, रदन बदन पहिचान॥ ३॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत बाजीदेशउत्पत्ति-
कथन नामक अष्टम अध्याय॥ ८॥

अथ रंग नाम पहिचान छब्बिस रंग वर्णन।

कवित्त—श्यामकर्ण संदली समुद शूर सुरखा सुरंग,
चीनी चौधर संजाफ नीलमकसी प्रमानिये॥
तामरा हर्यल गर्रा मोमिआ अबलख सटिहा,
महुआ फुलवारी कुल्ला रंगन विहानिये॥
भाषहुँ कुंमैत मुश्की टोपरा सो युद्ध धीर,
नौकरा सिरगा सारो सब्जा बखानिये॥
रंग ये भने हैं षटविंशति प्रसिद्ध करि,
अतिही प्रवीन जो तुरंग कला जानिये॥

अथ प्रथम श्यामकर्ण रंग स्वरूप वर्णन । देखो घोडा नंबर १.
यह घोड़ा रामाश्वमेधमें छोड़ा गया था ।

दोहा--श्रवण श्याम बिंबा अधर, शशि समान सब गात ।
पीत पूँछ नख अरुण जिहि, वेगवंत जिमि वात ॥

चौ०--शीश केश बहु पीत सुहायो । मुनिवसिष्ठके सो मन भायो ॥
सुरँग रत्न मणि माल गुहाये । तुरँग कंठ बहु विधि पहिराये ॥
कंचनपत्र कीन्ह यक सुंदर । वाजिभाल बांध्यो लिखि ऊपर ॥
तब प्रभु कह्यो बोलि रिपुदमनू । तात तुरंग संग करु गमनू ॥

अथ द्वितीय श्यामकर्ण रंग । देखो घोड़ा नंबर २.
इस रंगका घोड़ा युधिष्ठिरके अश्वमेधमें छोडा गया था ।
व्यासमुनि राजा युधिष्ठिरसे कहते है--चौपाई ।

पुनि यह वाजिमेधहित भूपा । चहिय तुरँगवर सुभग स्वरूपा ॥
दोहा--जो वैसो हय ना मिलै, प्रथम चिह्नके रूप ।
तौ यहि विधिको छांडिकै, यज्ञ कीजिये भूप ॥
चौ०--श्रवणहु पूँछ श्याम शिर केशा । होय जासु वपु वर्ण नरेशा ॥

संदली रग । देखो घोड़ा नं० ३.

दोहा--रंग बदामी संदली, वरणैं सुकवि विधान ।
फीको हय सब रँगनमें, भाषैं तिहि गुणवान् ॥

समुदरंग तीन तरहके । प्रथम समुद रग । देखो घोड़ा नंबर ४.

दोहा--रोमावलि जो अश्वकी, उदर फेन सम होइ ।
चरण आल दुम श्याम है, समुद कहावै सोइ ॥

द्वितीय समुद रंग । देखो घोड़ा नंबर ५.

दोहा-रंग होइ सब समुदको, कर्णश्याम कछु जान ।
समुदकर्ण तेहि नाम है, जानौ चतुर सुजान ॥

तृतीय समुद रंग स्याह जानु । देखो घोड़ा नंबर ६ ।

दोहा-समुद स्याह जानू कहौं, जाके जंघा श्याम ।
बड़ो रंग मजबूत है, याको राखो धाम ॥

शूर रंग अशुभ । देखो घोड़ा नंबर ७ ।

दोहा-धूम्रवर्ण जनु भस्म है, देखत दूरि कराहि ।
शूर कहावत नकुलमत, सेंति न लीजै ताहि ॥

सुरखा रंग शुभ । देखो घोड़ा नंबर ८.

दोहा-होइ सफेदी गात सब, दूधफेन अनुहारि ।
सुघर पूँछरी कंध कच, सुरखा कहेउ विचारि ॥

सुरंग गुंजारंग । देखो घोड़ा नंबर ९.

दोहा-अरुणगात जिहि अश्वको, जिमि गुंजाको रंग ।
अरुण पूँछरी कंध कच, जानब ताहि सुरंग ॥

श्वान सुरंग । देखो घोड़ा नंबर १०.

दोहा-अरुण गात जिहि वाजिको, जिमि हाटकको रंग ।
तैसे पूँछरी कंध कच, कहिये श्वान सुरंग ॥

तैल सुरंग । देखो घोड़ा नंबर ११.

दोहा-होय अरुणता आलदुम, मिलै श्यामता जाहि ।
कह्यो नाम है कोविदन, तैल सुरंगी ताहि ॥

केहरी सुरंग । देखो घोड़ा नंबर १२.

दोहा-आलचरण दुम श्वेत है, अरुण गात सब होत ।
सो केहरी सुरंग लखि, शालहोत्र कहि देत ॥

चीनी रंग । देखो घोड़ा नं० १३.

दोहा–कहुँ कहुँ श्वेत रु नील कहुँ, त्वचा कहौं कहुँ श्याम ।
सो चीनीरँग कहत हैं, नकुल मते अभिराम ॥

संजाफ रंग । देखो घोड़ा नं० १४.

दोहा–पूँछ चरणलगु जानिये, दूजी रंग लकीर ।
जो संजाफी नाम कहि, सब रंग केर वजीर ॥

चौधर रंग । देखो घोड़ा नं० १५.

दोहा–गज समान जिहि अश्वको, रंग होइ सब गात ।
चौधर चौकस अशुभ अति, करौ न याकी बात ॥

नीला रंग । देखो घोड़ा नं० १६.

दोहा–नील वर्ण जा अश्वको, रोमावली शरीर ।
नीलारंग बखानु तिहि, बड़ो जोर गंभीर ॥

मकसी रंग । देखो घोड़ा नं० १७.

दोहा–श्याम श्वेत फुटकी परैं, सकल शरीर प्रमान ।
मकसीरंग बखानिये, नकुल कहैं पहिचान ॥

हरयल रंग । देखो घोड़ा नं० १८.

दोहा–असित हरित मिश्रित हवै, रोमावली शरीर ।
हरयलरँग जग छिप्र है, नकुल कहैं मतिधीर ॥

तामड़ा रंग । देखो घोड़ा नं० १९.

दोहा–चमकै ताँबेकी झलक, रंग तामरा नाम ।
युद्ध विषे स्वामी सहित, करै आपु संग्राम ॥

अरुण गर्रा । देखो घोड़ा नं० २०.

दोहा–अरुण गात जिहि अश्वको, मिलै सफेदी जाहि ।
अरुण पूछरी कन्ध कच, गर्रा जानव ताहि ॥

श्याम गर्रा । देखो घोड़ा नं० २१.

दोहा-अरुण श्वेत रोमावली, अश्वाके तनु माहि ।
श्याम पूँछरी कन्ध कच, गर्रा श्याम कहाहि ॥

अबलख रंग । देखो घोड़ा नं० २२.

दोहा--अश्वाकेरे गातमें, अधः ऊर्ध्व द्वै रंग ।
अबलख नीको रंग है, कीजै ताहि प्रसंग ॥

चौपाई ।

नील श्वेत यक अबलख भाषो । अरुण श्वेत दूजीविधि राषो ॥

मोमियां रंग । देखो घोड़ा नं० २३.

दोहा-मोमरंगको मोमियाँ, अश्वाके तनु होइ ।
ताहूमें जो गुल परैं, गुली मोमियां सोइ ॥

मटिहा रंग । देखो घोड़ा नं० २४.

दोहा-मटिहा रंग पतंग सम, तनुको बोचा होइ ।
सुस्त चुस्त सब काममें, याहि लेउ मति कोइ ॥

महुआ रंग । देखो घोड़ा नं० २५.

दोहा-मधु समान रोमावली, महुआ रंग बखान ।
अरुण चमक कछु गातमें, ताहि सुनहुला जान ॥

कुल्ला रंग । देखो घोड़ा नं० २६.

दोहा-जरद रंग सब गातमें, सेली पीठिमें होइ ।
पैरनमें पंजा परै, कुल्ला कहिये सोइ ॥

फुलवारी रंग । देखो घोड़ा नं० २७.

दोहा-जगह जगह तनु होत हैं, बहु रंगनके फूल ।
अति शुभ ताहि बखानिये, कहैं नकुल प्रतिकूल ॥

कुम्मैत रंग । देखो घोड़ा नंबर २८.

दोहा–गात होइ जो अरुणता, आल चरण दुम श्याम ।
सो कुंमैता कहत हैं, नकुल मते अभिराम ॥

तेलिया कुंमयत रंग । देखो घोड़ा नंबर २९.

दोहा–लाखरंगसो रंग है, श्यामचरण दुम आल ।
तैल कुमयता नाम तिहि, नीको रंग विशाल ॥

टोपरा रंग । देखो घोड़ा नंबर ३०.

दोहा–जिहि वाजीके शीश पर, श्वेतटोप दरशाइ ।
कहेउ टोपरा नाम ऋषि, युद्धधीर सो आइ ॥

मुश्की रंग । देखो घोड़ा नंबर ३१.

दोहा–श्याम वर्ण रँग अश्वको, महिषी रूप शरीर ।
पाक फँरेदेसी चमक, मुशकी रंग सुधीर ॥

नोकरा रंग । देखो घोड़ा नंबर ३२.

दोहा–चरण आल दुम गात सब, श्वेतवर्ण जो होइ ।
नयन नासिका शीशलौं, कपिला नुकरा सोइ ॥

सिरगा रंग । देखो घोड़ा नंबर ३३.

दोहा–होय सफेदी गात सब, जैस रुकुमको रंग ।
कहो रंग है नाम ऋषि, सिरगा चपल तुरंग ॥

द्विविध सब्जा । देखो घोड़ा नंबर ३४.

दोहा–श्याम श्वेत मिलि अरुणता, रोमावली शरीर ।
सबुजा द्विविध बखानिये, नकुल कहैं मतिधीर ॥

सब्जा सारो रंग । देखो घोड़ा नम्बर ३५.

दोहा–पीठ लीक है अरुणता, सबुजा है सब अंग ।
श्वेत शीश आनन सकल, सबुजा सारो रंग ॥

सब्जा । देखो घोडा नम्बर ३६.

दोहा—सबुजा होवे श्माम सित, कहैं रंग परवीन ।
श्यामलीक हय आल दुम, महासुफल सुख दीन ॥

चौ०—कहुँ कहुँ श्याम श्याम गुल देखै।गुलेदार सबुजा अवरेखै॥

अथ सत्रह रंग मिश्रित ।

कवित्त—केहरी बदामी औ सिराजी बोस्ता खजेरट,
बिल्लौरी कागजी कपूरी और तूसी रेषिये ।
षिंग रंग धूरिया कबूतई रशनी त्यों चालधार,
कल्यानी चंभालखी सुमति विशेषिये ॥
प्रथम कबित्त षटाविंशति गनाये रंग,
यामें सप्तदश ठीक तेतालिस लेखिये ।
येते रँग प्रगट तुरंगनके युद्धधीर,
इनहीमें केवल अरु मिश्रित परेषिये ॥

पुनः भिन्न भिन्न रंगोकी पहिचान—छंद पद्धरी ।

मुख उदर जानुसेती निहारि । सुरखा तजि सब केहरि विचारि॥
फुटती बदाम सम श्वेत माहि । लखि रंग बदामी कहि सो ताहि॥
मिलि श्वेत रंगमें पीत रोम । कहि नकुल सिराजी तुरी कोम ॥
नाहिं समुँद न सुरखा रंग पाय । तिनको बुध बस्ता रँग बताय ॥
तल नैन ग्रीव अध असित रेष। खंजरेट कहौं तिनको विशेष ॥
बिल्लौर अरुण तुच जहँ लखाय । तुच अतिमहीन कागजी पाय॥
जहँ तनु कपूररँग भासमान । तह कहत कपूरी नकुल जान॥
समफूल तीसिया तूसरंग । लखि वागरोम सेली जु पिंग ॥
मैलो सफेद जिमि धूपरंग । कहि नकुल प्रगट धूरी तुरंग ॥
लखि दादुरके रँग तुरंग वेष । तिनको कबूत कहिये विशेष ॥

रसनी विलोकि रँग मारजार । वहु रंग रोम मिलि चालधार ॥
लखि क्षेमकरीसम तनु विचित्र । कल्यानी है सो कहिये मित्र ॥
चंभा रँगा मुख सित अरुण जान। तनुकहूँ श्वेत कहुँ श्याम आन॥
अतिही गहिरो कुम्मयत जान । सो रँग लक्खी कहिये सुजान॥
दोहा–वर्ण वर्ण मिश्रित भये, शुद्ध अशुद्ध अनेक ।
लक्षण सवके कहत हौं, युद्धधीर सविवेक ॥ १ ॥
चोख रु मंद विभेद करि, नाहिं भाष्यो यहि हेत ।
हयगति कला प्रवीन जो, चढि फिराय लखि लेत ॥२ ॥

अथ सत्रह रंगके घोड़ोंकी पहिंचान वा लक्षण ।

केहरी रंग । देखो घोड़ा नंवर ३७.

दोहा–उदर जानु मुख श्वेत है, सुरखा तजि कहि सोइ ।
कह्यो केहरी नाम ऋषि, रंग असीलो सोइ ॥

सिराजी रंग । देखो घोडा नंवर ३८.

दोहा–श्वेतरंग सब गात हैं, पीतरोम मिलि जाय ।
ताहि सिराजी कौसियति, मध्यम रंग कहाय ॥

वदामी रंग । देखो घोडा नंवर ३९.

दोहा–फुटकी होय वदाम सम, श्वेतरंग तनु माहि ।
ताहि वदामी कहत हैं, नकुल मतो सो आहि ॥

वोस्ता रंग । देखो घोडा नंवर ४०.

दोहा–नहिं समुदा नहिं सूरखा, रंग लेहु पहिचानि ।
ताको वोस्ता कहत हैं, मध्यम कहौं वखानि ॥

खंजरेट रंग । देखो घोडा नंवर ४१.

दोहा–तालु नयन ग्रीवा अधर, रेखा असित सुजान ।
खंजरेट ताको कहैं, मध्यम रंग प्रमान ॥

कागजी रंग। देखो घोडा नंवर ४२.

दोहा-त्वच महीन रँग श्वेत लखि, जा वाजीकी होत।
कह्यो. कागजी नाम शुभ, राजनको सुख देत ॥

बिल्लौर रंग। देखो घोडा नंवर ४३.

दोहा-श्वेतरंग सब अंगमें, अरुण त्वचा दरशाय।
बिल्लौरी सो जानिये, उत्तम महा कहाय ॥

कपूरी रंग। देखो घोडा नंवर ४४.

दोहा-जा हयकी रोमावली, रँग कपूर सम होय।
ताहि कपूरी जानियो, उत्तम भाषों सोय ॥

तूसी रंग। देखो घोडा नंवर ४५.

दोहा-फूल बराबरि बदनमें, रंग तीसिया तूस।
महाअशुभ ताको कहैं, करै वित्तको खीस ॥

अथ धूरिया रंग। देखो घोडा नंवर ४६.

दोहा-मैल सफेदी बदन सब, धूपरंग सम रंग।
कह्यो धूरिया तुरँगको, मध्यम है सब अंग ॥

थिंग रंग। देखो घोडा नंवर ४७.

दोहा-आल रोम दूनौं तरफ, सेलीसी दरशाय।
कहेउ थिंग रँग सुभग बहु, शालहोत्रमत आय ॥

कबूतई रंग। देखो घोडा नंवर ४८.

दोहा-दादुरके रँग तनु सबै, वेष वाजिको होइ।
ताको नाम कबूतई, शालहोत्रमत सोइ ॥

रमनी रंग। देखो घोडा नंवर ४९.

दोहा-रमनीरंग मँजारसम, देखि चिह्न पहिचान।
कहेउँ नाम हयको विदित, शालहोत्र परमान ॥

कल्याणी रंग । देखो घोडा नंबर ५०.

दोहा--क्षेमकरी सम रँग कहो, कल्याणी रँग तात ।
सो कल्याण बढ़ावई, जानो उत्तम बात ॥

चालधार रंग । देखो घोडा नंबर ५१.

दोहा--बहुतरंग मिलि रोममें, चालधार तिहि नाम ।
उत्तम रंग बखानिये, याको राखौ धाम ॥

चंभारंग । देखो घोडा नंबर ५२.

दोहा--चंभा मुख सित अरुणमें, तनु कहुँ सित कहुँ श्याम ।
मध्यम ताहि बखानिये, कह्यो रंगको नाम ॥

लक्खी रंग । देखो घोडा नंबर ५३.

दोहा--अति गहिरौ कुंमैत जहँ, लक्खी कहत ललाम ।
नीकै रँग सो जानिये, अति बलिष्ठ अभिराम ॥

अथ बाइस रंगके घोड़ोंके नाम--कवित्त ।

धुसरा सुकाली हरदक मूसली अहिमूसली पतंग रंग जानिये ।
पँचकल्यान पिस्तई चक्रवाक मलयकच्छ मंगलअष्टकसो बखानियें
युगल वधिक चामदस्त अब्जुल औ सबुजपाँय श्वेत चरणमानिये।
चौपट यमदूत समरदूत खालदार जालिया द्वैविंशति प्रमानिये॥

अथ धुसरा रंग । देखो घोडा नंबर ५४.

दोहा--भूरी द्रुम अरु आल कच, धुमिलैहैं सब गात ।
धुसरा कहिये नाम तिहि, शालहोत्रकी बात ॥

चौ०--उत्तम अरु निकृष्ट नहिं जानौ।मध्यम याको रंग बखानौ॥

सुकाला रंग । देखो घोड़ा नंबर ५५.

दोहा--श्यामगात जो अश्वको, श्यामआल दुम केश ।
ताहि सुकाली कहत हैं, नकुल मते नहिं वेश ॥

हरदक रंग । देखो घोड़ा नंबर ५६.

दोहा–जरदगात जिहि अश्वको, भूरि आल दुम केश ।
हरदक कहिये रंग तिहि, उत्तम जानौ वेश ॥

मूसली रंग । देखो घोडा नंबर ५७.

दोहा–एक चरण है श्वेत जो, फूल सकल तनु माहिं ।
नाम मूसली दोष यह, भूलि न लीजै ताहि ॥

अहिमूसली रंग । देखो घोडा नं० ५८.

दोहा–आबरँग मुख ऊपरै, अहिफणकी आकार ।
अहिमुसली तिहि जानिये, कलह करै विकरार ॥

षतंग रंग । देखो घोडा नं० ५९.

दोहा–श्वेतवर्ण हयको निरखि, रंग षतंग वखानि ।
हृदय आल अरु ग्रीव लग, पुटा अरुण सुजानि ॥
चौ०–मध्यभाग यह रँग है नीको।बहुत तेजाई नहि बहु फीको॥

पंचकल्याण रंग । देखो घोड़ा नंबर ६०.

दोहा–श्वेतचरण चारौ निरखि, टीका भाल समान ।
पँचकल्यानी रंग सोइ, सदा करै कल्यान ॥

पिस्तई रंग । देखो घोडा नंबर ६१.

दोहा–पीतगात जिहि अश्वको, पीतआल दुम होय ।
नाम पिस्तई रंग है, उत्तम कहियो सोय ॥

चक्रवाक रंग । देखो घोड़ा नंबर ६२.

दोहा०–श्वेत चरण तनु पीत है, चक्षु श्वेत मुख जान ।
चक्रवाक सो रंग है, लीजो सुमति सुजान ॥
चौ०–उत्तम महापुनीत कहावै । पूरण भाग जासु गृह आवै ॥

मल्लिकच्छ रंग । देखो घोड़ा नंबर ६३.

दोहा–श्याम वर्ण सब अंग है, चरण चारि सित होइ ।
माथे टीका श्वेत लखि, मल्लिकच्छरंग सोइ ॥
चौ०–अतिशुभ वृद्धि करै सब काहू । पूरण पुण्य जो राखै वाहू ॥

मंगलअष्टक रंग । देखो घोड़ा नंबर ६४.

दोहा–आल पूँछ मुख चरण उर, जा तुरंगके श्वेत ।
मंगलअष्टक नाम है, नकुल मते कहि देत ॥
चौ.–बहुत वृद्धि बहु सुख दिखरावै । दिन दिन मंगल मोद बढ़ावै ॥
दहिने अंग जरद चट होई । सो मंगल जय करत सदाई ॥

युगल रंग । देखो घोड़ा नंबर ६५.

दोहा–बहुत रंग मिश्रित भये, युगल अशुभ अवरेषि ।
शालहोत्र मत जानिकै, हरै सकल धन लेषि ॥
खड़ी आल हो उसको भी युगल दोष कहते है ।

वधिकरंग अशुभ । देखो घोड़ा नं० ६६.

दोहा–कृष्ण नील रंग कलि तजो, महाअलक्षण जानि ।
लोपि भलो रँग गहत बद, वधिक नाम दुखदानि ॥

चापदस्त रंग । देखो घोड़ा नं० ६७.

दोहा–आगिलकर बाईं तरफ, श्वेत रंग दरशाय ।
चापदस्त तिहि नाम है, महादोष सो आय ॥

अरजुल रंग । देखो घोड़ा नं० ६८.

दोहा–पछिलो पग जो एक सित, अर्जुल ताहि कहाय ।
दोष विशेषिनमो गनौ, नकुलमते सो आय ॥

संवुज पॉय रंग । देखो घोड़ा नम्बर ६९.

दोहा–एक चरण तन रंग है, श्वेत होय पग तीन।
सवुज पाँय सो दोष वर, रहै संपदा हीन ॥
तीनि पाँव यक रंग हैं, एक पाँव तनुरंग ।
शालहोत्र मुनिके मते, करै राज्यको भंग ॥

श्वेत चरण । देखो घोड़ा नम्बर ७०.

दोहा–श्वेत चरण दूनो निरखि, रंग द्वितीय शरीर ।
शालहोत्र तिहि अशुभ कहि, महादोष गंभीर ॥

चौपट रंग । देखो घोड़ा नम्बर ७१.

दोहा–चारों चरण जु श्वेत लखि, माथे तिलक विहीन ।
नाम चौपटादोष तिहि, राजतको दुख दीन ॥

यमदूत रंग । देखो घोड़ा नम्बर ७२.

दोहा–श्वेत चरण चारौ निरखि, श्याम शरीर प्रमान ।
ता वाजीको परिहरौ, है यमदूत समान ॥

समरदूत रंग । देखो घोड़ा नं० ७३.

दोहा–श्वेत वर्ण सब देह लखि, चरण चारि जिहि श्याम !
युद्धधीर सो अशुभ अति, समरदूत तिहि नाम ॥

खालदार रंग । देखो घोड़ा नं० ७४.

सोरठा–कोई रंग तनु होय, तोमें खत नीले परैं ।
खालदार है सोइ, याहूको मध्यम कहो ॥

जालिया रंग । देखो घोड़ा नम्बर ७५.

दोहा–पुट्टा पछिलो आगिले, औरौ अंगम होइ ।
जारसिम रँग श्वेत है, महादोष कहि सोइ ॥

सोरठा–जाल परै तनुमाहिं, कछुक अवस्थाके गये ।
भूलि न राखौ ताहि, याको त्यागन कीजिये ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीरंगकथननामक नवम अध्याय ॥ ९ ॥

अथ पद्म रंग शुभ ।

दोहा–हाथ सफेदी माहि जो, किंचित तिल परिजाय ।
पद्मनाम ताको कहै, अति शुभ लक्षणराय ॥

अथ दाग अंजनदोष वर्णन ।

दोहा–दाग निशानी चारिविधि, ताहि अंजनी नाम ।
भिन्न भिन्न सो कहत हौं, दोष सहित अरु नाम ॥ १ ॥
दाग अंजनी कहत हौं, दूसर नाम बखान ।
कोऊ कोऊ कहत हैं, लहसुन नाम सुआन ॥ २ ॥
दाग होइ जो अश्वके, धूमवर्णको आनि ।
की कस्तूरी रंगको, की असमानी जानि ॥ ३ ॥
लाल अंजनी कहत हौं, ताकर नाम बखानि ।
तैसो दाग जु श्वेत है, श्वेत अंजनी जानि ॥ ४ ॥
जरद दाग जो अश्वके, अंजनि पद्म कहाइ ।
वाम अंग जो अश्वके, होत अंजनी आइ ॥ ५ ॥
ताकर फल अस कहत हैं, सकल सयाने लोइ ।
स्वामीघातक अश्व है, तजौ ताहिको जोइ ॥ ६ ॥

श्वेत अंजनी बगलमों, जो वाजीके होय।
त्रिया मरै ताकी सही, जाके अस हय होय ॥ ७ ॥
यह फल जो वर्णन कियो, श्वेत अरुणको जान।
दहिने अंग जु अंजनी, ताको दोष न मान ॥ ८ ॥

अथ पद्मअंजनी दोष।

दोहा–दहिने बाँये अंगमो, पद्मअंजनी होइ।
संवत्सरके भीतरै, दोषहि लीजौ जोइ ॥ १ ॥
अश्व अहै घर जाहिके, ताहि परै अस दुःख।
भाईको बेटा मरै, लहै न सपने सुःख ॥ २ ॥
सोरठा–जेई अंजनि माहि, बिंदु होइ रँग देहको।
बालअंजनी आहि, स्वामीको नाशै सही ॥
दोहा–केहरि फुलवारी सहित, अरु सबजा गुलदार।
इनमें अंजनि दोष नाहिं, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
औरौ दोषी रंग जे, ते अब कहौं बखानि।
चापदस्त हय एक पुनि, दूजो अरजल मानि ॥ २ ॥
सब देहीको एक रँग, कोई रँग किन होय।
तामे ये लक्षण परैं, कहत अहौं अब सोय ॥ ३ ॥
और सफेदी अंग नहिं, आगिल पांउ सफेद।
चापदस्त सो जानिये, उपजत लीन्हें खेद ॥ ४ ॥
यही प्रकारहि अंग सब, पाछिल पांव सफेद।
अरजल ताको नाम है, बहुत करै सो खेद ॥ ५ ॥
सोरठा–जाके हय यह होय, तासु त्रिया रोगिनि रहै।
भूलि न लीजै कोइ, जाको ऐसो रंग है ॥

चौ०-प्रथम सितार पेसानी जानो।दूजौ अकबर नाम बखानौ॥
इनयुत वाजी दोषी होइ । शालहोत्र मुनिको मत सोइ ॥

अथ सितारे पेसानी वर्णन ।

चौपाई-भाल जासुके टीका होई । नखत बरोबरि जानौ सोई॥
और देह सब एकै रंगा । नाहिं सफेदीकर परसंगा ॥
जाके तनु ये लक्षण अहैं । सितार पेसानी ताको कहैं ॥
सो बहु मध्यम दोष बखानौ।जहँ वह हय तहँ चिन्ता मानौ ॥

अथ अकरब दोप वर्णन ।

दोहा-भाल जासु टीका अहै, और कहूँ नहिं सेत ॥
ता मधि देही रंग है, अकरब सो कहिदेत ॥ १ ॥
जाके वाजी यहु रहै, ताके सुख नहिं होत ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, दिन दिन दुख उद्योत ॥ २ ॥

अन्यच्च ।

दोहा-ऐब दोइ औरौ अहैं, ते अब कहौं बखान ।
कसका जानौ टेढ़ यक, अधर बिन्दु यक जान ॥ १ ॥
कसका जाके भालको, टेढ़ो होइ बनाय ।
और सफेदी अंग नहिं, सोऊ ऐब कहाय ॥ २ ॥

अथ अधरबिन्दु दोप ।

दोहा—श्वेत अधर जा वाजिके, तामें भँवर समान ।
श्यामबिन्दु जाके परै, सोऊ अधम बखान ॥
चौ०-की वाजी आपुहि यहु मरै । की कछु और हानिको करै ॥
दोहा-कहूँ सफेदी अंग नहिं, ऐसो वाजी होइ ॥
श्वेत होइ जो नाकपर, ऐबी वाजी सोइ ।

अथ दागरंग गोमै।

दोहा—होय रंग जो बाघको, वरगोलै महँ होय।
गोमै कहिये नाम तिहि, बड़ो दोष है सोय ॥ १ ॥
गोमय होय जु पेट तर, कटि आननपर सोइ।
वाम दाहिने होइ जो, कहौ नीक नहिं कोइ ॥

स्तुति मंगलदाग शुभ।

दोहा—जिहि घोड़की पूँछपर, खायलकेर नगीच ॥
हृदय चरण अरु शीशपर, दाढ़ीकेरे बीच ॥ १ ॥
होइ सफेदी ठौर इन, तौ है वाहर रंग।
अस्तुति मंगल नाम तिहि, लक्षण भले तुरंग ॥ २ ॥

अथ पुष्परंग अशुभ।

दोहा—लोप करै निज बरन जो, प्रगट करै वियरंग।
पुष्पाहय ताको कहैं, भूलि न करौ प्रसंग ॥

अथ अशुभ रंग दाग।

छप्पय—अतिलघु टाका श्वेत सितारा कहि दुखदायक।
शिरको टीका कठो आशु स्वामी सुखनाशक ॥
शिरशित टीकामाहिं परै तनु रंग अकरवगति।
श्याम अरुण कै टीक भालकारि दोष फहस अति ॥
जहँ टीका ऊपर नोक बाढ़ि दलभंजन अति दोषकर।
काकटोंट पद श्वेत विषम अति प्रबल दोषवर ॥
कै एक सफेदी भाल लखि मन न इन्हें लेवो करै।
सप्तदोष विचारिकै तब भूप अश्व चाढ़ि रण करै ॥

अथ पीठिदाग अशुभ ।

दोहा–अश्वाकेरी पीठिपर, दीरघ होय सफेद ।
लीन होइ तौ फेरिये, दूरिहि दूरि खरेद ॥

अथ तिलकतोर दोष ।

दोहा–जिहि घोड़ेके बदनपर, बढ़ी सफेदी होइ ॥
बिचि बीच खंडित परै, तिलक तोर हय सोइ ॥ १ ॥
याको कबहुँ न लीजिये, महादोष गंभीर ।
राज्य विनाशै सुख हरै, रोगी रहै शरीर ॥ २ ॥

अथ शहर भूकरंग दागदोष ।

दोहा–होइ सफेदी नासिका, शहर भूक तेहि नाम ।
पेट भरै नहिं ताहिको, जो यहि खरचै दाम ॥

अथ कंचुकी दागरंग अशुभ ।

दोहा–जानु पाछिले बाहु युग, काँधो अंड जु सेत ।
नाम कंचुकी अशुभ अति, नाशै कुल धन खेत ॥

अथ चौरंगीरंग दागदोष ।

दोहा–नासाकेरे भीतरै, फुटकी श्वेत देखाय ।
सो चौरंगी दोष वर, करै अलक्षण आय ॥

अथ श्रुतिहतरंग दागदोष ।

दोहा–श्रवण श्वेत यक कछु निरखि, श्रुतिहत दोष कहाइ ।
रोग करै सब सुख हरै, नकुल मतो सो आइ ॥

अथ श्यामतालू ।

दोहा–टीका तालू मधि लखै, श्यामवर्ण रँग होय ।
महानिषिद्ध वखानिये, शालहोत्र कह सोय ॥

अथ पंचस्थल शुभ।

दोहा-गर्दन पोता पीठि दुम, चरण श्वेत जो होइ।
पंचस्थल सित तुरगके, महासुलक्षण सोइ ॥ १ ॥
की थल चारौ तीनकी, की दुइ जानौं मीत।
गुलदरती शुभ नाम हैं, शालहोत्र परतीत ॥ २ ॥

अथ मिश्रित रंग।

स०-श्वेततुरंगम है हिमरूप, सो भूपतिको सुखदायक नीको।
रक्ततुरंगसो औ पुनिपीत, लस सवभाँति गौरंगुल फीको ॥
नील तुरंगम पन्नगके हत, श्यामनिधानसो नीलम नीको।
भाग्य वड़े घर आवत जासुके, सुंदर रूप सो भावत जीको॥
चौ०-सवते अधिक श्वेत जियजानौ। राजतिलकके योग्यवखानौ।
सो न होइ तौ कमक लीज। श्यामरंगको दूरि करीजै ॥

दोहा-रंग न जाको समुझिये, बाजी होय विशाल।
और अश्वको भय करै, ताहि तजौ ततकाल ॥ १ ॥
वाल अवस्था नील है, दिन दिन बढ़ै जु श्याम।
सो वाजी निज परिहरौ, भूलि न राखौ धाम ॥ २ ॥
अधिकरंग जाकी सुरति, घटै सो नितप्रति मान।
होय वृद्ध वहु लघु वरन, ताहि न लावै जान ॥ ३ ॥
नुकरा हंस स्वरूप है, राजत सित यक रंग।
सुर्खा सुरँग कुमैत कहि, मुसकी सफल प्रसंग ॥ ४ ॥
ए पांचौ रँग अतिहि दृढ, महा वलिष्ठ वखानु।
पंचदेवकी सकल महि, शालहोत्र मत जानु ॥ ५ ॥

अथ रंग प्रकृति शरद गरम।

दोहा–शीतल गरम स्वभाव कहि, और दुंद जो होय।
शालहोत्र या विधि कहै, जो पहिचानै कोय॥

चौ०–मुसकी औ कुम्मयत समुंदा। गरम प्रकीर्ति होय सुनु चंदा॥
सुरखा सुरँग सु हरयल जानौ। अश्वहि द्विज कहिये लखवानौ॥
नीला औ चीनी सबुजारा। शरद प्रकीर्ति होय बेतारा॥
बाकी रंग अश्वके जितने। अरुणै पीत उदै हैं तितने॥
है प्रधान सबके अँग पित्ता। वातपित्त मिलि होय विचित्ता॥
पहिचानै अँग अँगकी रीती। करि औषध आवै परतीती॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत बाजीदागरंग व प्रकृति शुभाशुभवर्णन नामक दशम अध्याय॥ १०॥

अथ भौरी शुभाशुभ वर्णन।

दोहा–भौंरी रूप सु तीनि विधि, एक अवर्त्तक जानि।
खनखजूर सम दूसरी, लीकरूप सो मानि॥ १॥
तीसरि है सम सीपके, येते रूपहि होइ।
गात स्थानके भेदसों, भिन्न भिन्न फल जोइ॥ २॥
ते वे भौंरी पंचदश, सब बाजिनके होइ।
ताते घटि बाढ़ि जो परै, तासु फलाफल जोइ॥ ३॥
ऊपर ओंठहि एक है, चोटी तर है एक।
दोइ होइ छातीविषे, दूहूँ दिशि यक एक॥ ४॥
दुइ अरमनिकी होति है, तेतो बाग कहाहि।
दहिने बांये दुइ अहैं, बाजिन कोखिनमाहि॥ ५॥

कोखिनकेरी भ्रमरि जो, पुठनजोरके पास ।
मिली होइ तौ अशुभ नहिं, टरी ऐव है खास ॥ ६ ॥
दुइ तोंदीके पास हैं, दुहुँदिशि पेटीमाहिं ।
कवि श्रीधर वर्णन करैं, शालहोत्र मत चाहि ॥ ७ ॥
दुइ भौंरी तर दाढ़के, भौंरी एक लिलार ।
दुइ मेजाके ऊपरै, पछिले पगन सुढार ॥ ८ ॥
ये जो भौंरी पंचदश, ताते घटि जो होइ ।
तौ शुभदायक होइ नहिं, शालहोत्र मत जोइ ॥ ९ ॥

अन्य ।

दोहा–भौंरी बारह वाजिकै, सदा सुभग करि जानि ।
सोऊ अब वर्णन करौं, क्रमते ताहि वखानि ॥
चौ०–भौंरी शीश कनपटी दोई । मस्तक एक चोटितर होई ॥
एकै भृंग भाल पर जानौ । एक नासिका आगे मानौ ॥
पेसवंदतर युगल लखावै । कुच्छा भौंरी दुइ देखरावै ॥
एक होइ नाभी अस्थाना । जंघमूल युग करौं वखाना ॥
ये सब उत्तम थान वखानौ । सून होय ते मध्यम जानौ ॥

अथ अशुभ भौंरी वर्णन ।

दोहा–प्रथमै भौंरी शीशमें, अशुभ कही जे आहिं ।
तिनको वर्णन करत हौं, दोष तासु दरशाहिं ॥

अथ मेढाश्रृंगी भौंरी अशुभ ।

दोहा–दोऊ श्रृंगके थानमें, जो भौंरी दुइ होइ ।
मेढाश्रृंगी नाम तेहि, दोष कहै सब कोइ ॥

अथ दूसरी सिगिनि ।

दोहा—औरौ सिंगिनि एक है, कहत अहौं अब सोइ ।
सहसपाद समलीक द्वै, बीच भालमें होइ ॥
सोरठा—यकै लीक जु होय, ताहूको सिंगिनि कहैं ।
ऊरध कह हय सोय, शालहोत्र मत जानियो ॥
दोहा—औरौ सिंगिनि रूप यक, सोऊ कहौं बखानि ।
तासु रूप वर्णन करौं, महादोषकी खानि ॥ १ ॥
भौंरी हैं बिच भालके, ताके ऊपर सोइ ।
काननके तर जानियो, या मधि गुच्छा होइ ॥ २ ॥
बार बड़े सब भालते, ता गुच्छाके आहि ।
तामें घूमे होइ कछु, शृंगरूप दरशाहि ॥ ३ ॥

सिंगिनिको फल ।

दोहा—धनको नाश करै सही, कोई सिंगिनि होइ ।
नाश करै निज स्वामिको, समर पराजय होइ ॥

अथ दोकरा भौरी ।

दोहा—भौंरी चोटीतर अहै, ताके पाँजर होइ ।
चोटीतरकी भौंरि युत, दुइ भौंरी हैं सोइ ॥ १ ॥
कहत बिलाइतमें अहैं, ताको खोसा जानि ।
मध्यम दोषी सो अहै, भँवरि दोकरा मानि ॥ २ ॥

अथ गंजनी भौरी ।

दोहा—भौंरी जो बिच भालके, ताके ऊपर होइ ।
की तौ ताके तर लसै, भौंरी तीसरि सोइ ॥ १ ॥

भौंरी जो बिच भालके, तायुत जानौ होइ।
दोइ दोइकी तीनि पुनि, ताहि गंजनी सोइ ॥ २ ॥
ताको नाम प्रसिद्ध यह, कहत भड़ेहरि लोग।
शालहोत्र मुनिके मते, अशुभ तासु संयोग ॥३॥
सो वह होत विशेषसों, तर ऊपर यह जानि।
पाँजर पाँजर होति नहिं, यहौ भेद पहिचानि ॥ ४ ॥

इसका फल।

दोहा—नाशै स्वामीकुलसहित, जाहि भड़ेहरि होइ।
ताहि तुरी असवार जो, रणमें हारै सोइ ॥ १ ॥
नाम भड़ेहरि भ्रमरि जे, तिनको कहौं बखानि।
भाँति दुई अरु तीनिकी, होती है यह जानि ॥ २ ॥
थोरी पाँजर तरफ दबि, सोउ भड़ेहरि आइ।
तर ऊपर पय होय जो, दोष विशेष कहाइ ॥ ३ ॥
चोटी केरी भ्रमरि जो, तातर भौंरी और।
नाम भड़ेहरि तेहुको, कहत मुनिन शिरमौर ॥ ४ ॥

अथ भौंहवर्ती भौंरी।

सोरठा—भौंरी जाके होइ, एक भौंह वा दुहुँनमे ॥
भौंहावर्ती सोइ, बुद्धि स्वामिकी हरति है ॥

अथ आँसूढार भौंरी।

चौपाई—आँखिनतर भौंरी जो होई। आँसूढार नाम है सोई ॥
एकै आँखि तरे जो अहई। आँसूढार तेहुको कहई।
नाशै वह घोड़ा है जाको। आँसूढार नाम है ताको ॥

अथ कर्णमूल भौंरी।

दोहा—वामकर्णके तर भँवरि, होइ कनपटीमाह।
कर्णमूल ताको कहै, दोषनको नरनाह ॥

अथ कपोलावर्ती भौंरी ।

चौपाई–बामकपोल भँवरि जो होई । आपु मरै स्वामीको खोई॥
ताहूको जानि संग्रह करौ । ऐसो हय देखत परिहरौ ॥

अथ श्रुत्याहत भौरी ।

दोहा–भौंरी दोनों कान तर, महादोष सो जानि ।
शालहोत्रको यह मतो, तजौ याहि पहिचानि ॥

अथ नासापुटवर्ती भौरी ।

दोहा–बाये नासापुट विषे, द्वै आवर्तक होय ।
स्वामीको नाशित करै, सहित पुत्रके सोय ॥

सोरठा–एकै भँवरि जु होय, ताहूको ऐवी कहै ।
तासम जानौ सोइ, निधन करै निज स्वामिको ॥

अथ अधरावर्ती भौरी ।

दोहा–जा वाजीके अधरसों, भौंरी होइ सुजान ।
एक होय की युगल पुनि, अधरावर्ति बखान ॥

अथ प्रेतावर्ती भौरी ।

दोहा–द्वौ नासापुट बीचमें, जो आवर्त्तक होइ ।
प्रेतावर्ती जानियो, कहत सयाने लोइ ॥

प्रेतावर्ती अधरावर्ती दोनोका फल ।

दोहा–कुल धन युत निज स्वामिको, करै नाश यह जान ।
प्रेतावर्ती दोष सम, अधरावर्ती मान ॥

अथ ग्रीवऐव भौरी ।

दोहा–अब ग्रीवहिके कहत हौं, अशुभ चिह्न जे आहि ।
नाम सहित पहिचानि पुनि, फल ताको दरशाहि ॥ १ ॥

बाईकेती बल विषे, जो द्वै भौंरी होइ।
मोक्षवर्ति गलवर्तिते, अशुभ जानिये सोइ ॥ २ ॥
स्वामिहि नाशैं द्वै भँवरि, शालहोत्र कहि सोइ।
स्वामी धन नाशित करै, इनमें एकौ होइ ॥ ३ ॥

अथ साँपिनि भौरी दूसरा नाम कीर युद्धमे शुभ और सब कामसें अशुभ।

दोहा–प्रथम बामको कहत हौं, तासु हेतु है याहि।
तासु ज्ञानते लखि परै, व्याली रूप जु आहि ॥ १ ॥
अरमनि भौंरी जो कही, एक तरफसो होइ।
तरफ दूसरी होइ नहिं, जानो व्याली सोइ ॥ २ ॥
एक तरफ अरमनि अहै, तरफ दूसरी सोइ।
दुइ भौंरी की तीनि हैं, सोऊ साँपिनि होइ ॥ ३ ॥
दुहू तरफ यक एक हैं, आगे पीछे सोइ।
सोऊ व्याली जानिये, कहत सयाने लोइ ॥ ४ ॥
दुहूँ तरफ बिच आलतर, भँवरि बरोबरि होइ।
ताहूको व्याली कहैं, मध्यमरूपहि जोइ ॥ ५ ॥
एक तरफ आवर्त्त है, तरफ दूसरी लीक।
सोऊ व्याली जानिये, जानौ तासु नजीक ॥ ६ ॥
डेढ़बाग अरु बाग बिन, जेती भौंरी होइ।
तरे आलके जानिये, साँपिनि कहिये सोइ ॥ ७ ॥

फल।

सोरठा–साँपिनि जाके होय, स्वामीको नाशित करै।
रोगी करि करि सोइ, तातें जनि संग्रह करौ ॥

दोहा-भौंरी अरमनिकी कही, आलअंतलौं होइ ।
होइ बरोबरि दुहूँदिशि, बाग कहावै सोइ ॥ १ ॥
आल कानके बीचमें, अरमनि भौंरी होइ ।
कमजाफातिनि पुच्छ है, डेढ़ बाग है सोइ ॥ २ ॥

अथ केशावावर्त्ती भौरी ।

दोहा-चोटी पाछे आल बिच, भौंरी खाके होइ ।
केशावर्ती जानियो, हनै स्वामिको सोइ ॥

अथ शोकावर्त्ती भौंरी ।

दोहा-आलअंतलौं जे भँवरि, शोकावर्ती सोय ।
शालहोत्रमुनिके मते, नाम सदृश फल होय ॥

अथ गिद्धिनि भौंरी ।

दोहा-दहिने बायें ककुदके, भौंरी निकटै होइ ।
मृत्यु देइ निज स्वामिको, गिद्धिनि जानौ सोइ ॥

अथ छत्रभंग भौंरी ।

सोरठा-तीनि भँवरि जो होइ, जा वाजीकी पीठिपर ।
छत्रभंग है सोइ, स्वामीको नाशित करै ॥

अथ धूमकेतु भौरी ।

सोरठा-जाके भौंरी होइ, जीन पिछारी पीठिपर ।
धूमकेतु है सोय, अतिदोषी सो वाजि है ॥
दोहा-धूमकेतुयुत वाजिको, घरमें आनै कोइ ।
पुत्र त्रिया हय स्वामिकी, नाश सहीते होइ ॥

अथ त्रिकालवर्त्ती भौरी।

दोहा-भौंरी जाके कटिविषे, एक होइ की दोइ।
नाश करै संग्राममें, त्रिकालवर्त्ती सोइ॥

अथ मूलघातिनी भौरी।

दोहा-पूँछमूलमें जो भँवरि, तीनहोइकी दोइ।
अथवा एकै होय जो, मूलघातिनी सोइ॥ १॥
ताहि चढै असवार जो, ताकी असि गति होय।
पुत्र त्रियायुत जाइहै, यमके घरको सोय॥ २॥

अथ स्वामिघातिनी भौरी।

दोहा-गुच्छ पुच्छमें भँवरि जिहि, ऐसो तुरी जु होइ।
ताको जनि संग्रह करो, यमदूतै है सोइ॥ १॥
ऐसो वाजी जाहिके, घरमें आयो होइ।
प्राणहरणको दूत है, यमको जानौ सोइ॥ २॥

अथ दुष्पावर्त्ती।

दोहा-भँवरि होइ या बार जो, मूलद्वार जिहि वाजि।
दुष्पावर्त्ती तिहि कहैं, भरो दुःखकी राजि॥

अथ विंदुक भौरी।

दोहा-गले हृदयके जोरपर, जो आवर्तक होइ।
बिंदुक ताको कहत हैं, पुत्र नाशकर सोइ॥

अथ भुजउट भौरी।

दोहा-जाके दोऊ भुजनपर, या एकैपर होइ।
भौंरीकी सी लीक हैं, भुजआटट है सोइ॥ १॥
षट महिनाके भीतरै, दोष जनावै सोइ।
स्वामीको भाई मरै, नाश पुत्रकी होइ॥ २॥

अथ हृदयावली भौंरी ।

दोहा–हृदयमाहिं जो द्वै भँवरि, तिनके बीचहि होइ ।
आवर्तककी लीक है, हृदावली है सोइ ॥
चौ०–हृदयमाह भौंरी जो होई । सो डारै स्वामीको खोई ॥
ऐसो वाजी भूलि न लीजै । जानि दोष तेहि त्यागन कीजै ॥

अथ तंगतोर भौंरी ।

दोहा–जा वाजीके उरविषे, भौंरी तँगतर होइ ।
वंश हरै निज स्वामिको, तंगतोर है सोइ ॥

अथ गोम भौंरी ।

दोहा–षट अंगुल लगु तंगके, होइ भृंगको वास ।
गोमनाम कहि ताहिको, करती वित्तविनास ॥

अथ शैल भौंरी ।

दोहा–गोमपिछारी भँवरि जो, शैल नाम सो आहि ।
ता वाजीके स्वामिको, विपति सही परि जाहि ॥

अथ कच्छावर्ती भौंरी ।

दोहा–कही भँवरि जो बगलकी, कच्छावर्ती होइ ।
पंच वगल करि प्रगट हैं, दुखदायक है सोइ ॥

अथ पार्श्वावर्ती भौंरी ।

दोहा–भँवरि होइ पसुरीनपर, पार्श्वावर्ति वखानि ।
धन मेटै निज स्वामिको, अहै अमंगलखानि ॥

अथ क्रोडावर्ती भौंरी ।

दोहा–भौंरी जो दुइ होति है, वाजीकोखिन--माहिं ।
अधिक होइ तिन दुहुँनते, क्रोडावर्ती आहि ॥

सोरठा—भौंरी कोखिन माहिं, एक तरफमें होइ जो।
एक तरफमें नाहिं, सोऊ क्रोडावर्ती है ॥

दोहा—उदर तरे जो वाजिके, तोंदी पाँजर जोइ।
भौंरी जोहैं दुहूँदिशि, दक्षिण वामहि सोइ ॥ १ ॥
जैसी भौंरी कोखिकी, दीन्हों रूप बताइ।
तैसीये एड़ाँ लसै, क्रोडावर्ती आइ ॥ २ ॥
जा वाजीके पेटमें, क्रोडावर्ती होय।
रावणकीसी संपदा, क्षणमें डारै खोय ॥ ३ ॥

अथ अस्फिकंदावर्ती भौरी।

दोहा—पाछिले पुट्ठन माहिं जो, जो आवर्तक होइ।
नाम अस्फिकंदा कहै, स्वामी वधिहै सोइ ॥

अथ लोटावर्ती भौंरी।

दोहा—तिन भौंरिनके ऊपरै, भँवरि और जो होय।
लोटावर्ती जानियो, ऋणै बढ़ावै सोय ॥

अथ कुक्ष्यावर्ती भौरी।

दोहा—भीतर दोऊ रानके, भँवरि होय जो आनि।
कुक्ष्यावर्ती जानियो, अहै अमंगलखानि ॥

अथ वज्री भौरी।

दोहा—जा वाजीके लिंगमें, भँवरि होयकी वार।
वज्री ताको कहत हैं, भरो दुःख भंडार ॥

अथ द्विमुखावर्ती भौरी।

दोहा—वैजापर हैं जाहिके, भौंरी की तौ लोम।
द्विमुखावर्ती जानिये, मेटै स्वामी कोम ॥

अथ क्षुरिकावर्ती भौरी ।

दोहा–जाके अगिले जानुमें, भँवरि ग्रन्थि पर होय ।
हनै स्वामिको पुत्र धन, क्षुरिकावर्ती सोइ ॥

अथ पीड़ावर्ती भौरी ।

चौ०–अगिले पगन भँवरि जो होई । पगमें परै कहूँ पर सोई ॥
पीड़ावर्ति भँवरि सो जानौ। खूट उखार जाहिर जग मानौ ॥
सो वह होत सुजम्मा ऊपर । एकै पगपर की पग दूसर ॥
ताहूमें यह भेद विचारौ । जंघमाहिं दुख देइ अपारौ ॥

दोहा–भौंरी जाके जानुमें, ऐसो अश्व जु होय ।
स्वामीको निधनी करै, वंशहि डारै खोय ॥

अथ जान्वावर्ती भौरी ।

दोहा–जाके पछिले जानुमें, भँवरि होय जो आनि ।
डंख उजारि प्रसिद्ध है, जान्वावर्तीजानि ॥ १ ॥
जान्वावर्तीभँवरियुत, जाके हय यहु होय ।
सदा रहै परदेशमें, चिंताव्याकुल सोय ॥ २ ॥
जा घोड़ेकी गुदामें, भँवरि होयकी वार ।
दुखदायक सो वाजि है, कीन्हों यह निरधार ॥ ३ ॥

अथ मस्तककी भौरी ।

दोहा–भौंरी जो बिच भालके, जानौ अंग प्रभाव ।
ताको कछु दोषौ नहीं, गुणो नहीं कविराव ॥

अथ चंद्रकोप भौरी ।

दोहा–तीनि भँवरि हय भालमें, ऊरध सुखहि वखानि ।
तासम लक्षण और नहिं, चंद्रकोश सो जानि ॥

सोरठा--दोइ बरोबरि होय, तातर भौंरी भालकी।
चंद्रकोश है सोय, ताहि निश्रेनी कहत हैं ॥ १ ॥
जो द्वै भौंरी होइ, तासु पुच्छ तरको लसै।
पै अवगुंठित होइ, चंद्रकोश सोऊ अहै ॥ २ ॥
दोहा–चंद्रकोश है जाहिके, अस हय पावै कोइ।
पुत्र पौत्र दारा सहित, चिरंजीव जग सोइ ॥ १ ॥
देय विजय संग्राममें, चंद्रकोश है जाहि।
देश कोष महिपालके, सदा बढ़ावत आहि ॥ २ ॥

त्रिकूट भौरी।

दोहा–जाके भँवरि ललाटमें, तीनि अधोमुख देषि।
ताहि त्रिकूट बखानिये, संपति करै विशेषि ॥ १ ॥
भँवरि होय जो ऊर्द्धमुख, चंद्रकोश सो जानि।
ताहि त्रिकूट बखानिये, होइ अधोमुख आनि ॥ २ ॥
भौंरि होइ त्रिकूट जिहि, सो हय जाके होय।
धन दारा अरु पुत्रसुख, देइ स्वामिको सोय ॥ ३ ॥

अथ चद्रार्क भौरी।

दोहा–बीच भालमे भँवरि जो, दूसरि ताके पास।
होइ बरोबरि ताहिके, सो वह करिकै खास ॥ १ ॥
सोतर ऊपर होय नहिं, नहीं लीक सम आहि।
तासु नाम चंद्रार्क है, लक्षण नीक कहाहि ॥ २ ॥
जाके होय ललाटमें, भँवरि युगल रविचंद।
देइ स्वामिको भ्रातसुख, दिन दिन करै अनंद ॥ ३ ॥

अथ शिव भौरी ।

दोहा–भौंरी होइ कपोलमें, दक्षिण अंक सुजान ।
ता भौंरीको शिव कहत, नितप्रति कर कल्यान ॥
चौ०–दुऔ कपोल भवँरि जो होई । जानों शुभ लक्षण है सोई॥
बाजी रहै सदा अस जाके । दिन दिन बाढ़ै संपति वाके ॥

अथ इंद्राक्ष भौरी ।

दोहा–कान पिछारी मूलमें, दक्षिण अंक बखानि ।
भँवरि होय जा वाजिके, इंद्रअक्ष सो जानि ॥ १ ॥
इंद्राक्षी जो बाजि है, होय सु जाके आनि ।
वासव सम सुख देत है, कहँलौं कहौं बखानि ॥ २ ॥

अथ यशोदा भौरी ।

दोहा-वामकर्णके मूलमें, भँवरि पिछारी होइ ।
नाम यशोदा जानियो, सुखकारी हय सोइ ॥

अथ चक्रवर्ती भौरी ।

दोहा–ये दोनौं लक्षण परैं, तामधि लक्षण येइ ।
भौंरी कानन कोशमें, चक्रवर्ति कहि देइ ॥ १ ॥
राजनके वह योग है, सकल सिद्धिकहँ देइ ।
तापर जो कोई चढ़ै, विजय युद्धमहँ लेइ ॥ २ ॥

अथ वृषभाण्ड भौरी ।

दोहा–कर्ण मूलको छाँड़िकै, नेत्रप्रांतलौं जानि ।
भौंरी दाहिने अंगमें, सो वृषभांड बखानि ॥ १ ॥
पुत्र पौत्र निजनाथको, देति अहै वृषभांड ।
राज्य अभूषण धन सहित, संपूरणफल भांड ॥ २ ॥

प्रसादतारन भौंरी।

सोरठा—दहिने बायें तात, चोटीतरके भँवरिके।
चारि पांच षट सात, सो प्रसादतारन अहै॥ १॥
जाके अस हय होइ, उत्सव ताके नित रहै।
देत अहैं धन सोय, संपूरण अभिलाष मन॥ २॥

अथ विजय भौंरी।

चौ०—दहिने नासा भौंरी होई। विजय नाम लक्षण शुभ सोई॥
जाके घर वाजी अस आवै। विजयसहित कीरतिको पावै॥

अथ सग्विनी भौंरी।

दोहा—नासापुटके ऊपरै, दहिने अंगहि जानि।
धनवर्द्धक है स्वामिको, ताहि सग्विनी मानि॥

अथ ग्रीवाकी भौंरी शुभ।

दोहा—भौंरी चारि गरेतरे, शुभ हैं सुखको धाम।
तिनके कहि अस्थान अब, अरु लक्षणयुत नाम॥ १॥
चिंतामणि अरु गुणमणि, होत; कंठमणि नाम।
चौथी द्यौमणि जानिये, करै सुःख अभिराम॥ २॥

अथ चिंतामणि भौंरी।

दोहा—जा वाजीके कंठमें, भँवरि तीनि सुखदानि।
ताको चिंतामणि कहैं, जयकारी हय जानि॥

अथ कण्ठमणि भौंरी।

दोहा—कंठमाहिं भौंरी सुभग, जाके एकै होइ।
ताहि कंठमणि कहत हैं, जयकारी हय सोइ॥

अथ गुणमणि भौरी ।

दोहा–भौंरी ऊपर कंठके, दहिने अंगहि होय ।
एक दोय की तीनि पुनि, गुणमणि जानौ सोय ॥

देवमणि भौरी ।

दोहा–बीच गलेके होति है, कंठहिके कछु दूरि ।
द्यौमणि जानौ ताहिको, देत अहै सुख भूरि ॥

चारौ भौरिनको फल ।

दोहा–पुत्र पौत्र धन राज्य सुख, विजय कीर्ति अरु जानि ।
इन चारोंमें एक जो, मनइच्छित फलदानि ॥

अथ गरुड़मणि भौरी ।

दोहा–दोउ भुजनके बीचमें, आवर्त्तक जो होइ ।
नाम गरुड़मणि ताहिको, सकल दुःख हरि लेइ ॥

अथ क्षेमकरी भौरी ।

दोहा–द्वै भौंरी बिच कंठके, ते तर ऊपर होय ।
नितप्रति जानौ सुखद बहु, क्षेमकरी है सोय ॥

श्रीवत्सांक भौरी ।

दोहा–भौंरी छाती माहिंकी, प्रथमहि वरणी जोइ ।
वामअंग सो होइ नहिं, दहिने अंगहि होइ ॥
सोरठा–तायुत वाजी सोइ, श्रीवत्सांकछुचिह्न है ।
जा घर अस हय होय, देह धरे लक्ष्मी वसैं ॥
दोहा–तिन दोनोंके मध्यमें, एक भँवरि की दोइ ।
सोऊ वह वत्सांक है, शालहोत्र मत सोइ ॥

अथ शुभाकर भौरी ।

दोहा–भौंरी गामचिके तरे, सुमके ऊपर होइ ।
ताहि शुभाकर जानिये, शुभकी आकर सोइ ॥ १ ॥
अगिले बायें पाँइपर, जो यह भौंरी होइ ।
ऐसो वाजी जहँ रहै, नितप्रति उत्सव होइ ॥ २ ॥
ताहि चढ़ै असवार जो, लक्ष्मी ताके हाथ ।
अधिप होय सो भूमिको, शत्रु नवावैं माथ ॥ ३ ॥

अथ विजयकर्ण भौरी ।

दोहा–जाके पछिले पाँवमें, भँवरि गामची माहिं ।
विजयकरण है नाम तिहि, शुभगुण जानौ ताहि ॥ १ ॥
सो स्वामीको सुखद नित, रहै जासुके साथ ।
युद्ध विजय यह जानियो, विजय तासुके हाथ ॥ २ ॥

अथ चक्रीनामक हय ।

दोहा–होय तुहिन सम श्वेत हय, श्वेत नेत्र अरु होय ।
चक्र परै तालूविषे, चक्री वाजी सोय ॥ १ ॥
सो स्वामीको सुखद नित, सकल मिटावै दोष ।
कीरति बाढ़ै तासुकी, दिन दिन बाढ़ै कोश ॥ २ ॥

अथ कामविगारी भौरी ।

दोहा–अश्वाकेरे जीभतर, होय जु आलि यहि ठौर ।
कामविगारी नाम तिहि, काज विगारे और ॥

अथ बनियाँ भौरी ।

दोहा–भौंरी होय जो पेटतट, अंगुल युगल प्रमान ।
कच दीरघ वा ठौरमें, बनियां ताहि बखान ॥ १ ॥

ऐसो तुरंग जो लीजिये, महादोष गंभीर।
राजपाट सुख संपदा, नाशै और शरीर ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीभौंरीशुभाशुभवर्णन
नामक एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

अथ विशेष दोष ।

दोहा--हिरदावलि अरजल सहित, अरु सुख कारो जासु।
इन्हैं विहाय कुंतिसुत, कारक विविध विनासु ॥ १ ॥

चौ०-हिरदावलिसिंहिनि बनियारी।अरजलअहिमुख अकरबभारी
येते दोप पृथिराज विहाई। और दोष कम करत बुराई ॥
सीताराशिर अरु तँगतोड़ा। विक्रम त्याग कीन दुइ घोड़ा॥
थनी गोम अरु नैन जु ताषी। सबलसाहि तीनै तजि राषी॥

दोहा-घर घोड़ीकी पैद जो, दान मिलै दै जोर।
ताको दोष न मानिये, मंगलमूरति घोर ॥

अथ घोड़ीके दोष। देखो घोड़ी नं० ८२.

दोहा-हिरदावलि सिंहिनि सहित, अरजल अकरब नेस।
खरसुंभी अरु गोदुमी, यह अश्विनि कृत खेस ॥

अथ आलदोप।

सोरठा-दुहूं तरफ जो आल, खड़ी रहै कैधौं चिकुर।
युगल दोष करि ख्याल, ऐसो तुरँग न लीजिये॥

अथ चिंतामाणिवार शुभ।

दोहा-जिहि घोड़के वदनपर, कच दीरघ अति होय।
चिंतामणि तिहि तुरँगको, नाम कहै सब कोय ॥

तिहि वाजी गुण सुभग अति, जस पूरणिमाचंद।
सुखी करै निज प्रभुनको, दिन दिन बढ़ै अनंद॥ २॥

अथ बत्तिस लक्षण अंगकी पहिचान शुभ।

छप्पयछंद–दीरघ जानो चारि चारि उन्नत अनूप धर।
चारि अरुण हैं अंग चारि सूक्षम अनंदधर॥
चारि होंय लघु जासु चारि आयुत प्रवीन कहि।
चारि होयँ अध ठौर चारि विन मास जासु लहि॥
यहि भाँति वरणि वाजी कहे बत्तिस लक्षण जासु तन।
गनि निदान ग्रंथन मते सो कर्महि सहित विचारि मन॥

पुनःनाम अंग।

छंद तोमर–मुख केश दीरघ जानु। भुज ग्रीव सो परमान।
पग नासिका पुट थान। अरु भाल उन्नतकान॥
गनि ओंठ अरुणो तालु। पुनि लिंग जीभ रसालु।
लहि कोषि मोजा तुच्छ। गहि पुंज सूक्षम पुच्छ॥
लघु कान नाक सुवेह। कटिवंशटीसो येह।
युग पुट्ठ आयत भाल। मणिकंध उर करु ख्याल॥
उदर चिवुक अध जानि। कटिजानि सो परमानि।
बिन मास मुख औ तालु। पसुरी कलाइको हालु॥

दोहा–शालहोत्र औ नकुलमत, लक्षण वरणि बतीस।
ऐसे वाजी सुभगवर, चाहत तिन्हें महीस॥

अंगस्वरूप लक्षणवर्णन।

चौ०–अँगके लक्षण मैं कछुभाषौं। जो कछु शालहोत्र गुणिराषौं॥
कलसूं ढार नयन बड़भारे। थुथुनी छोटी अधर कठोरे।

कटिसमूल ग्रीवा अस्थूला । छाती चौड़ी उदर समूला ॥
सूधे सूक्षम मास न होई । करपद मृगसमान है सोई ॥
ग्रीवा पूंछ ऊँच सब आवै । कटि लघु चौड़ी पीठि लखावै ॥
छोटे कर्ण श्याम शुभभारे । लंबोदर कोषा फुलवारे ॥
चारौ चौका आठौ बंदा ॥ जो पावे या मनको चंदा ॥
भूरि भाग्य तिहि नरको गावै । जो घोड़ा या विधिको पावै ॥
छप्पय–ग्रीवा दीरघ नैन भाल जाके विशाल अति ।
पीन उरस्थल भीर नटी सुगम सूधे अति ॥
अरुण अधर मणितालु अरुण रसना निधानधनि ।
स्वच्छ केश शुभ चारु चरण लघु पुच्छ अधरमनि ॥
अतिगोल जंघ अरु जानु गीन सम श्वेत दशन बखानियें ।
इमि अंग शुद्ध वाजी सुभग सब भूपनके मनमानिये ॥
छंद–दृग दीरघ अश्वा पीनमाहि। अरु ठनत कंध सो ग्रीवताहि॥
चामरके सम केश लसै । पुच्छनिसुच्छ सो वारत्रसै ॥
अति चीकन रोम कठोर कटी । उर उन्नत उर्ध सुबीच अटी ॥
थूल भुजा दृग ग्रंथि गही । हैं पग सोतन पीन तही ॥
सोरठा--ऐसो वाजी पाय, सुखी होत भूपति महा ॥
समर सुभारो जाय, शत्रुनको शालै सदा ।

अगनकी नाप वर्णन ।

छंद मनहरन–अंगुल सत्ताइसलों आनन प्रमानको,
करण प्रमान रसअंगुल बखानिये ।
अंगुल नखतके प्रमाण कटिपुच्छ तट,
लघु अति पुच्छ हाथ युगल प्रमानिये ॥

तारू चारि अंगुल विदित कंध सैंतालिस,
पीठि पीन चौबिसई अंगुल सो जानिये ।
ग्रीवाको प्रमाण अब अंगुल चालीस लगु,
जानु चारु चौबिसई अंगुल सो ठानिये ॥
दोहा–लिंग सु हस्त प्रमाण है, अंड च्यारि शुभ जान ।
मोजा अंगुल चारिके, कहत ग्रंथ परमान ॥ १ ॥
पुच्छनते गनि ग्रीव लगु, लीजै वहै प्रमान ।
अंगुल असी विचारिये, वर्णत सुकवि निधान ॥ २ ॥
दुइ अंगुल बत्तिस समुझि, ऊँचो वाजिप्रमान ।
सो भावै भूपतिनको, ताते करौ सुमान ॥ ३ ॥
इनते अंगुल जो अधिक, जा वाजीको होय ।
शालहोत्र मुनिके मते, यह प्रमाण है सोय ॥ ४ ॥

मध्यम ।

कबित्त-कहिये सुतुर[1]दंत रदन बड़ो है जासु,
ढील श्रवण चौड़ी श्रीपरे सागोस भाषे हैं ॥
छोटी पेस जासुकी कहत तख्त गर्दन[2] है,
ऊंचो बाहु जाको गावसाना नाम राखे हैं ॥
सीधो पांव जाहिको सुरुग[3]पाँव ताको कहै,
लागै घूट चलत कच्चल कहि लेख हैं ।
सूक्षम उदर पीठि लपट्यो न ताजा होत,
सोई आहूशिकम अशन कम चाषे हैं ॥

---

१ देखो घोड़ा नम्बर ८३. २ देखो घोड़ा नम्बर ८४. ३ देखो घोड़ा नम्बर ८५.

अथ हीनदंत दोष । देखो घोडा नं० ८६.

दोहा–अश्वाकेरे बदनमों, एक दंत नहिं होइ ।
हीनदंत है नाम तिहि, वाहि लेइ मति कोइ ॥

कवित्त–पद छिटको है ताहि कहत कुसादेरव,
पतले सुमनको चपाती सुम रेषियो ।
अतिहि फिरायेते पिछानो जात लंगपद,
लंगकोहनाशो अतिनीठि करि पेषियौ ॥
कमखोर जानो जात छोटी लेडी एड़ी ही तै,
करत रदन घाव बन्दा गिरि लेखियो ।
निशिमें न देखै सब खोर ताकी पहिचान,
कमल देखायेते अँधेरेमें न देखियो ॥ १ ॥

सोरठा–अधिक हीन रद जासु, बिररे बिररे जो लहैं ।
करै वित्तको नासु, धनी धाम नहिं रहि सकै ॥

दोहा–अश्वाकेरे बदनमें, उभै होइ बड़दन्त ।
जठरदन्त दूषित बड़े, स्वामीको बहु चिन्त ॥ १ ॥
सात दशन जो देखिये, वाजि सदन सो मानि ।
महादोष त्यागौ तुरत, घरमें राखे हानि ॥ २ ॥
दन्त अधिक जिहि अश्वके, सघन जानिये जोइ ।
गनि कराल दूषण महा, नकुल मते है सोइ ॥ ३ ॥

सोरठा–आधा रदन जु एक, इक विहीन जो देखिये ।
दूषण महा विशेष, नकुल कहैं सहदेवसों ॥

अथ अशुभ लक्षण–छन्द पद्धरी ।

तजुनेसदन्त मुनि अधिक जानि। लखिपांचदन्त दोउ दुखदखानि

बिनु कारण रसना लफलफाय।अहिमुखी[1]दोष तेहि नकुल गाय॥
मुख अर्द्ध उर्द्ध[2] संपुट कराहि । नृप देखतही परिहरौ ताहि ॥
जो अधरै दोउ राखै बगारि । सो दोष करौली[3] अशुभकारि ॥
बड़ छोट होत जेहि अधर दोय । अतिदोष मूसली[4] भनत सोय ॥
नित अधर बुलावैं जो तुरंग । कहि वायभक्ष मुख करत भंग ॥
जो शशाकरन[5] सम अश्वजानि । सो शशाकरन दोषै बखानि ॥
त्रयकरन जासु लखिये तुरंग । गजकरन[6] नास नहिं करु प्रसंग॥
अति अशुभ ताहि भाष्यो सुजान।यक छोट बड़ो यक तुरै कान॥
यक कंजनैन अरु श्याम एक । अतिदोष गनौ ताषी विवेक ॥
जब दुवौ नैन कंजा लखाय । तेहि चक्र[9]दोष कहि नकुल गाय ॥
दृग कंज दोष इनमें विहाय । दुइरंग दुखद अतिही कहाय ॥
महिषा[10] दृग सम लखि नैन जासु।सुज्जायुततजिकृतविविध नासु
जो तुरै नेत्र बिल्ली[11] समान । तेहि सेंति न लीजो बुधिनिधान ॥
कामोली[12] लखि हय बैल ग्रीव । दृग ढरत रहत युग दोषसींव ॥
ना जावैं वाके बीचमाहि । पैसदनथनी अतिदोष चाहि ॥
लघु देखि मनी कहिये सु दोष । तुचने जाके ढिग उपर चोष ॥
मुतनापर टीका श्याम हेरि । कालिंजनीय[13] अस दोष टेरि ॥
कहि शालहोत्र मत जो प्रवीन । ऐसो तुरंग सो त्याग कीन ॥
लखि एक अंडकी तीनि हेरि । कैसून अंड मत नकुल केरि ॥

---

१ देखो घोड़ा न०८७. २देखो घोड़ा न०८८. ३ देखो घोड़ा न०८९. ४ देखो घोड़ा नं०९०. ५ देखो घोड़ा न० ९१. ६ देखो घोड़ा न० ९२. ७ देखो घोडा नं० ९३. ८देखो घोडा नं० ९४. ९ देखो घोडा न० ९५. १०देखो घोड़ा न० ९६. ११ देखो घोडा नं ९७. १२ देखो घोडा नं ९८. १३ देखो घोड़ा नम्बर ९९.

जहँ बार जम्यौ लखितुरै अंड । इनको तजिये जहँ दुअन झुंड॥
जहँ पूँछ दंडि सेती तिहारि । कहि दोष अन्नहत दरिद कारि ॥
खर सरिस सुंम खरसुमी भाषि । सो दोषनमें बहु गनित राषि॥
बोलै तुरंग निशि बार बार । निज स्वामि गवन परदेश कार ॥
दुम अंग सबै निशि चमक आसु।चिलकै चिलगी कच करत नासु॥
जब सादवान सम तुरय हेरि । तिनको नहिं लीजै कहत टेरि ॥
दुम परसै जो महिमें तुरंग । कहि झारू[1] दुम साउदोष अंग ॥
बहु शीश हलावै तुरँग जौन।सो थान त्याग करि सकै भौन॥
जब लीदि करै आँसू ढराइ । बहु टेरै सो रणमें पराइ ॥
जिहि तुरँग बाँटि है कंठमाहि।तिहि स्वामि भारजा रुज कराहि॥

अथ श्वेततालू ।

दोहा—तालू जाको श्वेत सब, नहिं ललाई आहि ।
तामहँ शंख समान सो, चिह्न कछू दरशाहि ॥
चौ०—ऐसो वाजी जो कोइ होई। निंदित भँवरि सहित शुभ सोई॥
जो कोउ आपन जीवन चहै । भूलिहु ताको जनि संग्रहै॥

अथ श्यामजिह्वा वाजी ।

दोहा—जाकी जिह्वा श्याम सब, की बिंदुक कोउ श्याम ।
जिह्वा श्याम बखानहीं, वाको सब बुधिधाम ॥

उद्दालक ऐब ।

दोहा—ऊपरको रद बाढ़िकै, अधरहि लेइ दबाय ।
सो उद्दालक नाम है, स्वामीको दुखदाय ॥ १ ॥
बाढ़ि जाहि अधको रदन, ओठहिं लेइ दबाइ ।
सो उद्दालक हय अहै, करै अमंगल आइ ॥ २ ॥

---

[1] देखो घोड़ा नम्बर १००.

अथ भल्लूकास्य हय ।

सोरठा--दुँहू तरफको होइ, आल गिरे जा वाजिके ।
भल्लुकास्य है सोइ, हरै स्वामिके वंशको ॥

दोहा-नेस निकासे होय जो, ऐसी घोड़ी होय ।
ऐबी जानौ ताहिको, भूलि न लीजै कोय ॥

अथ मेषदंत वाजी ।

दोहा-विरले जाके दंत हैं, मेषदंत कहि ताहि ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, भूलि न लीजै वाहि ॥ १ ॥
तिहिकी आदिक जे कहे, ऐसे ऐब बखानि ।
करत स्वामिको घात अरु, समर पराजय जानि ॥ २ ॥

अथ अंगविकार ।

सोरठा-गुलरीफल आकार, गूंथी कोवा माहिं जेहि ।
कीजै तहाँ विचार, मासाते अतिरिक्त है ।

दोहा-ऐसी गूंथी देहमें, होइ कहूँ पर आय ।
जानौ अंगविकार सो, महादोष दरशाय ॥

अथ शृंगी वाजी ।

दोहा-दोउ काननके बीचमें, होत शृंग यह जानि ।
मासा सम है रूप तेहि, कहौं तासु पहिचानि ॥ १ ॥
अजयासुतके शृंग ज्यों, प्रथमहि निकसति आय ।
खालके भीतर ऊँच कछु, दोयेते दरशाय ॥ २ ॥
शृंगीवाजी होय जो, महिपालौंके आय ।
नाशै धन कुल स्वामिसुत, अपर पुरुषको आय ॥ ३ ॥

अथ दृष्टांत पूर्वक विशेष दोष ।

हरिश्चन्द्र त्रयकर्णते, वेणु दुसफते जानि ।
रावण शृंगीअश्वते, श्रीधर कहो वखानि ॥ १ ॥

कृष्णक्षीणरँग वाजिते, सहसार्जुनका नास ।
हरितरंगके वाजिते, रामचन्द्र वनवास ॥ २ ॥
शंखाक्षी हय त्रिशंकुको, कर्णश्वेत रँग छीन ।
अधिक रदन दुर्योधन, पांडव दन्तन हीन ॥ ३ ॥
सोकावर्ती वाजिते, भयो परीक्षित काल ।
ऐवी वाजी संग्रहै, ऐसो होय हवाल ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसग्रह केशवसिहकृतवाजीविशेषादिदोषकथन नामक द्वादश अध्याय ॥ १२ ॥

अथ अश्व लेनेका मुहूर्त चक्र।

ति.	वा.	नक्षत्र
१	र.	पु. पु.
२		
३	चं.	
५		रे.मृ.
६	बु.	
७		
८		अ.श.
१०	वृ.	
११		स्वा.
१२	शु.	
१३		ह.
१५	श.	
३०		
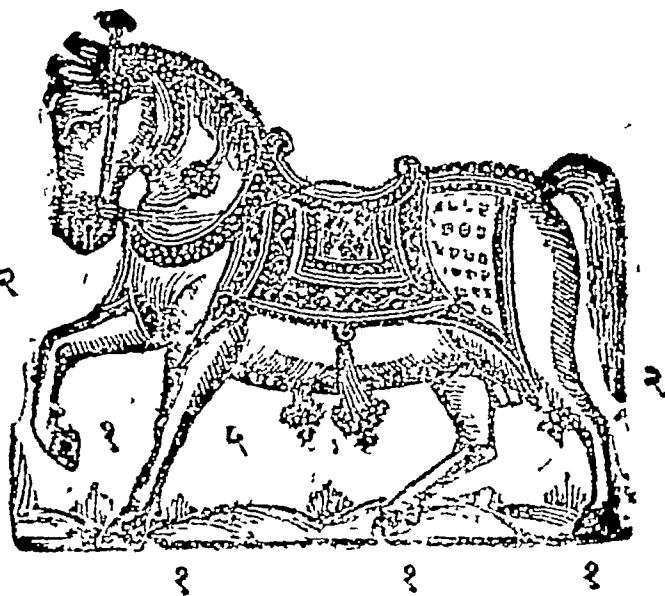
दोहा—अश्वाकारहि चक्र लिखि, अभिजित सहित नक्षत्र ।
न्यास कीजिये तासुमें, या क्रमसों सर्वत्र ॥ १ ॥
कन्ध पांच रवि नषतते, दश पीठीपर धारि ।
फेरि देइ धरि पूँछमें, द्वै चरणनमें चारि ॥ २ ॥
पाँच नषत पुनि उदरमें, द्वय मुखमें पुनि जानि ।
अर्थलाभ मुखमें परै, उदर वाजिकी हानि ॥ ३ ॥
भागै रणते पगनमें, पूँछहि त्रिया विनासु ।
पीठिमाहिं सुख देइ वहु, कंधमाहिं सुख जासु ॥ ४ ॥

मुहूर्त ।

दोहा—पुष्य पुनर्वसु रेवती, मृगशिर अश्विनि होइ ।
शतभिष स्वाती जानियो, हस्त सहित शुभ सोइ ॥
सोरठा—इन नषतनमें कोइ, रिक्ता तिथि कुजवार विन ।
वाजिकर्म शुभ सोइ, शुद्ध परै जव चक्रमें ॥

अथ खरीद समयकी चेष्टा ।

दोहा—शुभ वाजी नाहिं शुभ करै, अशुभ करै नाहिं हानि ।
सो फल चेष्टा देखिकै, ताको कहौं बखानि ॥ १ ॥
प्रथम ऐब देखै नहीं, चेष्टा लेइ विचारि ।
वद चेष्टा जो हय करै, ताको तजो निहारि ॥ २ ॥
नीकी चेष्टा हय करै, ताहि जरूरौ लेइ ।
घरमें पहुँचै वाजि वहु, तुरतै सुखको देइ ॥ ३ ॥

अथ शुभ चेष्टा ।

सोरठा—अश्व खरीदन जाइ, देखि खरीदारै तुरी ।
फुरकै अति सुख पाइ, ताहि खरीदै सुख लखै ॥

दोहा–याही विधिसों देखिये, शाँक साधि हय लेइ ।
ताहि खरीदै सुख लहै, नफा बहुत कछु होइ ॥
सोरठा–वाजी देखन जाइ, लीदि करै तब वाजि जो ।
सो सुख पतिको देइ, ताहि जरूरै लीजिये ॥
चौ०–हींसै वाजी नृत्यहि ठानै । धरै पगन हर्षित मन मानै ॥
लेनहारको यहै बतावै । संपति घरमें बहुत बढ़ावै ॥

अथ अशुभ चेष्टा ।

दोहा–लेनहारको देखि हय, पीठिहि देइ खलाइ ।
मोहि खरीदे नहिं नफा, वाजी देइ बताइ ॥ १ ॥
कितनौ सद्दा होइ जो, तहूँ न लीजै वाहि ।
हठ करि कोऊ लेइ जो, घटी सही परिजाहि ॥ २ ॥
जाइ खरीदन अश्वको, खरीदार जो कोइ ।
काढ़ै अपनो लिंग हय, की तो मूतै सोइ ॥ ३ ॥
कितनो लक्षण शुभ अहै, वाजी होय विशाल ।
शालहोत्र अस कहत हैं, ताहि तजौ ततकाल ॥ ४ ॥
लेनहारको देखि हय, सभय डुलावै पाँइ ।
ताहि खरीदेते तुरत, अवशि बाल नाशि जाइ ॥ ५ ॥
पूँछ हलावै करनहू, की तौ तानै देह ।
नाश करै निज स्वामिको, वाजी बिन संदेह ॥६ ॥
शुभ भौंरी जाके परै, बदचेष्टित हय होइ ।
सो शुभ ताको नाहिं करै, जानि लेहु सब कोइ ॥ ७ ॥
चेष्टा नीकी जो करै, भँवरि अशुभयुत जानि ।
ता वाजीको जानियो, करत नहीं सो हानि ॥ ८ ॥

शुभ चेष्टा वाजी करै, शुभ भौंरीयुत होइ।
देत अहै निज स्वामिको, पूरण सुखको सोइ ॥ ९ ॥
भौंरी जाके अशुभ है, बदचेष्टित हय होइ।
करती पूरण दोषको, श्रीधर वरणो सोइ ॥ १० ॥
घोड़ा लेने जाइ जो, पीठि डुलावत देषि।
महा अशुभ नहिं लीजियो, करि है नाश विशेषि ॥ ११ ॥
दूर्व भक्षते तुरँग जो, निकट श्रवणके जाहि।
देखत छोड़ै घासको, सेंति न लीजौ ताहि ॥ १२ ॥

अथ शिक्षा वर्णन।

दोहा—कइ यक ऐसे रोग हैं, प्रथम परत नहिं जानि।
फिरि बीते कछु कालके, ते उघरत हैं आनि ॥ १ ॥
लीजौ वाजी मोल जब, तिन रोगनको जानि।
जहां चिकित्सा है कही, कहों तहां पहिंचानि ॥ २ ॥
बड़ी नजरबीनी किये, परैं रोग वे जानि।
तजौ वाजि तिन रोगयुत, ते अब कहौं बखानि ॥ ३ ॥
हड्डा पुस्तक मोतरा, पछिले पगमें होइ।
लँगड़ा वाजी होइगो, इन रोगनको जोइ ॥ ४ ॥
होत आगिले दांउमें, रोग चकावरि एक।
दूजो जानौ जानुआँ, करिकै बहुत विवेक ॥ ५ ॥
दाग परंटैं जाहिके, जालदारकी आहि।
इन रोगन युत वाजिको, देखत छाँड़ो ताहि ॥ ६ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीमुहूर्त्तचक्रखरीदसमय चेष्टादि शिक्षाकथन नामक त्रयोदश अध्याय ॥ १३ ॥

अथ हयशालारचनाविधि । देखो हयशाला नंबर १०४.

दोहा–निजमंदिरते वाजिको, शाला पूरब होय ।
की उत्तरदिशि चाहिये, कहत सयाने लोय ॥ १ ॥

तहां भूमिको कीजिये, प्रथम प्रशस्तहि जानि ।
पूँछि ज्योतिषी विप्रसों, दीजै नीवहि आनि ॥ २ ॥

जितनो ऊंचो कीजिये, तितनो चौड़ो होइ ।
लंबा कीजै नापसों, आयत नीको सोइ ॥ ३ ॥

गज आयतको कीजिये, वृष आयतको होइ ।
हयको आयत होई जो, तो अति नीको सोइ ॥ ४ ॥

जितने थान तुरीनके, तितने मोहरा होइ ।
कीजै दुहुँ पाखन विषे, दुइ दरवाजा सोइ ॥ ५ ॥

प्रति थानहिके अग्रमें, कीजै लघु दरवाज ।
हयशाला चारिउ तरफ, कीजै छज्जा साज ॥ ६ ॥
सो छज्जा या विधि करै, नहिं भावै बौछार ।
ता सायाको जानियो, सोहै सुखको सार ॥ ७ ॥
सब दरवाजन माहिंमों, देहु केंवार लगाइ ।
जिन्हैं कीजिये बंद जो, आवै नाहिन बाइ ॥ ८ ॥
कुरसी कीजै ताहिकी, शालहोत्रमत मानि ।
एक हाथसों नीच नहिं, दोइ हाथ लगु जानि ॥ ९ ॥
शालाकी पूरब दिशा, की उत्तरदिशि जानि ।
तहाँ जलाशय होइ जो, तौ अति सुभग बखानि ॥१०॥

लोहमयी बनवाइये, खाँचे यह जिय जानि।
जितने वाजी बाँधिये, उतने खांचे आनि॥ ११॥

वाजि अगारी माहिमें, छतिमो देइ टँगाइ।
तामें डारै घासको, झरत धूरि सब जाइ॥ १२॥

होइ नहीं सामर्थ्य जो, इतनी मालिक माहि।
तौ छपरा डरवाइये, अश्वथानपर आहि॥ १३॥

बाँस एक चिरवाइकै, खांची लेइ बनाइ।
अश्व अगारी बांधिये, घास वहीमें खाइ॥ १४॥

अथवा चरनि बनाइये, माटी पोढ़ि मँगाइ।
होइ ऊंचि दो हाथकी, घास वहीमें खाइ॥ १५॥

अथ हयशालाप्रवेशन वा निःसारणमुहूर्त—मुहूर्त्तचितामणिके मतसे।

घनाक्षरी—राशी शुभ खगनकी अठवों सदन शुद्ध,
जौन जाकी योनि औ नषत चर गाये हैं।
ऐसे समै सदनमें पशुनको राख्यो जिन,
दिन दिन तिनहीं अशेष सुख पाये हैं॥
रिकता दरश आठैं मंगल श्रवण ध्रुव,
चित्रामें सदनते जे बाहर पठाये हैं।
पाये सब सुख तिन इनहीमें राखे जिन,
तिन निज जीको भूरि शोक उपजाये हैं॥

मुहूर्त हयशाला, प्रवेशन, शुभलग्न अष्टम शुद्ध हो.					
ति.	वा.	नक्षत्र	ति.	वा.	नक्षत्र
१	र.	अ.	१	र.	
२	चं		२		अ. भ.
३		ध.	३	चं.	कृ. मृ.
५	बु.	श.	५	बु.	आ. पु.
६			६		पु. श्ले.
७	बृ.	पुन.	७	बृ.	म. पू. फा.
१०			१०		ह. वि.
११	शु.		११	शु.	ऽनु. ज्ये. मू.
१२			१२		पू. षा. ध.
१३	श.		१३	श.	श. पू. भा.
१५			१५		रे.

मुहूर्त अश्वकृत्य			मुहूर्त गजकृत्य		
ति.	वा.	नक्षत्र.	ति.	वा.	नक्षत्र.
१	र.	ह. अ.	१	र.	मृ. रे
२			२		
३	च.	पु. पु.	३	च.	चि. ऽनु.
			५		
५	बु.	मृ. स्वा.	६	बु.	ह. अ.
६			७		
७	बृ.	ध. आ.	८	बृ.	पुष्य.
८			१०		
१०	शु.	श. रे.	११	शु.	अभि.
११			१२		
१२	श.		१३	श.	स्वा. पु.
१३			१५		श्र. ध.
१५			३०		
३०					श.

अथ अश्वगजादि कर्म ।

नरेन्द्र छन्द—हस्त अश्विनी पुष्य पुनर्वसु मृग स्वाती वसु लीजै ॥
शिव शतभिषा रेवती इनमें वाजिकर्म सब कीजै ॥
रिक्ता मंगल विना कहत अब गजराजनके कर्म ॥
मृदु चर क्षिप्र नषत लै भाषत जे जानत हैं मर्म ॥

अथ हयशालाप्रवेशनविधि ।

दोहा—शालाविधि हय सब कही, शालहोत्र मत जानि ।
तामें वाजि-प्रवेश-विधि, सो अब कहौं बखानि ॥ १ ॥

प्रथम पूंछिये विप्रसों, दिन नीको जब होइ।
ताके पहिले एक दिन, तासम नीको सोइ॥ २॥

तादिन कीजै ताहिमें, सो अब कहौं बखानि।
उच्चश्रवाको कीजिये, अस्थापन जिय जानि॥ ३॥

पूजा कीजै तासुकी, सो षोडश उपचार।
फिरि लक्ष्मीको पूजिये, करिकै सब विस्तार॥४॥

लक्ष्मीजीको दीप तहँ, दजै एक बराय।
बरत रहै सो राति दिन, ताकी विधि यह आय॥ ५॥
पूजै तहाँ कुबेरको, और वरुणको जानि।
तादिन राखै ताहिमें, सात धेनु यह मानि॥ ६॥
दोइ वृषभ अरु जानिये, थनवारहि युत मानि।
दीपहि रक्षक होइ जो, तिनते अधिक बखानि॥ ७॥
प्रात भये, सब लीजिये, गाई वृषभ खुलाइ।
बन्दनवारी बाँधिये, भूमि सबै लिपवाइ॥ ८॥
वास्तुविधानहिं कीजिये, नवग्रह देउ पुजाइ।
पूजा कजै वायुकी, दीजै होम कराइ॥ ९॥
फेरि खवावै विप्र बहु, तिन्हैं दक्षिणा देइ।
चारि विप्रको दीजिये, वस्त्र गहनयुत सोइ॥ १०॥
या विधिको जब करि चुकै, वाजी लेइ मँगाइ।
विधि पूजनको कीजिये, तिन वाजिनकी जाइ॥ ११॥
तिन विप्रनको बोलिये, अति आदर करवाइ।
अलंकार अरु वस्त्र जो, जिन्हको दीन्हें आइ॥ १२॥

तिंतहीते पठवाइये, इन मन्त्रनको जानि ।
शत शत बारहि मन्त्रप्रति, शालहोत्रमत मानि ॥ १३ ॥

मंत्र–श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगुरवे नमः ॥ श्रीसरस्वतीभ्यो नमः ॥ श्री बायुपुत्राय नमः ॥

दोहा–द्विजवर तहँ मंगल पढहिं, और शांतिको जानि ।
शालामहँ तहँ बांधिये, वाजिनको सुख मानि ॥ १ ॥
यहि प्रकार वाजीनको, जे राखैं महिपाल ।
तिनको विघ्न न होइ कछु, भाषत बुद्धि विशाल ॥ २ ॥
यहि प्रकार वाजीनको, जे पालत महिपाल ।
तिनके शत्रुन माँझ हिय, बनी रहति है शाल ॥ ३ ॥
यह विधि राजनको कही, और नरनको नाहिं ॥
राजनके तर नर अउर, यथाशक्ति तिन आहि ॥ ४ ॥
लालवर्ण कपि बांधिये, शालाद्वारे माहिं ।
हय बलाय जो होइ कछु, ताके शिरपर जाहिं ॥ ५ ॥

अथ हयशालामे गिरगिट आनेसे अशुभ ।

दोहा–सरटाको हयशालमें, आवन देहु न भीत ।
जो आवै तौ सकल हय, कछू होयँ भयभीत ॥

अथ हयशालाउपद्रवकथन ।

छन्दतोटक–मधु मक्षिका हयसार । जिन कीन्ह आनि अगार ।
यह कहत पण्डित बात । ता अश्व नाहिं कुशलात ॥
जब यहै अवगुण जानु । तब शांतिकी विधि ठानु ।
द्विज पूजि हवन कराइ । बहु दक्षिणा दे जाइ ॥

दोहा—शत प्रकार रुद्री बनै, पूजै विधिवत सोय।
अश्वमेध मधु मक्षिका, शांति करावै कोय॥

अन्य शांति।

दोहा—द्विजवर बोलै मान करि, तिनके पूजै पाँइ।
ता पीछे जो कीजिये, सो अब देत बताइ॥ १॥
पुजवावै तिहि विप्रसों, शत पार्थिव यह जानि।
मृत्युंजयको जप करै, दश हजार सो मानि॥ २॥
तासु दशांशहि होम करि, द्विजवर देइ खवाइ।
शांति पढावै द्विजनसों, सबै दोष मिटि जाइ॥ ३॥
फिरि दीजै व्याहृतिनसों, आहुति एक हजार।
गाइनको घृत छानिकै, कीजै बुद्धि उदार॥ ४॥
देइ दक्षिणा भाँति बहु, विप्रनको यह जानि।
मधुमाखी जो वास किय, शांति तासुकी मानि॥ ५॥

अथ युद्धसमय घोड़ा साजनेके शुभाऽशुभ शकुन।

दोहा—इन चिह्ननते कहत हौं, शुभ अरु अशुभ तुरंग।
शालहोत्रमत जानिकै, भाषत बुद्धि उतंग॥ १॥
सजत वाजिको होइ जब, उग्र वक्र हिहनाइ।
भूमि उखारै टापसे, हारि बतावत आइ॥ २॥
समर सामने जो करै, ऐसी चेष्टा वाजि।
वाको स्वामी जीतिकै, घरको आवै गाजि॥ ३॥
युद्धमांहि चलबे लिये, सजत वाजिको होइ।
करै जो लीदि पेशाबको, ताकी यह गति जोइ॥ ४॥
आपु मरै स्वामी सहित, रणमाहिं यह जानि।
शालहोत्रमत देखिकै, श्रीधर कहो बखानि॥ ५॥

युद्ध कार्यको चलतमें, वाजि सजावै कोइ ।
बिना व्याधि यह आँखिमों, आँसू निकसति होइ ॥ ६ ॥
जाको हय वह होय जो, ताको नीक न आहि ।
रोवत हय निज स्वामिहित, देत बतायो ताहि ॥ ७ ॥
जा वाजीकी पूँछते, झरन लगे चिनगारि ।
रणको चढ़ि तापर चलै, ताको काल विचारि ॥ ८ ॥
रणको निकसत होइ कोइ, वाजीपर असवार ।
सो वाजी निज पूँछके, थिरकावै जो बार ॥ ९ ॥
निज स्वामीको रणविषे, मारि डरावै सोइ ।
शालहोत्र यों कहत है, ताहि सवार न होइ ॥ १० ॥
बिन कामहि अधरातको, घोड़ा हर्षित होइ ।
जाको वह घोड़ा अहै, तासु पयाना सोइ ॥ ११ ॥
बार बार निज पूँछके, थिरकावै जो बार ।
जाको वह घोड़ा अहै, ताको यह निरधार ॥ १२ ॥
कितनो स्वामी होय थिर, भूप होइकी राइ ।
ताकी थिरता नहिं रहै, सही कहूँको जाइ ॥ १३ ॥
हयके शकुन अनेक हैं, कहँलौं कहौं बखानि ।
येते श्रीधर हैं कहे, शालहोत्र मत जानि ॥ १४ ॥

अश्ववेगवर्णन ।

दोहा-सब तुरीनके कहत हौं, क्रमते वेग बखानि ।
जानि जाहिं जाते सबै, सो वर्णत सुखदानि ॥ १ ॥
रूप वही क्रम देह बल, गति आवर्त्तक जानि ।
वेग रहत सब वाजिके, लक्षण यही बखानि ॥ २ ॥

लज्जा भूषण त्रियनको, क्षात्रिय भूषण तेग ।
द्विजको भूषण वेद है, वाजी भूषण वेग ॥ ३ ॥
मातृदोषते होति है, लघुता बाजी माहि ।
करत सरारी अश्व जो, पितादोष सो आहि ॥ ४ ॥
स्वामिदोषते दूबरो, और पातरो होइ ।
नाहीं दोष तुरीनको, जानि लेउ जिय सोइ ॥ ५ ॥

अथ शीघ्रतावर्णन ।

छंद चौ०—खैंचत लीकसी भूमिहिये । मानौं अंबर लेत पिये ॥
अमरादि समीर सुभूमि भरे । अरु पक्षिनकी गति लेत हरे ॥
जिनके तनु तागति जानि परै । नवला दृग जैसहि सैन करै ॥
मानौ मन हय यह रूप धरै । क्षणमें फिरि शीतल होत खरै ॥

अथ गतिवर्णन ।

दोहा—हलति देह नहिं नेकहू, जलति ऐसि गति जाहि ।
अभरनगनते तनविषे, ते नाहिं बाजत आहि ॥ १ ॥
साह गाम यक जानियो, तेज गाम अरु मानि ।
मंद गाम यक होति है, और दुगामा जानि ॥ २ ॥
थरगा अविया दोइये, औरहिं बाल बखानि ।
येते भेदनगति तुरी, निजमति लेहु पिछानि ॥ ३ ॥

अथ आवर्त्तकका वर्णन ।

दोहा—आवर्त्तक ताको कहत, सोइ कोड़री आइ ।
कावा करि परसिद्ध है, वाजीको सुखदाइ ॥ १ ॥

करति मंडली वाजि है, तिनकी गति असि होति ।
घूमतिमें नहिं जानिये, ज्यों दीपककी ज्योति ॥ २ ॥

इति श्रीशालिहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत हयशालारचनाप्रवेशनादि-
कथन नामक चतुर्दश अध्याय ॥ १४ ॥

अथ सवारवर्णन ।

दोहा-अब आरोहण गुण कहौं, शालहोत्रमत मानि ।
लक्षण जाहि तुरीनके, प्रगट परत हैं जानि ॥ १ ॥
शिला समानहि जानु जेहि, वज्रहि सो कटिदेश ।
अरु क्रोधी है नाहिनौ, शास्त्र पढ़ो है वेश ॥ २ ॥
होइ चलाक सवार जो, बुद्धिमान अति होइ ।
जानै जो गति भेद सब, शालहोत्र मत जोइ ॥ ३ ॥
शीत तोय अरु धूपते, नेकौ नहिं अकुलाइ ।
समरमाहिं उत्साह अरु, जासु हिये सरसाइ ॥ ४ ॥
आवत नाहिं प्रस्वेद तनु, थोरी मेहनतिमाहि ।
समय जानि ताडन करै, और दक्ष सो आहि ॥ ५ ॥
येते गुण हैं जाहिमें, दृढ असवार सुजानि ।
श्रीधर वरणो चावसो, शालहोत्रमत मानि ॥ ६ ॥

अथ अश्वताडनविधि ।

दोहा-प्रात समयमो मंद जो, तुरी चलत जो होइ ।
ताको चाबुक मारिये, पिछिले पुट्ठन सोइ ॥ १ ॥
वाजी नीको नहिं चलै, प्रातसमय जो आहि ।
कोखिन पुट्ठामाहिं लगु, मारै चाबुक ताहि ॥ २ ॥

ऐसो चाबुक मारई, जाय तुरी अकुलाइ।
भागै पूँछ उठाइकै, जलदी नहिं ठहराइ ॥ ३ ॥
काँची करि पुस्तक करै, पूँछ दाबिकी लेइ।
तबलौं वाको मारिये, बदी छोड़ि सो देइ ॥ ४ ॥
बिन जाने स्थानके, जे ताड़न कहँ देहिं।
तासों हय वैरहि गहै, जानि हियेमहँ लेहिं ॥ ५ ॥

अथ स्थानवर्णन।

कोखि गलहरी कटिविषे, पाछिल पुट्ठा जानि।
कंधमाहिं अरु जानिये, ये स्थान बखानि ॥ १ ॥
तंग पाँजरै मारिये, दूनौ एँड़ी जानि।
जो ममरेजे बाँधिये, तौ अति मारु बखानि ॥ २ ॥
जो कदाचि धीमो चलै, येंड़ मारि तेहि देइ।
आसन मसकै जोरसों, जलद ताहि करिलेइ ॥ ३ ॥
मारो चाहै हाथसों, छपकातौ करिदेइ।
जस चाहै तस वाजिको, जलद तुरत करिलेइ ॥ ४ ॥
बदी जान हय करत है, परत नाहिं सो तेज।
ता वाजीके कारणैं, बाँधिलेत ममरेज ॥ ५ ॥
जाहि चलै अति जोरसों, दौराये जियमाहिं।
ताड़न कीजै तासुको, कोखिन पुट्ठनमाहिं ॥ ६ ॥
कियो चहत जब फैल हय, शिरहि हलावति जाहि।
ताड़न कीजै कंधमहँ, शुद्ध तबै ह्वै जाहि ॥ ७ ॥
जब हरामजदगी करै, ताहि समयमें ताहि।
मारो चाहै ठौर तेहि, दोष नहीं सो आहि ॥ ८ ॥

अथ फेरनविधि ।

दोहा–अब फेरन विधि अश्वकी, वरणों जेती आइ ।
जाहि जानि असवार सब, वाजी लेइ बनाइ ॥ १ ॥
प्रथमै बच्चा विधि कहौं, जैसो फेरो जाइ ।
ता पाछे सब ऋतुनको, फेरब देत बताइ ॥ २ ॥
दोइ दाँत जब होइ हय, फेरो तबते ताहि ।
की तौ देखौ गातको, फेरन लायक आहि ॥ ३ ॥
प्रथम रासिको डारिकै, राह देखावहि ताहि ।
जब कायम हो राहपर, कावा फेरै वाहि ॥ ४ ॥
रासि डारिकै दीजिये, ताको कावा आहि ।
ठीक होइ दुहुँ बागपर, या हित कावा ताहि ॥ ५ ॥
जब कावा पर ठीक भो, हलुक सवार चढाइ ।
मंद मंद तेहि राह पर, नितप्रति फेरत जाइ ॥ ६ ॥
कावा फेरतके समय, मनुज एक बुलवाइ ।
ताहि पिछारी कीजिये, औगी मारति जाइ ॥ ७ ॥
अरु कावा पर फेरिये, हलुक सवार चढ़ाइ ।
रासै डारै निज रहै, बाग सवार बढ़ाइ ॥ ८ ॥
जबै ठीक ह्वै जाय वह, रास देइ कढ़वाइ ।
मंद मंद मेहनति लिये, हय दुरस्त ह्वै जाइ ॥ ९ ॥

अन्य मत ।

स०–जाँघ जमाय दुहूँ घुटुवानलौं, पेडुरी ढीली दुहूँ करि चालै ॥
कानन मध्यम दृष्टि रहै, थिरता करिकै कटि नेक न हालै ॥
बाग बराबरि राखै सुजान, सो धोख किये पर चाबुक घालै ॥
सोइ सवार सवारी सराहिये, राखै बचाय खतानिको जालै ॥

अथ वाहभूमि।

श्लोक–शतहस्तादिकं भूम्यां सप्तहस्तावसानकम्।
भ्रामयेद्वाजिनं सादी सव्यासव्येन वाजिनम्॥ १॥
मण्डलं चतुरस्रं वा गोमूत्रं वार्द्धचन्द्रकम्।
नागपाशे क्रमेणैव भ्रामयेत्कटपञ्चकम्॥ २॥

दोहा–शत हस्तादिक भूम्यमित, सप्तहस्त अवसानु।
भ्रमण करै वाजी सुघर, सव्यासव्य प्रमानु॥ १॥
मण्डल तिमि चतुरस्रगति, गोमूत्राभ निबेर।
नागपाश चन्द्रार्धविधि, पांच रीति है फेर॥ २॥

चौ०–काकर ठोकर साँकर तालै। ऊँच खालि तृण काष्ठ न घालै॥
समसो भूमि अश्व दौरावै। तजि कठोर जहँ धूरि देखावै॥
वर्षाऋतुमें महिजल भारी। वगधर चढ़ै सो होइ अनारी॥
शरदऋतुहिमें उष्ण विहाई। हिमऋतुमें सिल दोष बराई॥

दोहा–अर्धमाघते चैतभरि, राति दिवस दौराय॥
मेष रु वृष आषाढलौं, थाने पानि पिआय॥ १॥
ऋतुवसंत ग्रीषम तलक, असवारी करि चाहि।
तौ याही विधितें सुघर, करै जतन निर्वाहि॥ २॥

चौ०–निंबपत्र अरु लोनु मँगावै। दूनो टका चारि भरिलावै॥
याहि बनाय वाजिकहँ देई। बहुत भूँख बल रोग न होई॥
हरी घास ग्रीषममें पावै। घिव दानामें रांधि खवावै॥
छाहीं सूखे हयको बाँधै। होय बली जो या विधि साधै॥

दोहा–छोटे शोटे वृद्ध अरु, रुजी सुपारी सोय।
कुष्ठी तिमिर सवार है, डारत है हय खोय॥

आरोहणविधि ।

दोहा–अब आरोहणविधि कहौं, जा हित वाजी आहि ।
शालहोत्रमत देखिकै, वर्णत हौं अब ताहि ॥ १ ॥
आरोहणमें जानिये, एक बाग है सार ।
ताहि विना जाने अहै, वृथा सकल व्योहार ॥ २ ॥
गुणी पुरुष विन जो सभा, बिन दिनेश दिन जानि ।
विना बागके ज्ञान त्यों, वृथा सकल गुण मानि ॥ ३ ॥
असवारीमें हय रहै, केवल बाग अधीन ।
ताते प्रथमैं बागको, या मधि वर्णन कीन ॥ ४ ॥

अथ बाग धरनेकीविधि ।

दोहा–तुला समान गहे रहै, बागहिको हय जानि ।
ना अतिलंबी राखिये, ना अति ऊँची मानि ॥ १ ॥
प्रथम कदम काढ़नविषे, अरु धावनमो जानि ।
या विधिसों बागहि गहै, सो अब कहौं बखानि ॥ २ ॥

अथ कदम काढ़नेकी विधि ।

दोहा–सांझसमय असवार हो, कोश एक चलि जाइ ।
दुलकी उखरन देइ नाहिं, तहँते देइ घुमाइ ॥ १ ॥
मंद मंद गृहमाँझलौं, आवे लीन्हें ताहि ।
बाग तंग नहिं राखिये, ना अति ढीली ताहि ॥ २ ॥
नितप्रति फेरै याहि विधि, कदम गाम ठहराइ ।
दूगा महि कीन्हों चहै, ताकी या विधि आइ ॥ ३ ॥
बाग पकरि है तंग तेहि, अरु ऊँची कछु जानि ।
जेरबंद ढीलो करै, या विधि ताकी मानि ॥ ४ ॥

मंद चलत जानै जबै, एँडै देइ लगाइ।
आसन मसकत जाइ अरु, नहिं अति जोर कराइ ॥५॥
तुली बाग दुहुँ राखिये, दुलकी उखरि न जाय।
दौरन दीजै ताहि नहिं, कदम ठीक ह्वै जाय ॥ ६ ॥
जेरबंदको कीजिये, थोरा थोरा तंग।
सूरति प्यारी होति है, याविधि किये तुरंग ॥ ७ ॥
होइ तुरंगम जल्द अति, कूदन लागत सोइ।
याही विधिके करत ही, सो जानौ सब कोइ ॥ ८ ॥
हाँकौ याही विधि तुरी, बाग रसाइनिआहि।
थोरी थोरी कीजिये, तंग ताहिको आहि ॥ ९ ॥
औ ऊँची नहिं पकरिये, तुली रहै तहि बाग।
कायम दोनों कदमपर, होत वाजिसूं भाग ॥ १० ॥
होत सही यह बात है, देकर जानौ सोइ।
शालहोत्रमत देखिकै, वर्णत हैं सबकोइ ॥ ११ ॥
तंग बाग अतिही किये, या विधि फेरत जाइ।
तौ अबिया कदमै चलै, पीठि हलाइ हलाइ ॥ १२ ॥

अथ लंगर डालके कदमकी विधि।

चौपाई–दोई रस्सी लेइ बनाई। सूत मुजम्मा बाँधे भाई ॥
अश्वके गांठिन ऊपर बांधै। यत्न समेत यही विधि साधै ॥
ऊपर चढ़िकै हाँकै कोई। अबिया कदम होति है सोई ॥

अन्य विधि।

दोहा–अगिले पद दहिने विषे, पाछिले बायें जानि।
पछिले दहिने पगहिमें, अगिले बाम बखानि ॥ १ ॥

याही विधिसों बाँधियो, हयके गामचि माहि।
राशिनपर हय हाँकिये, कदम ठीक ह्वै जाहि॥ २॥
राशिनकेरे मध्यमें, हय पीठीके माहि।
रस्सी एक लगाइकै, बाँधि देउ सो ताहि॥ ३॥
पाँयनमें अरझै नहीं, कदम चलत हय सोइ।
लंगर डारै घन पगहि, होय कहै सब कोइ॥ ४॥
कदम काढ़िबेकी कहीं, औरौ विधि बहु आइ।
ते अधीन असवारके, कहँलौं वरणी जाइ॥ ५॥

अथ कावा फेरनेकी विधि।

दोहा–प्रथम राशिको डारिकै, दीजै कुंडलि वाहि।
भा दुरुस्त दुहुँ बाग फिरि, और जतन है ताहि॥ १॥
पीठीपर असवार ह्वै, दुहूँ बाग गहि लेइ।
बाग भीतरी हाथ यक, धरिकै कावा देइ॥ २॥
तुली बाग दुहुँ राखिये, कावा फेरन माहि।
उरझत ढीली बाग है, औरौ दोष लखाहि॥ ३॥
ढीली बागे लेत नहुँ, मुँहके बल गिरि जाइ।
हयके गिरे सवार जो, सही चोटको खाइ॥ ४॥
बाग बदलिये अश्वकी, बाहरको यह जानि।
भीतर बदलै बाग जो, उरझत हय यह मानि॥ ५॥

अथ गश्त फेरनेकी विधि।

दोहा–पंद्रह धनुषनते कहो, तीस धनुष लगु जानि।
छातक फेरै बाजिको, गश्त ताहिको मानि॥ १॥
बागै दोऊ राखिये, तुली तहाँ हू जानि।

शालहोत्र-मत जानिकै, श्रीधर कहो वखानि ॥ २ ॥
फेरै जौनी बागपर, धरे रहै यक हाथ ।
यहि विधि जो कोऊ करै, वाजि चलै मनसाथ ॥ ३ ॥

अथ धावनवर्णन ।

दोहा-दौरावै अतिजोरसों, सूधो लीक समान ।
तुली राखिये बागको, दुहूँ हाथमें जान ॥

धावन--प्रमाण ।

दोहा-चारि हाथको जानिये, एक धनुष परमान ।
धनुष अठारह होइ जो, कष्ट तासुको जान ॥ १ ॥
आठ कष्टको कहत हैं, एक मन्त्र यक जानि ।
आठ मन्त्र अरु धनुष शत, हयको धावन मानि ॥ २ ॥
एक समानै दौरई, या परमानै सोइ ।
अरु ढीलो परिजाइ नहिं, उत्तम बाजी होइ ॥ ३ ॥
एक मन्त्र दौराइये, तुरी नितै प्रति जानि ।
और अधिक दौराइबो, बिना काज नहिं मानि ॥ ४ ॥

अथ जल्द करनेकी विधि ।

दोहा-जल्द करनकी विधि कहौं, जो फेरते आहि ।
औषधिविधि जल्दी करन, कहा दवाके माहि ॥ १ ॥
कदम कदम टहलाइये, वाजीको यह जानि ।
ठौर ठौर पर कीजिये, रोज अचानक आनि ॥ २ ॥
मारै चाबुक वाजिके, जाते जाइ डेराइ ।
या विधि कीजै जतनको, चमक आइ तेहि जाइ ॥ ३ ॥

अथ वाजीको ओछिनपर और लंबिनपर कुदावनविधि ।

दोहा--प्रथमहि सूरति बाँधिये, ताकी या विधि आहि ।
रासिन डारि चलाइये, मंद मंद सो ताहि ॥ १ ॥
सूधो जब चलने लगै, तबै देइ झमकाइ ।
झमकावनकी विधि कहौं, जाते कूदत आइ ॥ २ ॥
आपु होइ दहिनी तरफ, वाजिके यह जानि ।
रासी डारै तासुके, सो अब कहौं बखानि ॥ ३ ॥
हयकी छातीके विषे, तंग जहाँ पर आहि ।
जेरवंदको छोर तहँ, तंग रहत जा माहि ॥ ४ ॥
बाईओर लगाममें, बाँधि रासिको देइ ।
जेरवंदके छोरमें, बाँधि रासिको लेइ ॥ ५ ॥
दहिनी तरफै लेइकै, बाँधि लगामै देइ ।
दुहूँ तरफकी रासिको, हाथमाहिं गहि लेइ ॥ ६ ॥
जेरवंदमें रासि जो, संग कीजिये ताहि ।
दहिनी रासै हाथमें, तुरी चलावत जाहि ॥ ७ ॥
जहँपर झमकै नाहिं तुरी, औगी मारै वाहि ।
औगी लीन्हें एक नर, रहै पिछारी ताहि ॥ ८ ॥
चलन अगारी देइ नहिं, अरु कूदन नहिं देइ ।
या विधि झमकैये तुरी, जानि तासुको लेइ ॥ ९ ॥
औगी लीन्हें जौन नर, खांखर राखै हाथ ।
जाइ बजावत ताहि सो, हयकी झमकनि साथ ॥ १० ॥
रासि कीजिये ढीलि कछु, दाहिने वढ़वत जाहि ।
ओछिन पर तब जानिये, कूदत वाजी आहि ॥ ११ ॥

ढीली कीजै रासिको, दीजै बहुत बढ़ाइ।
तब तौ जानौ वाजि वहु, लंबिनपर लै जाइ ॥ १२ ॥

अथ तुरी फेरनेके महीने।

दोहा—सावन और अषाढ़ पुनि, आश्विन भादौं जानि।
अतिमेहनति नहिं लीजिये, इन महिननमों मानि ॥१ ॥
कार्तिक जेठहि मासमें, या विधि फेरत आहि।
बड़े प्रातमें फेरिये, घाम चढ़ेमें नाहिं ॥ २ ॥
हठ करिकै जो फेरई, मर्म न जानत ताहि।
पित्तविकार जु रोग है, वाजीके ह्वै जाहि ॥ ३ ॥
रहे मास जे षट अहैं, तिनमें दूषण नाहिं।
जैसी मेहनत चाहिये, तैसी लीजै ताहि ॥ ४ ॥

अथ मंजिलकी विधि।

दोहा—मैजलि करि द्वै कोसपर, लीदि पेशाब कराइ।
पानी दीजै ताहिको, मूठिक घास खवाइ ॥ १ ॥
चहै तेतनी दूरि लगु, हयको लीन्हें जाहि।
वाजी ताको भरत नहिं, या विधि चढ़त जुआहि ॥ २ ॥
उतरै हयको फेरि जब, तब यह औषधि देइ।
टका एक भरि फिटकरी, दूनि मिठाई लेइ ॥ ३ ॥
हयको देइ खवाइ सो, टहलावै वरि चारि।
तब लै आवै थान पर, जीनहि धरै उतारि ॥ ४ ॥
अरगीरको राखिये, तुरीपीठिपर जानि।
कैजा कीजै तासुको, श्रीधर कहत बखानि ॥ ५ ॥

वाजीकी छाती विषे, मलवावै बहुबार ।
की हत्थीकी घासते, कै हयको सुखसार ॥ ६ ॥

अथ रथके योग्य वाजी फेरनेकी विधि ।

दोहा-प्रथम वाजिको फेरिये, रासिन पर हय जानि ।
चलै ठीक पर अश्व जो, ता विधि कहौं बखानि ॥ १ ॥
कीजै कँडरा लोहको, तापर ऊन मढ़ाइ ।
ता पर चाम मढ़ाइये, ताकी यह विधि आइ ॥ २ ॥
हयकी गरदनि माहिमें, देहु ताहि डरवाइ ।
ताहि डारिकै फेरिये, जब वाको सहि जाइ ॥ ६ ॥
तामें दूनौ तरफ करि, रसरी दुइ बँधवाइ ।
जबलौं रसरी नाहिं सहै, तबलौं फेरत जाइ ॥ ४ ॥
फिरि उन रसरिन माहिमो, हलुक काठ बँधवाइ ।
रसे रसे तेहि काठको, करत गरुव सो जाइ ॥ ५ ॥
हयके कांधे माहिमो, जब ढट्ठा परि जाइ ।
तब तेहि बांधे काठ पर, देहु सवार चढ़ाय ॥ ६ ॥
सो दुहुँ रासन हाथ लै, नितप्रति फेरत जाइ ।
या विधि हय फिरि जाइ जब, रथमें देहु लगाइ ॥ ७ ॥
शास्त्र चलावन जौन विधि, कहो सवारी माहिं ।
ग्रंथ होत विस्तार अति, यासों बरणों नाहिं ॥ ८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवमिहकृत बाजीफेरनविधिवर्णन
नामक पंचदश अध्याय ॥ १५ ॥

अथ अग्निपुराणोक्त अश्वशांति।

शालहोत्र उवाच।

श्लोक-अश्वशान्तिं प्रवक्ष्यामि वाजिरोगविमर्द्दिनीम्।
नित्यां नैमित्तिकीं काम्यां त्रिविधां शृणु सुश्रुत ॥ १ ॥
शुभे दिने श्रीधरश्च श्रियमुच्चैःश्रवाह्वयम्।
हयराजं समभ्यर्च्य सावित्रैर्जुहुयाद्घृतम् ॥ २ ॥
द्विजेभ्यो दक्षिणां दद्यादश्ववृद्धिस्ततो भवेत्।
आश्वयुक्छुक्लपक्षस्य पञ्चदश्यां च शान्तिकम् ॥ ३ ॥
बहिः कुर्य्याद्विशेषेण नासत्यौ वरुणं यजेत्।
समुल्लिख्य ततो देवीं शाखाभिः परिवारयेत् ॥ ४ ॥
घटान् सर्व्वरसैः पूर्णान्दिक्षु दद्यात्सवस्त्रकान्।
यवाज्यं जुहुयात् प्राच्यं यजेदश्वांश्च साश्विनान् ॥ ५ ॥
विप्रेभ्यो दक्षिणां दद्यान्नैमित्तिकमतः शृणु।
मकरादौ हयानाञ्च पद्मैर्विष्णुं श्रियं यजेत् ॥ ६ ॥
ब्रह्माणं शङ्करं सोममादित्यं च तथाश्विनौ।
रेवन्तमुच्चैःश्रवसं दिक्पालांश्च दलेष्वपि ॥ ७ ॥
प्रत्येकं पूर्णकुम्भैश्च वेद्यां तत्सौम्यतो हुनेत्।
तिलाक्षताज्यसिद्धार्थान् देवतानां शतं शतम् ॥
उपोषितेन कर्त्तव्यं कर्म्म चाश्वरुजापहम् ॥ ८ ॥

इत्याग्नेये महापुराणेऽश्वशान्तिर्नाम नवत्यधिकद्वि-
शततमोऽध्यायः ॥ २९० ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ शालहोत्रसंग्रह ।

चिकित्साकाण्ड–प्रारम्भ ।

दोहा–कहत चिकित्साकांड अब, शालहोत्र–मत जानि ।
विविध भाँतिके रोग जे, होहिं जासुते आनि ॥ १ ॥
धातुकोपते होत है, रोग सकल विधि आनि ।
वात पित्त कफ रक्तकी, प्रकृति चारि विधि जानि ॥ २ ॥
तिनमें कोई विषम भा, धातुकोप सो जान ।
ताते प्रथमहिं प्रकृतिको, कीन्हों इहाँ बखान ॥ ३ ॥

अथ वाजीप्रकृतिवर्णन ।

दोहा–प्रकृति तुरिनकी चारि विधि, प्रथम पित्तकी जानि ।
दूजी कफकी जानियो, तीजी वात प्रमानि ॥ १ ॥
चौथी जानौ रक्तकी, तिनकी जो पहिचानि ।
ताको अब वर्णन करौं, जानि लेहु गुणखानि ॥ २ ॥

अथ वाजीकी पित्तप्रकृति–वर्णन ।

दोहा–पित्ती होइ मिजाज जिहि, ताकी यह पहिचानि ।
तेज चीजको खाइ बहु, क्रोधवंत अरु मानि ॥ १ ॥
दौरै अतिही दूरिलों, और जल्द अति होइ ।
रोआँ ताके साफ बहु, और मुलायम जोइ ॥ २ ॥
जल्दी करत अहारमो, क्षुधावंत अति जानि ।
ऐसे लक्षण जाहि तनु, पित्तप्रकृति सो मानि ॥ ३ ॥

अथ कफप्रकृति वाजी।

दोहा—रोआँ पतरे होइँ अति, और चमक बहु जोइ।
चाह करै घोड़ीन पर, और जल्द अति होइ॥ १॥
दाना घासहि खाइ कम, बहुत देरतक जानि।
ऐसो वाजी होइ जो, ताहि बलगमी मानि॥ २॥

अथ वातप्रकृति वाजी।

दोहा—सूखी देही होइ सब, गर्दन सीधी जानि।
रगैं देखाई देइँ बहु, मोटो रोम बखानि॥ १॥
मोटा होइ शरीर जो, या विधि जानै सोइ।
करै अहारै देर महँ, कहत सयाने लोइ॥ २॥
रोवाँ मैले ताहिके, अरु घुँघुआरे जानि।
दाना ताको कम पचै, मंदअग्नि अतिमानि॥ ३॥
असवारी भारी नहीं, ताहि उठाई जाइ।
राह चले थकिजाइ बहु, खट्टी चीजैं खाइ॥ ४॥
ए लक्षण जामें मिलैं, बादी ताको जानि।
शालहोत्र—मत मानिकै, श्रीधर कहो बखानि॥ ५॥

अथ रक्तप्रकृति वाजी।

दोहा—मीठी चीजैं खाइ बहु, छोटे रोम लखाइ।
साफ तासुको बदन है, पतरी खाल देखाइ॥ १॥
मोटा होइ शरीर बहु, अरु ढीलो नहिं होइ।
क्रोधवंत सो होइ नाहिं, बहुत जलद लखि सोइ॥ २॥
दाना घासहि खाइ बहु, जलदी करै अहार।
राह चलेते थकत नहिं, ऐसो तासु विचार॥ ३॥

यह लक्षण जिहि वाजिको, रक्त प्रकृति तिहि जान ।
या सम वाजी और नहिं, श्रीधर कहो बखान ॥ ४ ॥

अथ धातुवर्णन ।

दोहा–धातु चारि ए वाजितनु, तिनमें कोपै कोइ ।
तिहि वाजीके जानिये, उत्पाति रोगकि होइ ॥ १ ॥
धातुकोपको जाइकै, कीजै औषधि ताहि ।
तबहीं जानौ ताहिको, रोग दूर ह्वै जाहि ॥ २ ॥
नव्ज देखिकै होत है, धातुकोपको ज्ञान ।
यहिते प्रथमहि नव्जको, कीन्हों यहाँ बखान ॥ ३ ॥
नव्ज वाजिकी होति है, आँखि बताने माहि ।
ताहि देखि जान्यो परत, कोपधातु जो आहि ॥ ४ ॥
आँखिन ऊपर पलक जो, देखौ ताहि उठाइ ।
ताहि बताना कहत हैं, कोवा लगु जो आइ ॥ ५ ॥

अथ नाडिकावर्णन ।

दोहा–होइ गुलावी रंग जो, अश्व बताना माहि ।
तबहीं जानौ वाजिको, सब विधि नीको आहि ॥

अथ धातुकोप प्रथम पित्त ।

दोहा–जासु बताने माहिं मों, रंग जर्द अति होइ ।
कोप पित्तको जानियो, शालहोत्र कहि सोइ ॥ १ ॥
होइ बताने माहि मों, रंग सफेदी आइ ।
तब तौ जानौ वाजितनु, शरदी कोपी जाइ ॥ २ ॥
वही सफेदी माहिं जो, लघु छाले दरशाहिं ।
तबहीं जानौ अश्वतनु, कोप वातको आहि ॥ ३ ॥

ते छाले अस जानियो, कुटुका कुटुका होइ।
शालहोत्र मुनिके मते, वातकोप है सोइ॥ ४॥
रंग बताने माहिं मों, कछुक सफेदी होइ।
तौन सफेदी होइ यों, चरबीके सम सोइ॥ ५॥
कफ कोपते जानियो, वाजीके तनुमाहि।
बलगम ताको कहत हैं, जानि लेहु लखि ताहि॥ ६॥
जरदी मायल होइ जो, कछुक सफेदी आइ।
तुरी बताने रंगमहँ, कफ अरु पित्त लखाइ॥ ७॥
होइ बताने रंगमहँ, जरदी लाली आइ।
रक्तपित्तको कोप है, जानि लेहु सुखमाइ॥ ८॥

अथ खूनसे सफरा मिला।

दोहा-अश्व बताने माहिमो, सुरखी अति दरशाइ।
कोप रक्तको जानियो, सो गरमीते आइ॥ १॥
थोरी सुरखी होइ जो, अश्व बताने माहि।
तौ थोरी गरमी लखी, वाजी तनमें आहि॥ २॥
स्याही मायल लाल जो, अश्व बताना होइ।
पित्त गिरत है खूनपर, जानि लेहु यह सोइ॥ ३॥
खून जरत है अश्वतनु, जानि लेहु मनमाहि।
शालहोत्रमत देखिकै, यामे बरणो ताहि॥ ४॥
तुरी बताने रंग जो, जामुनके सम होइ।
बिलकुल जरिगा खून है, जानि लेहु जिय सोइ॥ ५॥
जानौ ताहि असाध्य है, औषध करिये नाहि।
हठ करि औषध जो करै, होत असर नहिं आहि॥ ६॥

अथ चिकित्साविधि ।

दोहा–प्रथमहि यह लाजिम अहै, होइ बिमारी कोइ ।
औषध ताकी कीजिये, सेहत जल्दी होइ ॥ १ ॥
औषध दीजै ताहिको, लीजै समय विचारि ।
गरमीऋतुमें गरम अति, नहिं दीजै निरधारि ॥ २ ॥
यहि प्रकारसों जानियो, शरदीऋतुमें मीत ।
औषध ऐसि न दीजिये, जो होवै अति शीत ॥ ३ ॥
बादीको अधिकार जो, तुरी मिजाजहि माह ।
तौ सब औषधमाहिमें, राखै तासु निगाह ॥ ४ ॥
सब बीमारी जे अहैं, कोई ऋतुमें होइ ।
बादीकी तदबीर यह, चही जरूरी सोइ ॥ ५ ॥
बादी कफको श्वेतरँग, जानि लेहु जिय सोइ ।
शरदी हयको है जबै, श्वेत बताना होइ ॥ ६ ॥
गर्म खुश्क जे औषधी, दीजै हयको लाइ ।
शालहोत्र यों कहत हैं, तुरत नीक ह्वै जाइ ॥ ७ ॥
सफराका रँग जरद है, हयको सो अधिकाइ ।
होइ बताना जरद तब, कहत मुनिनके राइ ॥ ८ ॥
होइ शरद तब औषधी, ताको दीजै लाइ ।
पित्तकोपको नाश तब, बाजीतनु ह्वै जाइ ॥ ९ ॥
रक्तप्रकृतिमें होत है, गरमीको अधिकार ।
रंग तासुको लाल है, कीन्हों यह निरधार ॥ १० ॥
रक्तकोप जब होत है, सुरख बताना होइ ।
रक्तप्रकृति है गर्मतर, श्रीधर बरणो सोइ ॥ ११ ॥

औषध दीजै ताहिको, शरद खुश्कको लाइ।
कोप रक्तको होइ जो, तुरत नीक ह्वै जाइ ॥ १२ ॥

अथ वाजी--असाध्य--परीक्षा।

दोहा—गंध देहमें भूमि सम, होइ बताना स्याह।
ताको कहत असाध्य हैं, शालहोत्र मुनिनाह ॥ १ ॥
या विधि जाके देहमें, लक्षण परैं लखाइ।
दोइ मासके भीतरै, तुरी सही मरि जाइ ॥ २ ॥
जरदी मायल स्याह जो, तुरी बताना होइ।
जतन करै सो बहुत विधि, मरत वाजि है सोइ ॥ ३ ॥
कष्टसाध्य सो जानिये, ये लक्षण जहँ होइँ।
तीनि मासके ऊपरै, मरत वाजि है सोइ ॥ ४ ॥

अथ जीभके असाध्य लक्षण।

दोहा—बिंदु श्वेत जा वाजिके, जीभमाहिं परि जाइ।
ताको कहत असाध्य हैं, शालहोत्र मुनिराइ ॥ १ ॥
बड़ी जतनसों मास यक, जीवत वाजी नाहिं।
बिन कीन्हें जो जतनके, जानि लेहु मनमाहिं ॥ २ ॥
तप्तवस्तु भोजन करै, खारी चीजैं खाइ।
परे बिंदु हैं जीभमें, तिनको दोष न आइ ॥ ३ ॥
पीत बिंदु जो जीभमें, तिन कारण परि जाइ।
दोइ मासके भीतरै, अवशि वाजि मरि जाइ ॥ ४ ॥
जाहि तुरीकी जीभमें, हरित बिन्दु परि जाइ।
तीनि मासके ऊपरै, वाजी जीवत नाइ ॥ ५ ॥
चित्रित बिंदुक जीभमें, जा हयके ह्वै जाय।
चारि मासके भीतरै, सही वाजि मरि जाय ॥ ६ ॥

जा वाजीकी जीभमें, स्याह बिंदु परि जाहिं ।
चारि मासके ऊपरै, जीवत वाजी नाहिं ॥ ७ ॥
जाहि बताने माहिमे, पित्तदोष दरशाइ ।
तीनि कोनके श्वेत जे, बिंदु जीभ परि जाइँ ॥ ८ ॥
षट महिनाके भीतरै, वाजी सो मरि जाइ ।
कहत सयाने लोग सब, शालहोत्रमत आइ ॥ ९ ॥
चंपाके रँग बिंदु जो, तुरी जीभ परि जाइ ।
मास सातयें वाजिको, अवशि नाश ह्वै जाइ ॥ १० ॥
हरदीके रँग बिंदु जो, वाजि जीभ परि जाइ ।
दशयें महिना अवशिकै, वाजी सो मरि जाइ ॥ ११ ॥
सुरख बिंदु जो वाजिके, जीभ माहिं ह्वै जाइ ।
मास सातयें लागते, तासु नाश ह्वै आइ ॥ १२ ॥
साखी वर्णहिं बिंदुसे, वाजि जीभ दरशाइ ।
मास ग्यारहें जानियो, वाजी सो मरि जाइ ॥ १३ ॥
जाकी रसना माहिमें, हिमसम बिंदुक होइ ।
एक सालके ऊपरै, नहिं जीवत है सोइ ॥ १४ ॥
नितप्रति बाढ़ै श्वास जिहि, पुलकित अंग लखाइ ।
रसना ताकी होइ जो, हिम समान दरशाइ ॥ १५ ॥
षट महिनाके भीतरै, सो वाजी मरि जाइ ।
सो श्रीधर वर्णन कियो, शालहोत्रमत पाइ ॥ १६ ॥
दशन वसन अरु ग्रीवमें, गूंथीसी परि जाइ ।
मूत्र होइ युत रक्तके, सो वाजी मरि जाइ ॥ १७ ॥
शीतल जल पीवन चहै, शीतल छाँह सुहाय ।

सब विधि पित्तविकार जो, तासु बदन दरशाय ॥ १८ ॥
सब चेष्टा हैं याहि विधि, श्वेत बताना होय।
ये लक्षण नाहिं नीक हैं, जियत वाजि नहिं सोय ॥ १९ ॥
पीड़ित वाजी वातसों, स्याह बताना होइ।
तीनि मासके ऊपरै, जियत वाजि नहिं सोइ ॥ २० ॥
पीड़ित वाजी पित्तसों, नेत्र जर्द ह्वै जाय।
कष्टसाध्य तिहि जानिये, सतयें मास नशाइ ॥ २१ ॥
जा वाजीके होइँ बहु, रंग बताना माहिं।
घर्घराइ बहु श्वासते, जीवत वाजी नाहिं ॥ २२ ॥
एक बताना लाल अति, नील वर्ण यक होइ।
पीत वर्ण है देह सब, अरु सूखीसी जोइ ॥ २३ ॥
एकमासमें मरत सो, जानि लेउ तुम मीत।
कैसौ अच्छी देइ जो, औषध करिकै मीत ॥ २४ ॥
जा वाजीकी देहमें, पित्तदोष अधिकाइ।
घर्घराइ गल श्वासते, वर्षाऋतुको पाइ ॥ २५ ॥
पक्षभरेमें अवशि करि, सो वाजी मरि जाइ।
कोटि जतन कोऊ करै, नाहिन तासु उपाइ ॥ २६ ॥
जीभ स्याह ह्वै जाइ जिहि, दशन स्याह है जाहिं।
और बताने माहिंसों, पित्तदोष दर्शाहिं ॥ २७ ॥
आठ रोजके भीतरै, सो वाजी मरि जाइ।
कवि श्रीधर वर्णन कियो, शालहोत्र-मत पाइ ॥ २८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत चिकित्साकाण्ड वाजीप्रकृति व नाडीपरीक्षावर्णन नामक प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

अथ दूतपरीक्षावर्णन ।

रोगी बोलै वैद्यको, दूत गयो जो होइ ।
करै परीक्षा ताहिकी, वैद्य विचक्षण जोइ ॥ १ ॥
चेष्टा भाषा वेष अरु, पुनि तारागण जानि ।
वेला तिथि मन देहते, दूतपरीक्षा मानि ॥ २ ॥
वैद्य होइ जा थल विषे, सोऊ लेइ विचारि ।
सूचक शुभ अरु अशुभके, लक्षण ये निरधारि ॥ ३ ॥
नारि नपुंसक कन्यका, और असुर आमानि ।
स्यन्दन खर आरूढ़को, किये होइ जो जानि ॥ ४ ॥
वस्त्र इतर हैं पांडुते, मलिन आइकी होइ ।
की सो जीरण वस्त्र है, कीं तौ फाटे जोइ ॥ ५ ॥
न्यून अधिक अँग दूतके, उद्भट चितकी होइ ।
विक्रित जाके अंग हैं, रूप भयंकर जोइ ॥ ६ ॥
निष्ठुर रूक्ष अमंगलौ, बोलै वाणी आनि ।
कि तौ साथ नर होइँ बहु, निन्दित दूत बखानि ॥ ७ ॥
तिनुका खोटत होइ की, की कुछ काटत होइ ।
की नासा औ स्तन विषे, हाथ लगाये सोइ ॥ ८ ॥
सोरठा–रगरत कपरा होइ, नासा कच अरु रोमपर ।
दूत अमंगल सोइ, की तौ पोंछै हाथ निज ॥
दोहा–गोपनी फाँसी हाथमें, भीजत कपरा होइ ।
पहिरे माला अरुणकी, तेलु लगाये सोइ ॥ १ ॥
हृदय कपोल ललाटमें, हाथ लगाये देखि ।
हाथ धरेकी कानपर, दूत निषिद्ध विशेखि ॥ २ ॥

था कोउ फल करमें लिये, चन्दन अरुण लिलार।
वस्तु असारक होइ कर, ऐसो दूत नकार ॥ ३ ॥
कर्दम लाये अंग निज, की कछु फेंकत होइ।
माटी फोरत हाथसों, विक्रित रूपहि सोइ ॥ ४ ॥
सोरठा—भूमि लिखत सो होइ, हाथ चरणकी आँगुरिन।
की तौ खोंटत सोइ, नखते नखको जानिये ॥
दोहा—चरण दबाये हांथ निज, की कुम्हड़ा लिये हाथ।
की तौ पीड़ित रोगसों, दूत दोय यक साथ ॥ १ ॥
किये आचरण दुष्ट तनु, विक्रित तनै लखाहि।
दीरघ लेइ उसाँसकी, की तौ रोवत आहि ॥ २ ॥
की तौ दक्षिणमुख खड़ो, की कर जोरे आनि।
एक चरण ठाढ़ो विकल, दूत अमंगलखानि ॥ ३ ॥
दण्ड लिये की हाथमें, शास्त्र होइ की पानि।
मुनिनायक यतने कहे, निन्दित दूत बखानि ॥ ४ ॥

अथ वैद्यस्थानवर्णन।

दोहा—खपरी पाथर भस्म औ, भूति हाड़ अरु आगि।
इनयुत स्थलमें वैद्य ढिग, आवै दूत अभागि ॥

अथ वैद्यदर्शन—चौपय्या छन्द।

दक्षिण दिशि मुख कीन्हें होइ। तैल लगाये अशुची सोइ ॥
अमनीर युक्त अरु विकल अंग। कछु होय पियारी वस्तु भंग ॥
देव पितर कृत कर्म होइ। की क्षौर कर्ममें उदित सोइ ॥
स्थान अशुचिमें वैद्य होइ। क्षिति शयन किये पुनि श्रमित सोइ ॥
की क्षौर करत वरतक्रसान। भोजन विचरत ये अशुभ जान ॥
उत्पात समय सो प्राप्त होइ। सब केश छुटे जो वैद्य सोइ ॥

दोहा-वैद्य होइ या भांतिसों, दूत वैद्यढिग जाइ।
रोगी निश्चयकै मरै, नाहिन तासु उपाइ॥

अथ वेला दूषित वर्णन।

दोहा-तीनों सन्ध्या अर्द्धनिशि, दूषित वेला जानि।
इनमें आवै दूत जो, होइ अमंगल खानि॥

अथ तिथिदूषित वर्णन।

दोहा-रिक्तातिथि षष्ठी सहित, और कही संक्रांति।
इनमें आवै दूत जो, नहीं रोगकी शांति॥

अथ नक्षत्रदूषित।

दोहा-भरणी अश्लेषा बहुरि, मघा आर्द्रा मूल।
और पूर्वा कृत्तिका, ये नक्षत्र सम शूल॥

अथ शुभ दूत वर्णन।

छन्द-रूप श्यामरो सुन्दर होई। गौर स्वरूप मनोहर सोई॥
शुक्ल वस्त्र धारे सो आहि। ये कहै दूत मुनिवर सराहि॥

दोहा-दूत होय निज गोत्रको, की तौ अपनी जाति॥
रोगी छूटै रोगसों, वैद्य होइ यशख्याति॥ १॥
की तौ पैदर दूत हो, कि तौ किये गोजान॥
कि तौ होइ कालज्ञ सो, की तौ हो स्मृतिवान॥२॥
अलंकार तनमें लसै, सुन्दर जाको रूप।
ललित वचन मुखते कहै, ऐसो दूत अनूप॥ ३॥

छप्पय-दूत होइ स्वाधीन शास्त्रमें होइ विचक्षण।
लोकरीतिमें चतुर वचन बोलै शुभ लक्षण॥
निपुण दूत पुनि होइ अलंकार युत वस्त्र वर।
लखिय दूत या भांति जानिये सब सिद्धिकर॥

मुख पूरब करि बोलै वचन वैद्य होइ अरु स्वस्तिचित।
यह दूतपरीक्षा मुनि कही सो रोगीको होइ हित॥

अथ वैद्यदर्शन।

दोहा—पूरब दिशिको मुख किये, बैठ वैद्य या भांति।
अस्थल होइ पवित्र पुनि, रोग होइ सब शांति॥ १॥
श्वेत वसन तांबूल मुख, पंकज करमें होइ।
पूर्व दिशामें स्थित भयो, दूत जानु शुभ सोइ॥ २॥
बोलै गिरा प्रवीन अति, कीतौ वचन रसाल।
दूत होइ या भांति जो, जाइ रोग ततकाल॥ ३॥
फल अक्षत दधि द्रव्य युत, देख्यो वैद्य विचारि।
शुभवानी मुख दूतकी, जाइ रोग सब झारि॥ ४॥

अथ दूतमुखवर्णपरीक्षा।

दोहा—दूत कहै मुखवर्णते, दूनौ करौ निशंक।
भाग लेहु पुनि तीनिको, जीवै रहै जु अंक॥

अथ दूतपरीक्षाचक्रम्।

६	३	२	४	७	६	४	३	१	२०	८
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

दोहा—द्वादश रेखा ऊर्ध्व करि, षट रेखा सम जानि।
ता ऊपरकी पांतिमें, भरो अंक ये आनि॥ १॥

अंग राम पुनि पक्ष लिखि, वेद बार रस जानि ।
युग गुण शशिकर रंध्र कहि, लिखो अंक ये आनि ॥२॥
अकारादिस्वर दीर्घ लघु, लिखो दूसरी पांति ।
कवर्गादि पुनि वर्ग सब, भरौ चक्र या भांति ॥ ३ ॥
दूतनामके वर्ण स्वर, ता ऊपर जे अंक ।
जोरि करौ यकतीर सब, जानि लेहु निरशंक ॥ ४ ॥
रोगी नामहि वर्ण स्वर, वही भाँति गनि लेहु ।
जुदे जुदे करि दुहुँनको, भाग आठको देहु ॥ ५ ॥
रोगीनामहि अंक बढ़ि, दूत नामते होइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, जीवै रोगी सोइ ॥ ६ ॥
रोगीनामहि अंक गनि, दूतनाम जे अंक ।
ताते सम अरु हीन जो, रोगी मरै निशंक ॥ ७ ॥
दूतपरीक्षा वैद्य करि, रोगीके गृह जाइ ।
रोगी छूटै रोगसों, सुयश तासु अधिकाइ ॥ ८ ॥

अथ वैद्य चलनेके समयके शकुन ।

दोहा–रीतो घट आगे मिलै, की आमिष दृग देखि ।
विप्र मिलै जो तिलकयुत, है शुभ शकुन विशेषि ॥ १ ॥
वेणु वीण अरु दुंदुभी, शंख भेरि सहनाइ ।
मेघ सिंह गज धेनु कहि, शब्द इते सुखदाइ ॥ २ ॥
निजदाहिने जो लखि परै, विपम कुरंग सुजान ।
रोगी छूटै रोगसों, होइ वैद्य यशवान ॥ ३ ॥
चौपाई–मिलै जो आगे कन्या आई । पुत्रसहित युवती दरशाई ॥
फल अरु फूल लिये कर सोई । देखि परै अस पूरुप कोई ॥

अथ अशकुन।

दोहा—मारग काटै अग्र ह्वै, गिरगिट श्वान शृगाल।
देखि परै जो गिद्ध पुनि, अशकुन अहै कराल॥ १॥
सजल कुंभ या पतित कछु, वृक्षपात भुवि होइ।
और ज्वलित ग्रह देखिये, अशकुन जानौ सोइ॥ २॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशर्वसिंहकृत चिकित्साकाण्ड दूत-परीक्षाशुभाशुभवर्णन नामक द्वितीय अध्याय॥ २॥

अथ शिरामोक्षण—फस्द खोलना।

दोहा—प्रथम दवाईको करै, जो नहिं होइ अराम।
तब तौ लीजै फस्दको, ताके बरणौं ठाम॥ १॥
शिरा एक है जीभ तर, सो वह खोली जाइ।
दिलमें गरमी होइ जो, सो नीकी ह्वैजाइ॥ २॥
पक्के पाव भरेते, ज्यादा खून न लेइ।
शालहोत्र—मत जानिकै, ऐसे फस्दहि देइ॥ ३॥

दूसरी रग तालूकी।

चौपाई—तालूकी रग बरणौं भाई। दांततीरते सीठी ताईं॥
सीठी दोइ छोंड़िकै जानौ। तिसरी सीठीके तर मानौ॥
नस्तर देइ शिरा वहिकेरो। गुणिजन शालहोत्र—मत हेरो॥
ज्वर दीमाग जिगरको खोवै। रुधिर आधसेर पक्का लेवै॥

तीसरी जगह फस्द लेनेकी विधि।

चौपाई—ओठनके भीतरमें देखौ। छाला ऐस परै औरेखौ॥
तिहिते अश्व घास नहिं खाईं। मुँहते पानी गिरत सदाईं॥
तेहिकी दवा यहै करवावै। दोनों हाथसे ओठ उठावै॥

ते छालनमें नस्तर लेई । ऊपर नमक चुपरि सो देई ॥
मलिकै नमक धोइ फिरि डारै । होइ अराम अश्व निरधारै ॥

चौथी रग–फस्द लेनेकी विधि ।

दोहा–आँखितरे रग एक है, ऊपर दूजहि होइ ।
दूऔ तरफसों होति है, खोलति है रग सोइ ॥ १ ॥
गरमी होइ दिमागमें, अरु भौंरी जो होइ ।
ताही रगको खोलिये, तुरतहि नीको जोइ ॥ २ ॥
लीजै खून छटाँक भरि, ज्यादा ना ह्वै जाइ ।
कमती होइ तौ दोष नहिं, शालहोत्रमत आइ ॥ ३ ॥

छठी रग–फस्द लेनेकी विधि ।

दोहा–नथुननमें रग होइ यक, सो वह खोली जाइ ।
जौनी विधिसों खोलिये, सो अब कहौं उपाइ ॥ १ ॥
पूजमालको दीजिये, प्रथमहि नथुना माहि ।
नथुना पकरै हाथ इक, तामधि देखै ताहि ॥ २ ॥
खूब ध्यानकरि देखिये, जबहीं रग दरशाइ ।
तामें नस्तर मारिये, शिरामोक्ष ह्वै जाइ ॥ ३ ॥
जो अति असवारी विषे, हफ्फत वाजी होइ ।
ताकी यह रग खोलिये, अतिहि फायदा सोइ ॥ ४ ॥
खून तासुको लीजिये, आधपाव परमान ।
ज्यादा लीन्हें होत है, अवगुण ताहि सुजान ॥ ५ ॥

अथ सतईं रग–फस्दलेनेकी विधि ।

दोहा–कानतरे रग एक है, जहाँ कनगुदी आहि ।
दोऊ तरफन होति है, ध्यान किये दरशाहि ॥ १ ॥

खून निकारे ताहिते, आधसेर यह जानि।
ताते निकसत खून है, गर्दनकी यह मानि ॥ २ ॥
शिरके जितने रोग हैं, औरौ कहौं बखानि।
सूजनि गरके भीतरै, तिन्हैं फायदा जानि ॥ ३ ॥
खुश्की होइ दिमागमें, और रोग सब जाहिं।
गर्दनकी सूजनि मिटै, सो जानौ मनमाहिं ॥ ४ ॥

अथ आठवीं रग-फस्द खोलनेकी विधि।

दोहा-गर्दन मारग होति है, तरक दुहुँनमें जानि।
फस्द खोलिये ताहिमें, वाजीको सुखदानि ॥ १ ॥
पीड़ित होइ खरिस्तिते, अरु बसौती होइ।
ताकी यह रग खोलिये, अती फायदा सोइ ॥ २ ॥

नववीं रग।

दोहा-दूनौ सीननपर अहै, एक एक रग जानि।
खून निकारै ताहिते, आधपाव यह मानि ॥ १ ॥
जाके सीनाबंद जो, बहुत दिननते होइ।
यह रग खोलै ताहिके, ताको गुण अति जोइ ॥ २ ॥

दशवीं रग।

दोहा-दोनों अगिले पाँवमें, होत एक रग आइ।
परकी रग सो जानिये, सोऊ खोली जाइ ॥ १ ॥
सब देहीमें रक्त जो, निकसत तासों जानि।
खून निकारै ताहिते, पक्को सेरहि मानि।

ग्यारहवीं रग।

दोहा-तंग तरे रग होति है, फस्द तहाँ लै लेइ।
खून निकारै ताहिते, बहुत फायदा देइ ॥ १ ॥

होइ बिसारी पीठिमें, औरौ कटिमें जानि ।
सोवतमें बरांत है, ताहि फायदा मानि ॥ २ ॥
सपना देखै बहुत सो, औ उठि ठाढ़ो होइ ।
नींद परति नहिं ताहि को, सोऊ नीको जोइ ॥ ३ ॥
याते खून निकारिये, पक्के पाव प्रमान ।
ज्यादा होने देइ नाहिं, नींह कमती सक जान ॥ ४ ॥

बारहवीं रग ।

दोहा–पछिले दोऊ पाँवमें, गाँठिन ऊपर जानि ।
तहाँ होति है एक रग, पटरग ताहि बखानि ॥ १ ॥
पछिले धरको खून जो, ताते निकसत आहि ।
खून लीजिये सेरभरि, दोनों पावन माहि ॥ २ ॥

तेरहवीं रग ।

दोहा–और एक रग होति है, चारिउ पायन माहिं ।
बँधो मुजम्मा जात जहँ, तुरी गामचिनमाहिं ॥ १ ॥
सो रग है बारीख अति, जानि लेहु सुखदानि ।
खून निकारै ताहिते, आधपाव यह जानि ॥ २ ॥
जखम होइ सुममाहि जो, रोग पेटमें होइ ।
कै गरुहाउट पेटमें, तौ रग खोलै सोइ ॥ ३ ॥
फस्द खोलना ताहिको, बहुत मुनासिब जान ।
शालहोत्र मुनिके मते, सो लीजै पहिचान ॥ ४ ॥
पट्टी बांधै ताहिमें, अति मजबूताहि सोइ ।
वह पट्टी खुलि जाइ जो, तौ न फायदा होइ ॥ ५ ॥
तातं वाजिब है सबै, पट्टीकी अंदाज ।
किये रहै मजबूत तेहि, तीनि रोज लगु साज ॥ ६ ॥

जो खुलि जाइ कदाचि वह, जारी होवै रक्त ।
शालहोत्रमत देखिकै, बाँधौ ताको सख्त ॥ ७ ॥

सोरठा-तीनि रोज पश्चात, खोलै पट्टी पाँवकी ।
अश्व निरुज ह्वै जात, यह गति जानौ ताहिकी ॥

अन्य रग।

दोहा-बाजीकी ठेरी कहैं, अगिले सुममें होइ ।
खून निकारै ताहिते, बहुत फायदा सोइ ॥ १ ॥
नालके भीतर होत है, नालबंदको काम ।
कफी वगैरह रोग जे, ते नाशैं अभिराम ॥ २ ॥

अन्य रग।

दोहा-पूँछ माहिं रग होति है, जरते आँगुर चारि ।
तहँपर नस्तर मारिये, शिरामोक्ष निरधार ॥ १ ॥
पूँछ हाथते पकरिकै, नापै आँगुर चारि ।
तहँपर नस्तर मारिकै, काढ़ै खून सुधारि ॥ २ ॥
खून निकारै ताहिते, पक्का आधा सेर ।
रसूबंद जो रोग है, ताहि फायदा ढेर ॥ ३ ॥

अथ शिरामोक्षणके मुख्य स्थान ।

दोहा-सीनेकी रग जानिये, और गरेकी मानि ।
तालूकी रग होति जो, अरु नथुनाकी जानि ॥ १ ॥
अगिले पछिले पाँवमें, दोइ रगैं जे होइँ ।
अंडकोशकी एक रग, अरु छाले मुहँ जोइ ॥ २ ॥
आठ रगैं ये मुख्य हैं, सो मैं कही बखानि ।
अंडकोशकी होति रग, अंड पिछारी मानि ॥ ३ ॥

अंडकोश सूजै जबै, की चाढ़ि जाय सुजान ।
तबै खोलना फस्द यह, बहुत मुनासिब मान ॥ ४ ॥
वाजीको बल जानिकै, और समय पहिचानि ।
नाड़ीमोक्षण तब करै, होइ रोगकी हानि ॥ ५ ॥

अथ फस्द लेनेका समय ।

दोहा–सावन आश्विन चैत्र पुनि, इन महिननको पाइ ।
फस्द वाजिके लीजिये, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥ १ ॥
होइ महीना और जो, रोग वाजितनु होइ ।
विना फस्द सो जाइ नहिं, ताकी यह विधि जोइ ॥ २ ॥
गरमीकी ऋतु होइ जो, शरद बखतको पाइ ।
नाडीमोक्षण कीजिये, वाजीको सुखदाइ ॥ ३ ॥
वर्षामें जा दिन विषे, बादर नाहीं होइ ।
मोक्षण नाड़ीको करै, तुरतै नीको जोइ ॥ ४ ॥
जिन महिननमें शरदऋतु, अती शीत दरशाइ ।
धूप होइ दुपहर विषे, खोली रग तब जाइ ॥ ५ ॥
प्रथमहि हय टहलाइये, गरम कछू जब होइ ।
तब तौ खोलै फस्दको, तुरतै नीको जोइ ॥ ६ ॥
आश्विनसम कार्तिक अहै, चैत्रै सम बैशाख ।
अषाढ़ सावन एक सम, शालहोत्रमत भाष ॥ ७ ॥
कवि श्रीधर चित चाउ करि, शालहोत्रमत जानि ।
नाड़ीमोक्षण–विधि कही, वाजीको सुखदानि ॥ ८ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत चिकित्साकाण्ड वाजीशिरामोक्ष-वर्णन नामक तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

अथ चिकित्सावर्णन।

दोहा—धातुकोपते होत है, वाजीतनुमें रोग।
ताको कहत निदान अब, अरु औषधी प्रयोग ॥ १ ॥
वात पित्त कफ रक्त जो, तिनमें कोपे कोइ।
वाजीके तनु माहिमें, रोग सु उत्पाति होइ ॥ २ ॥
वात पित्त कफ रक्तके, दोष लेइ पहिचानि।
तबहीं औषधिको करै, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥
एक धातुको कोप कहुँ, कहूँ दोइको होइ।
कोपै धातुहि तीनि कहुँ, कहूँ विषम सब सोइ ॥ ४ ॥

अथ रक्तपित्तके कोपका निदान वर्णन।

दोहा—खजुरी तनुमें होइ कहुँ, अरु धाँसत हय होइ।
मुँहते पानी चलत है, ऐसे लक्षण जोइ ॥ १ ॥
शीतल जल अतिही चहै, चाहै शीतल छाँह।
बहु भोजन पर मन रहै, शीतल वस्तुहि चाह ॥ २ ॥

उसकी दवा।

चौ०—कुटकी एक टका भरि लीजै। लालि मिठाई ता सम कीजै।
प्रातहि उठि नित ताहि खवावै। रोग घटै बहु भूँख बढ़ावै॥
दोहा—कही एक मौताज यह, जानि लेहु मनमाहि।
सात दिवस लगु दीजिये, रोगनाश ह्वै जाहि ॥

अथ पित्तकोपसे असाध्य लक्षण।

दोहा—मैलु कढ़ै आँखिन विषे, बार बार हिहनाइ।
आँसू आवत जाहि बहु, लेहु जाहि यहि भाइ ॥ १ ॥

होइ बताना स्याह यक, होइ एक अतिपीत ।
ताकी औषधि नाहिं करौ, जानि लेहु यह मीत ॥ २ ॥

अथ वातरक्तकोपवर्णन ।

दोहा—वात रक्तको कोप जब, वाजीके तनु होइ ।
श्वास चलै अतिजोरसे, दोष वातको सोइ ॥ १ ॥
वार वार बैठै उठै, पैढ़ै पाँव बढ़ाइ ।
अंग मरोरै वार बहु, वार वार जमुहाइ ॥ २ ॥

उसकी दवा ।

चौ०—आध पाव त्रिफलाको लीजै । घीमें सानिकै पिंडी कीजै ॥
सो वाजीको देउ खवाई । सतयें रोज नीक ह्वै जाई ।

दोहा—आध पाव मौताज यक, सात रोज लगु देइ ।
रोग घटै अरु बल बढ़ै, नीको वाजी लेइ ॥ १ ॥
वातरक्तके दोषमें, ये लक्षण दरशायँ ।
काटै अपनी देहको, अति सरोष ह्वै जाइ ॥ २ ॥
एक बताना लाल अति, एक श्वेत दरशाइ ।
जानौ ताहि असाध्य है, जियत नहीं सो आइ ॥ ३ ॥

उसकी दवा ।

चौपाई—मासाभरि अभ्रकरस लेहू । सोरह मासे अदरख देहू ॥
दुवौ मिलैकै देहु खवाई । नीक तीनि दिनमें ह्वै जाई ॥

दोहा—मासाभरि मौताज यक, हयको देहु खवाइ ।
नीको वाजी होइ सो, चंडी जाहि सहाइ ॥

अथ श्लेष्मरक्तकोपवर्णन ।

दोहा—वाजी धाँसै अधोमुख, दाना घास न खाइ ।
जल्द चलै नहिं राहमें, पावक घाम सुहाइ ॥ १ ॥

जानि परत नहिं ताहिको, चाबुक मारै कोइ।
नथुनाते पानी चलै, ऐसे लक्षण जोइ ॥ २ ॥

उसकी दवा।

दोहा—नाड़ीमोक्षण कीजिये, अगिले पाँयन माहि।
तब औषधको दीजिये, तुरी नीक ह्वै जाहि ॥
चौ०—चारि टकाभरि सोंठि मँगावै।ता सम गुड़ लाले मिलवावै।
पिंडी दीजे ताहि खवाई। सतयें दिन नीको ह्वै जाई ॥
दोहा—चारि टका मौताज यक, हयको देहु खवाय।
यहि विधि कीजै सात दिन, जल्द नीक होजाय ॥

अथ पित्तश्लेमाका कोप।

दोहा—येई लक्षण होंइ सब, औरौ कछु दरशाइ।
खीसै काढ़ै बार बहु, मुँह नीचे लटकाइ ॥

उसकी दवा।

चौ०—यक औषध सब लेहु मँगाई। ताहि बराबरि सौंफ मिलाई॥
पिंडीकरि घोड़ाको दीजै। सात दिवसमें नीको लीजै ॥

अन्य दवा।

दोहा—सोंठि मिर्च गुड़ पीपरी, मोथा और मिलाइ।
जेठीमाई हींग लै, समभागहि तौलाइ ॥ १ ॥
दोइ टकाभरि लेइ सब, पिंडी एक बनाइ।
जानौ यह मौताज है, प्रातहि देहु खवाइ ॥ २ ॥
या विधि दीजै सात दिन, शालहोत्रमत जानि।
रोग घटै अरु बल बढ़ै, होइ क्षुधा बहु आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०—सैंधव सोंठि बरोबरि लीजै । कूटि कपरछन ताको कीजै ॥
नासु तासुको बाजिहि दीज । नीको होइ रोग सब छीजै ॥

अथ वातरक्तका कोप ।

दोहा—डोरा आँखिन माहिके, श्वेत लाल दरशाइँ ।
कोखी दोनों ताहिकी, नितप्रति फूलत जाइँ ॥ १ ॥
एक तीर ठहराइ नहिं, नितप्रति बाढ़ै श्वास ।
बार बार हिहिनाइ बहु, ये लक्षण करि खास ॥ २ ॥

उसकी औषध ।

चौ०—जीभ माहिं रग देहु खुलाई । ता पीछे घृत देहु खवाई ॥
घृतकी विधि सब आगे कही । टका दोइ मौताजहि लही ॥
दोहा—सात दिवस लगु दीजिये, टका दोइभरि लाइ ।
रोग घटै अरु बल बढ़ै, क्षुधा बहुत अधिकाइ ॥

अथ वातपित्तका कोप ।

दोहा—लाल बताना एक है, एक श्वेत दरशाइ ।
मुँहमें खज्जुरी होइ अरु, नितप्रति धांसत जाइ ॥ १ ॥
दाना घासहि खाइ नहिं, अरु टापत बहु आइ ।
चौंकै बारंबार बहु, सो असाध्य दरशाइ ॥ २ ॥
ताकी औषधि नहिं करै, सही बाजि मरिजाहि ।
वातपित्तको कोप यह, जानि लेहु मनमाहि ॥ ३ ॥
मुखमें कंडू होइ नहिं, उदर मध्य खजुआइ ।
येई लक्षण होइँ सब, वाजीके तनुमाइ ॥ ४ ॥

कफको जानौ दोष तौ, सोउ साध्य नहिं आइ।
ताकी औषध यह करै, सही नीक ह्वै जाइ॥ ५॥
गुरुच पीपरी हींग अरु, ककरासिंगी आनि।
अरु महुरेठी लीजिये, समकरि सबको सानि॥ ६॥
यहि औषधको कीजिये, दोइ टकाभरि लाइ।
नव दिन कीजै याहि विधि, रोग दूरि ह्वै जाइ॥ ७॥

अथ कफ—पित्त—वात—रक्त—कोप।

दोहा—वात पित्त कफ रक्त जहँ, चारिउ कोपे होइँ।
सन्निपात तहँ जानिये, बिरले जीवत कोइ॥ १॥
कहूँ अधिक है धातु यक, दोइ अधिक कहुँ होइ।
कोपी धातुइ तीनि कहुँ, जानि लेउ जिय सोइ॥ २॥

अथ रक्तदोष—अधिक—सन्निपात—लक्षण।

दोहा—नेत्रमाहिं आँसू चलैं, औ हप्फाहि हय होइ।
आँखी मूँदे सो रहै, धौंक लागि बहु जोइ॥ १॥
बोलत नाहिंन जोरसों, दाना घास न खाइ।
रक्त—अधिक सनिपातके, ये लक्षण दरशाइ॥ २॥

उसकी दवा।

दोहा—खून निकारै जीभसों, की तौ पाँवन माहि।
दीजै दाना घास नहिं, पानी दीजै ताहि॥ १॥
गरमीकी ऋतु होइ जो, जल शीतल करि देइ।
जाड़ेकी ऋतु माहिमें, उदक कूपको लेइ॥ २॥
वच अरु कुटकी लीजिये, गाई मूत्र पकाइ।
दोइ टकाभरि दीजिये, वाजि नीक ह्वै जाइ॥ ३॥

औषधि लीजै भाग सम, नवदिन देहु खवाइ ।
भूँख बढ़ै अति ताहिको, सन्निपात मिटि जाइ ॥ ४ ॥

अन्य सन्निपातलक्षण ।

दोहा–कान दुऔ ठाढ़े रहैं, औ अति कांपत होइ ।
वार वार खाँसत रहै, आँखी मूँदै सोइ ॥ १ ॥
परे रहैं झप्पान अरु, लार बहति अतिहोइ ।
नाभि निकट सो जानियो, मल ताके है सोइ ॥ २ ॥

उसकी दवा ।

दोहा–जीभ माहिं रग छेदिये, अरु लंघन करवाइ ।
औषध दीजै ताहिको, रोग नीक ह्वै जाइ ॥ १ ॥
पित्तपापरा गुर्च बच, कुटकी और मँगाइ ।
इनको कीजै भाग सम, कूपोदकसन खाइ ॥ २ ॥
दुइ पलकी मौताज यक, साँझ सकारे देइ ।
नवदिन दीजै याहि विधि, तुरी नीक करि लेइ ॥ ३ ॥
जल देवेकी विधि कही, ताही विधिसे देइ ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, तुरी नीक सो लेइ ॥ ४ ॥

सन्निपातजनित मंदाग्निकी दवा ।

चौ०–सन्निपात नीको ह्वै जाई । मंदअग्नि ताके रहि जाईं ॥
ताको यह औषध करवावै । ताहि क्षुधा अतिही सरसावै ॥
दोहा–सिरसाकेरे फूल जो, वेत लेउ मँगवाइ ।
दोइ टकाभरि भाँग सम, वाजिहि देउ खवाइ ॥ १ ॥
शाम सवेरे दीजिये, या औषधको लाइ ।
दीजे ताको सात दिन, भूँख बढ़ति अति जाइ ॥ २ ॥

सन्निपात संक्षेपसों, दीन्हों इहाँ बताइ।
लक्षणयुत अरु औषधी, कहे अगारी आइ ॥ ३ ॥
धातुकोप वर्णन कियो, शालहोत्र मत देखि।
अरु औषध श्रीधर कही, वाजिनको हित पेखि ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह कविकेशवदासकृत धातुकोपवर्णन
नामक चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

अथ आठों ज्वरोंके स्वरूप-नाम-लक्षण-उत्पत्ति-वर्णन।

कुण्डलिया—आठौ ज्वर शिवकोपते, प्रगट भये संसार।
बीभत्स त्रिशिरा कपिल, चौथे भस्मप्रहार ॥
चौथे भस्मप्रहार त्रिपद पिंगाक्ष बखानौ।
लंबोदर भैरौं बखानकै ई सब नाम प्रमानौ ॥
कहि धन्वंतर अत्रि और अश्वनी सुखेनै।
सकल जक्तको नाशकार प्राणन दुख देनै ॥

अथ बीभत्सज्वर। देखो चित्र नम्बर १०५.

कवित्त—वैद्यशास्त्रमें विधान लिखे रूप रंग जान,
प्रगट शिवकोपमान मानिये विश्वासै।
रुधिर भीज वसन जाल अतिबल वहु नेत्र लाल,
क्रोधी महा मुंडमाल सबको मद नासै ॥
देही कृसी अक्षि तीन और अंग है मलीन,
कज्जलसम अंग वरन नग्नरूप भासै।
नाश जक्त करनहार देहमें दुर्गंधधार,
पूषा द्विज नाशकर बीभत्सज्वर प्रकाशै ॥

अथ त्रिशिरज्वररूप । देखो चित्र नम्बर १०६.

कवित्त-शंकरजू कोप कीन ज्वरको प्रगट कीन,
आँखी नव चर्ण तीन कामी बड़ भारी है ।
जाँघै साखू वृक्ष मानौं लाली लाली आँखी जानौ,
अतिक्रोधी सो बखानौ तीनि शीश धारी है ॥
रसना कपोल चाटै वैद्यशास्त्र भाषत है,
नीलवन भासत है हाथ षट कारी है ।
अस रूप कीन धारी स्वेदअक्ष अंतकारी,
मुनिवृन्द यों पुकारी त्रिशिर नामधारी है ॥

अथ कपिलज्वररूप । देखो चित्र नम्बर १०७.

कवित्त-गौरीपति लोकनाथ भूतनके वृन्द साथ,
कोप करि श्वास साथ या विधि उपजायो है ।
ताके मुखते अँगार गिरते हैं बार बार,
भाषत यों ग्रंथसार वैद्यनहू गायो है ॥
कामी बड़ मध्य गात लोचन मद चमूचमात,
मेघ सम घुर्घुरात वैद्यकमें गायो है ।
तप्त ताँब तुल्य केश राखत ना हर्ष लेश,
भाषे अस देश देश कपिलज्वर छायो है ॥

अथ भस्मप्रहारज्वरस्वरूप । देखो चित्र नम्बर १०८.

कवित्त-गिरजापति कोप कीन श्वासते प्रकट कीन,
ग्रंथमें विधान कीन ऐस रूप धारी है ।
दाढ़ैं विकराल सप्त जीभ लफ लफात भस्म,
अस्त्र करमें विशाल देखो भयकारी है ॥
अट्टहास कर्मकाश बार बारजृंभ तास,

नीलरंग ताहि भास वैद्यकमें गायो है।
तंम्र ताँब बर्न बार दाढ़ि मुच्छ मुंडकेर,
नाम ज्वर भस्मप्रहार यज्ञ भंग धायो है॥

अथ त्रिपादज्वरस्वरूप। देखो चित्र नम्बर १०९.

कबित्त–जब सती देह जारी मुनिवृंद यों विचारी,
शिव कोप कीन भारी तब ज्वर जायो है।
वर्ण तीन नैन लाल भारी तनु है विशाल,
सब अंग करै ज्वाल दक्षयज्ञ आयो है॥
दाढ़ी भृगुकी उखारी श्वास लेत बार बार,
ऊर्द्ध कान जाहि केर श्यामरूप गायो है।
है त्रिशूल अस्त्रधारी रणमध्य नृत्य भारी,
त्रिपाद नामकारी जो वैद्य सब गायो है॥

अथ पिगाक्षज्वरस्वरूप। देखो चित्र नम्बर ११०

कबित्त–पंचमुख है विशाल काटत जो भवजाल,
कीन कोप है कराल श्वास ज्वर जायो है।
क्षीण अंग सूख माँस छोटी छोटी जाँघें जासु,
हैं कठोर बार तासु अग्निबाण धारी है॥
है वदन बड़ो भारी दूजे भयानक कारी,
रसना युगलधारी वैद्यकमें गायो है।
है तृषा बहुत वाके दुइ अक्ष पीत ताके,
पिंगअक्ष नाम जाको नरसिंह धायो है॥

अथ लबोदरज्वरस्वरूप। देखो चित्र नम्बर १११.

कवित्त–है गरल कंठधारी लोक रक्षकारी तिन,
कोप कीन भारी तब ऐसो ज्वर जायो है।

लंब बड़ो पेट जाहि बड़े बड़े कान ताहि,
रक्तवर्ण नेत्र वाहि वैद्यकमें गायो है ॥
रूप ज्वालरंग भास जमुहाइ और श्वास,
ताको बड़ी है पिआस महाबली आयो है ।
लक्षण असाध्य तिहि अंग अंग पीर बाँधि,
लंबोदर नाम कहौ क्रोधित ह्वै धायो है ॥

अथ भैरवज्वरस्वरूप । देखो चित्र नम्बर ११२.

कवित्त—नाश ध्यान शिवप्रवीन दक्षै यह नाश कीन,
श्वासते प्रगट कीन ऐसो ज्वर जायो है ।
रूप जैस रंग ज्वाल और खोलि शीश बाल,
चमक भौंहकी कराल फाँसी व्याल हाथ है ॥
षट बाग अस्त्र कारी दूजे तिरशूल धारी,
बलवान भारी देह दूबरी बखान्यो है ।
अंग सूख मांस नाहि बड़ा भयकार वाहि,
लक्षण असाध्य ताहि भैरा नाम गायो है ॥११३॥

अथ शांतिविधि ।

कुण्डलिया—जड़ चेतन पशु जीव जग, ज्वर सबको दुख देत ।
ताकी शांति विधान हित, शिव पूजन करु हेत ॥
शिव पूजन करु हेत दूर्व अक्षत गोक्षीरै ।
परछि सकल विधि नीर सहस घटमें अनुसारै ॥
ग्यारह दिन करु यतन सकल देवनके स्वंभू ।
तुरत देत वरदान दयाके सागर शंभू ॥

पित्त--कफ--वातज्वरवर्णन ।

दोहा-पित्त और कफ वात ज्वर, हयके उठै विकार ।
औषध लंघन कहत हौं, शालहोत्र मत सार ॥

अथ पित्तज्वरलक्षण ।

दोहा-अरुणनेत्र धौंकी बजै, ठापै पानी देत ।
पित्त वक्र तिहि जानियो, ज्वर निदान कहि देत ॥
सोरठा-लोचन रसना पीत, पीत मूत्र अरु लीदि लखि ।
मुख तन तांतो मीत, पित्तज्वर लक्षण निरखि ॥

दवा ।

चौपाई-नागेश्वर बाँसाको पाता। पाटी गुर्च समान जु खाता॥
कुटकी हर्रें अरु मधु सानी । याको दिये पित्तकी हानी ॥

पुनः ।

चौपाई-काकजंघ अरु मिश्री लेहू । एला और शतावरि देहू ॥
सानि सहत सँग देउ खवाई। पित्तज्वर सो हयको जाई ॥

पुनः ।

चौपाई-मोथा पिपरी लेउ गिलोई । लौंग मिर्च जैफल पिसवाई॥
अदरख पान सोंठि सम लेहू। सात दिवस यह औषध देहू॥
नीको होइ व्याधि सब हरै। शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

पुनः ।

चौपाई-जौ सेतुआको दाना दीजै। सात दिवसमां नीको लीजै॥

अथ पित्तसन्निपातलक्षण ।

सोरठा-अरुण पीत चख होय, रातो पीतो मूत्र पुनि ।
धौंस श्वास सब होय, भ्रमित होय जब होय निशि ॥
छंद द्रुपद-गंधारीफल सेर सेर इक मिश्री लीजै ।
गोघृतके सँग देइ पित्तकी सन्नि हरीजै ॥

पुनः ।

छंद दुपद–सिश्री लीजै पावसेर आँबिली पकि आधी ।
नासु देइ तिहुँवेर नीर शीतलमें साधी ॥

पुनः ।

छंद दुपद–लै पिचुमंद शतावरी तौलिकरि धरौ सेर भरि ।
करि दधि संग यकत्र नासु तिहि देइ नाल भरि ॥

पुनः ।

चौपाई–तेजपात नागेश्वर लेहू । बाला वंशलोचनै देहू ॥
चंदनरक्त लेउ तालीसा । तौतुल धनियां सोंठी ईसा ॥
दाडिमसार और छड़ जानी । जीरा श्वेत इलाची आनी ॥
पाव डेढ़ प्रति औषध कही । चौगुन गोघृत लीजै सही ॥
घृतहि संग दीजै पल साता । शालहोत्र मत जानौ ताता ॥
औषध बनै तुरेको दीजै । पित्त सन्नि नाशै सुख लीजै ॥

अथ पित्तदोष नासिकाछिद्र (नथुना) से रक्त चले ।

चौपाई–जो घोड़ेका मूँड पिराई । रुधिर चलै नथुनातें आई ॥
पित्तदोष पहिचानौ ताही। औषध कीजे या विधि वाही ॥
औंरा औ खसखस मँगवावै। गऊ क्षीर सँग लेप करावै ॥
माथे लेप करै दिन साता। चेतन चन्द कहै अस बाता ॥

पुनः ।

चौपाई-नासु देइ त्रिफलाको नीरा । जैहै रोग मूँड़की पीरा ॥

पुनः ।

दोहा–जर सिरसई कि आनिकै, गाई दूध बँटाय ।
नासु अश्वको दीजिये, रक्तशूल मिटि जाय ॥

पुनः ।

दोहा—पात चँबेली लीजिये, गोघृत कल्क पचाय ।
नासु अश्वको दीजिये, मस्तक शूल विहाय ॥ १ ॥
सो घृत मस्तकमें मलै, मलै कनपटी सोय ।
दवा करौ ततकाल ही, शूल दूरि सो होय ॥ २ ॥

अथ पित्तरक्त—लक्षण ।

दोहा—घर्ष करै कंडू वपुष, चाहै जल अरु छाँह ।
चरै न तृण सो जानिये, पित्तरक्त याहि माँह ॥ १ ॥
यह लक्षण लखि तुरँगको, तुरतै लोहू लेय ।
होय अरोगी तनु तबै, कुटकी औ गुड़ देय ॥ २ ॥
सोरठा—मिश्रीके सँग क्षीर, पियन अश्वको दीजिये ।
निर्मल होइ शरीर, दाह पित्त छूटै तुरत ॥ १ ॥
आधपाव परमान, खुरवारीके बीज लै ।
अरु कुटकी गुड़ सान, दीजै तुरत अरोगिकर ॥ २ ॥

अथ पित्तरक्तका असाध्य लक्षण ।

चौ०—रुधिर लिये पाछे हय देखो । पांडु वर्ण लोचन युग लेखों ।
तासु मरण निश्चय करि जाना । शालहोत्रके वचन प्रमाना ॥

अथ पित्तलक्षणवर्णन ।

दोहा—बार बार करि लीदको, गात गिलदि इति होय ।
लक्षणते पहिचानिये, पित्त जानिये सोय ॥ १ ॥
गोदधि लीजै सेर इक, चीनी शक्कर होय ।
सालिम मिश्री टंक दुइ, उज्वल जीरा सोय ॥ २ ॥
अश्वखानको दीजिये, पित्तदोष जिहि होय ।
याते जाय विकार सब, जो पहिचानै कोय ॥ २ ॥

अन्य ।

छं० प०–हय पित्तरक्त बाढ़ शरीर । खजुआय अंग बहु चहै नीर ।
अति शीतथान सो बासु लहै । अतिशीत न भक्षण भक्ष चहै ॥

दवा ।

छं०प०–तहँ रुधिर अंग हयकरै हीन।तब कटुकी औ गुड़ दे प्रवीन
जो होय अंग वाजी निरोग । यह जानौ जनकहि सर्व लोग॥

असाध्य लक्षण ।

छं०हरि०–हय होय लक्षण प्रथमके पुनि पित्त शोणित सो मिलै।
अरु अश्व श्वास विमुच्चई हिहनाय नैन सिलासिलै ॥
अरु रक्त पित्त दिगन्त दीसै साध्य लक्षण है नहीं।
यह शालहोत्र विचारि भाषत वाजि नाहिं जीवै सही ॥

पित्तकी दवा ।

चौं०-श्वेत इलाची मूसरि श्यामा।काकजंघ मधु घृत अभिरामा॥
शक्कर श्वेत भाग सम कीजै।पीसि दवा गुड़के सँग दीजै॥
पित्त सकल खातै हरि लेई। उनइस टंक खानको देई ॥

अथ कफज्वरलक्षण–वर्णन ।

दोहा–तनु तातो व्याकुल स्रवत, नाक शिथिलता नैन ।
अधर अधर में लीन जल, यहै कफ ज्वर ऐन ॥

पुनः ।

दोहा–तप्त शरीर रु पेट गद, शोथ दृगन पर होय ।
कफ डारै कांपै वदन, घास खाय नहिं सोय ॥

दवा ।

चौपाई–पिपरी सैंधव घी मेलाई । नासु देव घोड़ेको जाई ॥
ता पाछे यह काढ़ा करै । अंगपीर घोड़ेकी हरै ॥

पुनः ।

चौ०—बायबिडंग अंडजर लावै । सोंठि कचूर गुरच मिलवावै ॥
अष्ट विशेषी काढ़ा देऊ । सात रोजमहँ नीको लेऊ ॥

पुनः ।

दोहा—भारी माथो होय अति, नेत्र चुवैं बहु नीर ।
पीरो कफ मुखते झरै, बदन होय तिहि पीर ॥

दवा ।

चौपाई—रेवतचीनी गायक घीऊ । अग्निमध्य परिपक्क करेऊ ॥
हाथ पाँव घोड़के रगरे । ता पाछे यह औषध करे ॥

पुनः ।

चौपाई—सोंठि कटाई बायभिरंगा । पिपरामूल जवाइनि संगा ॥
सैंधव सोंचर हींग मिलावै।औषध वजन बराबरि लावै॥
हींग सोहागा खील करावै। मासे चारि वजन मिलवावै॥
टंक तीनि भरि दीजै रोजा । मेटै अंगरोगको खोजा ॥

पुनः ।

चौपाई—दंतीजर भारंगी आनै । नागरमोथा कुटकी सानै ॥
नींबछालि असगँध देउदारा।चीत मिर्च लीजो घुँघुआरा॥
अष्टाविशेषी काढ़ा करै । सहत टंकभरि तामें धरै ॥
आठ दिना जो दीजै भाई । सुखी होय अरु रोग विहाई॥

पुनः ।

चौपाई—मिर्चैं जीरा सैंधव लोना । चीत रु चाब सोंठि लै तोना॥
बच अतीस अरु पिपरामूला।मधुसों सानि सबै समतूला॥
वजन तीनि पलकी नित दीनो । जो तुरंग है गुणद प्रवीनो ॥
कछु दिन याको सेवन कीजै । नित प्रति ताहि कफज्वर छीजै ॥

पुनः ।

चौपाई—भौंहनपर जो सोथ दिखावै । नास कटैयाकेर दिखावै ॥
परो कफ पानी दृग ढारै । तौ यह ओषधिको अनुसारै ॥
सोंठि सोहागा सोंचर लेहू । मिर्च पीपरी तामें देहू ॥
वजन बराबरि सबको कीजै । सात रोज घोड़ेको दीजै ॥

अथ वातज्वर--लक्षण ।

दोहा—स्रवत वारि मुख अंग जड़, ग्रीव मारि ऐंड़ाय ।
वातज्वर सो जानिये, लक्षण दिये बताय ॥

चौ०—पिपरी सोंठि पीपरामूलै । कूट जवाइनि वच सम तूलै ॥
रहसनि लेउ अतीस समानै । सेर सेर की है परमानै ॥
येक सेर मधुसों लै सानै । वजन कीजिये सुमति प्रमानै ॥
नकुलेश्वर यह रीति बखानी । सो करिहैं वातज्वरहानी ॥

अथ वातसन्निपातलक्षण ।

दोहा—रहै जरीसी जीभ व्रण, कंप खेद मुख लार ।
तप्त अंग सब अकड़को, वातसन्नि कहि सार ॥

दवा ।

दोहा—जो मसुरीको राँधिकै, तासु कढ़ा हय प्याय ।
राखै गृह निर्वातमें, सेंकै अग्नि जराय ॥

पुनः ।

चौ०—पिपरी जीरा पिपलामूल । हींग अतीस वच्च सम तूल ॥
लोन और सोनाली लाव । सेर सेर सब हींग जु पाव ॥
देहु पिंडकरि घृतसों सानी । यहिविधि हयकी जतन विधानी
नकुलेश्वर ऐसो उच्चरै । याते वातसन्निको हरै ॥

पुनः।

चौ०-चीत पीपरी मोथा गुरची। परवरजर कुटकी औ मिर्ची॥
पाव तीनि लै घृतसों सानी। याते वात सन्निकी हानी॥

पुनः।

चौ०-सोंचर हींग सैंधव जीरा। सोंठि पीपरी मिर्चै धीरा॥
प्रतिप्रति तीस टंक लै आवै। लहसुन लै पल बीस मिलावै॥
तुरतै सो कटुतेल मँगावै। सब औषध त्रय पाव कुटावै॥
कपरछान करि तामें सानी। दीन्हें वातसन्निकी हानी॥

पुनः।

दोहा-गजपीपरि पीपरि तगर, सोंठि कूट मंजीठ।
पिपरामूरि कचूर लै, देवदारु करु डीठ॥ १॥
तीनि पाव यह सर्व लै, दीजै घृतसों सानि।
होय अश्वको देत ही, वातसन्निकी हानि॥ २॥

पुनः।

चौ०-मोथा गुरच इन्द्रारुनि लीजै। गोल कटैया सामिल कीजै॥
दोहा-भाग बराबरि पूड़िया, बाँधौ आटा सानि।
वात जाइ अरु बल करै, घोड़े देउ विधानि॥

पुनः।

सोरठा-लेहु राजिका जीर, चीता दधिसँग पीसिकै।
निर्मल करै शरीर, अतीसार विष वातरस॥

अथ वातसन्निपात लक्षण।

दोहा-मुखते जो पानी झरै, गंधि करै बहु सोय।
हयको पग तरवा जरै, ज्वर संताप सु होय॥

चौ०-केलाजरको नीर मँगावै । गूलरकी छाली लै आवै ॥
लेउ वहेरा तुचको खारा । तौल सेर दुइ करु निरधारा ॥
सव इकत्र करि दीजै तुरंगा। मुखकी गंधि हरै ज्वर भंगा ॥

अथ दूसरा वातज्वरलक्षण व दवा ।

दोहा-चरत रहै हय घास जो, परै ददोरा गात ।
नकुल कहैं लक्षण निरखि, ताहि कहैं ज्वरवात ॥
चौ०-बच औ बीज पलाश मँगावै। छालि पलाश कुरैया लावै॥
रंड-सहींजन-जरकी छाली। अँवरवेलि अरु मुंडी घाली॥
सव समभाग टंक दश लीजै । ताको काढ़ा जलमें कीजै ॥
पानी तौल सेर दुइ देई । प्रात दिये हय नीको लेई ॥

अथ श्लेष्मवातज्वर लक्षण व दवा ।

दोहा-तानै तनु आलस भरो, खाँसै बारंबार ।
वात श्लेष्मज्वर सोई, तासु करौ उपचार ॥
चौ०-पोहकरमूल पीपरामूला । भारंगी पिपरी सम तूला ॥
रेगनि औ औरूसो लेहू । मधुरँग सकल सेर नित देहू ॥

अथ अन्यवातरक्तलक्षण व दवा ।

दोहा-मैथुन पर वहु मन करै, विना तुरंगिनि देखि ।
मांस होय दृढ़ कोखिकर, वातरक्त सु विशेखि ॥ १ ॥
श्वास सरस जो जानिये, वातरक्तको कोप ।
रुधिर ताहिको लीजिये, होय रोगको लोप ॥ २ ॥
नींवपात इक पाव घृत, सेर नीरमहँ औटि ।
लोहचून डारि खवाइये, देइ रोगको लौटि ॥ ३ ॥

असाध्य लक्षण ।

दोहा-नैन युगल मेचक वरन, श्वाश कंठु अति तुंड ।
तुरँग जाय यमसदनको, जो उपचारक झुंड ॥

अथ वातसन्निपातज्वर।

चौपाई-तप्त शरीर अश्वकों होई। हींसै टापै चौंकै सोई॥
श्वास प्रचण्ड चलै तिहि अंगा। सन्निदोषज्वर ताके संगा॥
बायबिडँग घुघुवारी पोस्ता। जरअंडा कूढ़ेकी निस्ता॥
अष्टविशेषी काढ़ा करै। वातसन्निज्वरको तब हरै॥

अन्य।

चौपाई-गुल्म अंग जो वाके परै। तौ पाछे यह औषध करै॥
सोंठि पीपरामूरि मँगावै। सहत खांड गुड़संग मिलावै॥
वजन बराबरि घोड़े देहू। गुल्मव्याधि ताकी हरिलेहू॥

अन्य।

चौपाई-वही वातज्वरकी अनुसारै। सन्निपातज्वर औषधि कारै॥
सोवा पालक लेउ अजीर। सक्करसहद औ किसिमिसिछीर॥
वजन बराबरि सबको लेहू। गऊदूधमें घोड़े देहू॥
नाशै रोग व्याधि बहि जाई। जो घोड़ेको करौ उपाई॥

अथ वातरक्तलक्षण।

छंद-वातरक्त अश्वके सो मानिये सबै प्रमान।
श्वासदीर्घ छोड़ई सो जानिये सबै निदान॥
बारबार पौढ़ि जाय जानुको पसारि देइ।
अंग अंग कोरि कोरि मोरि जंभु लेइ॥

दोहा-ता वाजीको कहत हौं, वरणि चिकित्सा चारु।
पहिले दै त्रिफलादिको, सैंधव करौ प्रचारु॥

सोरठा-रक्तवातको दोष, ता वाजीके जानिये।
छूटै सुतनु सरोष, लाल श्वेत दृग अन्त इमि॥

दोहा-ये सब लक्षण मैं कहौं, सो असाध्य हय जान ।
आगे अभ्रक दीजिये, वर्णत सुकवि निधान ॥
उ०व०-शरीर जाके कफ पित्त बाढ़ै। अधोमुखी वाजि चलै सु गाढ़ै ।
न खात आहार चलै न नीके। चहै चमक्की अति अश्व जीके॥

अथ असाध्य वातरक्तलक्षण ।

चौ०-लक्षण एक असाध्यक जानौ। हय दृग अंत बिन्दुयुत मानौ
उदरमध्य कष्ट अति होई । सो षटमास जियै नहिं कोई ॥

दवा ।

छंद मालिनी-गुरच सहित सोंठी पीपरी हींग मानौ ।
पुनि सुठि महुरेठी काकराश्रृंगि जानौ ॥
सब सम गहि लावौ भागकै तीनि देई ।
कफ रुधिर विकारौ होत है दूरि तेई ॥
हरि०-कफ वात पित्त त्रिदोष मिलिकै होत हैं इक संग ही ।
तहँ रक्त कोप करै तबै हय होत है वा तंग ही ॥
अति चलत आँसू नैनते इमि घासको धक लाग ही ।
नहिं खुलत लोचन मंद भूख अनंद पाकरि पाव ही ॥
सोरठा-बोलै अति गंभीर, औ त्रिदोष प्रथमै कहे ।
जानि लेउ मतिधीर, सन्निपातको रूप यह ॥

दवा ।

छंद मालिनी-रुधिर तुरत हीनो सो करै अंगमाही ।
अशन कुछ न दीजै वाजि रोगो नशाही ॥
जिमि जिमि क्रमहीसों रोगकी हानि होई ।
इमि इमि लघु दीजै भोजनं वाहि सोई ॥

दोहा-वात पित्त कफ दोष लखि, जैसे जो अधिकाय ।
ऊपर शीतल सीसरी, दीजै छानि पिआय ॥ १ ॥
कैसौ बाजी दोषयुत, होय बहुत की थोर ।
बिन जल कबहुँ न राखिये, कहत ग्रंथ शिरमोर ॥ २ ॥
छंद चामर-मूत्र ले मिलाय साथ कूटकी सु लाइये ।
पीसिकै बचै समेत अश्वको खवाइये ॥
सन्निपात नाश होइ शालिहोत्र भाष ही ।
भूंख होय रोग जाय अंग अंग राख ही॥

चिकित्सा ।

छं०गी०-छिरकासा कंदहि आदि दै त्रिफला सु दूनहु लीजिये ।
पुनि चारु चीतहि डारिकै तिगुनो तहाँ करि दीजिये॥
सब पीसिकै करि भाग तीनहु एक एक खवाइये ।
तहँ मन्द अग्नि मिटाय संशिहि सर्व दोष नशाइये ॥

अथ श्लेष्माकमलज्वरलक्षण ।

दोहा-जलप्रवाह बह नासिका, युद्ध धीर दरशाय ।
सो श्लेष्मा कमलज्वर, याही यतन विहाय ॥
चौ०-देवदारु अरु केरा कंदा । धनियां और बिलारूकंदा ॥
लै बकचंड यकत्र करावै । कूटि छानि घोड़मुख नावै ॥
नीक होइ तनु बहु सुख पाई। श्लेष्माकोप कमलज्वर जाई॥

अथ शेषज्वरलक्षण ।

दोहा-अहि कैसी रसना कढ़ै, पूँछ हनै दृग नीर ।
जल पैठे मुख कृमि परै, बहु दौरै ज्वर पीर ॥
चौपाई-बेलके गूदक हड्डा लीजै । सेंबरमूल कटैया दीजै ॥
मूसरिकंद मिलै करु काढ़ा । शेषज्वर जैहै बहु बाढ़ा ॥

---

१ घोड़ा ।

अथ कालज्वरलक्षण ।

दोहा–जासु तुरँगके वदनमें, फुटका पारि दरशात ।
कालज्वर पहिचानिये, शालहोत्र विख्यात ॥ १ ॥
कछुक बेर जलमें सुमति, कीजै जलमें ठाढ़ ।
यहिते कालज्वर नशै, कछु दिन करि अतिदाढ़ ॥ २ ॥

अथ रक्तश्लेष्मालक्षण ।

दोहा–चरै न तृण नासा स्रवै, खाँसै मुख अध राखि ।
मन मलीन आतप चहै, श्लेष्मरक्त तिहि भाखि ॥ १ ॥
शोणित लीजै ताहिको, दीजै हर्रै सोंठि ।
होय अरोगी अश्व जो, रुजकी करै अनेठि ॥

इसके असाध्य लक्षण ।

चौ०–खजुली उदर नैन रँग लाला।बीच मास षट तिहिको काला
सिश्री सैंधव सोंठि मँगावै।दश दश टंक सकल पिसवावै॥
जलके साथ नासु दै रचै । ईश दयालु होय तौ बचै ॥

अथ प्राणहर सन्निपात ।

दोहा–सूजै अगिला पाँव जिहि, रक्तवर्ण है गात ।
कंप अधिक तनु प्राण हर, सन्निपात सरसात ॥
चौ०–सोंठि पीपरी मिरचै गोली।सौंफ जवाइनि समकरि तोली॥
जलके साथ तुरेको देई । सन्निपातको नाश करेई ॥

दूसरा सन्निपात ।

दोहा–अवशि चलै चौंकत तुरय, सूजै आगिल पाउँ ।
सन्निपात यह दूसरो, ताकी जतन बताउँ ॥
चौ०–अजवाइनि अजमोद मँगावै। कुटकी सौंफ हींग मिलवावै॥
लहसुनगोली मिर्चै भरंगी । पित्तपापरा सरसों रंगी ॥

कटसरइयाजर अंक मँगावै। रहसनि सब सम भाग पिसावै॥
गोघृत संग देइ जो तुरंगै। होय अराम करै रुज भंगै॥

--पुनः--।

चौ०-कुटकी मिर्च पीपरी जेती। अमिलतास सोंठी जो लेती॥
दारुहरद मोथा मँगवावै। टंक पचीस सहत मिलवावै॥
सकल दवा समभाग पिसावै। पिंड बनाय अश्वमुख नावै॥

अथ रक्त-सन्निपातलक्षण।

दोहा-आलस निद्रा डारि श्रुति, कंप श्वास मुख लार।
सन्नि रक्त बहुवेग जहँ, चरै न नेक अहार॥

चौ०-लोहू काढ़ि उपास करावै। औटि नीर तब तुरै पियावै॥
अँविलबेत सरवन अरु बेलै। तीनौं मिलै तुरै मुख मेलै॥

सर्वज्वरका काढ़ा।

चौ०-धनियाँ कुलफा बेला फूल। ऐलामेंडी लै सम तूल॥
सूखी लकरी नींब मँगाई। सबका काढ़ा देउ चढ़ाई॥
अष्ट विशेषी काढ़ा देई। सर्वज्वरको नाश करेई॥

अथ दशमूलतैल सन्निपातज्वराधिकारमे।

दोहा-बेलछालि त्रयपाव लै, सोना पड़री आनि।
खंभारी गुखुरा बड़ा, सरवन पिथवन जानि॥ १॥
वनभाँटा रानि लीजिये, यह दशमूलकि छालि।
तीनि तीनि पौवा वजन, कुचालि कराही घालि॥ २॥
तीस सेर जलमें अवटि, चतुर्थांश करि लेहि।
सेर चारि तिलतेलको, यहि विधि सिद्धि करेहि॥ ३॥
पाव मँजीठ जो भाग सम, लोध हरदि त्रिफलानि।
तज मोथा वाला सुगँध, वच तोला श्रुति जानि॥ ४॥

सब यकत्र करि पीसि ले, देउ तेलमें डारि ।
पचि जावै तब छानिकै, भरु भाजनमें धारि ॥ ९ ॥

अन्यमत ज्वरचिकित्सा ।

दोहा–तप है चारि प्रकारका, सफरावी यक जानि ।
शालहोत्र मुनि यों कहो, कफते दूसरि मानि ॥ १ ॥
रक्त दोषते तीसरो, चौथी बादी जानि ।
औषधि अरु पहिचानि जो, सो अब कहौं बखानि ॥२॥

अथ तप सफरावी लक्षण ।

दोहा–मध्य दिवस अधरातको, होत आइ तप जौन ।
शीश झुकाये अरु रहै, सफरावी हय तौन ॥ १ ॥
जरदी मायल आँखिमों, सुरखी ताके होइ ।
गर्म देह अरु होति है, सफरावी तप सोइ ॥ २ ॥
धोंकी जाकी श्वासमें, पानीपै अति चाह ।
भोजन शीतल अति चहै, शीतल छाहँ उमाह ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–छालि कवरेकी सहित, जर केलाकी लाइ ।
धनियाँ औरो कासनी, औंराछालि मँगाइ ॥ १ ॥
चारि चारि तोला सबै, ओषधि लेहु पिसाइ ।
पाँच सेर पानी विषै, तिनको देहु मिलाइ ॥ २ ॥
पानीकी मौताज यह, सो पक्की करि मान ।
शालहोत्र मत देखिकै, वरणी तौन सुजान ॥ ३ ॥
ताहि चुरावै अग्नि पर, दोइ सेर रहिजाइ ।
टाढ़ो करिकै ताहिको, हयको देहु पिआइ ॥ ४ ॥

तंग तरे अरु जीभमें, कीतौ तालू माहि।
फस्द लीजिये ताहिके, रोग नाश हो जाहि ॥ ५ ॥

अन्य दवा।

दोहा–तोला एक मँगाइये, तौन सहतरा आनि।
ताते दूनी लीजिये, मेहदी पात सुजानि ॥ १ ॥
यवके आटा माहिमें, दोऊ पीसि मिलाइ।
पिंडी कीजै ताहिकी, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

अन्य दवा।

दोहा–मोथा पीपरि गुरच लै, मिर्च लौंग मँगवाइ।
अदरख जयफल सोंठि पुनि, लीजै पान मिलाइ ॥ १ ॥
औषध तोले चारि सब, लीजै भाग समान।
सात दिवस लग दीजिये, नित प्रति हय परमान ॥ २ ॥
गरमीके दिन होइ जो, यातौ गरम मिजाज।
प्रथमै जो ओषधि कही, सो दीजै सुखसाज ॥ ३ ॥

अथ बलगमीतप लक्षण।

दोहा–जाके होय कनार अरु, देह गर्म ह्वैजाय।
काँपै जाको वदन पुनि, ऐसी गति दरशाय ॥ १ ॥
रंग आँखिको सुरख यों, निलो सफेदी सोइ।
भारी माथो अरु रहै, नेत्र चुवत जल होई ॥ २ ॥

दवा।

दोहा–सोंठि कूठ पीपरि सहित, पिपरामूरि मँगाइ।
अजवाइन अजमोद अरु, मिरचस्याइमिलवाइ ॥ १ ॥
दुइ दुइ तोले ओषधी, सबको लेइ पिसाय।
चारि सेर जलमाहिं करि, लीजै तिन्हैं पकाय ॥ २ ॥

जल आधो रहिजाय जब, लीजै ताहि उतारि।
बाँस पोर यक लीजिये, ताके मुखहि सुधारि॥ ३॥

बाँसपोरमें ताहि भरि, आधा देइ पिआइ।
आधा दीजै साँझको, औषध विधि यह आइ॥ ४॥

रेजिस जारी होइ जब, शालहोत्र मत जानि।
दीजै ताको नाश तब, सो अब कहौं बखानि॥ ५॥

बीज कटैया आनिकै, और कैफरा जानि।
वजन बरोबरि जानिये, पीसै कपरा छानि॥ ६॥

रेंडाकी चोंगलि विषे, भरै दवाई सोइ।
नथुनामें फूंकै सुई, तुरी नीक तब होइ॥ ७॥

सोंटि कटैया लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि।
जलमें घोरै ताहिको, पाव एक गुड़ आनि॥ ८॥

गर्म कीजिये अग्निपर, दीजै ताहि पिआइ।
या विधि दीजै तीनि दिन, रोग नाश ह्वैजाइ॥ ९॥

पीपरि पिपरामूरि लै, सोंचर सैंधव आनि।
हींग कटैया सोंठि लै, वायबिडंगी जानि॥ १०॥

लेहु कटैया भूँजि सो, सब काँटा जरि जाँइ।
टका तीनि भरि तौलि करि, सबै इलाजै लाइ॥ ११॥

हींग सोहागा लीजिये, मासे आठहि जानि।
और ओषधी जो रही, वजन बरोबरि आनि॥ १२॥

सात दिवस यह ओषधी, घोड़े दीजै रोज।
ताके अंगहि रोज जो, रहै नेक नहिं खोज॥ १३॥

अन्य दवा।

सोरठा-दंती जरको आनि, और भरंगी लीजिये।
नागर मोथा जानि, नींब छालि कुटकी सहित ॥
दोहा-देवदारु चीतो मिरच, असगँध औ घुघुवारि।
टंकटंक सब ओषधी, भाग बरोबरि धारि ॥ १ ॥
सेर चारि जलमाहि करि, लीजै ताहि चुराइ।
अठवाँ हीसा जब रहै, लेहु ताहि सेरवाइ ॥ २ ॥
टंक एक भरि ताहिमें, दीजै सहद मिलाइ।
नितप्रति करि यह औषधी, घोड़ेहि देहु पिआइ ॥ ३ ॥
औषध दीजै सात दिन, रोग नीक ह्वै जाइ।
शालहोत्र मत जानिकै, श्रीधर दियो बताइ ॥ ४ ॥

अथ रक्तज्वरका लक्षण।

दोहा-रंग बतानेको सुरुख, स्याही मायल होइ।
दुहूँ कानके मध्यमें, गरम बहुत है सोइ ॥ १ ॥
शिर डारे हय रहत सो, रक्तज्वरके माहि।
शालहोत्र मुनिके मते, लक्षण कहे सुआहि ॥ २ ॥

दवा।

दोहा-तारू नथुना जीभते, फस्द लीजिये ताहि।
ता पाछे औषध करै, शालहोत्रमत याहि ॥

अन्य।

दोहा-धनियाँ हर्र बहेर कहि, और सहतरा जानि।
दो दो तोले ओषधी, दीजै हयको आनि ॥ १ ॥
घास हरी वहि दीजिये, दाना दीजै नाहि।
देखि बताना आंखिको, औषध दीजै ताहि ॥ २ ॥

गरमी सरदी होइ जो, लीजै ताहि विचारि ।
औषध दीजै ताहिको, मौसिमको निरधारि ॥ ३ ॥
अश्व मिजाजहि जानिकै, ता अनुसारहि जोय ।
औषध दीजै ताहिको; वाजी नीको होय ॥ ४ ॥

अथ वादीतपलक्षण ।

दोहा–दर्द होति है पेटमें, फूलि पेट जो जानि ।
तनु प्रस्वेद अति ताहिके, रोज अधिक अधिकानि ॥ १ ॥
रातिव पावत होइ जो, मोटो होइ शरीर ।
होत ताहिको आनिकै, वादीतपकी पीर ॥ २ ॥
होइ विछार सुगिरि परै, फिरि उठि ठाढ़ो होइ ।
वार वार गति ताहि यों, लेहु तुरीकी जोइ ॥ ३ ॥
रंग वतानेको सुरुख, स्याही लीन्हें होइ ।
वात पित्तके दोषते, यह तप हयके सोइ ॥ ४ ॥
औषध कीजै जल्दअति, जियत वाजि तौ आइ ।
देर होइ औषधाविषे, तुरी तवै मरिजाइ ॥ ५ ॥

उसका धूरा ।

दोहा–औंरा फलको पीसिकै, तासम खैरु मिलाइ ।
धूरा कीजै देह सव, सूखि पसीना जाइ ॥ १ ॥
घोड़ेकेरे पेटमें, गांठि परति है तौन ।
हुकना कीये सो खुलै, जानि लेहु वुधि भौन ॥ २ ॥

तरकीव हुकनाकी ।

दोहा–चाऊ वाँस मँगाइकै, पोर एक कटवाइ ।
दोनों तरफन ताहिको, कमल सदृश करवाइ ॥ १ ॥

नोक होइ तामें नहीं, सो जानौ बुधिवान।
नाहीं तौ गड़ि जाइ है, अश्व गुदामें च्वान॥ २॥
तेल लगावै गुदामें, डारै लीदि कढ़ाइ।
सोंठि पीसि जल तेलमें, पोटरी लेइ बनाइ॥ ३॥
घोड़े केरी गुदामें, पोटरी देइ धराइ।
फूँकि देइ फिरि ताहिको, गाँठिपरी खुलि जाइ॥ ४॥
जब लगु होइ अराम नहिं, हुकना कीन्हें जाहि।
गरम दवा अति अश्वको, दीजै कबहूँ नाहिं॥ ५॥
फस्त खोलिये ताहिकी, तारू नथुना माहि।
उठिकै ठाढ़ो होइ जब, औ अराम दरशाहि॥ ६॥
औषध दीजै ताहिको, लेहु क्षुधाकर जोइ।
दुइ दिन दाना देइ नहिं, तुरी नीकसो होइ॥ ७॥
देखि बताना ताहिको, औषध दीजै तात।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तुरी नीक ह्वै जात॥ ८॥

अथ श्लेष्मज्वरलक्षण।

दोहा—तप्त होति है देह सब, आँवासे दृग लाल।
कौंपत है सब देह अरु, होत अहै यह हाल॥ १॥
कफ मुखते बहुतै झरै, विकल वाजि अति होइ।
सफरा बलगम योगते, यह तप हयतनु होइ॥ २॥

उसकी औषध।

दोहा—पीपरि सैंधव घीव लै, समकरि लेउ मिलाइ।
नास्य दीजिये अश्वको, रोग कमी ह्वै जाइ॥

दवा खानेकी ।

सोरठा—बायविडंग मँगाइ, सोंठि मिरच अरु रंडजर ।
तेल कचूर मिलाइ, औषध दीजै भाग सम ॥

दोहा—टका टका भरि सब दवा, लेहु ताहि बुधिमान ।
एक खुराक दवा कही, सो लीजै मनमान ॥ १ ॥
चारि सेर जलमध्यधरि, औषध लेहु पकाइ ।
अष्ट विशेषी जब रहै, हयको देउ पिआइ ॥ २ ॥

अथ सर्व तपकी दवा ।

चौ० सोंठि चिरैता दोनों लीजै । तोले आठ वजन तिहि कीजै ॥
एला तोला दुइ भरि लेहू । बायविडंग तोला भरि देहू ॥
नींब बुरादा तोला चारी । तासम कुलफा बीज खुडारी ॥
पाँच सेर जलमध्य पकावै । अठवाँ हीसा जब रहि जावै ॥

दोहा—शीतल कीजै ताहि फिरि, औषध लेहु मिलाइ ॥
छानौ कपरा मध्य करि, हयको देहु पिआइ ॥

अथ अन्य तप लक्षण ।

दोहा—मुखमें आवै बासु बहु, कान गरम ह्वै जाइ ।
गुलफी ताकी देहमें, होति सहीते आइ ॥

उसकी दवा ।

चौपाई—रंडाकी जर लेहु मँगाई। तासम खसखस देहु मिलाई॥
अरु झिकबारिक बकला लीजै।जामुनिछालि तासुमें दीजै ॥

दोहा—वजन बराबरि ओषधी, चारि टकाभरि जानि ।
दोइ सेर जलमाहिं करि, ताहि चुरावै आनि ॥ १ ॥
सेर एक रहि जाइ जब, हयको देहु पिआइ ।
या विधि दीजै तीनि दिन, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ २ ॥

अथ त्रिदोषज्वर (सन्निपात) लक्षण ।

दोहा-चौंकै हींसै टापई, तप्त देह अति होइ ।
श्वास चलै अति जोरसे, सन्निपात ज्वर सोइ ॥

उसकी दवा ।

दोहा-मोथा अरु अंजीर लै, पालकि मिश्री लाइ ।
दुइ दुइ तोला ओषधी, गाइ दूध मिलाइ ॥ १ ॥
सर्व दवनते चौगुनो, लीजै दूध मिलाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, औषध देइ खवाइ ॥ २ ॥
औषध दीजै पाँच दिन, रोग सकल मिटि जाइ ।
केशव बरणो चाउ करि, शालहोत्र मत पाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-लीज बायबिडंग अरु, पोस्ता युत झिकवार ।
जोगिया रंड कि जर सहित, जलमें ताको डार ॥ १ ॥
पांच सेर जलमाहिं करि, लीजै ताहि पकाइ ।
अठओं हींसा जब रहे, हयको देहु पिआइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-गुल्म तासुकी देहमें, जो कदाचि परिजाइ ।
ताहि तुरीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥ १ ॥
सोंठि पीपरी मूल लै, गुड़के साथ मिलाइ ।
खांड सहदसों सानिकै, हयको देहु खवाइ ॥ २ ॥
टका टका भरि ओषधी, सबै लेइ तौलाइ ।
सन्निपातके लक्षणौं, प्रथमै कहे सुनाइ ॥ ३ ॥

वात पित्त कफ पित्तते, ज्वरकी उत्पति होय ।
कफ रु वातते होइ नहिं, जानि लेहु यह सोय ॥ ४ ॥

अथ ज्वरके पीछेसे हो या और तरहसे पेशाब बन्द होनेका लक्षण ।

दोहा-बंद होत पेशाब जब, तब यह गति दरशाइ ।
लोटै पाँइ पसारिकै, फेरि खड़ा हो जाइ ॥ १ ॥
कियो चहै पेशाबको, अरु पेशाब न होइ ।
जानौ बंद पेशाब है, ये लक्षण सब कोइ ॥ २ ॥

उसकी दवा ।

दोहा-दुइ तोले भरि सोंठि लै, तीनि बतासा लाइ ।
नींबूके रसमाहिं करि, गोली एक बनाइ ॥ १ ॥
प्रथम तुरीकी गुदामें, रेंडी तेल लगाइ ।
फिरि गोली भीतर करै, अश्व नीक हो जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०-मडुई केर पिसानु मँगावै । ता सम तामें सोंठि मिलावै ॥
दोहा-जलमें घोरै ताहिको, लीजै ताहि पकाइ ।
वाजी पोतन माहिमें, दीजै लेप कराइ ॥ १ ॥
माजूफल औ सोंठिको, जलमें लेइ पिसाइ ।
वाती एक बनाइकै, तापर देउ लगाइ ॥ २ ॥
प्रथमै पोतनके ऊपर, लेप देइ करवाइ ।
फिरि पेशाबके छेदमें, वाती देइ धराइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-जो पेशाब खुलै नहीं, तौ डुकना करि देइ ।
ऊपर डुकना विधि कही, सोई विधि करि लेइ ॥

अन्य।

दोहा-पीपरि सोंठि पिसाइकै, लेपै बातीमाहि।
वाजी केरे लिंगमें, बाती देहु धराहि॥

अन्य।

दोहा-स्याह मिरच सोंचरु सहित, जलमें लेहु मिलाइ।
हयके दोनों कानमें, दीजै ताहि डराइ॥

अन्य।

दोहा-ककरी बीज पिसाइकै, मूरी लेहु कुटाइ।
अरु अँबिलीको पीसिकै, जलमें लेहु मिलाइ॥ १॥
डेढ़ पाव ये ओषधी, जलमें लेहु छनाइ।
नारि मध्यकरि ताहिको, हयको देहु पिआइ॥ २॥

अन्य विधि।

चौ०-जो यतनी सब दवा कराहीं। खुलै पेशाब अश्वकी नाहीं॥
तौ घोड़ेको देउ गिराई। हाथ पाँइ सब उपर कराई॥
आँगुर चारि नारिके आगे। सीना तरफ लोहभे दागे॥
पारा चारि यही विधि कीजै। तुरतै अश्व नीक सो लीजै॥

अन्य विधि।

दोहा-सब विधि औषध करिचुकै, अरु पेशाब नहिं होइ।
जाते होइ पेशाब अब, कहत अहौं विधि सोइ॥ १॥
गांठिनलौं जलमध्यमों, ठाढ़ो कीजै ताहि।
एक घरी परमानमों, मूत्र तासु खुलि जाहि॥ २॥

अथ मस्तकशूललक्षण।

दोहा-ज्वरमें और कनारमें, शिरमें पीड़ा होइ।
ताकी औषध कहत हौं, शालहोत्र मत जोइ॥ १॥

ज्वरके पाछे जाहिके, शिरमें पीड़ा होइ ।
रुधिर चलत है नाकते, शिरमें पीड़ा सोइ ॥ २ ॥

उसकी दवा ।

दोहा-औंरा औ खसखस विषे, कोका फूल मिलाइ ।
शिरपर सो लेपन करौ, तुरत दर्द मिटिजाइ ॥

अन्य ।

दोहा-त्रिफला जलमें पीसिकै, लीजै ताको छानि ।
नासु तासुको दीजिये, होइ रोगकी हानि ॥

शिरदर्दका और लक्षण ।

दोहा-मन मारे जो हय रहै, भौंहन होइ अमासु ।
सूखिजात कफ ताहिको, औषध कीजै आसु ॥

अथ दवा ।

चौ०-गोलिनदार कटैया लावै । ताको हयको नासु दिवावै ॥

दवा खानेकी ।

चौ०-नासु दियेते जब कफ झरई । ताको तब यह औषध करई
सोंठि मिरच पीपरिकी लावै । तामें सोंचरलोनु मिलावै॥
दोहा-और सोहागा डारिये, वजन बराबरि जानि ।
दीजे दो पल ओषधी, होइ रोगकी हानि ॥

अन्य विधि शिरदर्दकी ।

सोरठा-शिरमें होइ अमासु, गर्दन डारे हय रहै ।
दीजे ताको नासु, सहित कटाई तिकुटा ॥

औषध खानेकी विधि ।

दोहा-कुटकी वायविडंग अरु, पिपरामूरि मँगाइ ।
सोंठि कचूर सोहागा, वजन बरोवरि लाइ ॥ १ ॥

सबै औषधी दोइ पल, भूँजै आटामाहि।
या विधि दीजै तीनि दिन, व्याधि दूरि ह्वै जाहि॥ २॥

इति श्रीशालहोत्र०ज्वराधिकारवर्णन नामक पञ्चम अध्याय॥ ५॥

अथ शूलनिदानचिकित्सावर्णन।

दोहा—शूलहरण औषध कहौं, अलंकार पहिचान।
या विधिसों जो देखिये, तैसो रोग निदान॥

अथ मूत्रशल। देखो घोड़ा नंबर ११३.

दोहा—भौंरी आवै अश्वको, पुट्ठुमी लेइ सुगंध।
दोनों पाँजर मारई, मूत्रशूल तिहिं बंध॥

दवा।

दोहा—सैंधव पैसा चारि भारि, महुआ गुठुलू तेलु।
पावसेर तिहि दीजिये, रोग दूरि परहेलु॥

अन्य।

दोहा—पाँच टकाभरि लीजिये, गजपीपरि अभिराम।
ताही सम मधु डारिये, संकटमोचन नाम॥
सोरठा—लजै सेर सवाय, तेल मेलिये तिलनको।
औषध देउ खवाइ, तुरँग नीक ततकाल ही॥

अन्य।

चौ०—जो घोड़ा छिन छिन तनिआवै। बंद पेशाव बहुत दुख पावै
मिर्चा अरुण नाय जो घालै। करै पेशाव लहै सुखजालै॥
की सोराकी बत्ती मेलै। तुर्त पेशाव अश्वकी खोलै॥
दोहा—की पीसै काली मिरच, बाती तासु बताय।
लिंगमाँह घालौ सुघर, तुर्त पेशाव कराय॥

चौ०–झिकवारीको पात मँगावै । इंद्रजवा इंद्रारुनि लावै ॥
लै कंकोल मिर्च सम तूला । औटै कूपतोय सुखमूला ॥
सात दिवस इमि हयको देवै। करै पेशाब बहुत सुख लेवै॥
दोहा–पूँछ कि डंडी उलटिकै, गरम नीर कर भेइ ।
करि है तुर्त पेशाबको, वाजि परम सुख लेइ ॥

अन्य ।

चौ०–घोड़ीके पिशाब थलमाहीं । एक बतासा धरिये ताही ॥
बेरि पात मुख कूचिक धरि है। घोड़ी तुर्त पेशाब सु करि है॥

अन्य ।

चौ०–की साबुन पट भिजै लपेटै । बाती करै रोगको मेटै ॥

अन्य ।

चौ०–आधसेरके तेल मँगावै । नासु देइ तबहूँ सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ०–जुआँ दोय इक के श्रुति डारै । करै पेशाब बहुत सुख सारै॥

अन्य ।

चौ०–जो याते नहिं नीक दिखावै । तो रोईको लेप बनावै ॥
लेप करै अंडनके ऊपर । तुर्त अश्व उदरको दुखहर ॥

अन्य ।

चौ०–की दुइ लोटा पानी लावै । धार गुदाढिग ऊपर नावै ॥

अन्य ।

चौ०–सीटी दीजै मुखते बनिकै । करै पेशाब उदरको तनिकै॥

अन्य ।

दोहा–सोंटि बेतरा कूटिकै, गोली बनै सुजान ।
तुरत अश्वको दीजिये, करै पेशाब निदान ॥ १ ॥

याहीमें जो डारिये, हरी तोला चार।
तोला हींग फुलाइकै, दीजै तुरै विचारि॥ २॥

अन्य।

दोहा-तप्त उदक सिरका मिलै, बिरिआ चौभरि लेहु।
करै पेशाब रु लीदिको, औषधको फल येहु॥

अथ मूत्रवर्त्तक शल। देखो घोड़ा नम्बर ११४.

चौ०-वमन रंग हरदीके करै। मुखते लार अधिक गिरि परै॥
शीतल बदन हलावै शीशा। मूत्रशूलवर्त्तक अवनीशा॥
सैंधव पीसि नैनमें डारै। मिरचन सहित नास अनुसारै।
टहलावै अरु कोखी मलै। औषध खान देइ तव खुलै॥

अन्य।

चौ०-जर स्वाती गूगुर सम लीजै। पीसि दूधमों घोड़े दीजै॥
नीक होइ जो औषध करै। शालहोत्र या विधि उच्चरै॥

अथ लीदिबदशूल। देखो घोड़ा नंवर ११५.

चौपाई-लीदिबंद घोड़ेकी जानौ। एक छटाँक तमाखू आनौ॥
ताको लै मुख चीरि खवावै। लीदि करै अति ही सुख पावै॥

अन्य।

चौ०-दुइ पैसा भरि सोंठि मँगावै।गुड़ पुरान तिहि दून मिलावै॥
तोला एक भाँगको लीजै। मिलै खवाय कायजा कीजै॥
जबलो लीदि करै नहिं घोरा। तवलौं राखु कायजा जोरा॥
यह रंगी उस्ताद बखानै। या विधि हयकी जतन विधानै॥

अन्य।

चौपाई-सेर सवाय क्षीर महिषीको।आधसेर गुड़ लीजै नीको॥
पावसेर घृत तामें कीजै। अग्नि पकाय नालिमें दीजै॥
वाही समय लीदिको करि है। सकल विकार पेटको हरि है॥

अथ वायुशूल । देखो घोड़ा नंबर ११६ । ११७.

दोहा–गिरै धरणि बहु दम करै, नेत्र मूँदि रहिजाय ।
वायुशूल ताको कहैं, वाको करौ उपाय ॥
चौ०–जो हय लोटिबगलनिज झाँकै।छिनछिनकाँखिकाँखिकै ताकै
दोहा–यामें लक्षण जो सबै, अरु थोरे ही पाय ।
वायुशूल तिहि जानिये, तुर्तै करौ उपाय ॥
चौ०–खुरासानि वच कूट मँगावै।दंति छालि अरु सैंधव लावै॥
हींग सोहागा समकरि लेहू । पषाणभेद लै तामें देहू ॥
सकल पीसि भँदा सो कीजै। माखन सानि अश्वको दीजै॥
देतै सो नीको ह्वै जाई । वायुशूलको नाश कराई ॥

अन्य ।

चौ०–साँभरि औ सैंधव लै आवै।पलासबीज अजमोद मँगावै॥
पाँच पाँच तोले सब लीजै । लहसुन दुइ तोला करि दीजै॥
आधपाव गुड़ लेउ पुराना । दो तोला भरि हींग विधाना॥
चारि चारि तोले करवावै । चनाके आटा संग खवावै ॥
दोहा–दूनौ पहर खवाइये, शाम सुबह बुधिमान ।
वायुशूल सब मेटि है, मुनिके वचन प्रमान ॥

अन्य ।

चौ०–अरुण मिर्च दो तोले लीजै।पैसाभरि लहसुन करि दीजै॥
पीसि कूटि घोड़े मुख नावै । वायुशूलको खोजि नशावै ॥

अन्य ।

चौ०–हाथीका यक लेंड जु लीजै।पीपर छालि तासु सम कीजै ॥
ताहि पीसि पतरो करि छानै । अग्नि चढ़ाय पकाय सुजानै॥
लेइ उतारि सुशीतल करै । नरीसे प्यावै दुख हरै ॥

अथ दुममरोड़शूल। देखो घोड़ा नंबर ११८.

चौ०—दुम मिरोरि घोड़ा लोटै महि। खायो डाभ अटकअतरी कहि
सेर एक जो दूध मँगावै। ताको आधा घृत लै आवै॥
मिलै पिआय अश्वको दीजै। याते शूल हरै जो कीजै॥

अथ वायुभक्ष शूल। देखो घोड़ा नंबर ११९.

दोहा—जो घोड़ेको देखिये, फूलो उदर सेवाय।
पटकि पटकि लोटै धरणि, ताको जतन बताइ॥

चौ०—हवाखात भूलो तिहि जानै। ताकी दवा तुरतही आनै॥
तालूमें गुड़ देइ लगाई। ताते रोग नीक हो जाई॥
गलिहै गुड़ तब बदन डुलावै। तब वहि हवाखान सुधि आवै॥

अन्य।

चौ०—मासे पाँच सोहागा भूँजै। पावसेर जलमें तिहि दीजै॥
बहुत खोज करिकै ताही दिन। होइ है रोग दूरि ताही छिन॥

अन्य।

चौ०—अँगुठा सरिस नींबिकी लकरी। छोटी लै दीजै मुख दुकरी॥
पहर एक दै ठाढ़ो राखै। मुख डुलाय हय सुखको चाखै॥

अथ अँतावरिशूल। देखो घोड़ा नंबर १२०.

चौ०-लोटैअश्व अधिक बिन कारन। उठिफिरिगिरिलोटैदुखभारन
तौ तिहि अंडकोश झुकि देखै। जो सूजनि कठोर अवरेखै॥
तौ परदा ओदर ठहराई। परदा फूटि अँतरि बढ़ि आई॥
ताको तुरत आखता कीजै। आँतरि प्रथम उदर भरिलीजै॥

अथ जीमार--शूल। देखो घोड़ा नंबर १२१.

चौ०—बैठे उठै अतिहि बेकारै। अँतरी लेंडी अड़ी विचारै॥
बकरीको कल्ला मँगवावै। चारों पाँव सहित पकवावै॥

सुरुवा गाढ़ पकै दश सेरै । ताहि पिआइ करै मति देरै॥
की सुजान करमें घृत लीजै।गुदा हाथ डारै तिहि दीजै॥
लेंडी टोय काढ़ि तिहि डारै।हयको दुःख सकल नेवारै॥
ता हयको दीजै नाहिं दानो ।है जीमार शूल पहिचानो॥
की कचूर इक पाव मँगावे । ताको कपरछान करवावे ॥
जबलौं साफ लीदि नहिं देखै।तबलौं ही खवाय सुख रेखै

अथ कुलिंज-शूल । देखो घोड़ा नंबर १२२.

चौ०—अठयों मर्ज कुलिंज कहै है । पोता उतरत चढ़त लखैहै ॥
आध सेर घृत पय दुइ सेरै।मोठ पिसान पाव भरि घोरै ॥
साँझ सबेरे हयको दीजै ।पेट न चलै तौ नित ही कीजै॥
जो याते नहिं होवे नीको। चारौ तरफ दागि करि ठीको॥
लखि नेजेके आगे दागै। निरखि हथेली मित सुख पागै॥

अथ वक्रशूल । देखो घोड़ा नंबर १२३.

चौ०—बैठे उठै नाभिको टोवै । थोबरी दैकरि महिमें सोवै ॥
ताको वक्रशूल अनुमानै । सोंचर अर्कफूल दै भानै ॥
दोहा—स्याहमिर्च अंजीर फल, कारीजीर मँगाय ।
दीजै हयको तुरत ही, आठो शूल नशाय ॥

अथ मूर्त्तिवंत शूल । देखो घोड़ा नंबर १२४.

दोहा—आगे पग धरि भूमि महि, गिरै तुरँग दुख पाय ।
मूर्त्तिवंत सो शूल है, ताको जतन बताय ॥
चौपाई—गजपीपरि औ पीपरि लावै।दशदश टंक दुवौ पिसवावै॥
पानी एक सेरमें दीजै । मूर्त्तिशूलको नाश करीजै ॥

अथ अस्तावर्त्तशूल । देखो घोड़ा नम्बर १२५.

दोहा—ताकै छिन छिन कुक्षि हय, शोक ग्रसो लखि जानु ।
नकुल कहै तिहि शूलको, अस्तावर्त्त बखानु ॥

चौपाई-महुली और गँगेरुवा आनै। सात सात टंकै परमानै ॥
पलाश बीज नौ टंक मँगावै। सोंठि टंक चारिक लै आवै
दोहा-हींग टंक लै तीनि सो, कपरछान करवाय ।
गोघृत सर मिलायकै, नारी मध्य पिआय ॥

अथ वातशूल । देखो घोड़ा नंबर १२६.

दोहा-बैठै उठै तुरंग जो, रहै कराहत देखि ।
वातशूल वाको कहै, ताहि जतन अवरेखि ॥

अन्य ।

दोहा-भूमि गिरै औ दम करै, फिरि फिरि उठै मरोरि ।
यह निदान दूजी तरह, लक्षण देखि बहोरि ॥
चौपाई--कूट पषाण भेद लै आवै । दतुनि वृक्षसह मूल मँगावै ॥
सैंधव आध सेर सो लीजै। काँजी ताहि बराबरि कीजै॥
सकल पीसि घोड़ेको दीजै।सात रोजमें नीको लीजै ॥

अन्य ।

दोहा-त्रिकुटा हींग रु कैफरा, खाँड बराबरि लेउ ।
गंधी मासे चारि सो, मदिराके सँग देउ ॥
सोरठा--करवावै परहेज, दाना पानी वातसों ।
औषध है यह तेज, गात देखिकै दीजिये ॥

अन्य ।

दोहा--पीपरि सोंठी रेणुका, बड़ी इलाची जानु ।
वजन बराबरि दीजियो, लै मदिरामें सानु ॥

अन्य ।

दोहा--जो घोड़ा काँपै हर्फे, होइ वताने लाल ।
ताको दीजै नासु यह, रोग बहै ततकाल ॥

चौपाई--गोघृतको लैकै निर्दोषा । बेल पिसाय नासु दै पोषा ॥

अन्य मत ।

दोहा--दुम झहरावै अंग तनि, जो हय बारंबार ।
वातशूल ताको कहै, कीजै यह उपचार ॥
चौपाई--लेउ बिजौराकेरि चनूरी। हींग पलास बीज यकठौरी ॥
देउ कचूर डारि तिहि माही। सकल दवा सम पीसौ ताही
गुड़ घृत साथ तुरँगको दीजै । वातशूल तुरतै हरिलीजै ॥

अथ शुद्धवातशूल । देखो घोड़ा नम्बर १२७.

दोहा--पूँछ चलावै अंग तनि, यही परीक्षा देखि ।
शुद्धवात तिहि नाम है, कहौं नकुलमत पेखि ॥
चौपाई--गुरखुल लेउ समूल मँगाई। गऊदूधसँग देउ पिआई ॥
षोडश दिन जो दवा खवावै । शुद्धवात नीको हो जावै॥

अथ कंठवातशूल । देखो घोड़ा नंबर १२८.

दोहा--जो हयको मुख बोलिये, घरैं घुघरि घरेरि ।
झूक खायकै गिरिपरै, चहूँओर भय हेरि ॥
चौपाई--चकचूनीकी जरको लीजै । गोपयसों नित प्रातै दीजै ॥
वासर पाँच सात तिहि देई। रोग दोष सगरो हरिलेई ॥

अथ शिखिवातशूल । देखो घोड़ा नंबर १२९.

चौ०--फारूरा जो जरद कराई। नीर न पिये जोर घटि जाई ॥
शिखीवात है शूल निदाना। औषध कीजै चतुर सुजाना॥
हरदी राई गुड़ सम लीजै। छिरकाके सँग हयको दीजै॥
साँझ सकारे दोनों बेरा । नीको होइ सु रुज तिहिकेरा॥

अथ अपरशूल। देखो घोड़ा नंवर १३०.

दोहा-रदसों भूमिहि धरि तड़फि, किरैं रदन सुहालि।
थोबरी महिमें धरि रहै, शूल दुखित मन घालि॥
चौ०-गोघृतमें गंधी मिलवाई। अश्व अंग मर्दन करु भाई॥
जबलग तुरँग नीक नहिं होई।तबलग अंग मलौ पुनि सोई॥

अथ कृमिशूल। देखो घोड़ा नंवर १३१.

दोहा-नैन बहैं काटै उदर, छिनछिन वह अकुलाय।
सो कृमिशूल विचारिये, ताकी जतन कराय॥
चौ०-सोंठि कूट पिपरी मँगवावै।पलाशवीज मिरचे मिलवावै॥
सकल पीसि समभाग मिलावै।गुड़के साथ अश्व मुख नावै॥
आठ रोजतक घोड़े दीजै। कृमीशूलको नाश करीजै॥

अन्य मत।

दोहा-चरण गूँथि राखै धरणि, गिरै शोक करि घोर।
सो कृमिशूल कहावई, करै जतन यहि तौर॥
चौ०-इँगुआकी जर हींग मँगावै। पलाशछालि भारंगी लावै॥
अरु अजंवाइनि देउ मिलाई। सर्व दवा सम भाग पिसाई॥
गुड़के साथ अश्वको दीजे। रोग जाइ जो औषध कीजै॥

अन्य मत।

दोहा-नेत्र चुअैं विधि जाहिके, औ काँपै निजदेह।
पेट फटै औ भुइँपरै, ताहि अलक्षण येह॥
चौ०-डेढ़ पाव त्रिकुटा मँगवावै। आधपाव बच ताहि मिलावै॥
वीज पलाश पाव अध लीजै। कूटि छानि मैदा धरि दीजै॥
एक छटाँक प्रात नित देहू। सात रोजमें नीको लेहू॥

अथ सर्वकृमिशूल। देखो घोड़ा नं० १३२.

दोहा–काट उदर अरु जीभको, धरि राखै रदमाहि।
कहो सर्व कृमिशूलको, बैठो रहे सुचाहि॥

चौ०–रहसनिकी जर खोदि मँगावै। खुरासानि बचको लै आवै॥
अजवाइनि पलाशके बीजा। छोटी कंटकारि जर लीजा॥
सर्वदवा सम भाग पिसावै। गुड़के साथ अश्वमुख नावै॥
तोला तीनि प्रमाण खवावै। पन्द्रह दिनलौं नकुल बतावै॥

अथ समवर्त्त--शूल। देखो घोड़ा नं० १३३.

दोहा–लोटै बहु चारौं चरण, राखै हृदय लगाय।
सो समवर्त्तक शूल है, जतन कियेते जाय॥

चौ०–सैंधव लहसुन हींग मँगावै। अजमोदा सम भाग पिसावै
गुड़ गोतक्र मिलैके दीजै। समवर्त्तक शूलै हरिलिजै॥

अथ वैवर्त्तशूल। देखो घोड़ा नं. १३४.

दोहा–तानै देह तुरंग जो, बैठे उठै कराहि।
सो वैवर्त्तकशूल है, जतन करै इमि चाहि॥

चौ०–कपरा लेउ पुरान मँगाई। वाकी भस्म करो मन लाई॥
हींग मिलै पानीमें घोरै। घोड़ा पिये शूलको हरै॥

अथ विभ्रमशूल। देखो घोड़ा नं० १३५.

दोहा–भूख जाइ अरु बहु लटै, चितवैं चारो ओर।
चलै मंद अकड़ो रहै, विभ्रमशूलै जोर॥

चौ०–दाना खाय न जलते नेहा। नित प्रति दूबरि होवै देहा॥
टापै भ्रमै औ गिरि गिरि परै। ताकी औषध योविधि करै

दवा।

चौ०--प्रथम बदाम एकतें देई। दशते आगे कम करि लेई॥

अन्य।

चौ०—बहुरि मसाला या विधि करै। तामें रोग अश्वको हरै॥
हरदी राई गुड़ सम लेहू। कूटि छानि छिरका सँग लेहू॥
तप्त नीर पीनेको दीजै। सात दिवसमो नीको लीजै॥

अन्य।

चौ०—हरदी हींग हर्र वैशाषी। सोंठि सोहागा खील सुभाषी॥
वजन बराबरि पीसौ भाई। हींग सोहागा थोरा लाई॥
भूंख बढ़ै भ्रमशूलै नाशै। बल औ बीरज बहुत प्रकाशै॥

अन्य।

चौ०—आधसेर विषखपरा लीजै। प्रातकाल घोड़ेको दीजै॥

अन्य।

चौ०—मर्दन पाँयनमें कछु दीजै। विभ्रमशूल तुरत हरि लीजै॥
साँभरि हरदी औ अजवायन। तिलको तेल मिलै मलु पायन॥

अन्य।

चौ०—घृत अरु तेलको मर्दन कीजै। याहूसों विभ्रम हरि लीजै

अन्य।

चौ०—हर्रा हरदी सोंठि मँगावै। गुड़ पुरान सम मिलै पिसावै॥
घोड़ाको नित प्रातै दीजै। सात रोजमें नीको लीजै॥

अथ सनदशूल। देखो घोड़ा नं० १३६.

दोहा—धरणी गिरै तुरंग जो, सोवै चरण पसारि।
वासु लेइ निज पेटकी, सनदशूल निरधारि॥ १॥
हींग अधेला एक भरि, लहसुन लै ढक दोय।
सैंधव दमरी आठ भरि, सेर मिठाई होय॥ २॥
गो दधि संग पिसायकै, औषध देउ खवाय।
सातरोज तक दीजिये, सनदशूल मिटि जाय॥ ३॥

अथ बिम्बशूल । देखो घोड़ा नं० १३७

दोहा—उठि बैठे बहु शीघ्र ही, बहुत भाँति अलसाय ।
बिम्बशूल है नाम तिहि, तुरतै करौ उपाय ॥ १ ॥
हींग अधेला एक भरि, बच औ बायबिडंग ।
भस्म कराके दीजिये, पानी केरे संग ॥ २ ॥

अथ झलद शूल । देखो घोड़ा नं० १३८.

दोहा—मुँहसे करै अवाज बहु, धरणीमें गिरि जाय ।
झलदशूल है नाम तिहि, तुरतै करौ उपाय ॥
चौ०—लटजीराके बीज मँगावै । पिपरी सैंधव आनि पिसावै ॥
पैसा पैसा भरि सब लीजै । महुआ तेल आधसेर दीजै ॥
एक रोजकी यह मौताजा । करो तीनि दिन शूल सो भाजा

अथ गजशूल । देखो घोड़ा नं० १३९.

दोहा—रगरै नाभी तुरग जो, भुइँ लोटै भुइँ जाइ ।
सोवै चरण पसारिकै, सो गजशूल कहाइ ॥
चौ०—बच औ कूट दुवौ पिसवावै । ताते जलके संग पियावै ॥
सात पाँच दिन दीजै भाई । सो गजशूल दूर हो जाई ॥

अथ राकसशूल । देखो घोड़ा नं० १४०.

दोहा—उदरपीर जाके हवै, उठि गिरि पल छिन माहि ।
हींसै टापै दृग अरुण, औषध करौ सु ताहि ॥
चौ०—पाकी अँबिलीको रस लेहू । सैंधव तेलु तिलनको देहू ॥
सिरसाको रस तासम करौ । एकत करि नारीमें भरौ ॥
तीनिरोज घोड़ेकौ दीजै । हृष्ट पुष्ट तिहि नीको लीजै ॥

अथ शीलप्रवर्ती शूल। देखो घोड़ा नं० १४१.

दोहा-सूधी छाती जो गिरै, अश्व धरणि बहुबार।
शीलप्रवर्ती शूल है, ताको यह उपचार॥
चौ०-हींग सोंठि सैंधवसम लेहू। छिरका सानि दहीमों देहू॥
तातो नीर शूल लखि दीजै। यह विचार नीको सुनि लीजै॥
लंघन करौ हानि नहिं होई। दाना ताहि न दीजै कोई॥

अथ श्रवंतशूल। देखो घोड़ा नंबर १४२.

दोहा-छींकै धाँसै बहुत जो, बदन मलीनो होय।
शूलश्रवंत सु जानिये, महाकठिन रुज सोय॥
चौ०-स्याह मिरच महुरेठी लावै। अरु पलाशके बीज मँगावै॥
अजवाइनि लै दूनौ भाई। सकलदवा सम पीसौ जाई॥
पावसेर गोदूध मँगावै। हींग लेउ मखतूल बतावै॥
साँझ सकारे दीजै कोइ। जाय श्रवंतकशूल सु खोइ॥

अथ क्षुधाव्रत शूल। देखो घोड़ा नम्बर १४३.

दोहा-बैठे उठि लोटै बहुरि, मुख बोलै अकुलाय।
घास न खावै अश्व सो, शूल क्षुधाव्रत आय॥
चौ०-छालीमकरा और पलासा। बीजकरंज हींग बहुवासा॥
सैंधव समकरि देउ खवाई। उदरशूलको नाश कराई॥

अथ खंडशूल। देखो घोड़ा नम्बर १४४.

दोहा-पेट फूलि काँपै अधिक, अरु गिरि परै जु धाय।
खंडशूल है नाम तिहि, दैवयोगते जाय॥ १॥
चारिउ पाँयन जाँघमें, पछना देइ दिवाय।
यह उपाय प्रथमै करै, पाछे औषध खाय॥ २॥

चौ०-पाँच टंक हरैं लै आवै । वायबिडंग बराबरि लावै ॥
पैसाभरि ले बीज पवाँरा । रोवनसीर जवायनि डारा ॥
निंबु कागजीको रसु लावै । सकल पीसि औषध सनवावै
चौदह दिन घोड़को दीजै । खंडशूल तुरतै हरि लीजै ॥

अथ सखंत शूल । देखो घोड़ा नम्बर १४५.

दोहा-निशि वासर महि पारि रहै, बोलै उदर बेहोस ।
श्वास अधिक मुखते चलै, तिहि यमलोक निवास ॥
चौ०-केलामूल टंक दश लेऊ । पाँच टका केतकिजर देऊ ॥
सेंबरछाली अँवरा आनी । बीस टका दोऊ परमानी ॥
छा पैसाभरि भीतिको खारा । गोपय लीजै तिहि सम भारा
थोरी आँच आग्निकी देवै । यहिविधि औटि पाक करि लेवै ॥
मिश्री मेलि जो हयको देहू । शूलसखंत तुरत हरि लेहू ॥

अथ वातोदरशूल । देखो घोड़ा नंबर १४६.

दोहा-बैठि बैठि पुनि पुनि उठै, रहै चरणको तानि ।
छिनमें करै कराहको, सो वातोदर जानि ॥
चौ०-खुरासनि अजवायनि लावै । तामें बचको आनि मिलावै ॥
कुटकी कुरथी लीजै सोवा । सकल पीसि सम करै समोवा
टंक टंक दुइ प्रात खवावै । सात रोजमें नीको पावै ॥

अथ प्रवर्ती शूल । देखो घोड़ा नंबर १४७.

दोहा-हींसै टापै अति झुकै, बोलै बारंबार ।
शूल प्रवर्ती जानिये, ताको यह उपचार ॥
चौ०-वायबिडंग हींग सम लेहू । नमदाराख जारि सम देहू ॥
बच औ सोंठि सोहागा लीजै । रेहूपानीमें सब दीजै ॥
नीको होय व्याधि बहि जाई । जो या विधिसों करै उपाई

अन्य।

दोहा-हींग अधेला एक भरि, लहसुन लै ढक दोय।
सैंधव दमरी आठ भरि, सेर मिठाई होय॥ १॥
दधि गाईके साथ ही, पीसौ औषध सोय।
सातरोज लगु दीजिये, तुरँग अरामै होय॥ २॥

अन्य।

दोहा-हींग अधेला एक भरि, बच औ वायविडंग।
भस्म करायके दीजिये, सीरे जलके संग॥

अन्य।

चौ०-तिलको तेल पाव यक आनी। ताहि वराबरि गोघृत जानी॥
घामें बाँधिक देउ खवाई। तुरतै शूल नीक होजाई॥

अन्य।

चौ०-सोंठि रुहालिम एक पिसाई। गोघृतसंगै गूट वँधाई॥
पहर सकारे देउ खवाई। खातै रोग नीक ह्वै जाई॥

अथ मृगशल।

दोहा-चहूँ ओर चितवत रहै, दाना घास न खाइ।
मृगैशूल सो जानियो, औरौ बल घटि जाइ॥ १॥
खील सोहागा लीजिये, पैसाभरि मँगवाइ।
ता सम लीजै हींगको, सोऊ खील कराइ॥ २॥
सोंठि हर्र हरदी सहित, टकाटकाभरि लाइ।
सबको लेउ मिलाइ करि, हयको देहु खवाइ॥ ३॥

अथ मुद्रितशूल।

दोहा-घूमति वाजी होइ जो, दमति बहुत पुनि सोइ।
सूँघै भूको वार बहु, मुद्रित कहिये सोइ॥ १॥

सोंठि लीजिये दोइ पल, महुआतेल मिलाइ ।
शूलव्याधि नाशै तुरत, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

अथ साकवर्त्त शूल ।

दोहा--घरघराय बोलै तुरँग, गिरि गिरि परै न होस ।
साकवर्त्त सो शूल है, करौ उपाय नरेस ॥
चौ०--छेवटाकै जर सोंठि मिलाई । समकरि कपरछान पिसवाई
दूध मिलाय अश्वको दीजै । साकवर्त्त शूलै हरिलीजै ॥

अथ सुखवर्त्त शूल ।

दोहा--बहु दाना खावै तुरँग, रहै पिआसो जौन ।
पीत लार मुख स्वेद तनु, सुखवर्त्तक है तौन ॥
चौ०--सेंहुड़ाकी जर सोंठि मँगावै । पिपरी तीनौसम पिसवावै
गोपय संग मिलायक दीजै । सुखवर्त्तक शूलै हरिलीजै ॥

अथ गलतरहीशूल ।

दोहा--उदर जु ऐंठोई करै, तानै देह तुरंग ।
गलतरही सो शूल गनि, यह औषध करि ढंग ॥
चौ०--जीन पुरानेको लैआवै । ताको फूँकि भस्म करवावै ॥
पलाशबीज अरु हींग मँगावै । दानाको पानी धरवावै ॥
दवा पीसि तिहि पानी घोरै । गेरह दिन खावै दुख हरै ॥

अथ सनदरतशल ।

दोहा--श्वास लेय बहु अश्व जो, लोटि धरणिमों जाय ।
पाँजर मारै पीरसों, तिहि सनदरत कहाय ॥
चौ०--अजवायनि औ मुंडी आनै । पैसापैसाभरि परमानै ॥
पैसा पित्तपापरा डारी । कसेरुवा इक पाव निहारी ॥

गोघृत सेर मिलावै एका। तामें गुटिका करौं विवेका॥
औषध घोड़े देउ खवाई। रामप्रताप नीक ह्वै जाई॥

अथ टाटशूल।

दोहा—झूलि पेट गिरि गिरि परै, रह पेशाब जो बंद।
टाटशूल ताको कहैं, यह औषध सुखकंद॥

चौ०—गदहपुरैना दंतीकी जर। पलाशछालि तिलतेल मिलैकर॥
पीसि कूटि घोड़ाको दीजै। टाटशूलको नाश करीजै॥

अथ पानिशूल।

दोहा—जल पिआय दौरावई, जो हयको असवार।
पानिशूल तिहि ऊपजै, ताको यह उपचार॥ १॥
पानी पियै ज़ु धाइकै, जो दौरावै घोर।
पानिशूल तिहि ऊपजै, सो अति कीन्हें जोर॥ २॥

चौ०—पीपरि सोंठि हींगको लीजै। सैंधवलोन भाग सम कीजै॥
तीनि रोज घोड़ा जो पावै। पानिशूलको खोज नशावै॥

अन्य।

चौ०—सोंठि मिर्च गजपीपरि लावै। सैंधव सोंचर लोन मँगावै॥
वजन बराबरि करि पिसवावै। एक छटाँक प्रात मुख नावै॥
आठरोज लग हयको दीजै। पानिशूल सगरो हरि लीजै॥

अथ रसवंत शूल।

दोहा—परो रहै बोलै उदर, कुरकुराय हय जौन।
शूल कही रसवंत सो, करै जतन रुजदौन॥

चौ०—जांघ रुधिरकी फस्द खुलाई। तव औषध कीजै मनलाई॥
अजवायनि अरु हींग मँगावै। वायविडंग हरै लै आवै॥

परवरकी जर सम सब कीजै।गोघृत रस कागजीको लीजै॥
निंबु कागजी शक्कर लीजै।सकल मिलाय तुरंगहि दीजै॥

अथ अजीर्णशूल ।

दोहा–माथ पटकि तानै वदन, करहै बहुत तुरंग ।
शूल अजीरणकी परख, दवा किये रुजभंग ॥
चौपाई–सैंधव सोंचर लोन मँगावै । हींग तक्रमों मेलि खवावै ॥
बहुतै कष्ट शूलते होई । खाये दवा अजीरण खोई ॥

अजीर्णलक्षण ।

दोहा–अंग सकल काँपै बहुत, कहै अजीरण दोष ।
नकुल मते तिहि जतन करु, रहै न उरमें रोष ॥
चौ०–हींग सुगंधबाला अरु सोंचर।लेउ अतीस भाग सम सुंदर॥
चनाके आटामें तिहि दीजै । ताके पाछे औषध कीजै ॥
गोदधि जीरा मिलै खवावै।सकल अजीरण दोष नशावै॥

अथ रुखवंतशूल ।

दोहा–पटकि पटकि पग धरत महि, ताकी यह पहिचान ।
होत शूल रुखवंत सो, कीजै जतन विधान ॥
चौपाई–सोंठि पीपरी बायबिडंग।मिर्च स्याह लहसुन सम संगा॥
पीसि छानि गोघृत सँग खावै।रुखवंती सो शूल नशावै॥

अथ गदशूल ।

दोहा–दसैं तुरंगम बहुत जो, धरणीमों गिरिजाय ।
गद शूलै तिहि जानियो, तुरतै करौ उपाय ॥
चौपाई–बच औ कूट पषाण मँगावै । अजैपाल सैंधव लै आवै ॥
दोकरा दोकराकी परमाना । चनाके आटा दीजै खाना ॥

अथ बदशूल।

दोहा--उदर श्वास जिहिके ह्वै, बैठै उठै बहोर।
अधिक पीर तिहि जानिये, बदै शूल है जोर ॥
चौ०--बच औ कूट पषाण मँगावै। पैसा पैसा भरि लै आवै ॥
ताते नीर सु देइ पिआई। सो बदशूल नीक हो जाई ॥

अथ दहनशूल।

दोहा--जिहि बाजीके पेटते, जरद झरत है नीर।
दहनशूल तिहि जानियो, महारोग गंभीर ॥
चौ०--असगँध सोंठि मिरचको लावै। गऊदूधमें पीसि पिआवै ॥
सात पाँच दिनलौं जो दीजै दहनशूल तुरतै हरि लीजै ॥

अथ आसनशूल।

दोहा--श्वास लेइ बहु अश्व जो, लोटि धरणिमहँ जाइ।
पाँजर रगरै पीरसों, आसनशूल कहाइ ॥
चौ०--आजवाइनि औ मुंडी आनौ। पैसा दुइ दुइ भरि परमानौ॥
कालेश्वर दुइ तोला लावै। पावसेर हरदी पिसवावै ॥
गाईको घृत लै पल एका। तामें गुटिका करौ विवेका ॥
औषध घोड़े दउ खवाई। आसनशूल दूरि हो जाई ॥

अथ ऊर्ध्वशूल।

दोहा--बैठै उँइ लोटै नहीं, अधिक पसीना जानि।
नैन मूँदि झुकि झुकि झुनै, ऊर्ध्वशूल सो मानि ॥
चौ०--मुख घोड़ेके पानी गिरै। सब लक्षण विचारि उर धरै ॥
सोरठा--पिपरि पिपरामूर, बीज कसौंजी मिर्च लै ॥
सोंठि मतरा मूढ़, गऊदूध सँग दीजिये ॥

चौ०--ततनीर सीरो करि देई । दानाका तिहि नाउ न लेई ॥
भूँख बढ़ै मोटो हो गाता । रोग घटै जो दीजै माता ॥

अथ सन्निपातशूल ।

दोहा--काँपै बहु उछरै गिरै, बारंबार निदान ।
सन्निपात तिहि शूलको, नाम कहौं पहिचान ॥

चौ०--अजवाइनि बच राई लीजै । पिपरी सम करि तामें दीजै ॥
सौंफ सोहागा हींग मँगाई । छिरकाके सँग देउ खवाई ॥
ता छिरकामें डारौ घीऊ । ताते शूलै होइ निर्जीऊ ॥
आठ दिनालौं औषध कीजै । सन्निपातशूलै हरि लीजै ॥

अथ शरदशूल ।

दोहा--कहली रहै तुरंग जो, सूक्षम करै अहार ।
शरदशूल तिहि जानिये, ताको पुनि उपचार ॥

चौ०--तिलको तेल पाव यक आनी । ताहि बराबरि गोघृत सानी ॥
घामें वाँधिक देउ खवाई । तुरतै अश्व नीक हैजाई ॥

अन्य ।

चौ०--सोंठि रु हालिम एक पिसावै । गोघृत संगइ गूट वँधावै ॥
पहर सकारे देइ खवाई । शरदशूलको नाश कराई ॥

अथ सर्वशूलकी दवा ।

चौ०--बच मुंडी गंधीको आनी । उभै जवाइनि लै खुरसानी ॥
मूल इँदोरानि कूट सनाई । चँदसुर हरदी गुरच मिलाई ॥
जैतिकि पाती बायबिडंगा । वनभांटा मेलौ तिहि संगा ॥
पलाश पापरा सैंधव रारा । जेठीसंग पतारज भारा ॥
गोली बाँध सहतके संगा । साँझ सकारे देउ तुरंगा ॥
पाँच सात दिन ग्यारह रोजा । सर्वशूलको रहै न खोजा ॥

अथ धनाशूल--छन्दभुंजगप्रयात।

भलो तक्र लैकै सु हरैं मिलावै। तहाँ सोंचरै औ कपूरै मँगावै॥
करै पिंड याको तुरीको खवावै। धनापित्तकीशूलताकोमिटावै॥

दोहा--शूल कही पंचास यहि, नाम निदान सुजान।
जो कछु अब बाकी रही, आगे कहौं प्रमान॥

अथ शूलकुरकुरी।

चौपाई--हालै उदर नासिका फरकै। नैन नासिकाते जल ढरकै॥
ताको प्रथम बतीसा दीजै। घृत अरु सोंठि बैतरा पीजै॥

अन्य।

चौपाई--जो याते नहिं छोड़ै शूलै। पाछे देय सुराकर फूलै॥
जल आगे पाछे हय फेरै। कहैं नकुल तिह शूलक घेरै॥

लक्षण वा दवा।

चौपाई--बैठै उठै घोड़ तनिआवै। ताकी दवा तुरत करवावै॥
हरैं राई लोन पिसावै। चनाके आटा साथ खवावै॥
यहिते जो कुरकुरी न छूटे। तौ दूसरि औषध लै कूटै॥
हैंसिमूलको तुचा मँगावै। पातर पीसि नीरसँग प्यावै॥

अन्य।

चौ०-कारिजीर जवायनि बुकनी। तामें डारु तमाखू थुकनी॥
घोड़ाको जो देउ खवाई। तुरत कुरकुरी खोज नशाई॥

अथ कुरकुरी कमखुराककी।

दोहा-जिहि घोड़ेको धरत है, सदा कुरकुरी मर्ज।
कमखुराक होजात है, जतन करौ नाहिं हर्ज॥

चौ०-कुटकी घुड़बच बायबिडंगा।हरदी भाँग करौ यक संगा ॥
दुइ दुइ तोलाकी परमाना ।आगे दवाक और विधाना ॥
हींग सोहागा खील करावै । छा छा मासे सोंचर लावै ॥
कारीजीर मिरच ले गोली।चारि चारि तोला तिहि मेली॥
कपरछान करि ताहि धरावै।दो तोला नित प्रात खवावै ॥
भूँख बढ़ै अरु ताजा होई । उदरकुरकुरीको हरि लेई ॥

अन्य ।

दोहा-त्रिफला राई काँचरी, सोंठि जवायनि लेउ ।
सहिंजन छालि कुटाय सम, कछु जल बहु दधि भेउ१॥
मटुकामें भरि लीदि जहँ, गाड़ि देउ दिन सात ।
काढ़ि पावभरि देइ नित,सर्व कुरकुरी जात ॥ २ ॥
जो सरदीकी ऋतु लखै, तामें दही न डारि ।
छिरका मिलै जु गाड़िये, दिये उदर सुखकारि ॥ ३ ॥

अथ कुरकुरीकी दवा ।

हरिगी०छंद-घुँघुवारि असगँध सेंवरै पुनि मास पिंडहि लेहु ।
मंजीठ इंद्रायनि फलहि सो लाय तामह देहु ॥
भाग सम कंकोल आनहु अग्नि लेहु पचाइ ।
दुइ टकाभरि देहु वाजी उदरशूल नशाइ ॥
दोहा-मिटै कुरकुरी वाजिकी, लघुशंका खुलि जाइ ।
नकुलमतै यह भाषिये, काढ़ा दियो बताइ ॥

अन्य ।

स०-सोंचर लै अजवाइनि चारु भली विधि हरें विशाल मिलावै
औ मधु वाहि समान करौ फिरि कूपको लै जलमाहिं पचावै ॥

अष्टम अंश रहै जबहीं तबहीं सो तो जाय तुरीको खवावै॥
रोग नशै अरु भूख बढ़ै पुनि ता हय पौन समान चलावै॥

अथ कुरकुरीका जुलाब।

दोहा—मोथी कीतौ चनाके, बिरवा हरिअर होइ।
ते समूच हय खाइ जो, गूंजा बैठति सोइ॥ १॥
खूखा दाना नाजुकी, बेभौताज जु खाय।
अश्व विकल हो जात है, पेट फूलि तिहिं जाय॥ २॥
चौ०—ताकी दवा जुलाब बतावा। आधसेर घृत लै धरवावा॥
कीतौ रेंडीतेल मँगावै। आध सेर परमान करावै॥
डेढ़ सेर दूधै लै धरै। आध सेर गुड़ तामें करै॥
यह सब अग्नि चढ़ाइ पकावै।सीर गरम करि अश्व पिआवै॥
बच्चा होइ अश्व जो कोई। कीतौ अंगक छोटा होई॥
गात देखिकै दवा कराई। दस्त ताहि बहु आवें भाई॥
पटकै उदर अश्व खुलि जाई। रामकृपाते नीक दिखाई॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत शूलवर्णन नामक षष्ठ अध्याय॥ ६॥

अथ पेटमें कीड़ा, हिरुआ, जोंक वगैरह पड़नेकी दवा।

हरि०—फलसा सुखेकी मूल लै पुनि रेणु आनि मिलाइये।
सहत लै सो कूपजलसों अग्निमध्य पचाइये॥
काथ लै करि अंश अष्टम तुरत वाजिहि प्याइये।
जोंक आदिक कीट नाशै नकुल मत समुझाइये॥

अन्य।

चौपाई—बीज बिजौरा चंदन लावै। सरसों श्वेत उशीर मँगावै॥
पुनर्नवा ब्रह्मदंडी लावै। काथ पकाइ सोंठि मिलवावै॥

दोहा–सीरो करि कटु तेल जो, तोला चारि मिलाइ।
वाजि पिआवो जो सुघर, सर्व किरिमि बहिजाइ॥

अन्य।

दोहा–सेंहुड़ दूध–कपूर लै, धात्रीपत्रहि आनि।
कूपनीरसों पिंड करि, किरिमि उदरकी हानि॥

अन्य।

दोहा–जो घोड़के पेटमों, बहुत किरिमि है जाइ।
गिरै पेटारू पेटते, दाना घास न खाइ॥
चौपाई–राई हरदी मिलै कैफरा। कूटि छानि बरतनमें धरा॥
इकइस दिन दुइ पहर खवावै। आध पाव परमान बतावै
देइ जुलाब अश्वको कोई। तासों किरिमि नाश सब होई॥

जुलाब।

दोहा–राई खारी तुल्य करि, आध सेर दधिमाहिं।
यह जुलाब हयको करे, उदरव्याधि नशि जाहिं॥

दवा।

दोहा–मधुरेठी सम ताहिके, बायबिडंग मँगाइ।
काढ़ा औटिक दीजिये, कीरा उदर नशाइ॥

जुलाब।

दोहा–सज्जी लोध पिसाइकै, भाग बराबरि लेइ।
गऊ तक्र सम दीजिये, दस्त अधिक करि देइ॥

अन्य।

दोहा–राई और बिधार लै, खारी दही मिलाइ।
आध सेर मौताज कहि, भाग समान कराइ॥

सोरठा–हयको देउ खवाइ, एकरोज फिरि बीचु दै ।
दीजै फेरि देवाइ, तीनिबार यहि विधि करै ॥ १ ॥
दाना दीजै नाय, नरम घास तिहि दीजिये ।
जब जुलाब ह्वै जाय, तब यह औषध कीजिये ॥ २ ॥
दोहा–ईसबगोलै पाव अध, ता सम दही मिलाइ ।
या विधि दीजै तीनि दिन, उदर व्याधि मिटि जाइ ॥

अन्य जुलाब पित्तरोगपर ।

दोहा–अमिलतास अरु हर्र कहि, लीजै सोंठि मिलाइ ।
बहुरि मिठाई पोटरी, भाग समान कराइ ॥ १ ॥
गर्म नीरसों राति भरि, दीजै ताहि भिजाइ ।
प्रात भये सो मीजिकै, कपरासो छनवाइ ॥ २ ॥
नैनू लीजै एक पल, सोऊ लेउ मिलाइ ।
सेर एक मौताज करि, हयको देहु पिआइ ॥ ३ ॥
एक रोजको बीचु दै, फेरि दीजिये आनि ।
या विधि दीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥
गरमी तासु मिजाजमों, अती होइ जो आनि ।
खुश्की ताते होति है, या औषधको जानि ॥ ५ ॥

दवा ।

दोहा–अमिलतास लाभेर अरु, पाकी अँबिली आनि ।
बड़ी हर्र अरु लीजिये, सेर एक सब जानि ॥ १ ॥
भिजवै पानी गरममों, ताको मीजि छनाय ।
बिहिदानाको लेहु पुनि, ईसबगोल मँगाय ॥ २ ॥

दूनौ लीजै आठ पल, तासु लबाब कढ़ाइ ।
औषधमाहिं मिलाइकै, हयको देहु पिआइ ॥ ३ ॥
एक एक दिन बीचु दै, तीनि रोज दै याहि ।
फिरि ठंढाई दीजिये, चारि रोज लगु ताहि ॥ ४ ॥

ठंढाई ।

दोहा–रेसा खतमी लाइकै, बिहिदाना मँगवाय ।
तासु लबाब कढ़ाइकै, दुइ दुइ पल धरवाय ॥ १ ॥
खीरा ककरी बीज पुनि, चारि टका भरि लाइ ।
तिनको पीसि छनायकै, लेहु लबाब मिलाइ ॥ २ ॥
सोरठा–दीजै ताहि पिआइ, पित्त दोष मिटि जात है ।
शालहोत्र मत आइ, सो लखिकै हम यहि लिख्यो ॥

अथ जुलाब कफदोषका ।

दोहा–सौंफ कूट पुनि हींग लै, टका टका भरि जानि ।
अमिलतास पुनि बीस पल, खारी दुइ पलआनि ॥ १ ॥
गरम नीरसों प्रथम ही, अमिलतासु भिजवाइ ।
सबै औषधी पीसिकै, तामहँ देउ मिलाइ ॥ २ ॥
हयको देउ पिआइ सो, तीनि रोजलौं ताहि ।
एक एक दिन बीचु दै, दाना दीजै नाहि ॥ ३ ॥
खीरा ककरी बीज पुनि, शक्कर मिलै खवाइ ।
यह औषध दिन तीनि लै, हयको देउ दिवाइ ॥ ४ ॥

अथ पेटमें आंव पड़नेका जुलाब ।

सोरठा–सिमिटि सिमिटि रहि जाइ, उठै मरोरा पेटमें ।
आँवदोष सो आइ, दाना घासहि खाइ कम ॥ १ ॥

दोहा-लै जमालगोटा दशहि, भांठे तेल जराइ।
भांटा भरता मध्य सो, हयको देउ खवाइ॥
सोरठा-खूब पेट झरि जाय, सेर एक दधि दीजिये।
प्रात भये फिरि नाय, तिसरे दिन फिरि देउ हय॥
दोहा-या विधि दीजै तीनि दिन, पेट साफ ह्वै जाइ।
जौलों रहै जुलाब दिन, दाना नहीं देवाइ॥

जुलाबमे दाना देनेकी विधि।

सोरठा-मूँग महेला ताय, प्रथमाहि थोरो दीजिये।
फेरि बढ़ावति जाय, पावति जेतो होइ हय॥

अथ अजमाया हुआ उत्तम जुलाव।

चौ०-लेउ सोहागा सज्जी भाई। तामें डारु निसोदर आई॥
तोले तोले सम पिसवावै। आध सेर पक्के जल लावै॥
खुरासानि अजवायन लीजै। आध पाव पक्के तिहि कीजै
चारौ दवा नीरमें डारै। पावक मध्य पकाय सुधारै॥
तीनों दवा जवायानि स्वकि है। तब छाहीमें सूखे धरि है
जौके आटा मध्य मिलावै। पैसा भरि नित प्रात खवावै
आठरोज घोड़ाको दीजै। उदर सफाई वहुविधि कीजै॥

दस्त वन्द होनेकी दवा।

चौ०-सेंबरकी जो रुई मँगावै। गोघृत साथ तुरै खिलवावै॥
देतै दस्त बन्द हो जाई। सकल रोगको नाश कराई॥

अन्य।

चौ०-एक छटाँक भाँग मँगवावै। गोदधि आधपाव लै आवै॥
दोनों मिलै तुरँगको दीजै। दस्तबंद ताही छिन लीजै॥

अन्य ।

चौ०–चावल लेउ पुरान मँगाई । भात पकाइ सिरो करवाई ॥
गोदधि ईसवगोल मँगावै । सकल फेंटि यकसम करवावै ॥
घोड़ेको जो देइ खवाई । तुरतै दस्त बंद ह्वै जाई ॥

अथ उदरव्याधि–नाशन ।

दोहा–कालेसुर औ सोंठि लै, असगँध मिलै पिसाय ।
काढ़ा दीजै भाग सम, उदरव्याधि बहिजाय ॥

अन्य ।

दोहा–राई खारी सम दही, सेर आध जो देहु ।
व्याधि उदरकी गिरि परै, सकल रोग हरि लेहु ॥

अन्य ।

दोहा–भाँटा भरत कराइकै, दधिसों देहु खवाइ ।
तीनि दिनामें अश्वको, सकल रोग बहि जाइ ॥

इति श्रीशालहोत्र० जुलाबवर्णन नामक सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

अथ खारिस्ति खजुलीके लक्षण व दवा ।

दोहा–देह होति खजुवाति जो, अति खरिस्ति जो होइ ।
औषध कीजै ताहि यह, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
पहिले दोनों पगनकी, लीजै रगैं खुलाइ ।
ता पाछे औषध करै, रोग ताहि बहि जाइ ॥ २ ॥

औषध ।

दोहा–बकुची तिल हरदी सहित, बीज पवाँरहि आनि ।
मोथा और भेलाव लै, तोले तीस बखानि ॥ १ ॥

पीसै सब बारीक करि, दीजै दही मिलाइ ।
एक दिवस भरि घाममें, दीजै ताहि धराइ ॥ २ ॥
घाममें हय बाँधिकै, दीजै ताहि मलाइ ।
फिरि धोवै जल शीतसों, तीनिरोजनें जाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-तीनि पाव साबुन सहित, ता सम निर्चालाल ।
सूखि तमाखू ताहि सम, सबको पीसै हाल ॥ १ ॥
लीलाथोथा लीजिये, आध पाउ यह जानि ।
सोरा कलमी पाउ यक, सबको पीसै आनि ॥ २ ॥
दालि उरदकी लीजिये, तीनिसेर यह जान ।
ताहि चौगुनो डारि जल, खूब पकावै आन ॥ ३ ॥
सबै औषधी डारिकै, लोहे बर्त्तनमाहि ।
घोटै लकरी नींबकी, दालिसहित मिलि जाहि ॥ ४ ॥
ताहि लगावै धूपमें, तीन दिवसलौं जानि ।
शीतोदकसों धोइये, जाय रोग यह मानि ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा-अरुई दधि खारी मिरच, पानमहेला नाय ।
ताहि खवावै जून दुहुँ, कइउ रोग नशि जाय ॥

अन्य दवा लगानेकी ।

दोहा-पोस्ता और कसाँवजी, भूँजि अधजरी लेउ ।
सेर एक दूनौं पिसै, कडुक तेल मधि घेउ ॥ १ ॥
फेंटि लगावै तुरँग तन, मलौ घरी दुइ पूरि ।
घाम बाँधि दिन सातलौं, होइ खरिस्ती दूरि ॥ २ ॥

अन्य खानेकी दवा ।

चौ०–गोघृत मैदा लेउ मँगाई । तोला तीनि तीनि तौलाई ॥
दालचीनि पैसा भरि लीजै । चोख बराबरि तामें दीजै ॥
गोली तोला करौ विधाना । दाना साथ दीजिये खाना॥
सातरोज घोड़को दीजै । रोग जाय जो औषध कीजै ॥

दवा लगानेकी ।

दोहा–हरदी गंधक नैनियां, मैनसिला त्रै आनि ।
सरसर दमरी वजन करि, सेर तेल कटु जानि ॥ १ ॥
बूँकि दवाई तेलमें, पकै छानि तेहि लेइ ।
मलै पहर यक अश्वतनु, पांच दिवस करि देइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–पोहकरमूलै सहद लै, अडुअ बकाइनि पात ।
गूगुर स्याह जो वजन करि, सरसर दमरी ख्यात ॥१॥
सवासेर घृतमें सकल, पीसि पकै ले छानि ।
मलै तुरँगके गात नित, चूलुनसों परमानि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–बदरीफलको हाथ मलि, फेन उठै सो लेय ।
खूनै मलै खरिस्तमें, घोड़ा निर्मल होय ॥

अन्य ।

दोहा–मेडुआचूरन सेर इक, सज्जी आधी आनि ।
फेंटि अनलपर सो पकै, मींजै बलसों जानि ॥

अन्य ।

दोहा–बटदल पीपर छालिको, जारि छार करि लेइ ।
खारी अरु खारीनमक, रस अंजीरहि देइ ॥ १ ॥

माठामें सबको मिलै, लावै हयको अंग।
चुल्ली और खरिस्तको, करि है तुरतै भंग॥ २॥

अन्य।

चौ०-बचुकी गंधक मनसिल आनी। बायबिडंग ताहिमें सानी॥
कूटि पीसिकै यक सम कीजै। पानीमें सब निशिभरि भीजै॥
प्रात मथै लै सरष पतेलू। घोड़े अंग सो मर्दन मेलू॥
घटिका तीनि घाममें राखी। माटीमिल धोवै हरसाखी॥
रोग घटै जो घीव पिआवे। फेरि खरिस्ति होन नहिं पावै॥
गंधक मनसिल औ हरतारू। तिलके तेलहि करु निरधारू॥
सोई तेल अश्वके मलै। जाइ खरिस्ति होय अति भलै॥

अन्य।

चौ०-साबुन चँदसुर गुड़ सम लीजै। तीनों वस्तु औट सम कीजै
अश्वअंगमें ताहि मलावै। भोर भये घामे अन्हवावै॥
शालहोत्र यह कहै उपाई। रोग खरस्ती दूरि कराई॥

अन्य।

दोहा-मुरदाशंखे तूतिया, रसकपूरको लेउ।
पैसा पैसा भरि करौ, कपरछान करि देउ॥ १॥
अजवाइनि त्रय पाव यक, घोड़बच पाव सवाय।
पारा सिंगरफ लीजिये, दुइ तोला तौलाय॥ २॥
चौ०-गंधक बचुकीको लै आवै। आधपाव दूनौ तौलावै॥
हरताल संखिया जहर मँगाई। पैसा पैसा भरि तौलाई॥
सकल दवा खलमें पिसवावै। सर्षप तेल ऽ२॥मध्य बोरवावै॥
घामें बाँधि अश्वतनु रगरै। ताके पाछे मृतिका बोरै॥

एक पहरके पाछे मलै । भोर भये नहलावै भलै ॥
ताके भोर दवा मलवावै । याहि कर्मते रोग नशावै ॥
ऊँट श्वान वृष हय पशु भाई । सकल खारिस्ती नाश कराई
सकल चिकित्सा जे खजुलीके।यहि समान नहिं और मतेके

अन्य ।

दोहा–नींबी गुठुलू तेल लै, एक छटाँक प्रमान ।
जौरोटी सँग दीजिये, यकइस दिवस विधान ॥ १ ॥
कोई होइ खारिस्ति जो, अश्वाके तनु माहि ।
शालहोत्र मत जानियो, यहि सम दूजी नाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–गिरई मछरी लाइकै, पाँच सेर तौलाइ ।
उतनाई दधि दीजिये, महिषीकेर मिलाइ ॥
चौ०–माटीके बरतन भरि धरिये, मोहराबंद ताहिको करिये ॥
यकइस दिन घूरे गड़वावै । ताहि बइसयें दिन निकरावै ॥
नित प्रति कच्चे पाव खवावै । रोग खारिस्ती सब मिटि जावै

अन्य लगानेकी दवा ।

चौ०–मछरी भूर पाँचसेर लावै, दशसेर महिषीतक्र मिलावै ॥
माटीके बरतन भरि धरिये । आठरोज लगु घूरे गड़िये ॥
दोहा–नवयें दिनमें देहमें, मालिसि करौ सुजान ।
जाइ खारिस्ती नीक है, दवा करौ बुधिमान ॥

अन्य ।

चौ०–बेल जंगली तोरि मँगावै । पानी डारि अग्नि पकवावै ॥
ताको गूदा लेउ कढ़ाई । पानी डारि खूब घेपवाई ॥

माफिक सीराके करि लीजै। देह भरेमें मालिस कीजै॥
देह सूखि जब जावै भाई। तब पिंडोर माटी पोतवाई॥
तिसरे पहर देइ अन्हवाई। पाँच सात दिन यहै कराई॥

अन्य।

चौ०-दही भैंसिको लेउ मँगाई। पक्के आठ सेर तौलाई॥
भूरे मछरी फेरि मँगाई। तीनि पाव ताको तौलाई॥
तितिली और करहुँआ लीजै। पाव पाव भरि वजन करीजै॥
मिरचा लाल छटाँक मँगावै। धोई दालि पाव भरि लावै॥
तोला एक तूतिया लावै। गंधक तोले तीनि मिलावै॥
आधपाव लै नींबकि पाती। पीसि दवा सब दही मिलाती॥
सो सब बरतनमें भरि लीजै। गोबरमाहिं गाड़ि तिहि दीजै
दोहा-दुइ दिन तामें गाड़िकै, तिसरे दिन खुदवाइ।
दवा अश्वकी देहमें, दुइ घंटा मलवाइ॥
चौ०-धूपमाहिं बाँधो तेहि भाई। घंटा भरि तक देह सुखाई॥
घोरि पिडोरु देह लगवावै। कूपके जलसे तेहि अन्हवावै॥
तीनिरोज यहि भाँति करावै। ता पाछे यह दवा खवावै॥
दोहा-दुइदिन आगे ताहिको, दाना बंद कराइ।
सातरोजतक दीजिये, खाजु नाश ह्वै जाइ॥

अन्य खानेकी दवा।

चौ०-दही कि सूरनि लेउ बनाई। पाव एक ताको तौलाई॥
आँबाहरदी तोला तीनी। कूटौ ताको बहुत महीनी॥
गिरई मछरीको लै आवै। एक छटाँक वजन करवावै॥
यवके आटा सानि खवाई। एक खुराक कही यह भाई॥

अन्य ।

चौ०-नींबीकी पाती लै आवै । कोपल दुइसेर वजन करावै ॥
एकसेर सहतरा मँगाई । दूनौ कूटिक देउ धराई ॥
माटीके बरतनमें धरै । ऊपरतक माठा तेहि भरै ॥
आठरोज घामें धरवाई । नवयें दिन ते अश्व खवाई ॥
यव वा चनाके आटा दीजै। आध पाव तेहि वजन करीजै

अन्य लगानेकी दवा ।

चौ०-तोले तीनि तमाखू लीजै । लाल मिर्च ताके सम कीजै ॥
बीज बकैनाके लै आवै । पावसेर तिनको तौलावै ॥
दोहा-दालि उरदकी सेरु भरि, जलमें सबै मिलाइ ।
ताहि चढ़ावै अग्निपर, खूब पाकि जब जाइ ॥
सोरठा-लीजै ताहि उतारि, जब ठंढा होजाय बहु ।
डारै तुरत निकारि, मिरच तमाखू ताहिते ॥
दोहा-खूब मलै फिरि हाथसों, लीजै ताहि छनाइ ।
गूड़ी रंडा पाव अध, दही सेरु मिलवाइ ॥ १ ॥
एकरोज धरि धूपमें, रोज दूसरेमाँहि ।
मलै अश्वकी देहमें, बाँधे घामें ताहि ॥ २ ॥
फिरि धोवै जल शीतसों, श्रीधर वरणो आनि ।
या विधि कीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-दूध गाइको सेरु दुइ, पक्की तौल मँगाइ ।
लेइ फिटकरी मिर्च अरु, तोले षट मँगवाइ ॥ १ ॥

ताहि मिलै सब देहमें, पहर बीति जब जाइ ।
धोवै पानी ठंढ करि, सात दिवस करवाइ ॥ २॥

अन्य पुरानी खाजकी दवा ।

दोहा—सेर एक लै तेल तिल, दीजै ताहि मलाय ।
रोज रोज सब देहमें, तल मलत सो जाय ॥ १ ॥
यकइस दिनलौं तेलसों, भीजि रहै सब देह ।
मिटै खाजु सब वाजिकी, जानौ बिन संदेह ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—मनुजमूत्र मँगवाइकै, दीजै ताहि लगाय ।
औषध कीजै ताहि पर, खाजु दूरि हो जाय ॥
चौ०—मडुईकेर पिसानु मँगावै । तीनि पाव ताको तौलावै ॥
सात टका भरि लोनु मिलावै। लेई ताकी आनि पकावै॥
सो देहीमें देइ लगाई । भोर भये डारै अन्हवाई ॥
सात बार औषध यह करै । खाजु व्याधि घोड़ेकी हरै ॥

अन्य ।

चौ०—षट मासे तूतिया मँगावै । ताते दूनी मिरच मिलावै ॥
दोनोंको यकमाहिं पिसाई । गऊमूत्रमें ताहि मिलाई ॥
दोहा—वाहि लगावै देहमें, रोज दूसरे माहि ।
माटी घोरि लगाइये, सूखि जबै सब जाहि ॥
चौ०—शीतोदकमों ताको धोवै । खाजु व्याधि घोड़ेकी खोवै ॥
सातबेर यह औषध कीजै।खाजु व्याधि कबहूँ नहिं लीजै॥

अन्य ।

दोहा—पावसेर लै लोनको, तोला भरि हरतारु ।
पावसेर घृत माहिमो, दुवौ पीसिकै डारु ॥

सोरठा--अग्नि पकावै ताहि, फेरि लगावै देहमें ।
तीनि रोज लगु वाहि, बाँधो ताको धूपमें ॥
दोहा--ठंढे जलसों धोइये, छिरका और शराब ।
दोऊ मिलै लगाइये, बढ़ै देहकी आव ॥

अन्य ।

चौ०--गोदधि तेरह सेर मँगावै । करुव तेल दुइ सेर मिलावै ॥
पाती नींबकेर लै आवै । सेर एक तेहि अर्क कढ़ावै ॥
दोहा--दालि उरदकी सेर भरि, ताको लेउ पकाइ ।
यक बासनमें ओषधी, दीजै सबै भराइ ॥ १ ॥
सो लै गाड़ै लीदिमें, दशयें दिन कढ़वाइ ।
धरै ताहि लै धूपमें, रोज खवावति जाइ ॥ २ ॥
आटा भूँजै जवनको, पाउ सेर सो जानि ।
औषध लीजै ताहि सम, दीजै हयको आनि ॥ ३ ॥
चौ०-तीनि रोज या विधिको कीजै।डेढ़ पाव फिरि औषध दीजै॥
बारह दिनलौं देउ खवाई । बहुत दिननकी खाजु नशाई॥
दोहा--अग्निवायु नाशै तुरत, बरसाती मिटि जाइ ।
शालहोत्र इमि उच्चरै, खाजु पुरानी जाइ ॥

अन्य ।

दोहा-हरदी मोथा कूट अरु, बरुन छालिको आनि ।
बीज कसौंजीको बहुरि, यक यक पलसों जानि ॥
चौ०-करुआतेल सेरुभरि लावै । सबै औषधी पीसि मिलावै ॥
घामें बाँधि देह लगवाई । तीनि दिवसमें खाजु नशाई ॥

अन्य।

चौ०—गेहूँकेर पिसान मँगावै। ता सम तामें लोनु मिलावै॥
फिरि ताकी यक रोटी कीजै।जारि तासुको कैला कीजै॥

दोहा—आधो कैला तैल तिल, तीनि रोज लगवाइ।
आधो बाकी जो रहै, जलमें लेहु मिलाइ॥ १॥
ताहि लगावै तीनि दिन, नदीकेर जल लाइ।
ताते धोवै वाजितनु, तुरतै खाजु नशाइ॥ २॥

अन्य।

दोहा—बरगद पाता जारिकै, ताकी भस्म कराइ।
लाल मिठाई दहीयुत, खारी लोनु मँगाइ॥ १॥
सेर सेर सब औषध, जलसों लेइ मिलाइ।
ताहि लगावै तीनि दिन, खाजु दूरि ह्वै जाइ॥ २॥

अन्य।

दोहा—कुटकी सोंठि चिरायता, सैंधव सेंदुर आनि।
मोथा तिल हरदी सहित, और सोहागा जानि॥ १॥
ताहि लगावै तीनि दिन, तिलके तैल मिलाइ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तहूँ खाजु मिटि जाइ॥ २॥

अन्य दवा खानेकी।

दोहा—सर्व ओषधी करिचुकै, खाजु नहीं जो जाइ।
ताकी औषध कहत हौं, दीजै ताहि खवाइ॥

चौ०—समुलखार धेला भरि लावै। गूगुरु ताके सम मिलवावै॥
तोला चारि भिलावांलीजै। पाँच टका भरि अदरख कीजै

दोहा—सबै पिसावै एकमें, खूब गिली ह्वै जाइ।
आठ आठ मासे सबै, गोली लेहु बँधाइ॥ १॥

बँगलापान पचासमें, गोली एक खवाइ।
दीजै दूनो बेरमें, याही विधिसों लाइ॥ २॥

अथ अग्निवायुलक्षण और दवा।

दोहा–चैट परैं जो देहमें, खाल उधिलि तिहि जाहि।
अरु लोहू तिनते चलै, पुनि खाँसी अधिकाहि॥

अन्य।

दोहा–उधिलै खाज जु गातकी, पुहुमी रगरै घोर।
गूँथिनते लोहू चलै, अग्निवायु है जोर॥

अन्य।

दोहा–लाखबार जो अश्वके, उधिलि गये दरशाय।
अग्नि वायु याहू कहो, रंगीमत सो आय॥ १॥
आध सेर तंदुल पकै, नींबपत्रमें घालि।
आध सेर दधिमें सुई, काढ़ि दीजिये डालि॥ २॥
सीरो करि करसों मसलि, देवै दिन चालीस।
ता ऊपर जल देइ नहिं, अग्निवायु करि खीस॥ ३॥

अन्य।

दोहा–गोमाखन यक पाव लै, नितप्रति दिन दे सात।
ता पाछे औषध करै, रोग दूरि होजात॥

अन्य।

चौपाई–अहि कारेकी केंचुलि लावै। मासे चारि खरिल करवावै॥
गेहूँकी रोटीमे सानै। घीके संग खाय मतिवानै॥
प्रात सात दिन देउ खवाई। अग्निवायु नीकी ह्वै जाई॥

अन्य ।

चौ०-अरुण मिरच पैसा भरि लेहू। मधु मथि लै माटीमें देहू ॥
माटी आध पाव मुलतानी। तेल डारि करुएमें सानी ॥
घामें बाँधि अश्वतनु मलै। भेड़महीते धोवै भलै ॥
पोंछि सुखाय अंगको भाई। माष पकाय देइ मलवाई ॥

अन्य ।

चौपाई-कोकाफूल तालके लेहू। गोदधिं वरतनमें लै भरहू ॥
सातरोज घूरेमों धरै। अठयें दिन सो बाहर करै ॥
पाव सेर घोड़ेको दीजै। ता पाछे यह औषध कीजै ॥
महिषाको यक सींग जरावै। दूध भेड़को लै मथवावै ॥
तीनि टका भरि मनशिल लेहू। करि मैदा ताहीमें देहू ॥
तिलके तेलमें मथै बनाई। घरी एक घामें धरवाई ॥
घामें बाँधि दवा मलवावै। माटी पोति अश्व अन्हवावै ॥

अन्य ।

चौपाई-काई तालकेरि मँगवावै। सात रोज घोडा मुख नावै ॥

अन्य ।

सोरठा-काले खरको आनि, लौंग तूतिया लीजिये।
नागकेसरिहि जानिं, चारि चारि रत्ती सबै ॥
दोहा-हरदी पैसा भरि बहुरि, हयको देहु खवाइ।
अरु यह औषध कीजिये, अग्निवायु मिटि जाइ॥

अन्य ।

दोहा-नैनू लेकै पाँच पल, नितप्राति देहु खवाइ।
अरु यह औषध कीजिये, अग्निवायु मिटि जाइ ॥ १ ॥

लाल मिरच अरु सहदको, टका एक भरि जानि ।
पीसै करुये तेलमें, यह विधि लीजै मानि ॥ २ ॥
ताहि लगावै देहमें, जानि लेहु यह चित्त ।
माठा लीजै मेषको, तासों धोवै नित्त ॥ ३ ॥
उरद उसेवै नीरमें, तिनको खूब मिलाइ ।
वा औषधको पोंछिकै, तापर देइ लगाइ ॥ ४ ॥
या विधि कीजै बीस दिन, अग्निवायु नाशि जाइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं दवा बताइ ॥ ५ ॥

अथ दाद, छिछिला, अग्निवायु ।

दोहा–चारौ गंधक लीजिये, अरु हरदी हरतार ।
बायबिडंग समान करि, बचुकी दूनी डार ॥ १ ॥
पारा सम अरु चोष तिमि, चौगुन लै कटु तेलु ।
पहर अढ़ाई लोहसे, खलिभाजनमें मेलु ॥ २ ॥
सोइ लगावै अंग मलि, तीनि पहर रखि घाम ।
मलि पिंडोर चौथे पहर, धोय प्रातके याम ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–लै बासी पानी तुरै, धोय देइ दिन सात ।
की हुक्काको जल सरो, धोवै नितप्रति प्रात ॥

अन्य ।

दोहा–गोदधि अरु बारूद लै, फेंटि मलै हय अंग ।
बाँधि तीनि दिन धूपमें, करि खरिस्तिको भंग ॥

अन्य ।

दोहा–की भड़भड़ (हुक्का) साराँइको, पानी लै मतिमान ।
मलै अंग दे तीनि दिन, नशै खरिस्त निदान ॥

अन्य।

दोहा–की साबुन लै आठ भरि, ताको आधो लोन।
कूटि बाँधि पटमें तिन्हैं, करै जतन रुज दौन ॥ १
बासी पानीमें रगरि, धोय तुरय दिन तीन।
बुद्धिधीर यहि रीतिको, कर खरिस्तिको हीन ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा–की पीपरि बारीक लै, पीसि तेल रलि दोय।
बाँधि धूप सोखै जबै, पोति मृत्तिका सोय ॥

अथ बादखोरा खाज।

दोहा–बार गिरैं खजुली उठै, खाल चीकनी होय।
कह्यो बादखोरा नकुल, दुष्ट रक्तते सोय ॥ १ ॥
सवासेर गोमूत्र लै, लोह कराही माहि।
जरो आध लखिये जबै, पीछे जतन कराहि ॥ २ ॥
मिर्च तूतिया लीजिये, दश भरि चतुर सुजान।
सुमिलखार सिंदूर सम, पीसि महीन प्रमान ॥ ३ ॥
आध पाव कटुतेलमें, सकल दवा लै घेल।
वाही लोहड़ीमें सुघर, वस्तु पाँचहू मेल ॥ ४ ॥
सबको फेंटि उतारि ले, यकइस रोज लगाय।
खाजु बादखोरा प्रगट, देहै तुरत नशाय ॥ ५ ॥

अथ गजचर्मलक्षण और दवा।

दोहा–रोवाँ जाके गिरि परै, हुचकी आवति होइ।
जानौ सो गजचर्म है, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
गदहपुरैना सोंठि पुनि, हर्र मिर्चको जानि।
दुइ दुइ पल सब लीजिये, देवदारु सो आनि ॥ २ ॥

चारि सेर जल आनिकै, लीजै ताहि पकाइ ।
सेर एक जल जब रहै, ताको मींजि छनाइ ॥ ३ ॥
बीज कसौंजी लीजिये, पैसा भरि तौलाइ ।
तिनको पीसि मिलाइकै, काढ़ा देहु पिआइ ॥ ४ ॥
काढ़ा दीजै तीस दिन, शालहोत्र मत आइ ।
जेती औषध खाउुकी, तिन्हैं लगावत जाइ ॥ ५ ॥

अथ बरसातीलक्षण व दवा ।

दोहा–पैर गामची तर उपर, नैन नीच दरशात ।
फूटि बहै बरसातमें, बरसाती विख्यात ॥

अन्य ।

दोहा–उधिलै खाल जु अंग कहुँ, लाली बहु दरशाय ।
बारहु मासमें देखिये, सो बरसाती आय ॥
चौ०–बरसाती मोमेसों मलै । मलत मलत जब लोहू चलै ॥
सर्षपतेल मोम लै आवै । अरु बारूदहि आनि मँगावै ॥
सिंगरफ सहद सबै मिलवाई । अग्निमध्यमा लेउ पकाई॥
मलहम करै हरै बरसाती । सात दिवस लागै दिन राती॥

अन्य ।

चौ०–छोटी माई आनि पिसावै । तिहिसम मसुरि पिसान मँगावै॥
ताकी टिकिया करौ बनाई । बरसाती ऊपर बँधवाई ॥
तीनि दिना सो बाँधी रहै । चौथे दिवस छोरिकै लहै ॥
निंबु कागजीके रस धोवै । लाली हरै नीक ह्वै जोवै ॥
तीनि रोज फिरि टिकिया बाँधै । याही क्रमसे औषध साधै

अन्य।

चौ०-तिल्लीको पीना लै आवै। गऊतक्रमें ताहि घुरावै॥
तीन दिना सो भीजा करै। ता पाछे लेपनको करै॥
साँझ और लागै परभाती। बरहैं दिवस जाय बरसाती॥

अन्य।

दोहा-लै सज्जी अरु मैनशिल, सम करि सुमिलक्षार।
खलमें मदिरा युत खलै, चौविस पहर विचार॥ १॥
पैसा भरि नित दीजिये, यकइस दिवस प्रमान।
बरसातीको नाशि है, याही यतन निदान॥ २॥

अन्य।

दोहा-मासा चारि प्रमान बुध, लेउ सोहागा भूनि।
बूकि तासु दुइ भाग करु, डारि श्रवण दुहुं गूनि॥ १॥
ताके ऊपर कागजी, निंबू करै दुफाल।
दुहूँ श्रवणमें गारि दे, हरि है रुजको जाल॥ २॥

अन्य।

दोहा-निंबूरसमें रगरिकै, देइ सिंघारा लाय।
कई बेर लावै सुघर, बरसाती मिटि जाय॥

अन्यमत लक्षण।

दोहा-हाथ पाँव मुहँ माहिमें, चट जाके परि जाँइ।
पाकैं उधिलैं वे बहुरि, गांठीसी दरशाँइ॥ १॥
बीति जाइ बरसाति जब, सूखि सबै वे जांइ।
फिरि आवै बरसाति जब, वैसे फिरि ह्वै जांइ॥ २॥

दवा।

दोहा-मासा भरि हरतार लै, नीलाथोथा डारि।
इन तीनोंको सम करौ, स्याह लोन निरधारि॥ १॥

समुद्रखारको लीजिये, रती चारि मँगवाइ ।
सूखो सबको पीसिये, अति बारीक कराइ ॥ २ ॥
पाती लैकै नींबकी, जलमें लेउ मिलेइ ।
कपरासे जल छानिकै, धोय चटै सब देइ ॥ ३ ॥
यह औषध सब चटनपर, खूब मलै सो जानि ।
नमदा धरिकै ताहिपर, बाँधै कपरा आनि ॥ ४ ॥
बाँधो राखै दोइ दिन, दीजै फेरि खुलाइ ।
चटको देखै ध्यान करि, छूटि जैर जब जाइ ॥ ५ ॥
फिरि धोवै जल गर्म करि, तापर करै निगाह ।
छूटै जर चहुँ तरफते, होइ जाइ अरु स्याह ॥ ६ ॥
याविधि की चट होइ नहिं, यही औषधी लाइ ।
दीजै ताहि बँधाइ फिरि, वाही विधि करवाइ ॥ ७ ॥
धानन केरो भातु लै, टिकिया तासु बँधाइ ।
तीनिरोजके बादमें, ताको खोलै आइ ॥ ८ ॥
बरसाती जरसों मिटै, घोड़ा चंगा होय ।
श्रीधर कह्यो विचारकै, शालहोत्र मत जोय ॥ ९ ॥

अन्य ।

दोहा–गोदधि तेरह सेर लै, दशपल सरसों तेल ।
नींबपात लै सेर भरि, उरद सेर भरि मेल ॥ १ ॥
गाड़ै ताको भूमिमें, करि जब वासनमाहि ।
सातरोज राखै तबै, जाइ निकारै ताहि ॥ २ ॥
पाउ पाउ भरि दीजिये, तीनि रोज लग जानि ।
फिरि दीजै विवि पाउ भरि, चालिस दिनलौं मानि ॥३॥

भूँजे चना पिसानमें, औषध हयको देउ ।
कवि श्रीधर यों कहत हैं, वाजी नीको लेउ ॥ ४ ॥

अन्य ।

सोरठा–कपरा लेउ तहाइ, बरसातीकी गाँठिपर ।
ताको देहु बँधाइ, छिन छिन डारै नीरको ॥
दोहा–दुइ महिना यहि विधि करै, बरसाती मिटि जाइ ।
शालहोत्र यह कहत हैं, नीकी विधि यह आइ ॥

अन्य ।

दोहा–झींगा मछरी गुड़ सहित, साँभरि लोन बखानि ।
आध पाव मौताज यक, तीनोंको सम जानि ॥ १ ॥
दाना पाछे साँझको, औषध दीजै आनि ।
चालिस दिनके भीतरै, होइ रोगकी हानि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–छालि जवासा दोइ पल, छाहीं माहिं सुखाइ ।
आध पाव नैनू सहित, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
डेढ़ पहर दिनके चढ़े, जलको देइ पिआइ ।
ता पाछे यह ओषधी, दीजै आनि खवाइ ॥ २ ॥
दोहा–नरके शिरको हाड़ लै, आध पाव पिसवाइ ।
अर्कपात मँगवाइकै, तिनको लेउ जराइ ॥

अन्य ।

चौ०–तोला भरि हरतारु मँगावै । तासम लुहचन आनि मिलावै ॥
तोला भरि गुड़को फिरि लीजै । सबको पीसि इकट्ठा कीजै ॥

दोहा-डेढ़सेर लै प्याजको, ताको अर्क मिलाइ ।
कर्षमात्र गोली करै, फिरि औषध पिसवाइ ॥ १ ॥
गोली एक नहार मुख, हयको दीजै आनि ।
दाना दीजै ताहि नाहिं, नाहारीको जानि ॥ २ ॥
पानी पहिले देइ करि, मध्य दिवसमें ताहि ।
गोली दूसरि दीजिये, शालहोत्र मत याहि ॥ ३ ॥
दोइ घरी कैजा करै, पाछे देइ उतारि ।
यहि विधि कीजै तीनि दिन, श्रीधर कह्यो विचारि ॥ ४ ॥
बीस दिवस अरु तीनिते, दिन चालिसलौं जानि ।
जल पिआइकै दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ५ ॥
रोग घटै अरु बल बढ़ै, क्षुधा तासु अधिकाइ ।
औषध याहि समानकी, और नहीं दरशाइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा-बरसाती पर मोमको, मलै देरतक आनि ।
मलत मलत लोहू चलै, मलत तहाँ लगु जानि ॥

मलहम ।

दोहा-करू तेल आगी धरै, थोरा मोम मिलाइ ।
चन्दन अरु बारूद लै, दोऊ लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
घोटै ताको देरतक, एकमाहिं मिलि जाइ ।
बरसातीके जखमपर, रोज लगावत जाइ ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीखारिस्तवर्णन नामक अष्टम अध्याय ॥ ८ ॥

अथ नेत्ररोग लक्षण व दवा।

मुज्जारोग।

दोहा—किरिमि होत यक नेत्रमें, कच समान सो मानि।
श्वेत रंग ललिये बहुरि, मुज्जा ताको जानि॥
चौपाई—सो आंखीमें दौरा करै। ताके दौरे माड़ा परै॥
एक खालके नीचे जानो। मुज्जा रोग कठिन अनुमानो॥

दवा।

चौपाई—पीपरि सैंधव सहद मिलाई। पथरचटाके रंग पिसाई॥
वजन बराबरि सबको करै। अंजन दै दृग मूंदा करै॥
सातरोजलौं औषध कीजै। कीरा मरै सफेदी छीजै॥

अन्य।

छंद प्लवङ्गम—अर्क दूध फिटकरी सु या विधि आनिये।
गोहूँ मैदा सानि पिंड यक बाँधिये॥
अग्नि मध्यमें राखि भस्म करि लीजिये।
पीसि नेत्रमें आँजि किरिमिको छीजिये॥

अन्य।

दोहा—मानुषकी खुपरी तनक, अग्नि मध्य दे जारि।
खील फिटकरी मिलै सम, सुरमा करौ विचारि॥ १॥
अजा दूधमें सानिकै, अंजन दीजै नेत्र।
फूली मुज्जा काटि हैं, साँची मानौ मित्र॥ २॥

अन्य।

दोहा—सैंधव कदली फल सुपक, मेलि जु पट्टी देय।
तीनि दिवस या विधि करै, मिटै रोग सुख लेय॥

अन्य।

दोहा—अर्कक्षीर गोबर महिष, ताको अर्क निचोय।
पीतरिके खोरवा विषे, पैसासों घसि लेय॥ १॥
अंजन करि दे नैनमें, साँझ भोर यहि रीत।
ता ऊपर हलुवा बनै, मैदा गोघृत मीत॥ २॥
खाँड़ मलि तामें धरै, नैन उपर सुखदानि।
फिरि घृत लावै ताहि पर, जो कछु माड़ा जानि॥ ३॥
तौ सेंदुर भरि दीजिये, तामें जतन समेत।
नाशै मुज्जा नैनको, कहै नकुल सुखहेत॥ ४॥

अन्य।

दोहा—दूधपिवा शिशुकी सुघर, विष्ठा लेइ मँगाय।
चारि बेर दृगमों भरै, मुज्जा नैन बिहाय॥

अन्य।

दोहा—लेंडी लै खरगोशकी, जलमें लेउ पिसाइ।
सो लै बाँधै आँखिपर, मुज्जा तौ मरिजाइ।

अथ मुज्जा फूली और मांड़ाकी दवा।

दोहा—चूरी लीजै काचकी, सैंधव लोन मिलाइ।
पीसै अति बारीक करि, सुरमा जब ह्वै जाइ॥ १॥
सो लै डारै आँखिमें, दूरि सफेदी होइ।
मुज्जा अरु फूली नशै, कहत सयाने लोइ॥ २॥

अन्य।

चौ०—बीट कबूतरकी लै आवो। लोन लहौरी ताहि मिलावो॥
मासे डेढ़ दुहुँनको लीजै। रत्ती भरि सांधी पुनि दीजै॥

दोहा-पिसवावै बारीक करि, धरिकै छूंछी माहि।
फूँकि देइ सो आँखिमो, पाँच रोजमें जाहि॥

अन्य।

दोहा-सिरसा खिन्नी बीजकी, गूदी लेउ कढ़ाइ।
साबुन गेरू लौंग पुनि, सैंधव सेंदुरु लाइ॥ १॥
नींबूकेरे अर्कमें, पीसै अति बारीक।
अंजन दीन्हें होत है, फूली वालो नीक॥ २॥

अन्य।

दोहा-पीपरि पीसै खरिलमें, एक दिवस भरि आनि।
अंजन दीन्हें होति है, माड़ा फूली हानि॥

अन्य।

चौ०-समुदफेन अरु सोरा लीजै। फूल गुलाब ताहिमें दीजै॥
सँगबसरी मिलि सम पिसवावै। खूब महीन खरिल करवावै

दोहा-अंजन दीजै आँखिमों, मांड़ा सो छटि जाइ॥
सात रोज औषध करै, नेत्रज्योति सरसाइ॥

अन्य।

दोहा-सोरा चंदन फिटकरी, सिरसाबीज मँगाइ।
मिर्च कपूरै शर्करा, साबुन देउ मिलाइ॥ १॥
सबको पीसै एकमें, अंजन ताको देइ।
सात दिवस औषध करै, फूलीको हरि लेइ॥ २॥

अन्य।

दोहा-अर्क दूध औ फिटकरी, लेउ धतूर मिलाइ।
सो लै आगीमें धरै, दीजै खून जराइ॥ १॥

सुरमा करिकै ताहिको, दीजै आँखीमाहि ।
दूरि सफेदी होति है, अरु मुज्जा मरि जाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–अमिलतासकी छालि लै, चंदन रक्त मिलाइ ।
पीसि ताहि गोली करै, छाहींमाहिं सुखाइ ॥ १ ॥
रगरि पान रसमें बटी, यकइस रोज लगाय ।
तुरँगनैनफूली मिटै, याही यतन बनाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–जेठीमधु चंदन अरुण, घसि अदरखरसमाहिं ।
नैन दिये फूली कटै, कइउ रोग नशि जाहिं ॥

अन्य ।

चौ०–लोधु फिटकरी मुरदाशंक । हरदी जीरा यक यक टंक ॥
अफीम चनाभरि मिरचै चारि।उरद बराबरि थोथा डारि ॥
सिरसछालि रस अंजन कीजै।सकल विकार नैनको छीजै॥
मुज्जा फूली और नखूना । माड़ा धुंध आदि कतहूँ ना ॥

अन्य ।

दोहा–जो फूली दृगमें परै, कीजै जतन उताल ।
कइउ रोज सेंदुर तहाँ, फूँकि देइ भरि नाल ॥ १ ॥
की बरतन चीनी सुघर, पीसि भरै तेहि नैन ।
नशि जैहै फूली तुरत, लहै वाजि वर चैन ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–की रीठी रगरै सुघर, डारै नैन लगाय ।
कहि रंगी वस्ताद यह, फूली नैन विहाय ॥

अन्य।

दोहा—की सोरा गेरू मिलै, घालि नालमें फूँकि।
कइउ रोज याको करै, उपर तमाखू थूँकि॥

अन्य।

चौ०—काचन चूरन आटा जोड़ी। अर्कदूधमें भिजै समंडी॥
गोला करिकै ताहि सुखावै। अग्नि जारिकै भस्म पिसावै॥
चुटकी चूरण नैनन धरै। सात रोजमें फूली हरै॥

अन्य।

चौ०—सोनामाखी बंदनु लीजे। रक्त फिटकरी तामें दीजे॥
सिरसबीज अरु चीनी लेई। लेउ कचूर मिर्चको सोई॥
मैदा करि अंजन दृग भरै। नीक होइ अरु फूली हरै॥

अन्य।

चौ०—रसउत अरुण फिटकरी लीजै।सहद संग घसि अंजन कीजै

अथ नाखून।

दोहा—जहाँ सफेदी नेत्रमें, तहाँ नखूना होइ।
छूरासे तेहि काटिये, डारि सेराई सोइ॥

चौ०—लै अस्तूरा साफ उतारी।मुज्जा फूट बहै नहिं वारी॥
हरदी सोंठि सहद घृत सानी।ताहि बाँधु ऊपरते आनी॥
शीत वातते देउ बचाई। नीको होइ नखूना भाई॥

अन्य।

चौ०—मिर्च दक्षिणी वंदन लेहू। खील सोहागा तामें देहू॥
गूगुर वजन बराबरि मेलै। सैंधव लोन फिटकरी खीलै॥
सर्षपतेलमें खरिल कराई। नाखूनामें देउ लगाई॥

अन्य।

दोहा–नींबछालि नरमूत्रमें, रगरि सु अंजन देय।
कटै नखूना नैनको, वाजि अधिक सुख लेय॥

अथ नेत्रचोटकी दवा।

दोहा–बासी पानी लोन लै, दोनों मुखमें डारि।
कूचि नैनमें फूँकि दे, तुरत चोट दुख हारि॥

अन्य।

चौ०–गोघृत मैदा डारि मिठाई। आँबाहरदी लेउ पिसाई॥
दोहा–घुँघुँवारीके नीरसँग, अग्निमध्य पकवाय।
हलुवा करि बाँधौ सुघर, नैन चोट बहि जाय॥

अथ नेत्रबँभनी।

दोहा--पलकरोम गिरिजात सब, बहु किचपिचा दिखाय।
आँखिनमें पानी बहै, कछु लाली दरशाय॥
चौ०--पटसनजरकी राख करावै।साँभरि टका तीनि भरि लावै॥
दोउ शिरमध्य बीच लगवावै।चारि घरी पीछे अन्हवावै॥
सनभव मुर्दाशंख मिलाई।सहद संग मथि देइ लगाई॥
सात दिना करि है जो कोई। बँभनी बेलि जाय सब खोई

अथ रतौंधीकी दवा।

दोहा--रंचक मिरच कपूर लै, घृतमें सानै ताहि।
घिसि अंजन नैनन करै, मिटै रतौंधी वाहि॥

अन्य।

दोहा–सावुन मिर्च मँगायकै, लीदि रंगसों सानि।
घोड़े दृग अंजन करै, मिटै रतौंधी आनि॥

अथ आँखिमे ढलका बहनेकी दवा।

चौ०—सरसों पीपरि मूल अरंडा। गोला बाँधि करौ जिमि अंडा॥
ताको अर्क निचोइ सु लीजै। ताहि मध्य औषध यह दीजै॥
हाऊबेर व गेरू लाई। कँदयल कली सहित पिसवाई॥
सबका अर्क यकत्र निकारै। साँझ भोर दृग छींटा मारै॥
नीक होय सब ढलका बंदा। शालहोत्र भाषै सुखकंदा॥

अन्य।

चौपाई—चंदन सौंफ तगर जो लावै। अजापुत्र पेशाव मँगावै॥
रस इनका सब लेइ निकारी। ता मधि सहद घीउ सो डारी॥
भरै नेत्र सो जतन कराई। ढरका रोग नीक ह्वै जाई॥

अन्य।

दोहा—बच दतूनि गुड़ घृत मिलै, खाय तुरी मतिमान।
बहिवो नैनन नीरको, रोकिह कहौं प्रमान॥

अथ नेत्रमाड़ाकी दवा।

दोहा—मानुषकी खपरोइया, अति महीन करि बूँकि।
माड़ा तुरत नशाइ है, देइ नाल भरि फूँकि॥

नेत्र सफेदीकी दवा।

चौपाई—पिपरी सैंधव सहद मिलाई। विषखोपराके अर्क सनाई॥
अंजन दै मूँदौ दृग ताही। जाय सफेदी तुरतै वाही॥

अथ लोटरोगलक्षण व दवा।

दोहा—ऊपर सूजहि आँखितर, जखम होति है आनि।
लोट तासुको नाम है, श्रीधर कहो बखानि॥ १॥

काँचेकी थारी विषे, दीजै पारा डारि ।
पैसा भरे रगरिये, रस नींबूको गारि ॥ २ ॥
सोरठा–मिलि पारा नहिं जाहि, तौलौं रगरत जाइये ।
जब कजरी ह्वै जाइ, लावै हयके जखमपर ॥
चौपाई–एक रोजमें औषध भाई । दफा पाँच अरु सात लगाई ॥
जबतक जखम न नीक देखावै।तबतक दवा यही करवावै

इति श्रीशालहोत्रसग्रह केशवसिहकृत नेत्ररोगचिकित्सावर्णन नामक नवम अध्याय ॥ ९ ॥

अथ वातव्याधि । झोला अकरब वायु ।

चौ०–मानुष दग्ध होय जहँ भाई।यक हथ माटी डारु खोदाई॥
ता नीचेकी माटी लीजै । घोरि कराह औटनो कीजै ॥
धरै उतारि जु शीतल होई । तेल उपर छहरै जमि सोई॥
वाही तेलको लेउ उतारी । सीसामें करि धरै विचारी ॥
घोड़के तनु मालिस करै । कछुक खवाय रोगको हरै ॥
वातव्याधि सकल मिटि जाई। मानुषतैल मलै जो भाई॥

अन्य ।

चौपाई–सेर चारि भैंसीकी गोबरी।सैंधव सज्जी और फिटकरी॥
टका टका भरि तीनों मेलै । बेंबउरकी माटी तिहि घेलै॥
एकैमें सब गरम करावै । लेपै अंग बयारि न पावै ॥
तेल मालकाँगनिको लीजै । याहीमें सो शामिल कीजै ॥
गेरह दिन सो कीजे भाई । याहीते झोला मिटि जाई ॥

अन्य ।

चौपाई—अजमोदा अरु कूट मँगावै। नागरमोथा हरदी लावै॥
बारह बारह भरि सब लीजै।गुर्च सोहागा टकाभरीजै॥
टका एक भरि खारी लीजै। बेसनके सँग घोड़े दीजै॥
सात रोज घोड़े मुख धरै। अश्वाको झोला सब हरै॥

अन्य ।

चौपाई—सुरमा नासु देउ बुधिमाना। गर्म नीर करवावै पाना॥
चनाके सतुआ सानि खवावे। एक जून पानीको पावे॥
घोड़ा राखु बयारि न लागै। याहूते सब झोला भागै॥

अन्य ।

चौपाई—सेर एक गूगुर मँगवावै। पाँच सेर गोदूधै लावै॥
गूगुर दूध मेलि पकावै। कम्मरके छन्ना छनवावै॥
चनाके आटा सेर पिसावै। वही दूध हेलुवा बनवावै॥
हेलुआकी गोली बनवावै। तोला चारि चारि करवावै॥
साँझ सकारे यक यक दीजै।बहुत भाँति टहलावा कीजै॥

अथ प्रबलवायु-लक्षण ।

चौपाई—झाऊपत्र तमाल मँगावै। पुहकरमूल लोध लै आवै॥
गुड़ गोदूध मिलाय करीजै। पिंड बनाय अश्वको दीजै॥
याते रोग दूरि हो जाई। प्रबल वायुको करौ उपाई॥

अन्य ।

चौ०—हरदी अरु जैफल मँगवावै।सम करि दिये बहुत सुख पावै॥

अथ अग्निवायुलक्षण व दवा ।

दोहा—चिनगारी सम छिटिक अँग, निज तनु काटै जौन।
शालहोत्र ऐसी कहै, अग्नि वायु है तौन॥

चौपाई–तेलीको कोल्हू मँगवावै। यंत्र पताल तेल कढ़वावै॥
तिल्लीको सम तेल मिलावै, अश्वअंग मालिस करवावै॥
याही तेल खानको दीजै। चौदह दिनमों नीक करीजै॥

अन्य।

चौपाई–सर्षप लेउ पीत मँगवाई। दश सेर पक्के ले तौलाई॥
पीसि कूटि गोदधिमों सारै। दिन उंचास तुरीमुख धारै॥

अन्य।

चौ०–श्यामा तिलको तेल मँगावै। सिंगरफ मिलै अंग मलवावै॥
मंडलभरिकी साधन कीजै। रोग जाय सब दुःख हरीजै॥

अथ हिरणवायुलक्षण।

दोहा–अधर रदन काटै अपन, माँस नोचि निज खाय।
हिरणवायु ताको कहै, खफकी सो दरशाय॥ १॥
जो कोऊ आगे परै, ताको काटै दौर।
अवशि जानियो मृत्यु यहि, प्राणहरन करु गौर॥ २॥

चौपाई–पहर दुइक तीनिकमें मरै। बहुतै दवा उताहिल करै॥
सोरह भाग कपूर मँगावै। ताहि पीसि लुगदी मुख नावै॥

अन्य।

चौ०–सूकरको बच्चा मँगवावै। घोड़ाके आगू बँधवावै॥
बच्चा चिघरै हल्ला करै। हिरण वायु घोड़ेकी हरै॥

अन्य।

चौ०–दूनो तरफ कानके ऊपर। जहाँ कनपटी कहिये तेहि पर॥
गुलै दागिदीजै बुधिमाना। हिरण वायुको खोज नशाना॥

अथ वोढाकरन-वायुलक्षण व दवा।

दोहा-सूजि जाइ जेहि अश्वको, कर पद गर्दन नैन।
वायु नाम वोढ़ाकरन, शालहोत्र कह बैन॥
चौ०-लौकाकी जर मुंडी आनै। वचुकी सोंठि हींग परमानै॥
सैंधव सोवा वायविडंगा। पलाशपापरा घृतके संगा॥
औषध सम करि एक मिलाई। आठ रोज तक देउ खवाई॥

अन्य।

चौ०-अंड सँभारू पात मँगावै। श्माम धतूरा ताहि मिलावै॥
हांडी मध्य पकाइक सेंकै। वोढाकरन वायुको छेंकै॥

अन्य।

चौ०-अश्वअंगमा होय अमासू। पूरव लक्षण खाय न घासू॥
उचकै चौंकि धरणि पर गिरै। ताकी औषध या विधि करै॥
प्रथम सहींजन हींग मँगावै। अजवायनि कंचन रिपु लावै॥
वायविडंग सोंठि औ सरसों। धूरा करौ अंगमा करसों॥

अन्य।

चौ०-सोंठि जवायनि वायविडंगा। वजन बराबरि करि यक संगा
अष्ट विशेषी काढ़ा करै। सातरोजमा रोगै हरै॥

अथ टनकवायुलक्षण व दवा।

दोहा-टनकै घोड़ा पाँउमें, टनक वायु तेहि जानु।
ताकी औषध कीजिये, रोग जाय परमानु॥
चौ०-गूगुर पैसा भरि मँगवावै। ताहि पकाय अश्वमुख नावै॥
यकइस दिनलौं देउ खवाई। टकन वायु दूरी हो जाई॥

अन्य ।

चौ०–अंडा लेउ टिटिहिरीके षट । देउ अश्व नित जाइ रोग हट॥

अथ कपोतवायुलक्षण व दवा ।

दोहा–खाये सूजै अश्वके, जानौ ताहि कपोत ।
ताकी औषध कीजिये, रोग अरामी होत ॥

चौ०–रंडा बैंगन मूल मँगावै । छालि बरेरा जरकी लावै ॥
बच त्रिकुटा अरु लौका लेई । घृतके साथ खानको देई ॥
तिलको तेल कपोत लगावै । महुआ पाता सेंकि बँधावै ॥

अन्य ।

चौ०–काराजीरी गेरू लेहू । सोंठि कचूर ताहिमें देहू ॥
गोबरके रस खरिल करावै । छिरकाके रस अग्नि पकावै॥
गरम होइ तब लेप करावै । मिटै कपोतवायु सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ०–सुमन पलाश बफारा देवै । बांधौ ताहि कपोतै खोवै ॥

अन्य ।

चौ०–हाड़ मनुष्य शीशको लावै । पुंगीफल छोटे मँगवावै ॥
कँदयल मूल तुचाको लीजै । सकल पीसिकै लेप करीजै ॥

अन्य ।

दोहा–अमिली औ कचनारको, नींब पत्र सम लेउ ।
वासन मध्य पकायकै, सेंक कपोतै देउ ॥

चौ०–कारीजीर पीसि पानीमें । चुपरि कपोत देइ तेहि गरमें ॥

अथ कंपवायुलक्षण व दवा ।

दोहा–काँपै अंग तुरंगको, दाना घास न खाय ।
कंपवायु तेहि जानिये, जतन कियेते जाय॥

चौ०—घीउ कपूर खाँड लै सानै । दूध मिलाइ पिंड मुख भानै ॥
कंपवायु वाजीकी जाई । शालहोत्र यह भाषै भाई ॥

अथ मुखवायुलक्षण व दवा ।

दोहा—मुख सूजै जेहि अश्वको, रुज मुख ताको नाम ।
ताकी औषध कीजिये, जो हय होय अराम ॥

चौ०—जवाखार अजवायनि लीजै। हरदी सर्षप सम करि दीजै॥
सैंधव मिलै पीसि सब लेहू । अँबिली रसमें गरम करेहू ॥
अश्व वदन पर लेप करावै । ताके ऊपर पट बँधवावै ॥

अन्य ।

चौ०—जो मुख सूज अश्वको देखै । वात विकार तासु अवरेखै ॥
जवाखार अजवाइनि राई । सर्षप हरदी सौंफ मिलाई॥
लहसुन मेलि वजन सम करौ । जलसों पीसि अग्निमें धरौ ॥
गरम गरम सेंकौ मन लाई । औषध करौ रोग वहि जाई॥

सोरठा—होय वदन पर सूज, जा तुरंगको देखिये ।
ताको जतन समूझ, लोन बफारा दै प्रथम ॥ १ ॥
राई हरदी सोंठि, जवाखार कुटकी गनौ ।
और सोहागा घोटि, सम करि सकल खवाइये॥ २ ॥

अन्य ।

सोरठा—मोथ इलाची आनि, अमिलतासु धनियाँ सुमधु ।
सम करिकै तेहि सानु, हयको रुजनाशक भणित ॥

अन्य ।

चौ०—भुज छाती सूजै जो आनन । दाना घास नहीं मनभावन॥
मिर्च कसौंजी अदरख पानै । चारौ करौ एक परमानै ॥
दीन्हें जहरवातको हरै । दूजी औषध नाहक करै ॥

अन्य ।

चौ०–अर्धमास पर दीजै ग्रासै । जहरवातको नाहीं त्रासै ॥

दोहा–बारह दिवस असाध्य गनि, तेरह दिन गत साध्य ।
पक्ष पक्ष ऐसी दवा, दिये न करिति उपाय ॥

अथ गिलिमवायुलक्षण व दवा ।

दोहा–जेहि घोड़के वदन पर, गिलटी परिगइ होय ।
रुधिर चलै तेहि गिरहते, गिलमवायु है सोय ॥

चौ०–पहिले घृत अरु तेल लगावै । पात सँभारूकेर मँगावै ॥
सेंकै गुलफ तेलके संगा । गिलमवायुको होई भंगा ॥

अथ गुल्मवायुलक्षण व दवा ।

दोहा–जगह जगह परिजात है, गुल्म सकल तनुमाहि ।
गोलाकृति स्थूल बहु, गुल्मवायु कहि ताहि ॥

छंद संकर–वंशलोचन बरिअरा अरु अवँलकै पुनि लेहु ।
निंबू बिजौरा तासुको रस लाय यामें देहु ॥
पिंड चारि खवाय वाजी गुल्म नाशित होय ।
शालहोत्र विचारिकै यह कह्यो ग्रंथ बिलोय ॥

अथ कर्णवायुलक्षण व दवा ।

दोहा–फूटै अश्वके कनसरी, धार छुटै दुहुँ ओर ।
की लोहू पानी गिरै, कर्णवायु है जोर ॥

चौ०–सौंफ धना जीरा मँगवाई । सोंठि सहित लीजै पिसवाई ॥
भाल अश्वके लेपन कीजै । औरौ नासु उपरते दीजै ॥
लैंड़ी ऊँटकेरि मँगवावै । अर्क निकारि ताहि छनवावै ॥
गोघृत सम करि देहु मिलाई । दमरी भरि सैंधव पिसवाई
नासु देइ घोड़ेको जबहीं । शोणित बन्द होयगो तबहीं ॥

सोरठा-ऊँट कुमारे वारि, अग्नि जारिकै सेंक दे ॥
औषध करौ विचारि, रोग हरै संशय नहीं ॥
चौपाई-सेंक देय हरदी औ पाना। ता पाछे लेपन करिआना॥
सोंठि सोहागा पिपरी लावै। कूटि पीसि लेपन करवावै

अन्य।

चौपाई-शोणित चुवै कर्णते जाके। की आमास होय ज्वर ताके
झारै शिर काँपै सब गाता। ताहि जानियो रुज करि घाता
ताको औषध सुनौ निदाना। तिल हरदीसे सेंकै काना॥

अन्य।

चौपाई-लहसुन हरदी हींग मिलाई। अर्कपातके बीच धराई ॥
करि कपरोटी दीजै आगी। काचो रहै जरै नहिं लागी
ताहि कूटिके अर्क निकारी। घीव सहत तेहि दीजो डारी
थोरी थोरी श्रवणन भरै। कर्ण वायु अश्वाकी हरै॥

अन्य।

चौपाई-जो आमास होय अधिकाई। तौ नस्तर दीजै लगवाई॥
सैंधव सज्जी सावुन आनी। सो लीजै पानीमें छानी॥
ताको पानी श्रवणन भरै। सेंक करै पीरा सब हरै॥

अथ रक्तवायुलक्षण व दवा।

दोहा-जा हयकी दिशि आगिली, चलै न एकौ पाउँ।
पाछिल धरणीको रहै, रक्तवायु तेहि नाउँ॥
चौपाई-खुरासानि वच दूनौ आनै। औंराके दल रसमें सानै॥

रोगके पहचानका अन्य लक्षण।

दोहा-श्वास चलै वहु दम करै, कछुक देर थँभि जाइ।
दूसर लक्षण जानियो, रक्तवायु सो आइ॥

चौपाई—मानुषका जिमि लकवा बाई । ऐसे तुरी रोग हो जाई॥
महाकठिन है रोग विशाला । याकी दवा करौ ततकाला
पैसा पैसा भरि पिसवावै । सँवरछालि टंक दश लावै ॥
लहसुनकी गाँठी सम करौ । पीसि छानि मैदा सम धरौ
गोघृतके सँग दश दिन दीजै। औरौ घृत तनु मर्दन कीजै
ईंटसेंक ऊपरते देहू । पवन बन्द मा राखै वोहू ॥
या विधि दवा करौ मन लाई । रक्तवायुको खोज नशाई॥

अन्य ।

चौपाई—देउ बतीसा चूरण याही ।मानुषकी खोपरी जेहि माही॥
तोला तोलाकी परमाना । शाम सुबह दिन बहुत विधाना॥

अन्य ।

चौपाई—सेर एक गोमूत्र मँगावै । दुइ तोला गूगुर मिलवावै ॥
औटी करिकै प्रात पियावे । गेरह दिन याही विधि पावे ॥

अन्य ।

चौपाई—वृषभ अस्थिको तैल बनाई । लेउ पतालयंत्र निकराई॥
तीन तेलकी मालिस करै । सकल देहमें सो अनुसरै ॥
तैल लगाइ बफ़ारा दीजै । ताकी दवा सबै लखि लीजै ॥
पात धतूर बकैना लावै। और सँभारू तामें नावै ॥
रहसनि अंबर वेलि मँगावै । रनिकी पाती ताहि मिलावै
जोगिआ अंडके पात मँगाई । सातौ दवा बराबरि लाई॥
माटीके बर्तन उसनावै । सकल अंगमें बाफ देवावै ॥
पाँच सात दिन या विधि कीजै।बहुत दई निशि बासर दीजै
पवन बंदमें राखै भाई । सकल वायुको नाश कराई ॥

दोहा—सकल वायुको नाशि है, कह्यो बफारा तौन।
शालहोत्र यह मत कहैं, ग्रंथ सारमें जौन॥

अथ अर्द्धांगवायुलक्षण व दवा।

दोहा—पाछिल धड़ जा बाजिको, पकरो बाई होइ।
ताहि कहत अर्द्धांग हैं, सकल सयाने लोइ॥

प्रसारिणी तैल।

दोहा-रहसनि गन्धपसारिनी, गदहपुरैना जानि।
बचुकी जर सहिंजन सहित, दोइ दोइ पल आनि॥ १॥
अजवायनि कनयर जरहि, आठ आठ पल लेइ।
अरसी सर्षप सेर दश, मिलै सबनको देइ॥ २॥
सब औषध यक संग करि, लीजै तैल पेराइ।
तैल कराहीमाहिं धरि, दीजै अग्नि चढ़ाइ॥ ३॥
सैंधव लीजै पाँच पल, ताको लेउ पिसाइ।
माठा लीजै तैल सम, दोऊ देउ पचाइ॥ ४॥
शुद्ध तैल हो जाय जब, लीजै तबै छनाइ।
ताहि लगावै अश्वके, छाहीमें बँधवाइ॥ ५॥
दाना दीजै मूँगको, सेर एक यह जानि।
पानी दीजै कूपको, मध्य दिवसमें आनि॥ ६॥
सोरठा—दीजै तैल पिआय, टका एक भरि प्रथम ही।
दीजै फेरि लगाय, तीस रोजमें जानिये॥ १॥
दोहा—आधे धड़की वायु पुनि, और कम्पियत जाय।
जो कोई या विधि करै, सगरी वायु नशाय॥ १॥

अथ कहानवायुलक्षण व दवा।

दोहा-बेर बेर बैठै उठै, नितप्रति यह गति होइ ।
असवारीमें ताहिके, ऊर्द्धश्वास चलै सोइ ॥ १ ॥
शिलाजीत गुग्गुरू सहित, गोघृत लेउ मँगाइ ।
यक यक औषध दोइपल, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
कही एक मौताज यह, दीजै दाना माहि ।
औषध दीजै सात दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अथ भस्मकवायुलक्षण व दवा ।

दोहा-कीतौ बाँई कोखिमें, कीतौ दाहिनी जानि ।
अथवा देही सब विषे, सूजनि तामें आनि ॥ १ ॥
देह छुए करकस परै, सूजनि बाढ़ति जाइ ।
गुदामाँहि पानी चलै, चूड़े कान लखाइ ॥ २ ॥
दाना घासहि खाइ बहु,अति जल पीवत होइ ।
जानौ ताहि असाध्य है,मरै सही हय सोइ ॥ ३ ॥
कहे भेलावाँ पाँच पल, तिनको लेउ मँगाइ ।
दशपल तिलके तेलमों, लीजै खूब चुराइ ॥ ४ ॥
पैसा साढ़े तीनि भरि, ताहि पिसावै आइ ।
दाना घास न दीजिये, पांच दिवस ला ताइ॥ ५ ॥
कूटि चिरैता कैफरा, दोइ दोइ पल लाइ ।
गउके मूत्र पिसाइकै, लीजै तप्त कराइ ॥ ६ ॥
मर्दन कीजै पीठपर, पांच दिवस लगु जानि ।
पानी दीजै स्वल्प तेहि, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

लंघन करिबेकी शकति, जा घोड़ेके होइ ।
औषध कीजै ताहिकी, जियत तुरी है सोइ ॥ ८ ॥

अथ कुमकुमवायुरोग लक्षण व दवा ।

दोहा-गाँठिनमें गाँठी परै, औ गाँठी फिरि जाइ ।
जानौ कुमकुम रोग है, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
माजूफल औ कैफरा, धायके फूल मँगाइ ।
सबको भाग समान लै, तिनको लेउ पिसाइ ॥ २ ॥
दोइ टकाभरि औषधी, गोघृत लेउ मिलाइ ।
औषध दीजै बीस दिन, रोग तासुको जाइ ॥ ३ ॥

अन्य कुमकुमरोगके लक्षण ।

दोहा-मोजा जाके फिरि गये, की गांठी दरशाइ ।
सोऊ कुमकुम रोग है, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
प्रथमहि नाल बँधाइकै, सूधो सुम करि देइ ।
ता पाछे पट्टी कहौं, बाँधि तासुके देइ ॥ २ ॥

पट्टीविधि ।

दोहा-प्रथम पात लै रंडके, दीजै तिन्हैं बँधाय ।
बाँधो राखै तीनि दिन, डारै फेरि खुलाय ॥ १ ॥
भीतर वाहर पाँउके, डारै बार मुँड़ाइ ।
पछना दैकै ताहिपर, पट्टी देउ बँधाइ ॥ २ ॥
आँबाहरदी दोइ पल, कुचिला दोनों आनि ।
यलुआ लीजै एक पल, ताको जलमों सानि ॥ ३ ॥
चौ०-पट्टी ऊपर ताहि लगावै । सो पट्टी लै पगहि बँधावै ॥
तीनि दिवसलौं बाँधो राखै । शालहोत्र मुनि ऐसो भाखै ॥

दोहा—खोलै चौथे रोजमें, पाकि गयो जो होइ।
यह औषध लगवाइकै, बाँधै पट्टी सोइ ॥ १ ॥
समुद्रखार हरताल अरु, नीलाथोथा आनि।
लै जमालगोटा बहुरि, और निसोदर जानि ॥२॥
अर्क दूध मँगवाइकै, तामें लेउ पिसाइ।
पछना ऊपर पगविषे, दीजै ताहि लगाइ ॥ ३ ॥
दोइ पहर बाँधो रहै, डारि फेरि खुलाइ।
जलमों नींब उसेइकै, ऊपर देउ लगाइ ॥ ४ ॥
नींब धरत तौलौं रहै, खूब साफ हो जाइ।
मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक हो जाइ ॥५॥
मोजा सूधो होइ अरु, कुमकुम रोग नशाइ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ ॥ ६ ॥

अन्य।

दोहा—यलुवा और अफीम लै, रेवतचीनी आनि।
हरदी मानुषमूत्रमों, ताहि पकावै सानि ॥ १ ॥
पट्टी ऊपर लाइ सो, दीजे ताहि बँधाइ।
औषध वही सबै करै, प्रथमहि कही जु आइ ॥ २ ॥
थूहर और मदारको, लीजै दूध कढ़ाइ।
फीहा तासु बनाइकै, दीजै ताहि बँधाइ ॥ ३ ॥
बाँधो राखै तीनि दिन, तासु जतन यह आइ।
धोवै ताहि शरावते, खूब साफ ह्वै जाइ ॥ ४ ॥
मदिरा चून मिलाइकै, रोज लगावत जाय।
जखम सूखि जब जाइगो, पग सूधो ह्वै जाय ॥ ५ ॥

अन्य।

दोहा-अजवाइनि गुड़ चोकरा, गेहूँकेर मँगाय।
थोरा पानी डारिकै, लीजै गरम कराय॥ १॥
सो लै बाँधै पगविषे, पछना दैकरि ताहि।
या विधि बाँधै चारि दिन, पाकि यहींते जाहि॥ २॥
पाती नींब पिसाइकै, तामें सहद मिलाइ।
ताहि लगावै जखमपर, साफ तभी ह्वै जाइ॥ ३॥
मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक जब होइ।
धरणी परसे शुद्ध हो, कहत सयाने लोइ॥ ४॥
पग कदाचि टेढ़ो रहै, ताको कहौं उपाय।
ताहि लगावै पगविषे, खपचै बाँधत जाय॥ ५॥
चौ०-मोम मस्तगी तैल कढ़ावै। दोइ घरीलौं ताहि बँधावै॥
ताके ऊपर देउ लगाई। मास एकमें रोग नशाई॥
दोहा-नितप्रति याही विधि करै, शालहोत्र कहि ताहि।
धरणी परशै शुद्ध पग, रोग तहीं वहि जाहि॥

अन्य।

दोहा-दालचिनी अरु जाइफल, मोम मस्तगी आनि।
मैदा लकरी एलुआ, गरी कही बखानि॥ १॥
पात सँभारूके सहित, नींबपात अरु आनि।
पात बकैना रेंडके, अरु अनारके जानि॥ २॥
सेर दोइ तिलतैल लै, दुइ दुइ पल सब पात।
दीजे अग्नि चढ़ाय सो, होइ खूब जब तात॥ ३॥

एक एक पाती सबै, तामें लेइ जराइ ।
फेरि उतारै अग्निते, लीज ताहि छनाइ ॥ ४ ॥
अंडा मुरगीके बहुरि, सो तौ लीजै चारि ।
जरदी तिनकी दूरि करि, दीजै तामें डारि ॥ ५ ॥
एक एक पल औषधी, जलमें लेहु पिसाइ ।
सबै मिलावै तैलमें, दीजै अग्नि चढ़ाइ ॥ ६ ॥
खूब लाल ह्वै जाइ जब, लेउ तबै उतराइ ।
ताहि लगावै पगविषे, खपचै देउ बँधाइ ॥ ७ ॥
मुड्डा टेढ़ो जासुको, दुवौ पगन ह्वै जाइ ।
औषध कीजे एकको, जब नीको दरशाइ ॥ ८ ॥
दुसरे मुड्डा माहिमों, औषध देउ लगाय ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तुरी नीक ह्वै जाय ॥ ९ ॥

अथ एकांगवायु लक्षण ।

सोरठा–पाँइ आगिले माँहि, कीतौ पछिले पाँइमें ।
लंग होत है आहि, दुर्बल वाजी होइ अरु ॥ १ ॥
जो तौ बरम लखाहि, रक्त तहाँते काढ़िये ।
तब औषध करु ताहि, वाजी होत अराम है ॥ २ ॥
दोहा–रहसनि गुग्गुरू गुर्च लै, गदापुरैना जानि ।
लीजै जोगिआ रंड जर, ताकी बकली आनि ॥ १ ॥
देवदारु पुनि लीजिये, पाँच पाँच पल आनि ।
अँबिलतास पुनि सोंठि लै, अरु हडजुरी बखानि॥ २ ॥
बकली झाड़ीकी जरहि, कुटकी वायबिडंग ।
सरवन पिथवन बेलकी, लेइ जरै यक संग ॥ ३ ॥

दुवौ कटैआ लीजिये, अरु बहेर सुख दानि ।
डेढ़ डेढ़ पल औषधी, पृथक पृथक जिय जानि ॥४॥
सब औषध यक ठाँव करि, दोइभाग करि ताहि ।
ताकी विधि अब कहत हौं, समुझि लेहु जियमाहि ॥५॥
चौ०–सात भाग आधेके कीजै । एक भाग तामेंको लीजै ॥
चारि सेर जल तामें डारै । आगीके ऊपर लै धारै ॥
दोहा–आध सेर बाकी रहै, लीजै तबै उतारि ।
हयको देहु पिआइ सो, श्रीधर कह्यो विचारि ॥ १ ॥
प्रातसमय यह दीजिये, सात दिवसलौं जानि ।
भाग जौन आधा रहै, ताको कहौं बखानि ॥ २ ॥
चौपाई–सात भाग ताहूके कीजै । मोठ महेला संगहि दीजै ॥
मध्य दिवसमें देहु खवाई । सतयें दिन नीको हो जाई ॥
दोहा–आमवात जाके अहै, रुधिर स्रवत की जोइ ।
चक्रवात की तौ भई, तीनों नीके होइ ॥

अन्य ।

दोहा–रहसनि मीठी सोंठि लै, असगँध देशी आनि ।
पुनि अमलोनिया जरसहित, दश दश पल सब जानि ? ।
पंद्रह पल अरु लीजिये, गुड़ पुरान मँगवाइ ।
गोघृत लीजै पांच पल, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
दश दिन दोनों वखतमें, दीजै ताहि खवाइ ।
निश्चय जानौ बात यह, बाइ छतीसउ जाइ ॥ ३ ॥

अथ वातभेद ।

दोहा–सूजनि चारिउ चरणमें, बनी रहति जो होइ ।
फेरेते वह कम परै, वातभेद है सोइ ॥ १ ॥
गदहपुरैना पीसि पुनि, बच बकुची खंभारि ।
देवदारु लहसनि सहित, सोंठि बहेरा डारि ॥२॥
सरफोंका असगँध सहित, पिपरामूल मँगाइ ।
दुइ दुइ पलकी वजन करि, सबको लेउ मिलाइ॥३॥
बीस भाग ताको करौ, चारि सेर जलमाहि ।
काढ़ा करिकै तासुको, हयको दीजै ताहि ॥ ४ ॥
या विधि दीजै बीस दिन, शालहोत्र मत जानि ।
सूजनि उतरै चरणकी, होइ रोगकी हानि ॥ ५ ॥

अथ लकवा बाईके लक्षण वा दवा ।

दोहा–लकवा मारत जाहिको, मुख टेढ़ो है जाइ ।
टेढ़ी गर्दन होति है, एक तरफको आइ ॥ १ ॥
मुश्किलसे वह खात है, दाना घासहि जानि ।
जहाँ पवन नहिं लागई, बाँधै हयको आनि ॥२॥

दवा ।

दोहा–सोंठि पीपरामूल लै, अरु अजमोद मँगाइ ।
पीपरि कुटकी कैफरा, अरु अजवाइनि लाइ ॥१॥
हरदी गूगुर लीजिये, और भेलाउँ मँगाइ ।
खुरासानि अजवाइनी, काराजीरी लाइ ॥ २ ॥
कालेश्वर बच कूट घिउ, अरु बंडार मिलाइ ।
भाग बरोबरि आनि सो, इनको लेउ कुटाइ ॥३॥

चौपाई—दश तोले सब औषध लीजै। दाना पाछे हयको दीजै॥

दोहा—दाना दीजै मोठको, अग्निमाहिं पकवाइ।
पानी दीजै गर्म करि, जब ठंढो ह्वै जाइ॥ १॥
जबतक होइ अराम नहिं, यही दवा करवाइ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताइ॥२॥

अन्य, तेल।

दोहा—लेउ सँभारू रंड अरु, अर्क बकैना आनि।
थूहरकी छीमी कही, और धतूरो जानि॥

चौपाई—इनके सबके पात मँगावो। करुये तैलहि आनि जरावो॥
सेंकि सेंकि गर्दन पर मलई। पहर एकमें पीड़ा हरई॥

अन्य।

दोहा—इंद्रायनिके बीज लै, और मुसब्बर आनि।
और मस्तगी लीजिये, अकरकरहा जानि॥ १॥
अंबरु हिंदी तगरु लै, भाग समान मँगाइ।
औषध तोले दोइ भरि, सबको लेउ पिसाइ॥२॥
सहद पाउ भरि लीजिये, ता सँग देउ खवाइ।
या विधि कीजै सात दिन, रोग दूरि ह्वै जाइ॥३॥

अन्य।

दोहा—वायबिडंगी कूट लै, और मुसब्बर लाइ।
डारे हयके कानमें, तिलको तैल जराइ॥

अन्य।

दोहा—कुटकी हर्र बहेर लै, शिलाजीत गुड़ आनि।
हरदी साबुन सोंठि पुनि, हरदीदारु बखानि॥१॥

बकली रूसेकी बहुरि, बीस टका भरि जानि ।
सबको भाग समान लै, आठ सेर जल आनि ॥ २ ॥
चौ०—सब औषध अधकचरा कीजै । जल मिलाइ परिपक्क करीजै
चौथा हींसा जल रहि जावै।तब उतारि मलि छानि धरावै
ताके हींसा तीनि करीजै।तीनि रोज नित प्रातहि दीजै ॥
याविधि चौदह दिन लगु करिये।ता पीछेविधियहअनुसरिये
पाव एक मेथी मँगवावै । मोठि सेर भरि मिलै पकावै ॥
दोहा—काढ़ा प्याइक दीजिये, यही महेला रोज ।
पानी औटा दीजिये, रोगक रहै न खोज ॥

अथ वातगुर्ग लक्षण ।

दोहा—गर्दन कन्धो जासुको, सूखि तुरीको जाइ ।
चमड़ा चपकै हाड़मों, वातगुर्ग सो आइ ॥ १ ॥
सूखति ताकी पीठि फिरि, पीड़ा अति अधिकाइ ।
सूखब ताको होइ कम, यह औषध करवाइ ॥ २ ॥
रंडतेल तिलतेल सम, दोऊ लेय मिलाइ ।
तामें थोड़ा डारिये, मैनशिलहिको लाइ ॥ ३ ॥
सूखेपर मलि देइ सो, रंडपात सेंकवाइ ।
बाँधै ऊपर ताहिके, शालहोत्र मत आइ ॥ ४ ॥
चौपाई—एकजगह जो सूजनि आवै।होइ अराम अश्व सुख पावै॥
जो अराम नहिं देइ दिखाई।तौ ताको चीरौ-गिरवाई ॥
चारो पाँइ उपर करि बाँधै।ता ऊपर फिरि यह विधि साधै
सूखि खाल जहँ देइ देखाई । ताकै पाँजर देउ चिराई ॥
आँगुर भरि तहँ घाउ करावै। रंडाकी चोंगलि बनवावै॥

तेहि लगाइ करि फूँकौ वाही । घाउमें हवा बहुत भरि जाही
खाल पकरि चुटकीसे लेहू । भीतर हवा भरै तेहि देहू ॥
देउ दबाइ हाथते वाही । चमड़ा हड्डी छाँड़ै जाही ॥
दफा एक दुइ तीनि करीजै। तेहिके उपर और विधि कीजै॥
मिला मैनाशिल तेल मँगाई । ऊपर लिखा जौन है भाई ॥
जखममाहिं सो तेल भरीजै । सूखी जगह दावि करि दीजै॥
टाँका घाउमें देव देवाई । फिरि घोड़ेको ठाढ़ कराई ॥
काठ तिपाई यक बनवाई । पेटतरे सो देइ गड़ाई ॥
घोड़ा फिरि बैठै नहिं पावै । सोई जतन स्वामि करवावै ॥
जखम पास सूजत है ताके । निकरै पीबु चारिये वाके ॥
फिरि तापर मलहम लगवावै । होइ अराम अश्व सुख पावै
फेरि वताना देखै तेहिको । देइ मसाला वाजिव वहिको॥

अथ ऊर्ध्ववायुलक्षण व दवा ।

दोहा-अंडकोश यक तरफको, ऊपरको चढ़ि जाइ ।
अंड चढ़ै जेहि तरफको, पाँव तौन लँगराइ ॥ १ ॥
नींव पात उसवायकै, देइ बफारा ताहि ।
करै लँगोटा वस्त्रको, बाँधै भरता वाहि ॥ २ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा-यह औषध करि पाँच दिन,जो अराम नहिं होइ ।
ताकी औषध कहत हौं, जानि लेहु अब सोइ ॥ १ ॥
अंड एक चढ़ि जाय सब, नहीं देखाई देइ ।
औषध कीजे ताहिकी, ताते नीको होइ ॥ २ ॥

यह बीमारी कठिन है, अंड चढ़ा रहि जाइ ।
पाँव सूखि तेहि जात है, ताज्जुब नाहिं मरिजाइ ॥ ३ ॥
पपिारि तोले एक लै, ताको लेउ कुटाइ ।
ताते दुगुनी सोंठि लै, तामें देउ मिलाइ ॥ ४ ॥
तीनि सेर गोदुग्ध लै, औषध लेउ मिलाय ।
पहर एक दिन भीतरै, ताको देउ पिआय ॥ ५ ॥
चौ०—पक्की तौल दूधकी कही । सात रोज हय दीजै सही ॥
यक खराक मौताज बताई।यतनी रोज दीजिये भाई॥

अन्य ।

दोहा—पैर पिछारा माहिकी, पट रग देउ खुलाय ।
खून निकारै ताहिते, वाजि नीक ह्वै जाय ॥ १ ॥
नींबपात मँगवाइकै, देइ बफारा वाहि ।
बाँधै भर्त्ता नींबको, फिरि हुकना करु ताहि ॥ २ ॥

दवा हुकना ।

दोहा—अजवायनि अजमोद लै, हरदी सोंठि मिलाइ ।
बायबिडंगहि लाइ पुनि, सबको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
औषध तोले बीस भरि, सात सेर जलमाहि ।
ताहि चुरावै अग्नि पर, तीनि सेर रहि जाहि ॥ २ ॥
फेरि उतारै अग्निते, खूब मलाय छनाय ।
आध पाव तिल तैल लै, सो तेहि माहिं मिलाय॥३॥
हुकना कीजै वाहिसे, और मसाला देय ।
शालहोत्र मत जानिकै, देखि बताना लेय ॥ ४ ॥

अथ बलगमवायुलक्षण व दवा ।

दोहा—पाछिल धड़ काँपत अहै, वात भई यह लोय ।
बैठै सो मुश्किल किये, उठिकै ठाढ़ो होय ॥ १ ॥
पैर दुओ लरखरत हैं, राह चलतमों आनि ।
ये लक्षण हैं जाहिमें, वात बलगमी जानि ॥ २ ॥
चौ०—खुरासानि अजवाइनि कही।सोंठि जवाइनि पीपरिलही।
कारा जीरि भेलावाँ लावै।सबै दवा यकमाहिं मिलावै॥
दोहा०—हरदी दोनों कैफरा, अस कालेश्वर आनि ।
घोड़वच अरु बंडार कहि, भाग बरोबरि जानि॥१॥
कूटै अति बारीख करि, सबको लेउ मिलाइ ।
पैसा भरि लै शामको, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दाना दीजै मोठको, अगिमाहिं पकवाइ ।
मेथी लीजै पाउ भरि, सोऊ लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
तैल जौन लकवा विषै, कहो अहै सुखदाइ ।
हयको पछिले अंगमें, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
हुकना कीजै ताहिको, दवा लेउ मँगवाइ ।
ऊर्ध्व वायुमें जो कही, सोइ दवाई आइ ॥ ५ ॥
ऐसे घरमें राखिये, नहीं पवन छुइ जाइ ।
गरुई झूल मँगाइ करि, दीजै ताहि उढ़ाइ ॥ ६ ॥

अथ गाँठियावायुलक्षण व दवा ।

दोहा—अगिले पछिले पाँवकी, गाँठी फूलि जु जाहि ।
लंग करत है तासु पग, गाँठिया जानो ताहि ॥ १ ॥

कुचिला पैसा एक भरि, तिनको लेउ भुँजाइ ।
गोली चना प्रमाणकी, ताको लेउ बनाइ ॥ २ ॥
दाना पाछे शामको, गोली एक खवाइ ।
यहि विधि दीजै नित्त प्रति, रोगनाश ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अथ धड़कावायुलक्षण व दवा ।

दोहा—बहुत चलत है बाजि जो, की अति दौरो होइ ।
वात दबावति आनि तब, धड़का कहिये सोइ ॥ १ ॥
धड़काकी पहिचानि यह, सुस्त बदन ह्वै जाहि ।
दिलमारे हफ्फत बहुत, सीना हालति आहि ॥ २ ॥
औषध कीजै जल्द तेहि, नाहिन यह गति होइ ।
करै सवारी ताहि जब, ऐसिय गति तब सोइ ॥ ३ ॥
ताजा लोहू छागको, सेर एक सो जानि ।
मिर्चै पीसै टका भरि, मिलवै तामें आनि ॥ ४ ॥
पाँच रोज यहि तरहसे, हयको देउ पिआइ ।
लीजै सोंठि छटाँक भरि, दूनो गुड़हि मिलाइ ॥ ५ ॥
हयको देउ खवाइ सो, तुरत नीक ह्वै जाइ ।
खोलै ताके फस्त जो, तुरी सही मरि जाइ ॥ ६ ॥

अथ जहरवात लक्षण व दवा ।

दोहा—हाथ पांव गर्दन सहित, सूजै हयकी आइ ।
चौहर जाकी नहिं चलै, खाइ घास ना जाइ ॥ १ ॥
सूजि बिथरि पानी बहै, लखि लबाबके तौर ।
सो जलके लागे बढ़ै, जहरवात करि गौर ॥ २ ॥

हरदी पिपरामूल अरु, कुटकी सोंठि मँगाइ।
भाँग भेलावा मिर्चयुत, सबै समान कराइ ॥ ३ ॥
औषध तोले षट सबै, सबको लेउ पिसाय।
दाना पाछे ताहिको, हयको देउ खवाय ॥ ४ ॥

अन्य।

दोहा-घँमिरा पात मँगाइये, अंबरबेलि मँगाइ।
लेउ सँभारूपात अरु, पात धतूरा लाइ ॥ १ ॥
लीजै सबको भाग सम, जलमें लेउ पकाइ।
सहत सहत हय पीठि पर, ताको देउ धराइ ॥ २ ॥
चारि घरी लग सेंकिये, याही विधिसों जानि।
खुलति देह तब वाजिकी, श्रीधर कहो बखानि॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा-जर लौकाकी लीजिये, बकली तासु मँगाइ।
निरगुंडी औ हींग लै, बच अरु सोंठि मिलाय ॥ १ ॥
लै पलाश पीपरि सहित, सैंधव बाइबिडंग।
चारि चारि मास सबै, जानौ सहित उमंग ॥ २ ॥
सेर एक लै गाइ घिउ, औषध सबै मिलाय।
हयको दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाय ॥ ३ ॥
सेंकनकी विधि जो कही, सेंक वही विधि देइ।
शालहोत्र मुनि यों कहै, वाजी नीको लेइ ॥ ४ ॥

अन्य जहरवात लक्षण।

दोहा-बलगमते जो होत है, जहरवात तनु आइ।
तासु बताने माहिं सो, रंग श्वेत दरशाइ ॥ १ ॥

बीरबहूटी एकपर, गुड़ लीजै लपटाय।
या विधि दीजै तीनि दिन,जहरवात मिटि जाइ॥२॥

अन्य जहरवात लक्षण।

दोहा–रंग बतानेको जरद, सूजनि करीं होय।
प्रथमहि औषधि जो कही, देतै नीको होइ॥

अन्य लक्षण।

दोहा–अंड सूजि जाके गये, देखि बताना तासु।
प्रथम जौन औषध कही, ताको दीजै आसु॥ १॥
तिलको तैल मँगाइकै, ताको देउ लगाय।
रूस पात लै जोस करि, तिनको देउ बँधाय॥ २॥

अन्य।

दोहा–दुहूँ रानमें जौन रग, तिनते खून कढ़ाइ।
ता पाछे यह औषधी, ताको देउ खवाइ॥ १॥
लोन लहौरी घृत सहित, तोले डेढ़ मँगाय।
ते दोनों मिलवाइकै, दीजै लेप कराय॥ २॥
मडुआ पात मँगाइकै, तिनको लेइ उसेइ।
वाजीके बैजा विषे, बाँधि रोज सो देइ॥ ३॥

अन्य लक्षण।

दोहा–सूजनि सब पोतन विषे, जा वाजीके होइ।
खील सोहागा दीजिये, अदरखके रस सोइ॥
चौ०–मासे तीनि सोहागा लीजै।सानिक अदरखके रस दीजै

अन्य।

दोहा–भाठीकी जर सोंठि अरु, पीपरि मिर्च मँगाइ।
बकली गूलरि वच सहित,रिंगिनिकी जर लाइ॥ १॥

चारि चारि मासे सबै, औषध लेउ मँगाइ।
बकली लीजै रंडजर, मासे दुइ मिलवाइ ॥ २ ॥
सेर एक लै गाइ घृत, औषध ताहि मिलाय।
रोज तीनिमें औषधी, हयको देउ खवाय ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—काराजीरी लीजिये, गेरू सोंठि मँगाइ।
अरु कचूर मँगवाइकै, भाग समान कराइ ॥ १ ॥
गोबरके रसमाहिं सो, लीजै खरल कराइ।
छिरकामो सो तप्त करि, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
कद अरु मौसम देखिकै, या औषधको देइ।
चंडीके परतापते, बाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—टेसू फूल मँगाइकै, जलमें लेउ पकाइ।
सो बाँधै दिन सातलौं, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥

अन्य।

दोहा—मिर्च पान अदरख सहित, बीज कसौंजी लाइ।
दोइ टकाभरि लीजिये, भोग समान कराइ ॥१॥
जहरवात विष बेलि अरु, दूरि सही ह्वै जाय।
शालहोत्र मुनिनाहको, मतो गूढ यह आय ॥ २ ॥

अन्य।

दोहा—राई पीपरि मिर्च लै, टका टका भरि लाइ।
हींग सोहागा लीजिये, और अफीम मिलाइ ॥ १ ॥
लौंग अकरकरहा सहित, इनको लेउ मँगाइ।
पैसा पैसा भरि कही, सबको लेउ मिलाइ ॥ २ ॥

सोंठि पीपरामूल लै, कर्ष कर्ष भरि लेउ ।
छालि सहींजन कूटिकै, ताहूको रस देउ ॥ ३ ॥
लघु अँवरा परमानकी, गोली लेउ बनाय ।
प्रात साँझ यक यक वही, हयको देउ खवाय ॥ ४ ॥
जहरवात नाशै सही, मंद अग्नि मिटि जाइ ।
भोजनपर अति रुचि बढ़ै, शालहोत्र मत आइ ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा–शोथ होइ जो देहमें, औ गर्दनमें जानि ।
जकरि जाय जो वाजिकी, जहरवात सो मानि ॥ १ ॥
हींग सोंठि अजमोद लै, कारीजीरी आनि ।
भाग बरोबरि कीजिये, अजवायनि अरु जानि ॥ २ ॥
जलसों पीसै औषधी, लीजै तप्त कराइ ।
शोथ होय जहँ अंगमें, दीजै लेप कराइ ॥ ३ ॥
शोथ सकल मिटि जाइ जब, तबकी यह विधि आहि ।
रुधिर काढ़िये ताहिको, छातीकी रगमाहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–वातरोग है जाहि तनु, जहरवात अरु होइ ।
औषध ताकी कहत हौं, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
मेथी लीजै सेर यक, ता सम हर्र बखानि ।
पात बकैना लेउ पुनि, सेर अढ़ाई आनि ॥ २ ॥
सज्जी लीजै सेर भरि, सबको लेउ पिसाइ ।
भेड़ीमूत मिलायकै, दीजै तेहि गड़वाइ ॥ ३ ॥

गाड़ै ताको सात दिन, लीजै फिरि निकसाइ ।
पैसा भरि तेहि अश्वको, दीजै ताहि खवाइ ॥ ४ ॥
मंद अग्नि अरु बाइ पुनि, जहरवात हरि जाइ ।
औषधि दीजै सात दिन, हरिबल देत बढ़ाइ ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा—बरम पेटतर होइ जो, जहरवात सो आइ ।
सबक कहत हैं ताहिको, सो हयको दुखदाइ ॥ १ ॥
छाती अरु गर्दन विषे, तहाँ बरम जो होइ ।
सबकी औषधि एक है, शालहोत्र मत सोइ ॥ २ ॥
जौलौं थोरी बरम है, वाजीके तनु माहि ।
तौलौं यह औषध करै, शालहोत्र मत आहि ॥ ३ ॥
गोबर लीजै महिषको, महिषीमूत्र मिलाइ ।
डारै खारी लोन अरु, लीजै ताहि पकाइ ॥ ४ ॥
लेप कीजिये ताहिको, बरम दूरि ह्वै जाइ ।
बरम नहीं यासों मिटै, अरु इजादि दरशाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—कारीजीरी पीसि जल, लीजै तप्त कराइ ।
लेप कीजिये ताहिको, बरम दूरि ह्वै जाइ ॥

अन्य ।

दोहा—भरता बाँधै नींबको, बरम नरम ह्वै जाय ।
पछना दैकै ताहि पर, दीजै जहर गिराइ ॥ १ ॥
भरता बाँधत जाइ फिरि, जखम साफ दरशाइ ।
तब तापर मलहम धरै, जखम नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

कारीजीरी सोंठि अरु, नितहि खवावत जाइ।
तौलौं दीजै औषधी, जब नीको दरशाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा–हरदी सज्जी लोनको, सम करि लेउ पिसाइ।
पछना दैकै बरम पर, हयको देहु मलाइ ॥ १ ॥
पात रेंडके गरम करि, ऊपर देउ बँधाइ।
जहर सकल गिरि जाइ जब, बाँधै नींब पिसाइ ॥ २ ॥
जखम साफ ह्वै जाइ जब, मलहम देउ लगाय।
शालहोत्र इमि उच्चरै, तुरी नीक ह्वै जाय ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा–सहिंजन छालि मँगाइकै, लीजै ताहि कुटाइ।
यकइस दिन लगु दीजिये, एक टका भरि लाइ ॥

अन्य लक्षण।

दोहा–जहरवात है जाहि तनु, भूँख तासु घटि जाइ।
ताकी औषध जो अहै, सो अब देत बताइ ॥ १ ॥
सेर एक भरि लीजिये, पाँचो लोन मँगाय।
कारीजीरी सेर भरि, दोऊ लेउ कुटाय ॥ २ ॥
सोंठि मिर्च पीपरि सहित, कालेश्वर अरु लाय।
हरदी अजवाइनि सहित, पिपरामूल मँगाय ॥ ३ ॥
बायबिडंगहि लेउ पुनि, सेरु सेरु सब आनि।
हींग सहित लहसुन बहुरि, सात टका भरि जानि ॥ ४ ॥
टका दोइ भरि लीजिये, एक खुराक बखानि।
शालहोत्र इमि उच्चरै, होइ रोगकी हानि ॥ ५ ॥

अन्य।

दोहा-सिरसापात मँगाइकै, लीजै राँगु कढ़ाइ।
फीहा ताको बाँधिये, तीनि दिवस सुखदाइ॥१॥
नीलाथोथा मेलिकै, फेरि देउ बँधवाइ।
षट दिनके पर्यन्तमें, सूजनि सब पचि जाइ॥२॥

अन्य।

दोहा-सज्जी साँभरि लोन लै, हरदी देउ मिलाइ।
औषध पैसा दोइ भरि, भाग समान कराइ॥१॥
औषध दीजै सात दिन, यतनी यतनी आनि।
पात धतूर बँधाइये, एक दिवस यह जानि॥२॥
अरु पाती अंजीरकी, तेऊ लेउ मँगाइ।
सो बाँधै लै तीनि दिन, सूजनि सब मिटि जाइ॥३॥

अन्य लक्षण व दवा।

दोहा-जहरवात जाको गहै, सरदी गरमी होइ।
आगे ताको है कहो, लक्षण लीजे जोइ॥१॥
कारीजीरी तूतिया, वायविडंग मँगाइ।
लेउ सोहागा मिर्च अरु, मेथी कुटकी लाइ॥२॥
छालि सहींजनकी सहित, पाँचौ लोन बखानि।
लीजै जंगी हर्र पुनि, लहसुन हालिम आनि॥३॥
गूगुर पिपरामूरि अरु, पुनि अजवाइनि जानि।
लेउ मैनफल सोंठि पुनि, वच अरु हरदी मानि॥३॥
चौ०-मुर्दाशंख लेउ मँगवाई। सुमिलखार तामें मिलवाई॥
नागकेसरीको पुनि लीजै। वजन बराबरि सबको कीजै॥

दोहा–खुसियारी यक होति है, तृण ऊपर सो जानि।
सहित चिरैता लीजिये, श्रीधर कह्यो बखानि ॥ १ ॥
पैसा पैसा भरि सबै, औषध लेउ मँगाय।
पाँच टका भरि पीपरी, तामें देउ मिलाय ॥ २ ॥
लेउ धतूरे फल बहुरि, टका चारि भरि आनि।
पाँच पसेरी लीजिये, मेषमूत्र यह जानि ॥ ३ ॥
यक बरतनमें सो भरौ, औषध सबै मिलाइ।
सो चढ़वावै अग्निपर, लीजै ताहि चुराइ ॥ ४ ॥
मूत्र सबै जरिजाइ जब, दीजै अग्नि बुझाइ।
औषध ठंढी होइ जब, लीजै ताहि पिसाइ ॥ ५ ॥
दुइ दुइ पलकी बाँधिये, यक यक गोली जानि।
साँझ सकारे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ६ ॥
रोग घटै अरु बल बढ़ै, क्षुधा तासु अधिकाइ।
औषध दीजै सात दिन, जहरवात मिटि जाइ ॥ ७ ॥

अन्य लक्षण व दवा।

दोहा–कर्णमूलके भीतरै, जाके सूजनि होइ।
जहरवात तेहि जानिये शालहोत्र मत सोइ ॥
चौ०–तोला एक मुसब्बर लीजै। पोस्तासुत मासे भरि दीजै॥
आँबाहरादि रजनि पुनि लेहू। छा छा मासे दोऊ देहू ॥
दोहा–जलमें ताको पीसिकै, सीर गरम करवाइ।
सो लै हयके कानपर, दीजै ताहि लगाइ ॥

अन्य।

दोहा–सैंधव साबुन लीजिये, छिरका काटि मँगाइ।
ताकी पोटरी बाँधिकै, दीजै कान सेंकाइ ॥ १ ॥

पाकि जाइ आमास जो, दीजै ताको फारि।
होत बिमारी कठिन सो, औषध करै विचारि ॥ २ ॥

अथ शरदी व गरमी दोनोंके जहरवातोंकी दवा।

दोहा—ईसबंद पीपरि मिरच, हर्दी बायबिडंग।
अजवायनि घोड़बच बहुरि, कारीजीरी संग ॥ १ ॥
सज्जी कुटकी सोंठि पुनि, राई गूगुर आन।
खील सोहागाकी बहुरि, पिपरामूल बखान ॥ २ ॥

सोरठा—साँभरि सोंचर आनि, चारि चारि तोले सबै।
सेर सेर पै जानि, लहसुन और पिआजु पुनि ॥

दोहा—नींब बकैना सहिजना, और कसौंजी जानि।
पाती लीजै सबनकी, चारि चारि पल आनि ॥ १ ॥
सबको कूटै एकमों, जलमें लेइ पकाइ।
गोली ताकी बाँधिये, फेरि शराब मिलाय ॥ २ ॥
तीनि तीनि पलकी सबै, गोली बाँधै ताहि।
ताहि खवावै नित्यप्रति, दाना दीजै नाहि ॥ ३ ॥
लेउ पिसान मसूरको, सेर एक कहि ताहि।
ताहि शराब मिलाइये, रोज खवावात जाहि ॥ ४ ॥

अन्य लक्षण व दवा।

दोहा—जाकी सब देहीविषे, गूँथी सी परिजाय।
गूँथिनते लोहू चलै, जहरवात सो आय ॥

सोरठा—नींबूके रसमाहिं, तजहि मिलावै आनिके।
ताको लेप कराय, औषध दीजै खानको ॥

दोहा–सैंधव अजवाइनि सहित, बायबिडंग मँगाय ।
पाँच पाँच तोले सबै, तिनकों लेउ पिसाय ॥ १ ॥
गोघृत पैसा पाँच भरि, तामें देउ मिलाइ ।
यह औषध दिन सातमें, दीजै सकल खवाइ ॥ २ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा–सूजानि ह्वैकै प्रथम ही, फूटि फेर जो जाइ ।
जखम नीक सो होइ नहिं, वाजी अति दुबराइ ॥ १ ॥
कारी जीरी मिर्च पुनि, अरु बंडार मँगाय ।
जीरा लेउ सफेद पुनि, कुटकी सौंफ मिलाय ॥ २ ॥
अरु घोड़बचको लीजिये, भाग बरोबरि आन ।
तीनि सेर साढ़े सबै, एती औषधि जान ॥ ३ ॥
खुरासान अजवाइनी, सज्जी बायबिडंग ।
पाव पाव सब लीजिये, औरौ कूट प्रसंग ॥ ४ ॥
सबको पीसि मिलाइकै, शालहोत्र मत जानि ।
साँझ सकारे दीजिये, एक एक पल आनि ॥ ५ ॥

अन्य लक्षण व दवा ।

दोहा–चौहैं जाकी नाहिं चलै, जहरवात सो आहि ।
या कछु सूजनि होति है, जानि लेहु मनमाहि ॥ १ ॥
हर्र चिरैता सोंठि लै, कुटकी पीपरि आनि ।
रेवतचीनी लेउ पुनि, नागरमोथा जानि ॥ २ ॥
गूदी लीजै बेलकी, अरु अजमोद मँगाइ ।
सेर एक जल डारिकै, सबको लेउ पकाइ ॥ ३ ॥

सोरठा—आधा जल जरि जाय, ताहि उतारि मिलाइये।
ताको लेहु छनाय, कवि श्रीधर यह जानिये ॥ १ ॥
वंशलोचनहि लाइ, टका एक भरि तौलिकै।
तामें देउ मिलाइ, ताहि पिआवै वाजिको ॥ २ ॥
लीजै चना भुँजाइ, दाना दीजै ताहिको।
फेरत नितप्रति जाइ, दुहूँ बखतमों दीजिये ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—भूँजे चना पिसानु लै, ता सम मिर्च मिलाय।
दीजै हयको पाउ भरि, तहू चौंह खुलि जाय ॥

अन्य खूर्ना जहरवातके लक्षण।

चौपाई—असवारी हयको बहु परै। की अति बोझा ता पर धरै॥
की गरमीका मौसम होई। जहरवात वाजीके जोई ॥

दोहा—खूनहि सूजानि खाति है, होशु रहै नहिं ताहि।
हप्फै अरु गिरि गिरि परै, जहरवात सो आहि ॥ १ ॥
खाली ताको फेरिये, जब ठंढो ह्वै जाय।
शीतोदकसो धोइकै, शीतल नीर पिआय ॥ २ ॥
साँभरि लोनु मिलाइकै, यवके आटामाहि।
आध पाव मौताज करि, हयको दीजै ताहि ॥ ३ ॥
फिरि ताको कैजा करै, जलसों छिरकत जाइ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, याही जतन कराइ ॥ ४ ॥

सोरठा—बीति घरी भरि जाइ, कैजा खोलै ताहिकी।
हरी दूबको लाइ, ताहि खवावै वाजिको ॥ १ ॥

तुरी मिजाजहि माहि, जानै गर्मी बहुत है ।
रंग बताने काहि, सुर्ख होइ अति तासुको ॥ २ ॥
दोहा—होइ नितैप्राति सुस्त सो, भूँख रहै नहिं ताहि ।
यहि विधि ताकी औषधी, शालहोत्रमत आहि ॥

अन्य ।

दोहा--ताकी तारू जीभमों, दीजै फस्त खुलाइ ।
ताहि तुरीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥

दवा ।

दोहा—हर्र बहेरा आँवरा, और सहतरा आनि ।
सौंफ सहित सब लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ॥
सोरठा—यवको आटा लाइ, सबको पीसि मिलाइकै ।
हयको देउ खवाय, पानीके सम जानिये ॥

अन्य लक्षण ।

सोरठा—खून सूखतो जाइ, खबरि तासुकी लेइ नहिं ।
खून तासु ह्वै जाइ, पानीके सम जानिये ॥
दोहा—बरम होति है ताहितै, वाजीके तनुमाहि ।
जो तौ सूजनि होइ नहिं, तौ यह गति ह्वै जाहि॥ १ ॥
पेटु तासु फूला रहै, सुस्ती अति सरसाइ ।
औरौ मन मारे रहै, भूँख तासु घटि जाइ ॥ २ ॥
जीरा काला सहतरा, अरु अजमोद मँगाइ ।
पात कसौंजी सौंफ पुनि, एक एक पल लाइ ॥ ३ ॥
सोरठा—सबको पीसि मिलाय, दाना पाछे साँझको ।
हयको देउ खवाय, दाना आधो दीजिये ॥ १ ॥

अधिक रोग दरशाहि, फस्त तासुकी खोलिये।
जीभहि तारू माहि, तंग तरेकी रगविषे ॥ २ ॥

अन्य लक्षण।

दोहा—जहरवात ज्यादा भये, खून जर्द परिजाइ।
जमत पेट तर आइकै, तुरी रोज दुबराइ ॥ १ ॥
कोई हयकी देहमें, छालासे परि जाँय।
कछुक दिननके बाद फिरि, पाकि सही ते जाँय ॥ २ ॥
मोथा हर्दीके सहित, विषखोपरा जर आनि।
जीरा लेउ सफेद पुनि, औ मछुरेठी जानि ॥ ३ ॥
डेढ़ डेढ़ तोले सबै, यवके आटा माहि।
ताहि खवावै सात दिन, जहरवात मिटि जाहि ॥ ४ ॥

अन्य लक्षण।

दोहा—पेटु जासु फूलो रहै, दाना घास न खाय।
शालहोत्र मत जानिकै, ताको कहौं उपाय ॥
सोरठा—दागै ताको आनि, तोंदी आगे जानियो।
आँगुर चारि बखानि, बीच दीजिये नाभिसो।
दोहा—सेंदुर दूध मदारको, तिलको तेल मँगाइ।
एक एक मासे सबै, तापर देउ मलाइ ॥ १ ॥
सूजनि तामें होति है, तीनि रोज लगु जानि।
फिरि वह कमती परति है, ता विधि कहौं बखानि ॥ २ ॥
सोरठा—पछना देउ देवाइ, चारौ तरफन दागके।
मुनिवर दियो बताय, पै नस्तर बारीखसों ॥

दवा खानेकी ।

दोहा–स्याह जीर पुनि कूट लै, दुइ दुइ तोले जानि ।
एक मास पुनि ताहिको, रोज खवावो आनि ॥ १ ॥
नींव सँभारू पातको, देइ वफारा ताहि ।
मलहम ताहि लगाइये, पीबु जबै बहि जाहि ॥ २ ॥

अन्य लेप ।

चौ०–रेहू हरदी कनिक मँगावै । लोनु आँबिली सम पिसवावै ॥
पानी घोरि गर्म करवावै । तीनि दई सो लेप लगावै ॥
ताके पीछे मलहम करै । याते जहरवात सब हरै ॥

अन्य ।

चौ०–नीलाथोथा अरु कामीला । आध पाव लै दूनों तौला ॥
हरदी पीत रार मँगवाई । सेर सेरकी वजन कराई ॥
दुइसेर तिलको तेल मँगावै । ताहि बराबरि साबुन लावै ॥
पीसि छानिकै मलहम करै । पावकमध्य पक्कै धरै ॥
घायन ऊपर याको चुपरै । तुरतै जहरवातको हरै ॥

अन्य ।

चौ०–काराजीरी औ बंडारा । लेप करौ रुज जैहै मारा ॥
या सम और लेप नहिं होई । सूजनि बरम जाइ सब खोई ॥

अन्य ।

चौ०–मिर्च कसौंजी अदरख पाना । चारौ करौ एक परमाना ॥
सात रोज घोड़े मुख धरै । जहरावत विषवेली हरै ॥

अन्य ।

दोहा–सिंगरफ सोंठी शंखिया, बीरबहूटी आनु ।
जवाखार माजूफलै, समुदखार सो जानु ॥

चौ०-लेउ करनफल देउ मिलाई। अदरखरसमें पीसि बनाई ॥
तीनि तीनि मासे सब लीजै । गोली मासे यक यक कीजै॥
यक गोली नित प्रात खवावै। जहरवातको खोज नशावै॥

अथ जहररोगलक्षण व दवा ।

दोहा-मुखते बहु लारै गिरै, दृगन नीर अधिकार ।
जहर रोग सो जानियो, शालहोत्र मत सार ॥
सोरठा-पिपरी राई सोंठि, हरदी मिरच मिलाय सम।
रोग डारि है खोंटि, पिंडी करि दीजै तुरय ॥

बफारा ।

दल अंडाको आनि, और खिरहरीको लियो ।
अरु अहरा परमानि, याहीते सेकौ सुघर ॥

अन्य ।

चौ०-सुमिलखार सिंगरफ लै आवै । अकरकरा औ मिर्च मँगावै
मुर्दाशंख पापरी खारा । तोला चारि चारि सब डारा ॥
दुइ तोला तूतिया प्रमाना। पीसि छानि अदरखरस साना
ताकी गोली करौ विधाना । रत्ती चारि भारि है परमाना॥
याते रोग जहरको खोइ । बुधजन जतन करै जो कोई ॥

अन्य ।

चौ०-तोला भारि पारा मँगवावै । गुड़ पुरान दुइ तोला लावै ॥
रहसानि अजवाइनिको लीजै। दुइ दुइ तोला वजन करीजै॥
पीसि छानि गोली षट करै । तीनि रोज मुखमें सो धरै ॥

अन्य ।

चौ०-रेंडी स्याह मिर्च पिसवावै । बाती करि इंद्री चलवावै ॥

अन्य ।

चौ०–जवाखार अरु रेवतचीनी । धेला धेलाभरि करि लीनी ॥
चीनी आध पावमें घोरै । हयको देय सकल दुख छोरै ॥

अन्य ।

चौ०–चागोरीको साग मँगावै । चीनी मिलै अश्व मुख नावै ॥
खुलै पेशाव रोगको हरै । शालहोत्र या विधि उच्चरै ॥

अन्य ।

चौ०–नागोरी असगंध लै आवै । टुकरा भरि घृतमाहिं सनावै ॥
याके दिये जहर हरि जावै । शालहोत्र यह वचन सुनावै ॥

अथ जहरदौरा रोग लक्षण व दवा ।

दोहा–मुख सूजै गिलटी परै, देहभरेमें जानु ।
कोई कोई तुरँगके, छाला परै सो मानु ॥
चौ०–बहुत कठिन रुज याको जानौ । दवा करौ जलदी बुधिमानौ
सेर एक दल तूत मँगावै । एक छटांक मिरच मिलवावै ॥
दोहा–चनाके आटामें मिलै, पिंड बनाय खवाय ।
तीनि चारि दिन दीजिये, तुरी नीक ह्वै जाय ॥
चौ०–जो तोरई बंडार कहावै । मुख सूजनि पर पीसि लगावै ॥
दोहा–जौन बतीसा है लिखा, मानुष खुपरी बाल ।
तौल मसाला दीजिये, तुरी नीक ह्वै हाल ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत अनेक वातव्याधिवर्णन नामक दशम अध्याय ॥ १० ॥

अथ चाँदनी मारनेकी विधि।

दोहा-करते हयके माथलौं, हनै चपेटा जानि।
आँखि पलटि जावै जबै, करै मर्ज पहिचानि॥

चौ०-रोग चाँदनी लक्षण भाखौं। जो निदान मनमें गुणि राखौं॥
मारै हयको आकसमातै। देर न लागै दाना खातै॥
घाव अंगमें जाके होई। हनै चाँदनी ताका सोइ॥
प्रथम रोग मस्तकमें आवै। अंग अंगमें फिरि घुसि जावै॥
हाथ पाँव नहिं झुकै झुकाई। और पूँछ लकुटी हो जाई॥
उदर कठोर बहुत ह्वै जावै। अँगुरी नाहीं गड़ै गड़ावै॥
ठाढ़ रहै महिमें नाहिं परै। दाना घास सबै परिहरै॥
पांच सात दिन ठाढ़ो रहै। ता पाछे हय मृत्युइ गहै॥

दवा।

चौ०-महिषी गोबर लै टक एका। गुड़ पुरान लै दून विवेका॥
चनाके आटा संग खवाई। रोग चांदनी दूरि कराई॥

अन्य।

चौ०-मेथी तीनि टका भरि लीजै। सम करि लहसुन तामें दीजै॥
पिपरी मिरच सोंठि अरु पाना। छालि सहींजनकी सम आना
कंज मैनफर सन यक करौ। पैसा भरि गोली अनुसरौ॥
प्रात सांझ घोड़ेको दीजै। रोग घटै जो औषध कीजै॥

अन्य।

चौ०-श्याम चर्म अजयाको लावै। घोड़ाके मुख टाप बँधावै॥

अन्य ।

चौ०-लहसुन हींग सोहागा आनी । कारीजीरी औ अजवानी ॥
पिपरी मिर्च सोंठि भरंगी । सज्जी सोंचर सैंधव संगी ॥
सिंघजराव भस्म करि लेहू । तब औषधके माहीं देहू ॥

अन्य ।

चौपाई-मूल जवासा औ ले रूसा । पात कटैया और अतीसा ॥
विषखपरा औ अदरख पाना ।गोली करु औंरा परमाना॥
भुने चनाके आटा देहू । यक दुइ पहर बंद करि लेहू ॥
पानी तप्त अधिक करवाई । शीतल करिकै देउ पिआई॥

अन्य ।

चौपाई-अर्क धतूर सेंहुड़ा जारी । अजवाइन हरदी ले डारी ॥
घोड़ेको यह देउ खवाई । जाइ चाँदनी रोग नशाई ॥

अन्य ।

चौपाई-अर्क धतूर सेंहुड़ा जारी । आँवाराख छानिकै धारी ॥
सब एकत्र करि अंग मलावै । बंद जगहमें ताहि बँधावै॥

अन्य ।

दोहा-जबलौं मुख बगरो रहै, तब यह दवा बनाय ।
एक मुर्ग लै मारिये, बनवै यही उपाय ॥ १ ॥
चोंच चरण तिहि काटिकै, चुरवै जलमें तासु ।
काढ़ि तिन्हैं कूटै बहुत, सहित अस्थि अरु मासु ॥ २ ॥
मिलै महेला सेर दो, या सब लै यक सेर ।
आध पाव काली मिरच, मिलै तुरँग मुख गेर ॥ ३ ॥
दिन चालिस शामौ सुबह, देइ गरम जल प्याय ।
लै तुरंग बाँधै तहाँ, जहँ कहुँ पवन न जाय ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोह-कीतौ मारैं कागको, चरण चोंच लै लेइ ।
गोहूँमें की माषमें, पकै तुरँगको देइ ॥

अन्य ।

दोहा-जारि खोपरी मनुजकी, ले छटाँक परमान ।
और कमीला आठ भरि, इता मिलावाँ मान ॥ १ ॥
आधपाव गूगुरु मिलै, काले तिल यकपाव ।
डारि सोहागा टंक षट, सब लै बटी बनाव ॥ २ ॥
वजन अश्वको दीजिये, एक छटाँक प्रमान ।
पवन न लागै अंगमें, बचै तु भाग्य अमान ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-जो रद बैठावे तुरँग, ताको यही उपाय ।
तौ त्रियको ऋतुवसन जो, लीजै बहुत मँगाय ॥ १ ॥
नीर सेर दशमें चुरै, पट वाहीमें डारि ।
आधो जरि जावै तबै, लीजै ताहि उतारि ॥ २ ॥
नास्तु दीजिये अश्वको, पांच दिवस यहि रीति ।
दाना पानी बंद करि, बचि है अश्व प्रतीति ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौपाई-पल्ली एक पकरि ले आवै । पूंछ मूँड़ ताको कटवावै ॥
देह समूची आटा सानी । घोड़ा खाय नीक सो जानी ॥
दोहा-औषध कीजै जो कही, लाग न आवै कोय ।
दधिसुत रविसुतको हनै, बहुरि नवीनो होय ॥

मंत्र–चंडी चंडी तू परचंडी आवत चोट करै उवखंडी हय राखु ॥ हिया राखु थूनिहि बडेरा राखु दोहाई हनुमत वीर की अगस्त्य मुनिकी फट् स्वाहा ॥

चौपाई–यहै मंत्र दिन तीनि जु झारै। होइ अलप तबहूं ना मारै॥

अन्य मत लक्षण व दवा।

दोहा–हवा एक है वात सर, हयको पकरत आइ।
ताके दोइ प्रकार हैं, सो अब देत बताइ॥ १॥
अगिले धड़में होइ जो, ताहि चाँदनी जानि।
पछिले धड़में होइ सो, वात कैसरा मानि॥ २॥
होति आइ है बाइ वह, हयकी देही–माँहिं।
अंग शिथिल ह्वै जात है, ये लक्षण दरशाहिं॥ ३॥
चाँदनि मारै जाहिको, बंद तासु मुख होइ।
दाना घास न खाइ सो, ऐसे लक्षण जोइ॥ ४॥
रंग बतानेको जरद, स्याही लीन्हे होइ।
दूनों वाइन माँझमें, लेइ बताना जोइ॥ ५॥
दूनौंकी ये औषधें, हैं जानौ सो ताहि।
ह असाध्य यह जानियो, दवा तुरत करु वाहि॥ ६॥
बाँधै बन्द मकानमें, हवा जहाँ नहिं जाय।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताय॥ ७॥

दवा।

दोहा–नमक लहौरी लाइकै, ताको लेउ पिसाइ।
डारै हयकी आँखिमें, कपरा देइ बँधाइ॥ १॥

खुलन आँखि नहिं पावई, अस पोषित करि देइ।
ता पीछे यह औषधी, सो वहि हयको देइ॥ २॥

दवा खानेकी।

दोहा—तैल रेंडको लीजिये, पाव एक मँगवाइ।
ताते दूनों तैल तिल, दोऊ देइ पिआइ॥

अन्य।

चौ०—अजवाइनि अजमोद मँगावै। सोंठि पीपरामूल मिलावै॥
कुटकी हरदि भेलावाँ लेई। और कैफरा तामें देई॥
खुरासानि अजवाइनि लीजै। अरु घुरसारी तामें दीजै॥
कालेश्वर घोड़बच लै आवे। औरौ हरदी दारु मिलावै॥
दोहा—देवदारु गुग्गुल सहित, कारीजीरी आनि।
असगँध अरु पीपरि कहौं, आँबाहरदी जानि॥ १॥
रेंडतेलमें सानिये, अरु कमरा छनवाय।
आध पाव मौताज यक, हयको देउ खवाय॥ २॥
यहि विधि दीजै सात दिन, रोग दूरि हो जाइ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों दवा बताइ॥ ३॥
चौ०—मेथी पक्के दुइ सेर लावै। ताहि महेला खूब पकावै॥
पानी लेउ गरम करवाई। ठंढा करिकै देउ पिआई॥

अन्य।

दोहा—नागौरी असगँध सहित, अरु अजवानी जानि।
ईसवंद अजमोद लै, कुटकी सोंठि वखानि॥ १॥
मेथी सोवा बीज लै, हरदी गूगुर आनि।
कारीजीरी लेइ पुनि, भाग बरोबरि जानि॥ २॥

सबै औषधी लीजिये, अध अध पाव कराइ ।
भूँजो आटा मोठको, तामें लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
औषधि पैसा पाँच भरि, हयको देउ खवाइ ।
देउ दवाई अश्वको, साँझ समयमें लाइ ॥ ४ ॥
दाना दीजै ताहिको, अग्निमाहिं पकवाय ।
पानी दीजै गर्म करि, शालहोत्र मत आय ॥ ५ ॥
चौ०-नकछिकनी तोला भरि लीजै। दमरी भरि हरदी तिहि दीजै ॥
अंडा मुरगीकेर मँगावै । तामें औषध दुऔ मिलावै ॥
दोहा-भूँजै आटा मोटको, तामें देइ मिलाइ ।
पानी पीछे अश्वको, याको देउ खवाइ ॥ १ ॥
जबतक नीको होइ नहिं, दिये औषधी जाइ ।
वात कैसरा कठिन है, मृत्यु समान लखाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-मेथी लहसुन पीपरी, मिरच सोंठि अरु पान ।
छालि सहींजनकी कही, कंज मैनफल आन ॥ १ ॥
लीजै सबको भाग सम, कूटै कपरा छानि ।
सात टका भरि औषधी, गोली चौदह जानि ॥२॥
साँझ सवेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ।
भूख बढ़ै अति ताहिकी, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-अजवाइनि पीपरि मिरच, कारा जीरा आनि ।
सैंधव सोंचरु हींग पुनि, सोंठि सोहागा जानि ॥१॥

अदरख पान जवास जर, विषखोपरा मँगवाय।
महिषी शृंग जरायकै, दीजे ताहि मिलाय ॥ २ ॥
कूटै अति बारीक करि, गोली लेइ बँधाइ।
अँवरा सम गोली करै, भाग समान कराइ ॥ ३ ॥
चौ०-भूँजो आटा यवको लावै। गोली तामें एक मिलावै ॥
शाम सबेरे देइ खवाई। यक यक गोली ताहि बताई॥
दोहा-जहाँ वायु नहिं लागई, बांधै हयको लाय।
गर्म नीर करवाइकै, तिहि सो देउ पिआय ॥

अन्य।

दोहा-टाट कि चमड़ा मुर्गको, बाँधै आँखिन माहि।
कीतौ जंबू खाल लै, करु अँधियारी ताहि ॥

अथ जोखाम कनारैके लक्षण व दवा।

दोहा-नाक बहै हफ्फै अधिक, दाना घास न खाय।
सो तुरंगको जानिये, रोग कनार बताय ॥
चौ०-जाहि कनार होइ अति विगरो।दुख देवै अश्वाको सगरो ॥
याहीते कुम्भक अनुसारै।या विधि औषध ताहि विचारै॥

नस्य।

चौ०-भटकटाय फलको लै आवै। अजैदूधमें मलि छनवावै ॥
वाही दूधक दीजे नासू। साँझ सकारे दुइ दिन तासू ॥
श्लेष्मा जब सब झरि झरि परै।तब खानेकी औषध करै ॥

दवा खानेकी।

चौ०-हरदी सैंधव साँभरि आनै। टका टका भरि तीनों जानै॥
चारि टका भरि अदरख लावै।पाव सेर गुड़ आनि मिलावै

सकल पीसि बासन औटावै।काथ बनाय अश्वमुख नावै॥
सात रोज लग देउ खवाई । सकल कनार दूरि हो जाई॥
अजमाई यह औषध जानौ।याते अधिक और नहिं मानौ॥

अन्य ।

छंद तोमर—सैंधव सु पीपरि सारु । बंडार गुरच्च विचारु ।
चारोंकि गोली बाँधु । हय रोग ऊपर साधु ॥
जब मिटै अंगनि रोग । तब दीजिये यहि भोग ।
पुनि देउ भात विचारि । मुनि यौं कहैं निरधारि ॥

दोहा—मोरशिखा है औषधी, कै सैंधवके योग ।
नासु देइ प्रातै समय, मिटै कनारी रोग ॥

अन्य ।

छंद नाराच—पटोलमूल पीसिकै सो खांड़में मिलाइये ।
भहूष मेलिकै प्रमाण नार वार लाइये ॥
सवै टका प्रमाण लै सो नासु वाजि दीजिये ।
समै सरद पाइकै कनार ताहि छीजिये ॥

अन्य ।

सोरठा—गुरच्च हरद औ तार, गूदी बेल मँगाइये ।
करौ नासु निरधार, हयको दीजै शिशिर ऋतु ॥

अन्य ।

दोहा—तेल मिलै गोमूत्रसों, दीजै अग्नि पचाय ।
अर्ध भाग वाको रहै, नास देउ सुख पाय ॥

अन्य ।

छंद चंचरी—भाँति भाँतिन वाजिके जब पाइये मुखरोगको ।
चिरचिरा गोमूत्रको लै अजै मूत्र सँयोगको ॥

तीनि वस्तु मिलाइकै सुठि नासु दीजै वाजिको।
मतो ग्रंथ विचारि मुनिवर कहौ तुरकी ताजिको॥

पिंड।

छंद चंचरी-सौंफ मिर्च मिलायइकै चकचूनि है सुखदानिकैं।
सहद सहित शतावरी सम सजौ पिंड मिलाइकै॥
पिंडयुक्त सु होय वाजी देहु ताहि पिआइकै।
अंग अंग सब रोग नाशै कहत मुनि चित लाइकै॥

अन्य।

छंद-कंकोल केतकी मिलाय दाख खांड लै समान।
महेटि पापरी मिलाय पिंडिका करौ प्रमान॥
देहु वाजिको सो खाय पुष्ट होय चारु अंग।
शालहोत्र देखिकै विचारि देत व्याधि भंग॥

छंद पद्धरी।

करि भाग युक्तहु त्रै मिलाय। पुनि डारि घिउ वाजी खवाय।
अति अबल वाजिकेबलनिधान। मुनिमत विलोकि भाषै सुजान॥

अन्य।

छंद पद्धरी।

दधिवस्त्र बाँधि सहतौ मिलाय। सो पिंड देहु वाजी खवाय॥
अति वृद्ध होय सो तुरी ज्वान। कबहूँ न होय सो सदनितान॥

अन्य।

छंद भुजंगप्रयात।

भली कूटकी मध्य सौंफै मिलावै। विडंगैहि लै शुद्ध चीतो मगावै॥
नशै आलसै वाजि वेगै बढ़ावै। कहो चारु सो पिंड याको खवावै॥

अन्य ।

छंदहरिगीतिका–वात कफ वाजी कनारै ताहि यह औषध करौ।
लेउ लहसुन नागकेसरि मूल पीपरि सम धरौ ॥
गुर्च लैकै सम मिलावहु पीसि करुवे तेलसों ।
नासु याको देहु वाजिहि मिटै रोगन जेलसों ॥

अन्य ।

दोहा–की कैफराको पीसिकै, नासु नाल भरि देय ।
सकल बुखार निकारि है, यहि विधि करि सुख लेय ॥

अन्य ।

दोहा–की अतीस यक भरि अवटि, पैमें धूप सुखाय ।
ता आधो सैंधव मिलै, जैफल आधो नाय ॥ १ ॥
पीसि छानि सब एक करि, धरि राखै बनवाय ।
साँझ सकारे दो रती, नासु दिये सुख पाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–श्रुति तोला घृत सम सहद, कछु कैफर तिहि डारि।
आधो आधो दुहुँन पुट, नासु दिये दुख हारि ॥
चौपाई–कुटकी कैफर पिपरामूरी। सोंठि जवायनिके सम तूरी॥
बाइबिडंग मैनफल हरदी। कंटकारि फल एकै मरदी ॥
अकरकरा गुड़ चौगुन करै। खांसी शीत कनारै हरै ॥

अन्यमत कनारकी दवा ।

दोहा–रेजिस होइ दिमागमें, आवत नथुना माहि ।
नथुनाते पानी झरै, की गाढ़ो कफ आहि ॥ १ ॥

श्वेत होइ की तौन कफ, केवल सरदी आइ ।
देखि बताना लीजिये, सोउ श्वेत दरशाइ ॥ २ ॥
वाजि कनारो होइ जो, विगर औषधी जाइ ।
ताते रोग अनेक जेहि, होत वाजि तनु आइ ॥ ३ ॥
होइ कनारो अश्व जो, देखि बताना लेइ ।
रंग जानिकै ताहिको, तब औषधिको देइ ॥ ४ ॥
होइ बताने माहि जो, सफराको रँग आइ ।
गरम औषधी जे अहैं, वजन कमी करवाइ ॥ ५ ॥
रंग बताना देखिये, वात पित्त कफ रक्त ।
खुला देखाई देइ जो, करौ हिफाजति सक्त ॥ ६ ॥

अन्य मसाला ।

दोहा—पीपरि पिपरामूल अरु, स्याह मिर्च मँगवाइ ।
और लेइ अजमोदको, सोंठि सहित मिलवाइ ॥ १ ॥
अजवाइनि लीजे दुवौ, वजन बरोबरि आनि ।
चारि चारि तोले सवै, औषध लीजै जानि ॥ २ ॥
लेउ भेलावाँ टका भारे, ते सब लेहु कुटाइ ।
वीज धतूरे लीजिये, तोला एक मँगाइ ॥ ३ ॥
तेऊ लीजै कूटि करि, कपछान करवाय ।
सब औषध यकठा करै, ताकी विधि यह आय ॥ ४ ॥
दीजै ताको साँझको, दाना पीछे लाग ।
औषध तोले चारि सो, हयको देउ खवाय ॥ ५ ॥
या विधि कीजे आठ दिन, हयको औषध आनि ।
क्षुधा बढ़ै अति तासुकी, होइ रोगकी हानि ॥ ६ ॥

अन्य नस्य विधि।

दोहा—सूखि तमाखू छानिकै, और कैफरा छानि।
ये दोनों यकठा करै, भाग बराबरि आनि॥ १॥
रंडकि छूछी माहि धरि, हयके नथुना माहि।
फूँकि देइ अति जोरसों, सब रेजिसि झरि जाहि॥ २॥

अन्य।

चौ०—लाले मिर्च पाव भरि लीजै। ता सम लहसुन तामें कीजै॥
तीनि पाउ तिल लेउ मँगाई। हींग टका भरि खील कराई॥
दोहा—बाँधौ गोली पंचदश, अदरखके रस सानि।
साँझ सबेरे दीजिये, यक यक गोली आनि॥ १॥
मोठके आटा साथमें, हयको देउ खवाय।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, अश्व नीक ह्वै जाय॥ २॥

अन्य थोड़ी सरदीकी दवा।

दोहा—हालिम हरदी सोंठि लै, स्याह मिर्च अरु लाइ।
तीनि टका भरि तौलि कर, गुड़के साथ मिलाइ॥ १॥
वाजिहि दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाय।
थोरी सरदी होइ जो, ताकी औषध आय॥ २॥

अन्य।

दोहा—जाहि कनारेमाहिंमों, सफरा अति अधिकाइ।
ताके बलगम गिरत है, जरदी मायल आइ॥ १॥
साँस लेतमें ताहिके, नथुना बोलत आहिं।
तौ गरमी अति जानियो, शालहोत्र—मतमाहिं॥ २॥

बरम होति है नाकपर, ता हयके कछु आइ।
गर्मी है अति ताहिके, खाइ घास नहिं जाइ॥ ३॥
तासु बताना देखिये, जो सफरा दरशाइ।
दीजै औषध गरम नहिं, ता वाजीको लाइ॥ ४॥
शिरमें निकसत खूनु है, जौन सिराते आइ।
ताही रगको खोलिये, नीको हय है जाइ॥ ५॥
चौ०–डेढ़ पा भटकटैआ लेहू। कुंचिला तासम तामहँ देहू॥
मूजाको रस लेउ कढ़ाई। तामहँ औषध देउ भिजाई॥
दोहा–कपरामें करि ताहिको, रसको लेहु निकारि।
ताके हीसा कीजिये, तीनि तीनि निरधारि॥ १॥
घोड़ाको गिरवाइकै, नथुना उपर कराइ।
औषध हीसा एक लै, तामें देउ डराइ॥ २॥
एक घरीके बाद सों, करौ खरहरा ताहि।
याही विधि करवाइये, तीनि दिवस लग वाहि॥ ३॥
वरम होइ नथुना विषे, ताको देउ दगाइ।
वरम भरेपर कीजिये, लंबा दाग बनाइ॥ ४॥

अन्य।

दोहा–अदरख पैसा पाँच भरि, लीजै ताहि भुँजाइ।
अरु पैसा भरि हींगको, लेउ खील करवाइ॥ १॥
तिनकी पिंडी एक करि, हयको देउ खवाइ।
या विधि कीजै सात दिन, रोग दूरि है जाइ॥ २॥

अथ नथुनेका रोग।

दोहा–वाजी नथुना माहिमों, बढ़ि आवत है मासु।
देत देखाई बाहरे, औरौ होत अमासु॥ १॥

छालाके सम होत है, सो जानौ तुम मीत ।
श्वास बंद करि देत है, याकी है यह रीत ॥ २ ॥
पैसाभारि जंगाल अरु, हींग फिटकरी लाइ ।
कूपोदकसों पीसिकै, दीजै ताहि लगाइ ॥ ३ ॥
तीनों औषध भाग सम, कहो आइ सुख पाइ ।
ताको कीजै तीन दिन, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–नीलाथोथा फिटकरी, अरु हरताल मँगाय ।
और निसादर लीजिये, सम भागहि करवाय ॥ १ ॥
खूखी औषध पीसि सब, दीजै ताहि लगाय ।
मासु बढ़ो जो नाकमों, दूरि तौन ह्वै जाय ॥ २ ॥

अथ कुब्बकके लक्षण व दवा ।

दोहा–जा हयके रुकि जात है, रोग कनार गँभीर ।
तासों कुब्बक होत है, दवा करौ मतिधीर ।

नस्य विधि ।

चौ०–जा वाजीके कुब्बक होई । अदरख सोंठि मिलावै सोई ॥
सैंधव लाय सकल सम कीजै । गऊ मूत्रमें नासु करीजै ॥

अन्य ।

चौ०-जो निकसै कुब्बकको जोरा । ताकी औषध करौ निवेरा ॥
लेउ सरगवौ निंबिके पाता । डारु सँभारू तामें भ्राता ॥
रेंड बकायन दाडिम लीजै । सबके दल सम भाग करीजै
हाँडा मध्य मेलि औटावै । ताहि वफारा कुब्बक लावै ॥
सेक देयकै पाछे बाँधै । तीनि बखत याही विधि साधै ॥

की बैठै की फूटि बहाई। या विधि दवा करौ मन लाई ॥
जब फूटै विधि यहै करावै। याही पानीमें धुलवावै ॥
जब लग घाव साफ नहिं पावै। तबलग दवा यहै करवावै॥
पीछेते मलहमको चुपरै। फीहा धरै पीर सब हरै॥

अन्य।

चौ०-खाँसी आगे कुब्बक निकसै। ताहि बफारा दै सुख दरशै॥
नींब बकायन मुंडी बाँसा। याहि वफारा ते रुज नासा॥

अन्य।

दोहा-रेंडीतेल मँगाइकै, थोरेमें चुपराय।
की बैठी की फूटि बहि, करौ जतन यह आय॥

अथ कनारका मसाला।

चौ०-मेथी साँभरि नमक मँगावै। टका टका भरि लै तौलावै॥
राई जौन बनरसी भाई। आँबाहरदी ताहि मिलाई॥
अजवाइनि करु तोला तोला। एक छटांक पिआजहि मेला॥
लेउ कटैया गोल फलनकी। आध पाउ तोलाइ वजनकी॥
सकल पीसि यक पिंड बनावै। चनाके आटा सानि खवावै॥
एक खुराक लिखी यह जानौ। पांच सात दिनलौं करि मानौ

अथ चपकी बीमारीका लक्षण व दवा।

दोहा-वाजी गलफर माहिमें, वक्ष जहां पर आइ।
लगत दहाना आहि जो, फूलि कछू सो जाइ॥ १॥
लीजे साँभरि लोनकी, दो पुटरी करवाइ।
कछौमें घिउ डारिकै, दीजै आगि धराइ॥ २॥

तामें पोटरि गरम करि, सेंकि वक्षको देइ ।
या विधि सेंकै पांच दिन, नीको वाजी लेइ ॥ ३ ॥
घरी तीनि अरु चारितक, सेंकि खूब तिहि देइ ।
शालहोत्र मत जानिकै, वक्ष नीक तिहि लेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—गुड़ अरु चून मिलाइकै, दीजै ताहि लगाइ ।
सात दिनाके भीतरै, वक्ष नीक ह्वै जाइ ॥

अन्य ।

दोहा—हरदी पीसिक लीजिये, और मुसब्बर लाइ ।
दुवौ बरोबरि लीजिये, देहु अफीम मिलाइ ॥ १ ॥
मानुष मूत्र पकाइकै, लेप वक्ष करवाय ।
सात दिवस तक कीजिये, रोग नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—बाँसक डंडा लाइकै, बाँधैं नुक्ता माहि ।
घोड़ाकी पेशाबसे, वक्ष धुवावै ताहि ॥ १ ॥
समुदखार हरतार लै, और निसादर लाइ ।
सूखा पीसै ताहिको, चष पर देइ लगाइ ॥ २ ॥
ताहि लगावै दुहुँ बखत, दुइ दिन लग यह जानि ।
लेप लगावै ताहि पर, सो अब देत बखानि ॥ ३ ॥
भातमाहिं घिउ डारिकै, मलिकै देइ लगाइ ।
चषके ऊपर वाछमो, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
छूरा तेज मँगाइकै, दीजै ताहि चिराइ ।
फेरि लगावै यह दवा, जाते रोग नशाइ ॥ ५ ॥

अथ मुख आवनेकी दवा।

दोहा-जा वाजीकी जीभमें, छालेसे परिजाय।
ताकी औषध यह करै, रोग दूरि ह्वै जाय ॥ १ ॥
तारूकी रग खोलिये, और जीभ रग जानि।
ता पीछे यह औषधी, कीजै ताकी आनि ॥ २ ॥

चौ०-बड़ी इलाची लेउ मँगाई। ता सम दुधिआ खैरु मिलाई।
ताको पीसि मिही अति कीजे। कहौं तासु विधि सो सुनि लीजे

दोहा-डारै वाजी जीभपर, मुख भीतरमों जानि।
घरी एकके बाद फिरि, जूड़ो पानी आनि ॥ १ ॥
ताको छीटा मारिये, जीभ और मुख माहि।
या विधि कीज तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ २ ॥

दवा खानेकी।

चौ०-मेंहदी पात लेउ मँगवाई। धनियां हरेहि देइ मिलाई ॥
दुइ दुइ तोले औषध लीजै। प्रातसमय घोड़ेको दीजे ॥
तीनि दिवस तिहि देउ खवाई। राम कृपाते नीक देखाई

अथ जीभपर मेढकी होनेके लक्षण व दवा।

दोहा-जो मेढुकी हय ऊपजे, जीभ मध्य सो जानु।
दाना चारा खाय कम, लक्षण तन अनुमान ॥

चौ०-चनाकी भूसी भस्म करावे। छानीकर करडुआँ लावे ॥
मिर्च गोल हरदी सम लीजै। सकल पीसि मेढ़की मलि दीजै॥
तीनि रोज औषध जो करै। मेढ़की रोग अश्वको हरै ॥

अन्य।

चौ०-माँजारि माँस व्यालको लावे। जो चरजातिया सर्प कहावे
मासे तीनि तीनि नित दीजे। सात दिनामों नीको लीजे

अथ कालबन्द रोग जीभ सूखे ।

दोहा—जेहि घोड़की जीभपर, खुश्की बहुत देखाय ।
तुचा जीभ सूखी रहै, कालबंद सो आय ॥
चौ०—सैंधव मिर्च दोउ सम लीजै । कुकुरौंधे रस खरिल करीजै
गोली करि मेलै मुख तासू । ताके पीछे लेप प्रकासू ॥

अन्य ।

सोरठा—पिपरी पिपरामूरि, सोंठि कुलींजन वचहि लै ।
सबको कीजै चूर, कटुक तेलमें खरिक करि ॥
चौ०—मलहम करि सो ताकौ लीजै । लेपन करि कपरामें दीजै
बाँधै गरे अश्वके कोई । जो सेंकै सो नीको होई ॥

अन्य मत ।

दोहा—लीजै सैंधव लोनु सम, श्याह मिर्च मिलवाइ ।
कुकुरौंधा रस ताहिमें, देहु खरिल करवाइ ॥ १ ॥
गोली बाँधै ताहिकी, दिना तीनि लगु देइ ।
यक यक गोली दीजिये, तुरी नीक करि लेइ ॥ २ ॥
टका टकाभरि वजनकी, गोली लेइ बनाय ।
शालहोत्र मुनिके मते, हयको देइ खवाय ॥ ३ ॥

अथ तालुकी बीमारी ।

दोहा—जाके तारू माहिमो, वर्म होइ कछु आइ ।
दाना खायो जाइ नहिं, कीतौ थोरा खाइ ॥ १ ॥
तारूमें नस होति है, ताको देइ छेदाय ।
खून निकारै ताहिते, अश्व नीक ह्वै जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-तारू आवै जाहिके, ताको देइ दगाय ।
हरदी नमक बुकाइकै, दे तापर चुपराय ॥

अन्य विधि तालुरोग ।

दोहा-दोऊ ओठन भीतरै, कीतौ तारू माहि ।
छाला जाके परत है, दाना घास न खाहि ॥ १ ॥
सब छालन पर लाइकै, नस्तर देइ लगाय ।
साँभरि लोन मलाइ फिरि, जलसे देइ धुवाय ॥ २ ॥

अन्य तालुमें दाँत जमनेकी दवा ।

चौ०-तारू मध्य दाँत जो होई । काम नाम भाषै सब कोई ॥
दाँत तोरिकै औषध कीजै । घोड़े घास खाइ ना दजि ॥
कडुआ हरदी सैंधव लीजै।गोघृत मिरच सहत सम कीजै
रदन तोरिकै अश्व खवावै । यह औषध तापर मलवावै॥

अथ मुँहमे छाला पड़नेकी दवा ।

दोहा-मुखमें जो छाला परैं, लार न आवति होइ ।
श्याम होइ मुख माहिं अरु, जानि लेहु जिय सोइ ॥ १ ॥
सैंधव साँभरि लोन अरु, सोंचर लेउ मँगाइ ।
औषध कीजै तीनि दिन, छाला सब मिटि जाइ ॥ २ ॥
छाला जो मुखमें परै, लार बहति अति होय ।
घास न खाई जाय जो, यही दवा करु सोय ॥ ३ ॥

अथ मुख पकने व छाला पड़नेकी दवा ।

चौ०-छाला परैं पके मुख जासु । लार बहै बहु आवै बासु ॥
श्याम रंग कफ गिरै बनाई । थाँसे बहुत अश्व अकुलाई॥

रस कुकुरौंध निचो करि लीजै।सैंधव साँभरि मिरचै दीजै।
सकल पीसि छाला पर मलै। नीको होय तुरँग मुख खुलै॥

अथ सब मुख सूझि जानेकी दवा ।

दोहा–जवाखार हरदी सहित, सरसों सौंफ मँगाय ।
कूपोदकसों पीसिकै, देउ अग्नि धरवाय ॥ १ ॥
जाय दवाई पाकि जब, तब बफारा देइ ।
वही दवाई काढ़िकै, लेप ताहि करि लेइ ॥ २ ॥
पाँच सात दिन याहि विधि, करै, दवा जो कोय ।
घोड़ा होय अराम तिहि, जाइ रोग सब धोय ॥ ३ ॥

अथ अस्तीककी बीमारी ।

दोहा–जाहि तुरी मुख माहिंमें, खून जु जारी होइ ।
तिहि अस्तीका कहति हैं, सकल सयाने लोइ ॥ १ ॥
प्रथमहि तारू माहिंमें, रगको देउ खुलाइ ।
पाछेते औषध्य करौ, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा–औंरा हर्र बहेर लै, तिनको लेउ कुटाइ ।
यवके आटा मध्य करि, दीजै ताहि खवाइ ॥ ३ ॥

अन्य विधि ।

दोहा–फूटै नथुना वाजिको, लोहू जारी होइ ।
तेहि अस्तीका कहत हैं, जानत हैं जे कोइ ॥ १ ॥
केलाकी जर काटिकै, पानी ले निकराइ ।
गऊदूध मिलवाइकै, नथुना देउ धराइ ॥ २ ॥

अरु औंराको पीसिकै, शिरपर देउ धराइ ।
खीरा ककरी बीज लै, पीसिकै देउ सुँघाइ ॥ ३ ॥
दोनों विधि अस्तीककी, जो वरणी अभिराम ।
यही दवा करवाइये, दोनों होंइ अराम ॥ ४ ॥

अथ अन्य विधि मुखरोग।

चौ०-कल्ला उपर बरम जो होई। की मुख ऊपर सूजै सोई ॥
आँखि तरेकी हड्डी जोई। फूलि जाति वाजीकी सोइ ॥
दोहा-आँखितरे जो रग अहै, अरु शिर पाछे जोय ।
तिनमें खोलै एक रग, तुरतै नीको होय ॥

अन्य मुखरोग।

दोहा-नथुना बाँसा जासुको, सूजि कछू सो जाइ ।
साँस लेत अति जोरसों, शीश उठाइ उठाइ ॥ १ ॥
अर्द्धमान ह्वै भूमिमें, अरु पिआस अधिकाइ ।
औंरा हर्र वहेरकी, वकली लेउ मँगाइ ॥ २ ॥
जौ नारी जीरा सहित, स्याह मिर्च अरु जानि ।
टका टका भरि औषधी, वजन बरोवरि आनि ॥ ३ ॥
षट पल लीजै खाँड़ अरु, कूपोदक पल चारि ।
सबै औषधी पीसिकै, मिलवै तिन्हैं सुधारि ॥ ४ ॥
यक दिनकी मौताज यह, कही सु लीजै जान ।
सात रोजतक कीजिये, याही तरह विधान ॥ ५ ॥

अथ घिनीरोग।

दोहा-लीदि वासु मुखते कढ़ै, कीरा परैं जु लीदि ।
तृण न चरै अतिदुख भरो, घिनी रोग सो निंदि ॥ १ ॥

हरदी सैंधव नींबदल, सुरस मूत्र अज-केर ।
सानि अश्वको दीजिये, रोग हरत नहिं देर ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-त्रिफला त्रिकुटा सैंधवै, मात्रा सम करि लेहु ।
काढ़ा मदिरा संग करु, रुज नाशक इमि देहु ॥

अथ सतपुरा रोग ।

दोहा-दाढ़ीपर बढ़ि जात है, हाड़ गुल्मके तौर ।
सतपूरा ताको कहैं, दवा करौ करि गौर ॥ १ ॥
मछरी हरदी भातको, उसिने सबन मिलाय ।
तीनि दिवस बाँधै गरम, जब कोमल परि जाय ॥ २ ॥
तब सेंदुर भरि दीजिये, फूटि बहै अवरेषि ।
तासों हाड़ निकासिकै, मल दीजै सुविशेषि ॥ ३ ॥

अथ नाकड़ा (रोग नाकका) ।

दोहा-रोग नाकड़ा होत है, बाँसा अंदर छेद ।
पीब चलै तामें अधिक, जानि लेउ यह भेद ॥
चौ०-पक्षी नाम महोष कहावै । ताको चरण दुऔ कटवावै ॥
पानी डारि शिलापर रगरै । ताको लै कपरापर चुपरै ॥
वाकी बाती लेउ बनाई । छेद भीतरै मों धरवाई ॥
कइउ रोज लगु या विधि करै । छेद बंद तब ऊपर चुपरै ॥

अथ खामुसे आनेके लक्षण ।

दोहा-नथुनाके दोनों तरफ, हड्डी कीलै जौन ।
ताहि खमूस बखानिये, जानि लेउ बुध तौन ॥ १ ॥

बाढ़ै फैलै सूज जो, रोग खमूस बखानि।
ताहि चिकित्सा कीजिये, रोग मिटै सुखदानि॥ २॥

दवा कालादि तैलविधिवर्णन।

दोहा—पल गीदर ले सेर भर, मन यक वारि चढ़ाय।
आँच खूब करिकै पचै, पाँच सेर रहिजाय॥ १॥
तब उतारि लीजै सुघर, चारि सेर तिल तेल।
भरि कराह धरु आँचपर, चारि सेर दधि मेल॥ २॥
जब दधि पचि जावै लखै, काढ़ा पलै पचाय।
सेर एक दशमूल लै, चारि सेर जल नाय॥ ३॥
भिन्न कढ़ा यक सेर करि, तेलमाहिं दे पाचि।
छानि धरै वहि तेलको, लै कलकइ सो जाँचि॥ ४॥
काँजीमें तिहि पीसिकै, अपर औषधी आनि।
चीत सोंठि अजवाइनी, विषमारा सो जानि॥ ५॥
सोरठा—मेथी बायविडंग, कूट कैफरा लीजिये।
वन अजवाइनिसंग, वनमेथी सम वजन करि॥
दोहा—लै मँजीठ यक पाव तज, आध पाव मित लाय।
तब फिरि तेल चढ़ाइकै, कंजी बाँटि भुँजाय॥ १॥
दधिनें बाँटि मँजीठ लै, पाछे तासु पचाय।
सिद्ध तेल तब जानिये, ताको गुण यहि भाय॥ २॥
झोला पच्छाघात अरु, अकड़बाय दुखदाय।
झनकबाय कमरी सहित, मरदन करत विहाय॥ ३॥

अन्य ।

सोरठा—चारि सेर तिल तेल, उतनोई काँजी पचै ।
तापर सज्जी मेल, सोंठि बनस्तर मूल कुट ॥ १ ॥
लाही हरदि मँजठि, लै प्रतिवस्तु पलेक मित ।
जलमें बाँटि जुईठ, भूँजि तेलमें सिद्ध करि ॥ २ ॥
ताको लीजै छानि, भरि भाजन धरु जतन करि ।
गुण पूर्ववत बखानि, शालहोत्र मुनि प्रमित मित ॥ ३ ॥

अथ वृषास्थितैल बहुत रोगों पर ।

दोहा—तेल कहो वृष अस्थिमें, ताको सुनौ सुजान ।
कइउ रोग यहिते नशैं, ताको करौं बखान ॥ १ ॥
अग्निवायु अरु शूलहर, छाती बंद सितंग ।
सन्निपात सब वातहर, सुखी होय बहु अंग ॥ २ ॥
चौ०—वृषभ आस्थि मन एक कुटावे। तेल पताल यंत्र निकरावै॥
अश्वअंग दिन सात मलावै। इते रोग सब दूरि करावै ॥

अथ कर्णपीड़ाकी दवा ।

सोरठा—सरवनि सोंठि मिलाय, ब्रह्मदंडि कुकुरौंध युत ।
हरदी दारु जो लाय, हरद्रि सुपारी मैनशिल ॥ १ ॥
दुइ दुइ मासा लेइ, कूप नीरसों औटि सब ।
अष्टभाग करि देइ, तीनि दिवस खावै सुघर ॥ २ ॥

अन्य ।

सोरठा—मसुरी कमल मगाय, केसरि पात लजारुको ।
हर्रा तुचा मिलाय, भेला चौमासा सकल ॥ १ ॥
सेर एक जलमाहिं, अष्टभाग करि दीजिये ।
कर्णपीर नशि जाहिं, जो वुध जन यह रीति करि ॥ २ ॥

अन्य।

सोरठा—ले फिटकरी मँगाय, बूँकि कानमें डारि दे।
तापै देहि गिराय, अर्क कागजी निंबुको ॥

अन्य कान पकनेकी दवा।

दोहा—कर्ण पकै जेहि अश्वको, पीब बहै श्रुतिमाह।
ताकी औषध कहत हौं, युद्धधीर निरवाह ॥

चौपाई—जवाखार सैंधव अरु सोंचर। सज्जी वच समभाग परस्पर
चैंचपत्र मिलि सकल पकावै। सेंकै वाही अर्क डरावै ॥

अन्य मत।

दोहा—जाके दोनो कानते, खून स्रवत जो होइ।
जानौ वायु प्रसंग है, शिर झारत है सोइ ॥ १ ॥
काँपै वदन जु अश्वको, ताकी यह विधि साधि।
तिल औ हरदी कानसों, सेंकै पोटरी बाँधि ॥ २ ॥

अन्य।

चौपाई—लहसुन हरदी पीसै भाई। सेंकै कान नीक है जाई।

अन्य।

दोहा—अर्कपात मँगवाइकै, ओदे वसन बँधाइ।
अग्निमध्य धरि दीजिये, खूब पाकि जब जाइ ॥ १ ॥
काढ़ै ताको अग्निते, अर्क लेइ निकराइ।
तुरी कानमें डारिये, गोघृत ताहि मिलाइ ॥ २ ॥

अथ कछुईकी बीमारी।

दोहा—कर्णमूलके पासमें, गर्दन ऊपर जानि।
तहँ सूजनि जो होति है, कछुई ताको मानि ॥

चौ०-दोनों तर्फन सूजनि होई । की तौ एकै तरफ सुजोई ॥
ताको कछुई नाम बखानौ । शालहोत्र मत है यह जानौ ॥

दवा ।

दोहा-शिर गर्दनके जोरपर, कही कनगुदी माहि ।
जहाँ शिरा जो होति है, प्रथमहिं खोलै ताहि ॥ १ ॥
गर्दभ लीदि मँगाइकै, खारी लोनु मँगाइ ।
मानुषमूत मिलाइकै, लीजै ताहि पकाइ ॥ २ ॥
लेपन कीजै ताहिको, कछुई ऊपर आनि ।
रंडपातको बाँधिये, ऊपरते यह जानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०-जो अराम नहिं याते होई । लोह तप्त करि दागै सोई ॥

अन्य ।

दोहा-प्रथमहि दागै ताहिको, परी तेलकी आनि ।
औषध दीजै ताहिको, सो फिरि कहौं बखानि ॥ १ ॥
लीजै जर करवीरकी, हरदी लहसुन आनि ।
कारा जीरी मिर्च लै, वजन बराबरि जानि ॥ २ ॥
सब औषध दश टंक लै, कूटि सहदमें सानि ।
छा गोली तेहि बाँधियो, प्रात खवावै आनि ॥ ३ ॥
दाना पीछे दीजिये, गोली एक खवाय ।
गऊमूत्र लै पाव भरि, ऊपर देइ पिआय ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा-जाइ कदाचित पाकि जो, तौ यह औषध आहि ।
कहत अहौं अब ताहिको, समुझि लेउ मनमाहि ॥

चौ०–कछुआको खपटा लै आवै। औरत शिरके बार मँगावै ॥
ते दोनोंको लेउ जराई। रंडतेलमें खरिल कराई ॥
सो वह जखम उपर लगवावै। कछुई रोग नीक ह्वै जावै ॥

अन्य मत।

दोहा–मेझुका बाँधे चीरिकै, रोम करै सब नासु।
बहुत बढ़ै कछुहीय जो, चीरि दवा करि तासु ॥

अन्य।

दोहा–पाकी अँबिलीको पना, तामें नमक मिलाय।
लेप घावपर कीजिये, कछुई रोग बिलाय ॥
चौ०–लै हरताल तावकी तोला। मासे चारि लीजिये कुचिला॥
अँबिली पना संग सो पीसै। वार मूँड़ि कछुई पर लेसै ॥
ऊपर अँबिली और लेसावै। तापर रंडपात बँधवावै ॥

अथ हसना रोग।

दोहा–दाढ़ पिछारी होत है, सूजनि लंबी आइ।
ताको हसना कहत हैं, शालहोत्र मत पाइ ॥ १ ॥
जो कछुईकी है दवा, सोई यहिकी आइ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, हसना रोग नशाइ ॥ २ ॥

अन्य।

चौ०–ईंट पुरानी तप्त करावै। ताके सेंके रुज बहि जावै ॥

अथ बोगमाकी बीमारी।

दोहा–डुहूँ दाढ़नके बीचमें, कुव्वकके तर जानि।
हलक ऊपरे होत है, निकसत बाहर आनि ॥ १ ॥
कुव्वकके छा अंगुरै, आगे यह रुज होइ।
तरे ताहिके होत हैं, बोगमा कहिये सोइ ॥ २ ॥

पानी पीवत नाहिं अरु, दाना घास न खाइ ।
जा वाजीके कंठमें, होत बोगमा आइ ॥ ३ ॥
चौ०-कुब्बकमें कनार हो जाई । पानी नाहीं छोड़त भाई ॥
बोगमा रोग फूटि जब जावै। हलकके भीतर छेद देखावै

दवा ।

दोहा-कारीजीरी सोंठि लै, कुचिला मिर्च मँगाइ ।
कालेश्वर अरु तज सहित, सम करिलेउ पिसाइ ॥ १ ॥
थोरी रेहू डारिकै, जलसों लेइ मिलाइ ।
तप्त कीजिये अग्निपर, दीजै लेप कराइ ॥ २ ॥
चौ०-लेप कियेते रोग न जाई । तौ पाकैकी दवा कराई ॥

दवा ।

चौ०-अजवाइनि अरु राई लावै । कारीजीरी ताहि मिलावै ॥
सोंठि सहित अजमोद मँगावै । जलसों पीसै लेप करावै ॥
दोहा-तातो कीजै अग्नि पर, दीजै ताहि लगाइ ।
भर्त्ता कीजै नींबको, देउ ताहि बँधवाइ ॥ १ ॥
रेंडपात बहु सेंकिकै, तिनसों देहु बँधाइ ।
सात दिवसमें सेंकिकै, फूटि बेगि सो जाइ ॥ २ ॥
नींब कि पाती लोनु लै, पीसिक देइ लगाय ।
जखम साफ है जाइ जब, तब मलहम चुपराय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-जवाखार अरु सोंठि लै, तिन सों देइ बँधाइ ।
सात रोजमें पाकिकै, फूटि बोगमा जाइ ॥ १ ॥

नींब कसौंजी पात लै, औ अजवाइनि लाइ ।
भाग बरोबरि कीजिये, सबै औषधी आइ ॥ २ ॥
औषधि तोले चारि भरि, मोठ महेलामाहि ।
हयको दीजै साँझको, रोग नीक हो जाहि ॥ ३ ॥
यह बीमारी कठिन है, जानि लेउ मन लाइ ।
शालहोत्र मत जानिकै, दवा करौ हरुगाइ ॥ ४ ॥

अथ मुँहसे लार बहुत गिरा करे उसकी दवा ।

दोहा-स्याह धतूरे माहिंकी, बोड़ी यक मँगवाइ ।
दानामों करि साँझको, हयको देउ खवाइ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत मुखरोगवर्णन नामक एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

अथ पैररोगलक्षण व दवा ।

छप्पय-पैर पाछिले मध्य गिरह भीतर हड्डा कहि ।
अस्थि नुकीलो होत लखौ चपठा चपठा लहि ॥
वही ठौर रगमाँह गुल्म कोमल मुतरा भनि ।
सूजनि अगिले मध्य गिरह जानुआं रोग अनि ॥
पद आगिले नाली बढ़ै बेर हड्डि कहि बेरसारि ।
लखि सूजि आगिले सुम उपर सोइ चकावरि पकत भारि

पुनः ।

छप्पय-पैर पाछिले भोंहैं सूजि पाकै पुस्तक मित ।
वैसे पुस्तक ऊर्द्ध होय गाना कहिये हित ॥
झरत पूतरि माह रसा कछुहि जु विकाशित ।
वेजा पछिली नली मुरुग अंडन सम भाषित ।

कहि छाला सुम भीतर प्रगट पीलपाँव सूजन भनै ।
मसवृद्धि गनै पल बाढ़तो पैररोग ग्यारह गनै ॥

अथ हड्डारोगलक्षण । देखो घोड़ा नं० १४८

दोहा–पैर पाछिले गाँठिमें, भितरी ऊँचो जौन ।
ताहीमें हड्डा प्रगट, जानौ रुजको भौन ॥
चौ०–अस्थि नुकीलो देखो भाई । चपठा चपठा सो दरशाई ॥
हड्डा कहो रोगको नामा । दवा कियेते होइ अरामा ॥
दोहा–हरिअरि लकरी नींबकी, हड्डा सेंकै जाहि ।
शोणित गिरै विकारते, पछना दीजै ताहि ॥ १ ॥
दंती गोटा निंबुरस, और निसोदर लेइ ।
सैंधव मिलि लेपन करै, अस्थि बढ़ै नहिं सोइ ॥ २ ॥
ऊपर कपरा बाँधिकै, लकरी नींब सेंकाय ।
दिना सात उठि प्रात करि, रोग नीक ह्वै जाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०–सोवा सागुनि सादर लावै ।नकछिकनी सैंधव पिसवावै ॥
नींबूके रस मध्य सनावै । हड्डा ऊपर ताहि बँधावै ॥
दिन ग्यारह लग औषध करै । हड्डारोग अश्वको हरै ॥

अन्य ।

सोरठा–चारौ पद दे दागि, जो जानौ यह रोग है ।
चेतन चंद प्रमान, औषध कीजै मास षट ॥
चौ०–मानुषकी खुपरी लै आवै । तप्त अग्निमें ताहि जरावै ॥
महिषा मेष शृंग जरवाई । सकल दवा सम भाग पिसाई ॥

त्रिकुटा त्रिफला सज्जी राई। भूँजि सोहागा खील कराई॥
कालेश्वर अरु कारीजीरी। अजवाइन हरदी बहु पीरी॥
गुड़सँग गोली या विधि बाँधे। टंक टंक भरि सो अवराधै॥
उपजत रोग औषधै करै। अस्थि रोग घोड़ेको हरै॥

अन्य।

चौ०-चूना कली भँटामें भरै। कपरौटी करि पावक धरै॥
जब परिपक होइ लखि लेई। पीसि लेप हड्डा करु सोई॥

अन्य।

चौ०-बड़का मूराको ले आवै। भेंड़कि लेंड़ी बहु सुलगावै॥
तामें मूरा भरत करावै। गरम बाँधि दुइ घरी रखावै॥
जब लगु हड्डा गलै न भाई। तब लगु दवा करौ मन लाई

अन्य।

चौ०-मेषकेर गुरदा दोउ लावै। चीरि तवापर गरम करावै॥
हड्डा ऊपर जो बँधवावै। नीक होइ सब शोक नशावै॥
दोहा-हड्डा मोतरा जानुवा, बैजा पुस्तक जाय।
इते रोग नाशक दवा, करौ सुघर मन लाय॥

अन्य दवा खानेकी।

चौ०-गोल मिरच अरु पिपरामूला। नीलातंत लीजियो कुचिला॥
कालेश्वर मौरेठी लावै। इंद्रजवा भेलावँ मँगावै॥
समुदफेन पालाशपापरा। ढाई ढाई भरि सम धरा॥
मालकाँगनी मेथी लीजे। डेढ़ डेढ़ भरि वजन करीजे॥
कारीजीरी दालिम हरदी। जहर तेलिया मुंडी मरदी॥
जंगीहर्र कुलींजन लीजै। सवा सवा तोला सब कीजे॥

राई लेउ बनरसी भाई । गेरह तोले भरि तौलाई ॥
मोथा अदरख हींग मँगावै । मानुषकी खुपरी लै आवै ॥
कारे तिल वै आदा लीजै । और कलौंगी तामें दीजै ॥
सातौ दवा बराबरि लाई । पैसा नौ नौ भरि तौलाई ॥
छालि अंकजरकी मँगवावै । रेंड फूलतिहि माहिं पिसावै ॥
गुड़ पुरान लै गुरच नींबकी । वजन सवाये सेर सेरकी ॥
सज्जी सोहागा गागर साबुन। तोले सात सात तेहि लावन
गेरह सेर नींबके पाता। सकल पीसि करु यकतक भ्राता ॥
ताकी गोली करौ विधाना। दश दश दमरी भरि परमाना ॥
चौदह रोज खवावै कोई । रोग जाय सुख तुरगै होई ॥

अन्य ।

दोहा-सज्जि सोहागा तूतिया, जवाखार सम लेहु ।
पीसि निसोदर मोम युत, टिकरी तासु करेहु ॥ १ ॥
निंबूरसते धोयकै, गरम तनकु करवाय ।
तीनि दिवस तिहि राखिकै, डारहु ताहि छुड़ाय ॥ २ ॥
पंद्रह दिन यहि विधि करै, नींबपत्र फिरि लाय ।
हड़ा चकावरि मोतरा, कछुही घाव पुजाय ॥ ३ ॥
हड्डाके थलमें लखै, चपटा हाड उभार ।
तासु दवा नहिं कीजिये, सो नहिं अवगुण कार ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा-सज्जी मुर्दाशंख पुनि, और निसोदर आनि ।
गुंजा गुंजा भरि सबै, औ हरतारु बखानि ।

लावै हड्डा नोकपर, दूध मदार मिलाइ।
नमदा धरिकै ताहिपर, कपरा देहु बँधाइ ॥ २ ॥
ऊपर सुतरी बाँधिये, सो मजबूत कराइ।
बीते बारह पहरके, दीजै आनि खुलाइ ॥ ३ ॥
पाती नींब पिसाइकै, रोज लगावति जाइ।
रहै बचाए चोटको, ता हड्डा मिटि जाइ ॥ ४ ॥
शालहोत्र मुनि यों कहैं, नीकी विधि यह आइ।
औषध करिये चावसों, अश्व सुखी ह्वै जाइ ॥ ५ ॥

अन्य।

चौ०–ताजी जीभ हुडार किं लावै। तारूपर हरतारु लगावै ॥
सो हड्डापर देइ बँधाई। चौथे दिवस देउ खुलवाई ॥
दोहा–खुरकी फेरि लगाइये, जौलौं नीक न होइ।
औषध याहि समानकी, और नहीं है कोइ ॥

अथ मोतरा रोग। देखो घोड़ा नंबर १४९.

दोहा–हड्डाके ढिग जौनि रग, तामें गुल्म जु होय।
कोमल नरम निहारिये, मोतरा जानौ सोय ॥
चौ०–कुचिला टुकराभरि पिसवावै। सम हरताल तावकी लावै ॥
अर्कदूधमें दोनों रगरै। मोतरा पर पछना दै चुपरै ॥
ऊपर रंड पात सो बाँधै। सात रोज याही विधि साधै ॥

बफारा।

दोहा–रंडक कोइला पाव यक, गोघृत अर्ध मिलाय।
चालिस दिन नित दीजिये, रोग दूरि हो जाय ॥

अन्य।

चौ०-कंचनरिपुकी खील करावै।यकइस दिन तोला नित पावै॥

अन्य बछेराके मोतरा रोगकी दवा।

चौ०-अँबिलवेत लै तोला चारि। गुड़ थोरा दे तामें डारि॥
दानाके पीछे परमानै। यह रंगी उस्ताद बखानै॥

अन्य मत।

दोहा-रगै पिछारी पाउँकी, तरफ भीतरी माहि।
आवत बलगम ताहिमें, सूजि तासुते जाहि॥ १॥
फिरि बहु बलगम सूखिकै, जमति नसनमों आइ।
ताते पग लँगरा परै, चला नहीं फिरि जाइ॥ २॥

दवा।

दोहा-मिर्च स्याह हरदी सहित, पाव पाव ये आनि।
मानुप खुपरी राख पुनि, वहौ पाव भरि जानि॥ १॥
खील सोहागाकी बहुरि, तोला आठ मँगाय।
सज्जी तोला चारि पुनि, सोऊ लेउ मिलाय॥ २॥
औषध तोले चारि भरि, मोठ महेला माहि।
पहर एक दिन भीतरै, हयको दीजै ताहि॥ ३॥
औषध पीछे पहर भरि, पानी देउ पिआइ।
या विधि कीजै तीस दिन, रोग नाश हो जाइ॥ ४॥

अन्य।

दोहा-पसुरी लैकै ऊँटकी, ताको लेउ पिसाइ।
ताकी पोटरी बाँधिकै, मोतरा देउ सेंकाइ॥ १॥
फिरि जलमों सो सानिकै, ताको गर्म कराइ।
मोतरापर सो बाँधिये, मुनिवर दियो बताइ॥ २॥

बाँधो राख तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाय ।
शालहोत्र मत देखिकै, कीजै यही उपाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—समुदखार हरतार पुनि, रत्ती दुइ भरि आनि ।
नीलाथोथ निसोदरै, दुइ दुइ रत्ती जानि ॥ १ ॥
लै जमालगोटा बहुरि, दाना एक मँगाइ ।
सबको पीसै एकमें, दूध माहिं मिलवाइ ॥ २ ॥
रग ऊपर लै ताहिको, दीजै आनि लगाय ।
नींबपात भरता करै, तापर दे बँधवाय ॥ ३ ॥
सोरठा—खोलै चौथे रोज, बाँधो राखै तीनि दिन ।
रहै न ऽगदको खोज, मलहम फेरि लगाइये ॥

अन्य ।

दोहा—लै अजवाइनि तीस पल, चूकु लेउ पल सात ।
ता सम सोंचर लोन लै, और सोहागा तात ॥ १ ॥
सबै ओषधी एकमों, जलमें लेउ पकाइ ।
औषध लैकै दोइ पल, ताको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दाना पाछे साँझको, औषध दीजै आनि ।
तीस रोजके भीतरै, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठा—आँबाहरदी लाइ, खील सोहागा चौकिया ।
नासपाल मँगवाइ, आधा आधा पाव सब ॥
दोहा—राई कही बनारसी, सेर एक भरि लाइ ।
ता सम चना पिसानु अरु, सबको पीसि मिलाइ॥ १ ॥

औषध पैसा एक भरि, साठि दिवस लगु देइ ।
दुपहरको जलके प्रथम, वाजी नीको लेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–पाँच सेर थूहर लै आवै । जारि तासुको राख करावै ॥
खील सोहागा कुटकी लीजै । आध पाव दोनोंको कीजै॥
दोहा–कुचिला तोला दोइ पुनि, सबको पीसि मिलाइ ।
औषध पैसा दोइ भरि, ता सम घीउ मिलाइ ॥ १ ॥
या विधि दीजै चारि दिन,शालहोत्र मत मानि ।
फिरि पैसा भरि ओषधी, पैसा भरि घिउ जानि॥ २ ॥
दानै प्रथमहि साँझको, या औषधको देइ ।
दूरि होत है मोतरा, क्षुधा अधिक पुनि लेइ ॥ ३ ॥

अन्य लक्षण ।

दोहा–केवल कफके जोरते, जौन मोतारा होइ ।
मोटी रग अतिही परै, अरु झलकति कछु सोइ ॥ १ ॥
लोधु दोइ पल पीसिकै, पोटरी बाँधै दोइ ।
गाइ घीवको गर्म करि, सेंकति नीको होइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौपाई–दश जमालगोटा लै आवै । बकली तिनकी दूरि करावै॥
निंबु कागजी रसहि कढ़ाई । तामें तिनको देइ भिजाई॥
दोहा–चालिस दिन भीजति रहै, लीजै फेरि सुखाइ ।
चना दालि भरि काढ़िकै, दीजै ताहि खवाइ ॥ १ ॥
बाँधौ राखै तीनि दिन, दीजे फेरि खवाइ ।
बरम होति है ताहिपर, सही बात यह आइ ॥ २ ॥

पुनि मुलतानी मृत्तिका, जलसों देइ लगाय।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हीं जतन बताय॥ ३॥
सोरठा-जौलौं वरम न जाय, तौलौं रोज लगाइये।
नीकी विधि यह आय, धोवत नित जलसों रहै॥

अन्य।

दोहा-रूपामाखी आनिये, सोनामाखी जानि।
नींबूके रस माहिमों, दोऊ फूँके आनि॥ १॥
अर्क दूधमें सानि सो, चना बरोबरि लेइ।
पछना दैके ताहि पर, बाँधि तासुको देइ॥ २॥
अजयामूत्र भिगोइकै, सात दिवस यह जानि।
सतयें दिन फिरि खोलिये, शालहोत्र मत मानि॥ ३॥
मलहम फेरि लगाइये, जौलौं नीक न होइ।
श्रीधर यह वर्णन कियो, शालहोत्र मत जोइ॥ ४॥

अन्य मोतरालक्षण।

दोहा-पछिलो पग यक जासुको, जो मोटा ह्वै जाय।
मोतरा जानहु ताहिको, कठिन रोग वह आय॥ १॥
बाढ़ति सूजनि जात है, होत वहै गंभीर।
वाजी लंगरा होत है, करत अधिक है पीर॥ २॥
अगिले पगमें होइ जो, फीलपाँट सो आहि।
एक औषधी दुहुँनकी, शालहोत्र मत माहि॥ ३॥

दवा।

दोहा-रगै मूसरा माहि जो, तिनको खून कढ़ाइ।
भरता बाँधे नींबको, तहू रोग मिटि जाय॥

सोरठा—नरके केश मँगाइ, तौलैं तोले चारि भरि ।
तिनको देउ जराय, शारँगधर मुनि यों कही ॥ १ ॥
हरदी कुटकी मिर्च पुनि, खील सोहागा आनि ।
चारि चारि तोले सबै, पाव सेर गुड़ जानि ॥ २ ॥
चौ०—टका टका भरि गोली कीजै । सांझ सबेरे यकयक दीजै॥
घटिका दुइ कैजा फिरि करई । सकल पीर वाजीकी हरई॥

अन्य ।

सोरठा—जो नहिं नीको होइ, दीजै ताको दागि फिरि ।
शालहोत्र कहि सोइ, या सम औषध और नहिं॥

अन्य ।

चौ०—सुमिलखार दुइ मासे लावै । ता सम सीपी चून मिलावै॥
फिरि पछना गँभीर पर दीजै । याको मलि औरौ कछु कीजै॥
दोहा—फिरि तेजाब लगाइये, दीजै ताहि बँधाइ ।
बाँधो राखै एक दिन, डारे फेरि खुलाइ ॥ १ ॥
अंबरबेलि पटोल जर, सम करि दोनों लेइ ।
भर्त्ता करिकै तासुको, बाँधि रोज सो देइ ॥ २ ॥
सोरठा—पाकि खूब जब जाइ, मलहम फेरि लगाइये ।
जौलौं सूखि न जाइ, दूरि होत गंभीर है ॥

अथ बैजा मोतराके लक्षण व दवा । देखो घोड़ा नंबर १५०

दोहा—पाछिल पदकी नलिनमें, बैजा रोग बखानि ।
मुरगीके अंडान सम, जानौ रोग प्रमानि ॥ १ ॥
मेढा कोहनी लीजिये, दिल गुरदा दोउ काढ़ि ।
ताहि चीरि तातो करै, गरम धरै रुज डाढ़ि ॥ २ ॥

जब प्रस्वेद वामें कढ़ै, वैजा बाँधौ ताहि।
दश दिनलौं यहि कीजिये, मिटै रोग सुख चाहि ॥३॥
चौ०-अंडा पुहकरमूल मँगावै। ककरीबीज जवासा लावै ॥
धनियां वच अरु सेवति फूला। मिरच गोल अरु ले कंकोला
घृतसँग तुरँगै देउ खवाई। वैजा सूख सकल मिटिजाई॥
याहीको लेपन करवावै। रोग जाय सब दुःख मिटावै ॥

अथ गजपैर (फीलपॉव)के लक्षण व दवा। देखो घोड़ा नंबर १५१.

दोहा-गजपद रुज लक्षण कहौं, दिन दिन मोटो होइ।
सूजि जाइ यक चरण तिहि, जानि लेउ बुध सोइ॥१॥
प्रथम कुसुमको फूल लै, पीसि गरम करवाय।
तीनि दिवस धारि नरम लखि, जाँय नीक ह्वै पाँय ॥२॥

अन्य।

दोहा-पलाशबीज गोमूत्र सँग, पीसि गरम करवाय।
सात रोज लगु बाँधिये, गजपद सो मिटि जाय॥
सोरठा-जो उतरै सुममाहि, सुमिलखार भरि चीरिकै।
पाकि जु रुज बहि जाय, ताजा अंबर लेपि घसि ॥

मलहम।

सोरठा-मोम जु तोला चारि, पाव एक घृत लीजिये।
श्रुति तोला मितकारि, पीसि निंब टिकरी बनै ॥ १ ॥
घृत अरु मोम मिलाइ, नींब टीकरी घेलि कलि।
लीजै ताहि कढ़ाय, तोला सेंदुर मेलि फिरि ॥ २ ॥
सिद्ध भये तेहि जानि, बनै तासु फीहा सुबर।
लाय करै छत हानि, शुद्ध धीर यहि विधि करै॥ ३ ॥

अथ जानुआरोगलक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर १५२.

दोहा–आगिल पदके मध्यमें, गाँठि सूजि जो जाय ।
ताहि जानुआ कहत हैं, याको करौ उपाय ॥

चौ०–पहिले पछना जनुआ देई । ता पीछे औषध करु सोई ॥
सुमिलखार सैंधव मँगवावै । नीलाथोथा सज्जी लावै ॥
सकल पीसि लेपन करवावै । अर्कपातको सेंकि बँधावै ॥

अन्य ।

चौ०–रसकपूर आफीम मँगावै । तोला तोला भरि लै आवै ॥
नौ मासे हरतार तावकी । चूनाके पानीमें खलकी ॥
घुटनाके कच सब मुँडवावै । नस्तरमें पछना दिलवावै ॥
मलिकै दवा रेंडदल बाँधौ । सात रोज लगु याही नाधौ

अन्य ।

चौ०–घुघुवारी दल लेउ चीरिकै । सैंधव हरदी डारु पीसिकै ॥
गरम कराय रोगपर बाँधै । यकइस दिनलौं औषध साधै ॥

अन्य दवा खानेकी ।

चौ०–मानुष खुपरी बायबिडंगा । तोला चारि चारि यक संगा ॥
खील सोहागा कुटकी लीजै । दुइ दुइ तोला वजन करीजै
खुरासान कुचिला मँगवावै । तोला पाँच पाँच मेलवावै ॥
गुड़ पुरान कालेश्वर लीजै । लीलातंत भेलावाँ दीजै ॥
आठ आठ तोले लै करौ । पीसि छानि गोली करि धरौ ॥

अन्य मत ।

दोहा–अगिली गाँठिन जोर तर, होत जानुआ आइ ।
गूँथी दारि समानकी, प्रथमहि सो दरशाइ ॥

सोरठा-गूँथी बाढ़ति जाइ, सो वह अस्थि समानकी।
तब बाजी लँगराइ, औषध कीजै प्रथमही ॥ १ ॥
दीजै बार बनाइ, ग्रंथी ऊपर जे अहैं।
पछना देउ दवाइ, ता ऊपर श्रीधर कहो ॥ २ ॥
चौ०-फेरि कागजी निंबू लावै। हरै रोग सब सुख उपजावै ॥
दोहा-रोटी कीजै उरदकी, सेंकि तरफ यक लेइ।
जौन तरफ काची अहै, बाँधि ताहि पर देइ।
सोरठा-खोलै तिसरे रोज, तीनि बार याहि विधि करै।
रहै न रोगहि खोज, कवि श्रीधर यों कहत हैं ॥

अन्य।

चौ०-मासा एक शंखिया लावै। ताहि खूब बारीक पिसावै ॥
रेंडी गूदी दोइ टका भरि। ताको पीसै खूब मिही करि
दोहा-दुवौ मिलावै एकमें, पोटरी दोइ बनाइ।
रेंडतेल धरि अग्नि पर, ताको गरम कराइ ॥ १ ॥
फेरि जानुवां सेंकिये, दोइ घरी लगु जानि।
अर्कपात फिरि गरम करि, तिनको बाँधै आनि ॥ २ ॥
नमदा धरिकै ताहि पर, कपरा देउ बँधाइ।
बाँधो राखै तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाइ ॥ ३ ॥
सोरठा-ग्रंथि बैठि जब जाइ, मलहम फेरि लगाइये।
नीकी विधि यह आइ, होइ जानुआं दूरि तब ॥

अन्य।

दोहा-मानुष खुपरी जारिकै, हींग सोहागा लाइ।
खील कीजिये दुहुँनको, तीनिहु लेउ मिलाइ ॥ १ ॥

औषध मासे चारि यह, गुड़में लेउ मिलाइ।
एक मास लगु दीजिये, रोज रोज यह लाइ॥ १॥

अन्य।

दोहा--चींटा माटी आनिकै, सेंदुर ताहि मिलाइ।
सुमिलखार सज्जी सहित, और तूतिया लाइ॥ १॥
जवाखार पुनि लीजिये, सबको पीसि मिलाइ।
मलहम करिकै ताहिको, रुजपर देइ लगाइ॥ २॥
चौपाई-औषध मासै षट लै आवै। पछना दैकै ताहि लगावै॥
बाँधै अर्कपात सेंकवाई। चौथे वासर देउ खुलाई॥
दोहा-मलहम फेरि लगाइये, जखम नीक ह्वै जाइ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, कीजै यही उपाइ॥

अन्य।

दोहा-सुमिलखार अरु सिंगिया, मासे डेढ़ मँगाइ।
ता सम सेंदुर ताहिमें, दीजै आनि मिलाइ॥ १॥
पछना दैकै ताहिपर, औषध देइ लगाइ।
याको वासर तीनि लौं, रोज लगावत जाइ॥ २॥
चौ०-फिरि सीपीको चूना लावै। तिलके तेलहि ताहि मिलावै॥
रोजरोज फिरि ताहि लगावै। जखम तासुको जब भरिआवै
दोहा-खुरकी फेरि लगाइये, जखम सूखि जब जाइ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, रोग नाश ह्वै जाइ॥

अथ बेरहड्डी। देखो घोड़ा नं० १५३.

दोहा-आगिल करनाली विषै, अस्थि बेरसम होइ।
ताहीसों लँगराइ है, बेरहड्डि कहि सोइ॥ १॥

नीलाथोथा पीसिकै, निंबूरसहि मिलाय ।
ऊपर वाके लेपिये, हड्डी सो वहि जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-अजापुत्रके अस्थिको, गूदा लेइ निकारि ।
हड्डी ऊपर बाँधिये, औषध कहौं विचारि ॥

अन्य ।

चौ०-माटीको खपटा लै आवै । ताहि मध्य अफीम लगावै ॥
अग्नि सेंकिकै हड्डी बाँधै । सात दिनालौं सो आराधै ॥
निश्चय सो तुरतै वहि जाई । जो या विधिसो करै उपाई ॥

अन्य ।

चौ०-मासे एक अफीम मँगावै । ताको दून बतासा लावै ॥
दूनों मिल इक टिकिआ करै । माटीके ठिकरा पर धरै ॥
ठिकरा गरम लेउ करवाई । मरजके ऊपर देउ बँधाई ॥
जबलग हड्डी नीकि न होई । तबलग ठिकरा बाँधो सोई ॥

अन्य ।

चौ०-खाली मिश्री कूटि बँधावै । याहूसों अच्छा है जावै ॥

अन्य ।

चौ०-बकरी गुरदा गरम बँधावै । वे हड्डिको नाश करावै ॥

अन्य ।

चौ०-नमक घोरि पानीमें चुपरै । हड्डी बैठि जाय हय सुधरै ॥

अन्य ।

चौ०-थूहर भूँजिक साबुन डारै । गेरह पहर बाँधिकै छोरै ॥

अन्य ।

चौ०—ऊँट कि पसुरी गरम करावै । वाहीसे हड्डी सेंकवावै ॥
अच्छा होय बार नहिं जामें । करौ दवा जो आवै मनमें ॥

अन्य ।

चौ०—माटीको यक ढेला लीजै । अग्नि पकाय सेंककरि दीजै ॥

अन्य ।

चौ०—उरदको आटा गोला करै । ताके बीचहि मिश्री धरै ॥
ताको अग्निमध्य पकवावै । आधा फोरि गरम बँधवावै ॥
बहु करा करि बांधौ याही । जबलग हड्डी गलै न जाही ॥

अन्य ।

चौ०—यक मोटी टिकरी लै आवै । पावकमें बहु तप्त करावै ॥
तेहि टिकरी पर मिश्री डारै । चुरि जावै कछु गरम विचारै ॥
हड्डीपर बांधौ कसि बुधजन । कई रोजमें गलिहै रुजतन ॥

अन्य ।

दोहा—सेंहुड़ पहुँचा लाइकै, आधा लीजै फारि ।
धरै ताहि लै अग्निपर, लोनु लहौरी डारि ॥ १ ॥
खूब गरम ह्वै जाइ जब, दीजै ताहि बँधाइ ।
या विधि कीजै सात दिन, रोग व्याधि मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—पट्ठा लेहु कुमारिको, एक तरफको ताहि ।
बकला तासु उतारिकै, यह औषध लगवाहि ॥ १ ॥
ताहि अग्नि पर गरम करि, दीजै आनि बँधाइ ।
बाँधो राखै तीनि दिन, तीनि बेर करवाइ ॥ २ ॥

अथ जेरवाईपैररोग लक्षण व दवा । देखो घोड़ा नम्बर १५४.

दोहा-पिछले पगकी नलिनमें, मध्य भीतरी ओर ।
उन्नति अस्थि विलोकिये, जेरवाइ रुज घोर ॥ १ ॥
एक नलीमें होइ जो, अश्व बहुत लँगराय ।
दुवौ नलिनमें होइ जो, चलत घसीटै पाँय ॥ २ ॥

सोरठा-चरण होइ कमजोर, जो हयके रुज ऊपजै ।
कीजै दवा बहोर, शालहोत्र मत समुझिके ॥

तेजाव हड्डी काटनेका ।

चौ०-जहर शंखिया कुचिला लीजै । दंती गोटा तामें दीजै ॥
और अफीम लेउ मँगवाई । कारे तिलको देउ मिलाई ॥
सकल दवा सम भाग पिसावै । अर्कदूधमें लेप करावै ॥
जबलग हड्डी कटै न भाई । साँझ भोर लेपन करवाई ॥
उन्नत अस्थि जबै बहिजाई । तब यह दवा करो मन लाई ॥

घाव सूखनेकी दवा ।

दोहा-लैकै रूमीमस्तगी, सिंहजराव मँगाइ ।
सूखै पीसै भाग सम, रुजपर देइ डराइ ॥ १ ॥
घाव सूखि जावै जबै, करौ जतन कछु और ।
करौ दवा ऐसी सुघर, बार जमैं वहि ठौर ॥ २ ॥

बार जमनेकी दवा ।

चौ०-साबुन औ लिलवरी मँगावे । अजा दूध घिसि लेप करावे ॥
साँझ भोर यक मास प्रमाना । बार जमैं जो करौ विधाना

अथ चकावारि रोग लक्षण व दवा । देखो घोड़ा नं० १५५

दोहा-आगिल कर सुमके उपर, अर्धगामची ओर ।
पिलपिलाइ सूजनि पकै, कहौं चकावारि ठौर ॥

चौ०--रुज ऊपरके बार मुँड़ावै । नस्तरभे पछना दिलवावै ॥
रुधिर बहुत तिहि डारु निकारी। पीछे दवा करौ रुजहारी
अर्कमूलकी लीजै छाली । मानुषमूत्र मेलु तिहि घाली ॥
सात रोज लगु याही बाँधै । सूजै पाँउ और विधि नाधै॥

अन्य ।

चौ०--खील फिटकरीकी ले आवै । मरका मोम मिलाय लगावै॥
कई रोज लगु याको कीजै। रोग चकावरि पुस्तक छीजै॥

अन्य ।

चौ०--मोट कड़ा सीसेको डारै । ताके बोध सूध पग धारै ॥

अन्य ।

चौ०--समुद्फेन वचको मँगवावै । नीलाथोथा कुचिला लावै॥
लौंग निसोदर और अफीमा। समकरि पीसिपकाइ अनलमा
पछना दै औषध बँधवावै । रोग चकावरि दूरि करावै ॥

अन्य मत ।

दोहा--अगिले पगकी गामची, होत ताहिके माहि ।
हाड़ फोरि गूंथी कढ़ै, कहै चकावरि ताहि ॥ १ ॥
जलदी औषध कीजिये, नाहित लेंगरा होइ ।
फुरियाके सम होइ जब, नीक होइ नाहिं सोइ ॥२॥
रुधिर हथेरी माहिमों, ताको देइ कढ़ाइ ।
फिरि यह औषध लाइकै, रोज बँधावति जाइ ॥३॥
रेवाचीनी एलुआ, तोले आठ बखानि ।
मासे चारि अफीम पुनि, हरदी दूनी जानि ॥ ४ ॥
सबको पीसै एकमें, थोरी औषध लेइ ।
चुरवै मानुषमूत्रमें, लेप तासु करि देइ ॥ ५ ॥

बटके पाता आनिकै, तापर घीउ लगाइ।
फिरि आगीपर सेंकिये, तापर देहु बँधाइ॥ ६॥
पुस्तक और चकावरी, सात रोजमें जाय।
यासों नीको होइ नहिं, ताको कहौं उपाय॥ ७॥

अन्य।

दोहा-बार चकावरि ऊपरै, तिनको देउ मुँड़ाइ।
दूध अर्कको तीनि दिन, रोज लगावति जाइ॥ १॥
सूजनि तामें होइ जब, दही तोरको लाइ।
अथवा गुड़के सरवतहि, दीजै ताहि छड़ाइ॥ २॥
सोरठा-दीजै फेरि दगाइ, पुस्तक और चकावरी।
और मूसली जाइ, शालहोत्र प्रण करि कहैं॥

अथ पुस्तकरोगलक्षण व दवा। देखो घोड़ा नंबर १५६.

दोहा-सुमके ऊपर जहँ त्वचा, पाकि पिलपिला होय।
फूटि बहै सूजै बहुत, है पुस्तक रुज सोय।
चौ०-अगिले पाँय चकावरि जानौ। पछिले पद पुस्तक अनुमानौ।

अन्य मत।

दोहा-पछिले पगकी गामची, पुस्तक तहँपर होइ।
जैसि चकावरि होति है, ता सम जानौ सोइ॥ १॥
कुचिला लीजै चारि पल, तिनको लेउ पिसाइ।
आँवाहरदी दोइ पल, तामें देहु मिलाइ॥ २॥
मासे सात अफीम लै, सो ऊ लेउ मिलाइ।
अदरखके रस माहिसों, लीजै ताहि पकाइ॥ ३॥

सोरठा–लेप ताहु करि देइ, सूखि फिटकरी बाँधिये ।
पुस्तक ताकै सोइ, मिटत मूसली है सही ॥

अथ गानारोगलक्षण व दवा । देखो घोड़ा नम्बर १५७.

दोहा–पुस्तकके ऊपर लखै, गाना ताहि बखानि ।
दवा न कछु ताकी कहौं, दुखद न कछु तेहि जानि ॥

सुमफटेके लक्षण व दवा । देखो घोडा नंबर. १५८.

सोरठा–हयको सुम फटि जाइ, जो तौ दोइ प्रकारसों ।
खड़ी लीक परिजाइ, लीक बेंडिकी परति है ॥

दोहा–सुम जाको है फटि गयो, सो लँगरा हो जाहि ।
औषध ताकी कहत हौं, शालहोत्र मत माहि ॥ १ ॥
मोमु गरम कै लीजिये, तोला भरि यह जानि ।
सिंदुरु मासे चारि भरि, ताहि मिलावै आनि ॥ २ ॥
फटो जहाँ पर सुम अहै, तामें देउ भराय ।
लोह तप्त करि ताहिमें, दीजै गुलन देवाइ ॥ ३ ॥
बाँधो राखै थानपर, दिन नवयें लगु जानि ।
सुम नीको है जात है, होइ पीरकी हानि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–कुचिला मासे चारि भरि, ताको लेउ पिसाइ ।
ता सम गूदी रेंडकी, सोऊ लेहु मिलाइ ॥ १ ॥
मासे एक अफीम पुनि, भँगरा रांगु मँगाइ ।
सबको करिये एकमें, लीजै ताहि पकाइ ॥ २ ॥

सोरठा–सुम फाटो जहँ होइ, भरि ताको तहँ दीजिये ।
जौलौं नीक न होइ, ताहि भरत नितप्रति रहै ॥

अथ सुमके भीतर छाला पड़नेके लक्षण व दवा।
देखो घोड़ा नंबर १५९.

दोहा-नींबपातको आनिकै, देइ बफारा ताहि।
बहे फूटि छाला चरण, मिटै रोग सुख चाहि।
चौ०-जो याहूते नीक न होई। अष्टादली बफारा देई॥
ताहि बफाराको कसि बाँधे। कई रोज लगु तेहि अवराधै॥

अथ छीवालरोग लक्षण व दवा। देखो घोड़ा नंबर १६०.

दोहा-होत अहै मोजा विषे, गंज समान देखाइ।
निकसत ताते पीबु है, तुरी बहुत लँगराइ॥
सोरठा-दालि उरदकी लाइ, नींबपात पुनि ताहि सम।
दोऊ लेउ मँगाइ, सो बाँधौ लै ताहिपर॥
दोहा-बीते बारह पहरके, दीजै ताहि खुलाइ।
फिरि यह औषध बाँधिये, ताहि तूतिया लाइ॥ १॥
खोलै बारह पहरमो, पाति हुरहुरा लाइ।
छीवा ऊपर बाँधिये, थोरा लोनु मिलाइ॥ २॥
तीनि दिवस यह ओषधी, रोज लगावत जाइ।
कवि श्रीधर यह जानियो, रोग नाश है जाइ॥ ३॥

अथ मांसवृद्धिरोगलक्षण व दवा। देखो घोड़ा नंबर १६१.

दोहा-मांस बढ़ै अति पैरमें, नकिआ बहुत देखाय।
शालहोत्र मुनिके मते, रोग कठिन यह आय॥ १॥
आनि सँभारू पातको, और बकायन पात।
आँबपात सम पीसिकै, ताहि पिआवै प्रात॥ २॥

कई रोज लगु दीजिये, याते जो न बिहाय ।
तौ दागै करि सुधरई, पलकी वृद्धि नशाय ॥ ३ ॥

चौ०–मांसवृद्धि घोड़ाके देखै । अमिष बहुत बाढ़त औरेखै ॥
कीरा परैं नीक नहिं जानै । लक्षण ताहि निदान बखानै ॥
अजैपाल अरु नीलाथोथा । सुमिलखार औ सज्जी मोथा ॥
नींबपातकी टिकिया करै । करुये तेल मध्य सो चुरै ॥
टिकिया काढ़ि औषधी नाई । नींबीके सोंटा घुटवाई ॥
लेपन करै खोलि रग दीजै । हरै रोग नीको करि लीजै ॥

अन्य ।

चौ०–दुधिया कत्था और फिटकरी । पैसा पैसा भरि सम करी ॥
जहर शंखिया तोला लीजै । तोला दुइक निसोदर दीजै ॥
एकैमाँ सब खरिल करावै । मांसवृद्ध जल सँग चुपरावै ॥
जबलग मांस वृद्धि ना गिरै । तबलग यही औषधी करै ॥

अथ कफगीरारोगलक्षण व दवा । देखो घोड़ा नंबर १६२.

दोहा–जो पल बढ़ि आवै लखै, पुतरीमांह तुरंग ।
कफगीरा ताको कहैं, करै दवा लखि ढंग ॥ १ ॥
चूना अरु हरुतारको, पीसि लेप करि देहि ।
बाँधि टाटसों दुइ बखत, मिटै रोग सुख लेहि ॥ २ ॥

अन्य मत ।

दोहा–मांस पूतरीको बढ़ै, नरम बहुत सरि जाय ।
नीक होय फिरि ऊछरै, कफगीरा सो आय ॥

चौ०–कुटकी मिर्च सोंठि औ पिपरी । सोंचर नमक, पीसि सब धरी
पाव पाव सब ले तौलाई । दो तोला भरि हींग मिलाई ॥
बारह दिवस अश्वको दीजै । कफगीरा ताको हरि लीजै ॥

अन्य।

दोहा-सुमके भीतर जासुके, अती नर्म हो जाइ ।
कीतौ मांस समान सो, सुमके भीतर आइ ॥ १ ॥
फेरि बरोवरि होइ करि, बैठि जाइ सुम आइ।
आवत ताते पीबु है, हयते चलो न जाय ॥ २ ॥
छाती जाकी बन्द है, ताहि रोग यह होइ।
कसरि तासुकी ना मिटै, दवा करै किन कोइ ॥ ३ ॥
असवारी लायक तुरी, औषध कीन्हें होइ।
यासा औषध कीजिये, शालहोत्र मत जोइ ॥ ४ ॥

दवा ।

दोहा-तोले एक अफीम लै, ता सम हींग मिलाइ।
लेहु सोहागा दुहुँनसम, तासम गूगुर लाइ ॥ १ ॥
छा तोले भरि फिटकरी, हालिम तोले सात ।
पाव एक भरि लीजिये, साबुन हरदी तात ॥ २ ॥
आधपाव कुटकी बहुरि, सोऊ लेउ मिलाइ।
नर शिरके पुनि बार ल, तोल चारि जराइ ॥ ३ ॥
कारीजीरी लीजिये, तोले चारि पिसाइ ।
यवको लेहु पिसान पुनि, सेर एक मँगवाइ ॥ ४ ॥
प्रथमाहिं हींग अफीमको, जलमें लेहु घुराइ।
सबै औषधी पीसिकै, तामें देहु मिलाइ ॥ ५ ॥
गोली बांधौ पंचदश, ताहि पिसानु मिलाइ।
एक एक दोनों बखत, ताहि खवावत जाय ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा—चारि टकाभरि मोमको, लेउ ताहि पिघलाइ ।
सेंदुर पैसा दोइ भरि, तामें लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
बांधे हयके पाइमें, टिकिया तासु कराइ ।
चारिउ पाँवन होइ जो, चौगुन लेउ मँगाइ ॥ २ ॥

सोरठा--जौलौं नीक न होय, तौलौं नितप्रति बाँधिये ।
शालहोत्र कहि सोइ, वाजी नीको होत है ॥

अन्य ।

दोहा—चर्बी तोले एक भरि, बकरा दिलकी लाइ ।
एक एक तोले बहुरि, रार मोम मँगवाइ ॥ १ ॥
लेउ भेलावाँ पाउ भरि, गर्री दो पल आनि ।
पिस्ता और ककूँदनी, दुइ दुइ तोले जानि ॥ २ ॥
ताको तेल कढ़ाइये, यन्त्र पतालहि माहि ।
ताहि लगावै बाजि सुम, तुरी नीक ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—आँविली पाती स्याह तिल, पाउ एक सो आनि ।
लेउ विरोजा डेढ़ पल, ताके सम गुरु जानि ॥ १ ॥
तोले भरि जंगाल पुनि, सबको पीसि पकाइ ।
बाँधे हयके सुम विषे, टिकिया तासु बनाइ ॥ २ ॥

सोरठा—खोलै तिसरे रोज, तीनि दफा औषध करै ।
रहै न गदको खोज, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

अथ मधु पंकजरस रोग लक्षण व दवा। देखो घोड़ा नं १६३.

दोहा-बन्द बन्द जेहि अश्वके, गांठी परि परि जाइ।
मधुपंकज है नाम रस, आतुर करौ उपाइ ॥
चौ०-रसकी गिरहैं सब चिरवावै। तेहिके ऊपर औषध लावै ॥
बाँबीकेरि मृत्तिका आनै। और सँभारू पाती जानै ॥
असगंध पानी लेपन करै। मधुपंकज रस तुरंत हरै ॥

अन्य।

चौ०-राईपात मिठाई लावै। घोड़ेको उठि प्रात खवावै ॥

अन्य मत।

दोहा-जाके सब गाँठिन विषे, बरम होति है आनि।
बरम नरम सो होति है, मधुपंकज रस जानि ॥ १ ॥
प्रथमै ताको चीरिकै, पानी देइ वहाइ।
ता पाछे औषध कहौं, ताको काजमें लाइ ॥ २ ॥
पात सँभारूके सहित, अरु असगँधके पात।
माटी बाँबीकी बहुरि, पाकी ऑबिली तात ॥ ३ ॥
जलमें सबै पकाइये, तासों देइ धुवाय।
वही औषधी मीजिकै, तापर देउ बँधाय ॥ ४ ॥
सोरठा-जखम साफ जब होय, मलहम फेरि लगाइये।
सूखि जाय जब सोय, वाजी नीको होत है ॥ ५ ॥

अन्य।

सोरठा-हरे रेंडके पात, तोला एक सु लीजिये।
सो दीजै दिन सात, ता सम गुड़हि मिलाइकै ॥

पंकजपानरस ।

दोहा-गूँथीसी जाके परैं, चारिउ पाँवन आनि ।
तिन गूँथिनते रस बहै, पंकजरस सो जानि ॥ १ ॥
जवाखार सज्जी सहित, दुइ दुइ तोले आनि ।
अमिलीजलमो घोरिकै, ताहि मिलावै जानि ॥ २ ॥
गूंथिनपर ताको मलै, तीनि रोज यह मानि ।
ता पाछे औषध कहौं, ताहि खवावो आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-अजवाइन सैंधव सहित, लहसुन सोंठि बखानि ।
बाघिनि हर्नी दूध पुनि, बायबिडंगहि जानि ॥ १ ॥
तीनि तीनि तोले सबै, औषध लेउ मँगाइ ।
पल बतीस गुड़ ताहिमें, दीजै आनि मिलाइ ॥ २ ॥
यह औषध दिन सातमें, दीजै सबै खवाइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, पंकजरस मिटि जाय ॥ ३ ॥

अन्य मत ।

दोहा-कर अरु चरण तुरंगके, रस उतरै लँगराय ।
गुलफी पाँयनमा ह्वै, पंकज पान कहाय ॥ १ ॥
गुलफिनते लोहू चलै, कछुक सूज पुनि होय ।
ग्रंथिनमा कीरा परैं, यह लक्षण लख सोइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा--रसकी गिरहैं कोरिकै, करै सफेदी दूरि ।
जवाखारसज्जी मिलै, अँबिली भरै भरि पूरि ॥

अन्य ।

दोहा—दूध लसोढ़े आनिकै, सैंध जवायनि लेय ।
लहसुन सोंठि भरंगि गुड़, संग खाइको देय ॥

चौ०—रसकी गिरहैं साफ करावै । ता पाछे औषध लगवावै ॥
बाँबीकेरि मृत्तिका आनै । और संभारूपाती जानै ॥
असगँध पानी लेपन करै । पंकजपान अश्वकी हरै ॥

दोहा—वाजीकेरे चरणकी, दीजै फस्त खुलाय ।
पाछे करै इलाजको, रोग नीक हो जाय ॥

दवा ।

दोहा—पाती नीब पवाँर जर, दूध लसोढ़े लेइ ।
चँदसुर सुरभी घीउ सँग, खान तुरीको देइ ॥

चौ०—ऊसरकेरि मृत्तिका लावै । निंबूरसमा सो घुरवावै ॥
लेपन करै गातमें जोई । तुरत नीक हय याते होई ॥

अन्य ।

चौ०—सैंधव बायविडंग मँगावै । अजवाइनि हालिम पिसवावै ॥
गोघृत दूध लसोहर सानै । ग्यारह दिन खावै परमानै ॥
पछना ग्रंथि विचारिक देई । पान पिसाइ गरम करि लेई ॥
ग्रंथिन ऊपर ताहि बँधावै । सात दिवसमा नीको पावै ॥

अन्य ।

चौ०—ककई पातीको रस लीजै । गुड़ घृतके सँग खानहि दीजै

अन्य ।

चौ०—हरदी सोंठि सोहागा लीजै । अश्वसुमन पर लेपन कीजै ॥
सर्षप तेल पीसिकै रगरै । सो रस रोग वेग ही हरै ॥

दोहा-रस उतरै है पूतरी, दवा न करु दिन बीस ।
छिरकि नमक खारी तहाँ, अधिक बहै सुख दीस ॥ १ ॥
हरदी चून मिलाइ सम, खतमें खूब लगाय ।
तीनि दिवस लावे सुघर, रुकै रसा सुख पाय ॥ २ ॥

अथ थामरतिलै रस ।

दो०-सुम पाकैं जिहि अश्वके, आमिष गलि गलि जाय ॥
तातो पानी चलत है, थामरतिलै कहाय ॥
चौ०-चँदसुर लोहचन लेउ पिसाई ।तिलके तेल भोलि मलु भाई॥
घायके ऊपर लेपन करै । रँडके पाता गरमें धरै ॥
टापू सेंकै पात बँधावै । आतुर घाव नीक ह्वै जावै ॥

अन्य ।

चौ०-दूध लसोहर सैंधव लीजै । गुड़के संग खानको दीजै ॥

अन्य ।

चौ०-छोटी हर्र खैरु औ लुहचन । लेउ टंक सत्ताइस बुधजन॥
अरुण रंडके पात मँगावै।सकल पीसि रुजपर बँधवावै॥
ईंट ताति करि सेंकै जबही । सात रोजमें नीको लेही ॥

अथ तलथमरस लक्षण व दवा ।

दोहा-सुमके भीतर जाहिके, दधिके सम ह्वै जाय ।
जरद नीर तासों चलै, तलथमरस सो आय ॥ १ ॥
चँदसुर लोहचन लीजिये, षट तोले मँगवाइ ।
तिलको तेल मँगाइये, लीजै खरिल कराइ ॥ २ ॥
सोरठा-ताको लेप कराइ, ईंट गरम करि सेंकिये ।
रंडपात बँधवाइ, या विधि कीजै तीनि दिन ॥

अथ गतिभंगीरस-लक्षण व दवा।

दोहा--कर औ चरण सूजि बहु, चलै न पावै घोर।
गति भंगी तिहि नास रस, बड़ो रोग है जोर॥ १॥
अश्वपाँय चौबंदिकर, दीजै रगै खुलाय।
पाछे करै इलाजको, रोग नीक ह्वै जाय॥ २॥
लीजै पात पवाँर जर, दूध लसोहर लेइ।
चँदसुर गोघृत संग लै, खान तुरीको देइ॥ ३॥

अन्य।

सोरठा--आंब नींबकी छाल, पानी लीजै हर्रको।
वीस टंक सो घाल, लहसुन लीजै टंक षट॥
चौ०-ज्वंडीकी जर आनौ भाई। पांच टंक लीजै तौलाई॥
पीसि छानि गोघृत सँग दीजै। गतिभंगीरसको हरि लीजै॥
मुनि वासर तिहि दीजै खाना। औषध कीजै चतुर सुजाना॥

अथ कचरस-लक्षण व दवा।

दोहा-अंग हलावै जो तुरँग, करै फरहरी देखि।
यह लक्षण भाषैं नकुल, कचरस सो अवरेखि॥
चौ०-असगँध सोंठि बराबरि लीजै। कचरस रोग तुरँगको छीजै॥

अन्य।

चौ०-पित्तपापरा हींगजु पिपरी। मिरचै स्याह करो यक ठौरी॥
आठ आठ टंकै परमाना। कपरछान करि गोघृत साना॥
घोड़ेको जो देइ खवाई। कचरस हरै विथा सब जाई॥

अथ अन्य मत कईतरहके रस लक्षण व दवा ।

दोहा-रस उतरै जिहि सुमनमों, प्रगट बहत नहिं होइ ।
तप्त रहैं सुम रैनि दिन, गुप्त रहै रस सोइ ॥

दवा ।

सोरठा-सीपी चून मँगाइ, भाँटासों भरि दीजिये ।
फिरि कपरा लपटाइ, माटी तापर लाइये ॥
दोहा-गाड़ि देइ सो अग्निमों, पाकि खूब जब जाइ ।
चून निकारै ताहिते, ताकी यह विधि आइ ॥ १ ॥
सुमके भीतर ताहिको, भरत रोज सो जाइ ।
सही जानियो बात यह, रस ताको बहि जाइ ॥ २ ॥

प्रगट रस ।

सोरठा-सुमकी पुतरी माहिं, बहै आनि रस जाहिको ।
प्रगट जानियो ताहि, प्रथम देह बहिजान सो ॥
दोहा-औषध खुश्कीकी अहै, तिनको देउ भराइ ।
तासों नीको होइ नहिं, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
नीलाथोथा खदिर पुनि, सूखे पीसै आनि ।
सुमके भीतर लाइकै, भरै ताहिको जानि ॥ २ ॥
नहिं असवारीको करै, जलसों देइ बचाय ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, कीजै यही उपाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

सोरठा-बहत होइ रसु जाहि, बीते जाके बहुत दिन ।
सुम नाकिस ह्वैजाइ, तरफ भीतरी जानियो ॥
दोहा-कुचिला गूदी रेंडकी, मासे आठ प्रमान ।
मासे चारि अफीम पुनि, तामें देउ सुजान ॥ १ ॥

सुम नाकिस जो ह्वै गयो, दीजै ताहि भराइ।
गद्दी कपराकी करै, तापर देइ बँधाइ ॥ २ ॥
आठ पहरके बाद सो, दीजै ताहि खुलाइ।
नितप्रति बाँधै ओषधी, जौलौं सूखि न जाइ ॥ ३ ॥
सोरठा—सुम जाको फटि जाय, चुवै आनि रस ताहितें।
ताको यहै उपाय, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

सर्वरस दूर करनेकी दवा।

चौ०—हरदी चौंतिस पल भरि लीजै। कारीजीरी ता सम कीजै॥
आठ कर्ष कुटकी लै आवै। सोऊ तामें आनि मिलावै॥
दोहा—दिन इकइस लौं बाजिको, ताहि खवावै आनि।
साँझ सवेरे दीजिये, दो दो पल सो जानि ॥

अथ परसगीध लक्षण।

दोहा—प्रथमहि तौ रस उतरिकै, सुम भीतर गलि जाइ।
परसगीध सो जानियो, दोष रसहिको आइ ॥

दवा।

चौपाई—पहुँचा सेहुँड़को लै आवै। सोरह अंगुर ताहि नपावै॥
भीतर ताको खाली करै। खाली लोनु ताहिमों भरै॥
दोहा—तापर गोबरु लेसिकै, डारै ताहि सुखाय।
अग्निमाहिं सो डारिकै, ताको देउ जराय ॥
सोरठा—खूब राख ह्वै जाइ, लीजै ताको काढ़ि सब।
तामें देउ मिलाइ, बायबिडंगी तीस पल ॥
दोहा—चौदह गोली तासुकी, जलसों लेहु बँधाइ।
धूपमाहिं धरि ताहिको, डारै खूब सुखाइ॥ १ ॥

आधी गोली साँझको, आधी भोरहि आनि।
दीजै चौदह रोज लगि, शालहोत्र मत मानि ॥ २ ॥
कही लगावन औषधी, जेती रसमों आइ ।
तिन्हैं लगावै नित्यप्रति, और बँधावति जाइ ॥ ३ ॥

अथ पावोंका गम्भीर रोग।

दोहा—पाकै अरु फूटै वहै, अमिष कढ़ो सो जानु ।
पीब चलै बहु छिद्र हैं, ताहि गँभीर बखानु ॥
चौपाई—सुमिलखार सज्जी औ चूना। जवाखार सबते ले दूना॥
रेंडके पाता संग बँधावै। रोग गँभीर दूरि ह्वै जावै ॥

अन्य।

दोहा—पान एकसै लीजिये, आधा पल सिंदूर ।
ग्यारह दिनलौं खान दे, जाय रोग गंभीर ॥

अथ सुम एंड़ी खुश्कीसे फाटे उसकी दवा।

दोहा—जा तुरंगके सुम बहुत, खुश्कीते फटि जाय।
ताकी औषध कीजिये, रोग दूरि ह्वै जाय ॥
चौपाई—अरसी अरु गोदूध मँगावै। चमराकी थैली बनवावै॥
खीर पका इक थैली भरै। ताके भीतर सुमको धरै ॥
साँझ सकारे या विधि कीजै।रोग हरै सुख बहुत करीजै॥

अन्य।

चौपाई—गूगुर रार मोम गुड़ लेहू। लोध लाख सैंधव सम देहू॥
पिपरी डारि सकल पिसवावै।गोघृत अरु तिलतेल मिलावै
अग्नि पकाय टापमें भरै। नीको होय रोग रस हरै॥

अन्य।

चौ०—नैंन् रार ऽरु सिंगरफ आनै।लोध मिलै मलहम सो ठानै॥
तरवा लेप ताहि करवावै। रेंडके पाता सेंकि बँधावै ॥

अथ पैरमें मोच जाय उसकी दवा।

दोहा—जो घोड़ाके हाथ पद, मोच जाय तिहि हेरि।
तो लेंड़ी भेड़ीनकी, अरु पिशाब तहँ गेरि ॥ १ ॥
पतरी करि धरि अग्निपर, पकै सो बाती भेइ।
धूप खड़ोकरि चुपरि तिहि, तीनि दिवस सुखलेइ ॥२॥

अन्य।

दोहा—सर्षप तेल अफीमको, गेरू पीसि मिलाय।
पदपर सेंक जु दीजिये, तुरतै मोच विहाय॥

अन्य।

चौ०—लेउ सहोर चिटकुआ छाली। खारी नमक ताहिमें घाली॥
अग्नि पकाय बफारा दीजै। ताहि धोय मालिस करि दीजै॥
सात पाँच दिन औषध कीजै। मोच जाय तुरँगै सुख लीजै

अन्य।

दोहा—जो घोड़ाके सूममें, चढ़िकर मेष लगाय।
की कंकरकी टीकरी, गड़े लंग है जाय ॥ १ ॥
तापर हयको पद धरै, तक्रा नमक डराय।
गर्म करै यक ईंटको, पट गद्दी बनवाय ॥ २ ॥
थोरो थोरो छोड़िये, जाहिं बफारा होय।
सकल मोच्च मिटि जाइ है, नकुल कहै मत सोय ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—मैदालकरी लोधु पुनि, हालिम हर्दी आनि।
नरकचूर अरु तज सहित, पुहकरमूल बखानि ॥ १ ॥
सबै ओषधी भाग सम, सबके सम गुरु लाइ।
जलमो सबको पीसिकै, लीजै गरम कराइ ॥ २ ॥

सोरठा—मोच जहांपर होइ, दीजै लेप लगाय तहँ ।
बारह दिनलौं सोइ, बाजी नीको होत है ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—सज्जी हालिम सोंठि पुनि, मैदा लकरी आनि ।
एक एक तोले सबै, येती औषध जानि ॥ १ ॥
बीज कटाईके बहुरि, तोले पाँच मँगाइ ।
गऊमूतसों पीसिकै, सबको लेउ पकाइ ॥ २ ॥
सोरठा—मोच जहांपर होइ, होति अहै सूजनि तहाँ ।
लेप लगावै जोइ, बारह दिनलौं ताहि पर ॥

अन्य ।

दोहा—राई अजवाइनि सहित, मैदालकरी आनि ।
सबको भाग समान लै, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
आंबाहरदी सबनते, दूनी लेउ मँगाइ ।
औषध पैसा चारि भारि, दूध-माहिं पकवाइ ॥ २ ॥
छाती जाकी बंद है, मोच गईकी आइ ।
लेप लगावै सात दिन, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अथ पैर भारि जायँ उसकी दवा ।

दोहा—जो रग है कर चरणकी, नली माँहपै सोय ।
अति मोटी पारि जात है: तुरँग लंग तव होय ॥
चौपाई—यक हाँड़ीमें जलको भरै । पात पलाश ताहिमें धरै ॥
आधपाव खारी तिहि डारै । अग्नि पकाय अरध जल जारै ॥
दल निकारि रुजपै कसि साधै । ताके ऊपर कपरा बाँधै ॥
मूँज रसीसे दृग कसवावै । तिहि ऊपर सो पानी नावै ॥
तीनि दिवसमों नीको लेई । यह औषध जानौ बुध सोई ॥

दोहा—त्रय विंशति रुज चरणके, वरणे चेतनचंद।
लखि निदान औषध करै, कटैं दुःखके फंद॥

अथ चोटसे कहींका मांस फट जाय अथवा सम भीतर
फट जाय उसकी दवा।

दोहा—मांसु जासु भीतर फटा, दरद दबाये होइ।
दरद दबाये होइ नहिं, मोच जानियो सोइ॥
सोरठा—मैदालकरी आनि, हालिम हर्दी लेउ अरु।
दुइ दुइ तोले जानि, दुइ पैसा भरि तेल तिल॥
दोहा—स्याह तिलनकी पुनि खरी, पावसेर सो लाइ।
मुर्गी अंडा तीनि लै, तामें देउ मिलाइ॥ १॥
सबको पीसि पकाइ जल, दीजै ताहि लगाइ।
रंडपात धरि ताहिपर, दीजै ताहि बँधाइ॥ २॥
औषध कीजै सात दिन, फटो मांस जुरि जाइ।
नितप्रति नई बँधाइकै, रोज लगावत जाइ॥ ३॥

अथ नस फट गयी हो उसकी दवा।

दोहा—सेंदुर तिलके तेलमों, लीजै खूब मिलाइ।
फटी जहाँपर नस अहै, दीजै खूब मलाइ॥ १॥
पात सँभारू आनिकै, की कमरखके पात।
गरम कराइ बँधाइये, सात रोजलौं तात॥ २॥

अथ नसफार व मोच दोनोकी दवा।

दोहा—भेड़ीके घी माहिमों, खारी लोनु मिलाइ।
ताहि मलै दिन सातलौं, नसकी पीर नशाइ॥

लक्षण ।

सोरठा-बाजी मोजामाहिं, मोच गई सब नसनमो ।
कहत अहैं पै ताहि, असवारी मो होत सो ॥ १ ॥
ऊँचे नीचे माहिं, दौरत बाजी जोरसों ।
पै तबहीं ह्वै जाहि, बाजीके पुट्ठन विषे ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा-बकरी गुरदा माहिकी, चर्बी लेहु मँगाइ ।
आंबाहरदी तिल सहित, तोले तोले लाइ ॥ १ ॥
मुर्गी अंडा माहिकी, जरदी लेउ कढ़ाइ ।
खलुआ मासे षट सहित, सबको पीसि मिलाइ ॥ २ ॥
चरबी करछा माहि करि, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
सो दुइ पोटरी बाँधिकै, तामें गरम कराइ ॥ ३ ॥
दोइ घरी ला ताहिको, दीजै खूब सेंकाइ ।
ताको लेप बनाइकै, दीजै ताहि लगाइ ॥ ४ ॥
बरगदपाता गरम करि, तापै देउ बँधाइ ।
या विधि कीजै सात दिन, हयकी पीर नशाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा-सेंहुड़ पहुँचा आनिकै, तिहिको लेउ पकाइ ।
ताकी गूदी काढ़िकै, हरदी देउ मिलाइ ॥
सोरठा-वरम जहांपर होय, बारह दिन बाँधै तहाँ ।
नितप्रति औषध सोय, बाजी नीको होत है ॥

अन्य ।

दोहा-पलुआ चून अफीमको, तोला तोला आनि ।
लाल मिठाई तज सहित, दुइ दुइ तोला जानि ॥१॥

विष्ठ कबूतरको सहित, मैदा लकरी सोइ।
दोनों तोले आठ भरि, गेरू तोले दोइ॥ २॥
औषध पैसा दोइ भरि, नरके मूत पकाइ।
हयके ऊपर ताहिको, दीजै आनि लगाइ॥ ३॥
ढांक पात फिरि जोस करि, तापर देउ बँधाइ।
बाँधा राखै तीनि दिन, दीजै फेरि खुलाइ॥ ४॥
तीनि दफा यहि विधि करै, पै नीको ह्वै जाइ।
शालहोत्र मत जानियो, श्रीधर वरणो आइ॥ ५॥

अन्य।

दोहा-कत्था नरके मूतमें, लीजै गरम कराइ।
पैके ऊपर ताहिको, दीजै लेप कराइ॥ १॥
मूत्र ताहि पर डारिकै, ताहि भिजावत जाइ।
औषध चौदह दिन करै, मोच ताहि मिटि जाइ॥ २॥

अन्य।

दोहा-तिल अरु साबुन मेलिकै, सज्जी ताहि मिलाइ।
जलमें सबको पीसिकै, लीजै गरम कराइ॥ १॥
लेप कीजिये सात दिन, ऊपर बरगद पात।
सोतौ बाँधै गरम करि, तुरी नीक ह्वै जात॥ २॥

बहुत दिनकी पै हो उसकी दवा।

दोहा-सबै ओषधी करि चुकै, पैको घाउ न जाइ।
शालहोत्र मत जानिकै, ताको करै उपाइ॥ १॥
पावसेर हालिम विषै, यव पिसान मँगवाइ।
रोटी तासु बनाइये, एक तरफ पकवाइ॥ २॥

नास पाल सज्जी सहित, आँबाहर्दी आनि ।
बहुरि सोहागा लीजिये, दुइ दुइ तोले जानि ॥ ३ ॥
पुनि जमालगोटा बहुरि, गूदी तासु कढ़ाइ ।
छा मासे सो तौलिकै, दीजै ताहि मिलाइ ॥ ४ ॥
सबको पीसै एकसो, अति बारीक कराइ ।
रोटी काचीकी तरफ, दीजै ताहि लगाइ ॥ ५ ॥
बाँधै पै ऊपर यही, कपरासों यह जानि ।
तीनि रोजके बाद फिरि, खोलै ताको आनि ॥ ६ ॥
सोरठा-पाकि खूब जब जाइ, फिरि याही विधिसों करे ।
शालहोत्र मत पाइ, कीजै औषध ताहिकी ॥
दोहा-धोवै ताहि पेशाबसों, खूब पाकि जब जाइ ।
यह औषध मँगवाइकै, ता पर देहु लगाइ ॥

दवा ।

सोरठा-हर्दी सिंहजराउ, माई औरौ फिटकरी ।
दुइ दुइ तोले लाउ, सबको पीसि मिलाइये ॥
दोहा-रोज लगावै ताहिको, जौलौं सूखि न जाइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो,तुरी नीक ह्वै जाइ ॥

अन्य पुरानी पैकी दवा ।

दोहा-बहुत दिननकी होइ पै, जखम ताहि परिजाइ ।
निकसत जाते पीवु है, ताको कहौं उपाइ ॥
सोरठा-सज्जी लेउ मँगाइ, बहुरि सोहागा लीजिये ।
और निसोदर लाइ, भाग बराबरि सबनको ॥ १ ॥
जलमें लेउ पिसाइ,ताहि लगावो जखम पर ।
नींबपात उसवाइ, ताके ऊपर बाँधिये ॥ २ ॥

खूब साफ ह्वै जाय, नींब लगावो ताहिपर ।
मलहम देउ लगाइ, जखम सूखि तव जात है ॥ ३ ॥

अन्य लेप सर्व चोटका ।

दोहा–लेउ कटैयाके फलन, मोथा ताहि मिलाइ ।
यवके आटा संगमो, लीजै ताहि पिसाइ ॥
सोरठा–लेउ तासु पकवाइ, ताहि लगावै वाजिके ।
तुरी नीक ह्वै जाइ, लेप कीजिये याहि विधि ॥
दोहा–जाके अगिले धड़ विषे, चोट कहूँपर होइ ।
मदऊते अरु पग विषे, लेप लगावै सोइ ॥
हयको बाँधै धूपमें, लीजै लेप सुखाय ।
या विधि कीजै पाँच दिन, टहलावत नित जाय॥

अन्य मोजा व गांठमे चोट हो उसकी विधि ।

सोरठा–थोरे तिल पिसवाइ, बकरा चरबी माहिसों ।
लीजै ताहि पकाइ, खूब सुरुख ह्वै जाइ जब ॥
दोहा–गाढ़े कपरा माहिमों, दीजै ताहि लगाइ ।
सो वाजीकी गांठिमें, दीजै आनि बँधाइ ॥ १ ॥
सुतरीसों मजबूतकै, ताहि बँधावै आनि ।
नितप्रति यह औषध करै, सात रोज लग जानि॥ २ ॥

अन्य पाखोरा परकी लंग ।

दोहा–रंडतैल लै पाउ भरि, खूब निखालिस होइ ।
सेर एक तिल तैल पुनि, ताहि मिलावै सोइ ॥ १ ॥
ताहि कराहीमाहिं करि, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
वीज हुरहुराके सहित, मालकाँगनी लाइ ॥ २

पाव सेर लै दुहुँनको, जलसों लेउ पिसाइ ।
तैलमाहिं सो डारिकै, दीजै ताहि पचाइ ॥ ३ ॥
आँबाहरदी लेउ पुनि, गेरू सैंधव आनि ।
लीजै खरी अफीम अरु, दुइ दुइ तोले जानि ॥ ४ ॥
इनको जलमें पीसिकै, देउ तैलमो डारि ।
आँच खाइ थोरी जबै, लीजै ताहि उतारि ॥ ५ ॥
सोरठा–जब ठंढो ह्वै जाइ, फेरि चढ़ावै अग्निपर ।
लीजै खूब पकाइ, धरि राखै तब ताहिको ॥ १ ॥
लंग जहाँपर होइ, तहाँ लगावै ताहिको ।
कंडा आगी लाइ, नितप्रति सेंकै वह जगह ॥ २ ॥
दोहा–नव दिन कीजै याहि विधि, वरम तहाँ ह्वै जात ।
बाँबी माटी गरम करि, तहाँ लगावै तात ॥ १ ॥
फिरि टहलावै वाजिको, लंग तहाँ मिटि जाहि ।
शालहोत्र मत जानिकै, श्रीधर वरणो याहि ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–बकरा गुर्दा माहिकी, चर्बी लेउ मँगाइ ।
मरे वरदको हाड़ लै, लीजै गूद कढ़ाइ ॥ १ ॥
आँबाहर्दी येलुआ, गर्री लेउ पुरानि ।
चँदसुर लोधु मँगाइकै, छा छा तोले जानि ॥ २ ॥
चौबिस तोले तिल बहुरि, सबको पीसि मिलाइ।
पोटरी कीजै तासुकी, दुइ मजबूत बनाइ ॥ ३ ॥
नित पोटरिनते सेंकिये, चोट जहाँ पर होइ ।
तीनि रोज या विधि करै, चर्बी रोज मिलाइ ॥ ४ ॥

सोंकि चुकै जब तीनि दिन, ताको लेप बनाइ ।
लंग होइ जिहि अंगमो, दीजै तहाँ लगाइ ॥ ९ ॥

अथ अन्यमत सरदी गर्मीसे भर जाय, देह ऐंठे,
भूँख न लगे उसका उपचार ।

चौ०–लहसुन काराजीरी लीजै।मिरचा अरुण भागसम कीजै ॥
दुइ तोला भरि गोली करै । सात रोज घोड़े मुख धरै ॥
तीनि दिवस फिरि ताहि न दीजै।इकइस दिन यहि क्रमते कीजै

अन्य भरनेकी व बतास चोटकी दवा ।

दोहा–आपामार्ग बकायना, मुंडीपत्र कचूर ।
अमरलता सम लै भरै, घटमें जल करि पूर ॥ १ ॥
औटि तासु जल अँग तुरै, मलै खूब करि जान ।
सरदी गरमी श्रम भरो, मिटै तुरतही मान ॥ २ ॥
दोहा–लहसुन हरदी हैंसि तुच, मेथी सोवा कूटि ।
अरु भँगरैला मेलि दे, हरत वात सब खूटि ॥

अथ झिटका, चोट, मोच, गुखुरू डोलने और कूल उतरनेकी दवा ।

चौ०–झिटका चोट मोच जिहि लागै।वाकी दवा करौ दुख भागै
षोडश मुर्गी अंड मँगावै । तोला एक अफीम मिलावै ॥
आध सेर सूकर वस लीजै।सर्षप तैल आध सेर कीजि ॥
आध पाव लै आँबाहरदी ।पीसि महीन करो बहु गरदी॥
गेरू एक छटांक पिसावै । सकल मिलाय थेपि धरवावै॥
मालिस खूब करै बहु रगरै । कंडा भेंड सेंक फिरि करै॥
साँझ भोर दुहुँ बेर लगावै । सूजै चोट नीक तिहि भावै॥
पंद्रह दिन याही विधि करै।तनुकी चोट सकल विधि हरै

अन्य ।

चौपाई-कामूनी अरु गेरू लावै । तोले पाँच पाँच तौलावै ॥
तोला एक अफीमै लीजै । सर्षपतेल आध सेर कीजै ॥
कपरछान सब दवा करावै । तेल मिलाइ ताहि धरवावै ॥
वासें बाँधिकै मालिस करै । अश्वरोग सगरे परिहरै ॥

अन्य ।

चौपाई-रेंड़ी गूदी सोठि मँगावै । साँभरि नमक और लै आवै ॥
टका टका भरि सब तौलावै । भैंसी दही सेर इक लावै ॥
पीसि दवा सब दही मिलावै । दश दिन घूरेमें गड़वावै ॥
फिरि घूरेते लेइ निकारी । मालिस करै अश्व रुजहारी ॥

अन्य वफारा ।

चौ०-नींब सँभारू अँबिली लावै । सन सहिंजन सब पात मँगावै
बिरवा भटकटाइको लावै । कोदौं केर पयार मँगावै ॥
छालि सहोरेकी मँगवावै । बांबी दिमक कि माटी लावै ॥
रेहू खारी नमक मँगावै । तैलयंत्रकी माटी लावै ॥
पाव पाव सब ले तौलाई । हांडीमें फिरि ताहि भराई ॥
पानी भरि मोहरा मुँदवावै । अग्नि चढ़ाइ ताहि पकवावै ॥
देइ वफारा ताको भाई । वाही जलसे खूब धुवाई ॥
वाही दवा फेरि सब बांधै । आठ रोज याही विधि साधै

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत पादरोगचिकित्सावर्णन नामक
द्वादश अध्याय ॥ १२ ॥

अथ प्रमेहरोगके लक्षण व दवा ।

दोहा-वाजी जो दुर्बल रहै, जिहि नित होय प्रमेह ।
मन्मथ झर ताको कहैं, याके लक्षण येह ॥ १ ॥
लाख टका भरि आनिये, टका चारि भरि रार ।
पाँच सेर गोदूधमें, प्रातै देय अहार ॥ २ ॥

अन्य मत ।

चौपाई-जो नित धातु गिरै हयकेरे । जलदी दवा कहौं मैं टेरे ॥
नागबेलिकी जो जर लावै ।कदलीजर सम भाग करावै॥
तवाशीर सुरमा औ चीनी । बेनवरगूदी सम करि लेनी॥
गऊक्षीर दुइ सेर मँगाई । सातदिना सो देउ खवाई ॥
नाशै रोग पुष्ट तनु होई।औषधि करै जो या विधि कोई

अन्य ।

दोहा-त्रिफला दीजै खाँड़सौं, सात दिवस उठि प्रात ।
धातु दोष नाशै सकल, नकुलग्रंथकी बात ॥

अन्य ।

दोहा-राई शक्कर सेर भरि, दूनों देउ खवाइ ।
धातु बंद हो जात है, जो यह करै उपाइ ॥

अन्य ।

दोहा-मूरीबीज अनारके, टका एक भरि लेय ।
आठ रोज लग दीजिये, धातु बंद करि देय ॥

अन्य ।

दोहा-दिउल चनाके टंक दश, गुलरी दूध भिगोय ।
प्रात अश्वको दीजिये, धातुबंद सो होय ॥

अथ रक्तप्रमेहके लक्षण व दवा ।

दोहा—रक्त चलै पेशाब सँग, रोग कठिन है ताहि ।
रक्तप्रमेह बखानिये, दवा न देर कराहि ॥ १ ॥
गऊ दूध दुइ सेर लै, सुरवाली जर आनि ।
तीनि टका भरि दीजिये, रोग हरै तिहि जानि ॥ २ ॥

अथ कामातुर रहनेके लक्षण व दवा ।

चौ०—निशि वासर अरु आठौ यामा।हयकी प्रीति तुरीके कामा॥
दोहा—मन्मथ जाग्यो प्रीतितें, अश्वाके उर आय ।
निशि वासर आठौ पहर, घोड़ीसों मन लाय ॥
चौपाई—समुदफेन औ पिपरी आनै । दश टक दूनौ परमानै ॥
हींग टका भरि तामें सानौ।तीनों औषध पीसि बखानौ॥
टक पाँच शक्कर सो लीजै । सकल सानि गोघृतसें दीजै॥
घोड़े सात दिवस दै प्राता।मन्मथ तुरत रहै तिहि गाता॥

अथ मूत्रकृच्छ्(रक्तप्रमेह)की दवा ।

दोहा—सोचर हरदी पीपरै, इंद्रायणफल लेउ ।
मूत्रकृच्छ्र हयको हरै, पिंड परम विधि देउ ॥

अन्य ।

सोरटा—सैंधव युत जंभीर, पिंड मिलायक दीजिये ।
मूतै रक्त अधीर, होत दिये है परमसुख ॥

अथ मूत्रप्रमेह(वार वार मूतने)की दवा ।

चौपाई—मूत्र अधिक घाड़ाक गिरै।ताकी औषध या विधि करै॥
करुआ तोंबी टका चारि भरि।हींग अधेला एक ताहि धरि
गौके दूधहि संग मिलाई । धारा मूत्र बंद है जाई ॥

अन्य ।

चौ०-साँभरि गुड़ तोला बसुदीजै। अधिकमूत्रपर साधन कीजै
गेरह दिन सो देय खवाई। रोग नीक होई सुख पाई ॥

अन्य ।

चौ०-पोस्ता साँभरि ववुरकि पाती।दुइ दुइ टंक लेउ यहि भाँती॥
यवके आटा प्रात खवाई। मूत्रधारको बंद कराई ॥
पैसा भरि दतूनिको तेला। गदहपुरन वाकी जर मेला ॥
दुइ पैसा भरि दीजै प्राता। मूत्रबंद ह्वै औषध खाता ॥

अथ घोड़ा वहुत मूते उसकी दवा।

दोहा-मेथी अरु सोवाहि लै, आध पाव परमान ।
दाना साथ खिलाइये, मूतै कम यह जान ॥

अथ लोहू मूते उसकी दवा।

दोहा-लोहू मूते जो तुरँग, ताकी यह पहिचान।
पतरा गरमी सो लखै, गाढ़ जु बादी जान ॥ १ ॥
पाँच दिवस ताकी दवा, करै न जिय घबराय।
छठयें दिन यह जतन करु, रोग दूरि ह्वै जाय ॥ २ ॥
शक्कर भूर जु दोइ भरि, मैदा दुगुन मिलाय।
जलमें घोरि पिआइये, तुरत तुरै सुख पाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-जो गाढ़ा हय खून लखु, तोला मिरच मँगाय।
ता आधी मिश्री मिलै, आटा सानि खवाय ॥ १ ॥
याको दै जल दीजिये, जबलौं नीक न होय।
नित ही नित हय सुख लहै, करै जतन जो कोय ॥२॥

२१

अन्य ।

दोहा–जमुनी छाली सेर यक, वतनै गूलरि छालि ।
काढ़ा करि दानाहि सँग, आध पाव मित घालि ॥१॥
तीनि दिवस यहि रीतिसों, दीजै जतन बनाय ।
युद्धधीर भाष्यो प्रमित, रक्त मूत्र नशि जाय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–जेठीमधु जवचोकरा, असगँध अरु अँवराहि ।
पीसि पिआवै नीरसों, रुधिर मूत्र नशि जाहि ॥

अन्य बहुत मूतै उसकी दवा ।

दोहा–घोड़ा जो मूतै बहुत, ताको यही उपाय ।
पूस माघके मासमें, तिल गुड़ देइ खवाय ॥

अन्य मत–रक्त मूतनेकी दवा ।

दोहा–लेउ पिसानु सिंघारको, आध पाव यह जानि ।
शक्कर लीजै पाव भरि, दोनों लीजै सानि ॥ १ ॥
सैंधव तोला एक भरि, दोऊ लेउ मिलाइ ।
ताहि खवावै वाजिको, दीजै नीर पिआइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–जो गर्मीते वाजिको, मूत्र रक्तको होइ ।
औषध ताकी कहत हौं, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
लेउ कतीरा एक पल, शक्कर दूनि मिलाइ ।
सो घोड़ेको दीजिये, रक्तमूत्र नशि जाइ ॥ २ ॥

अन्य गर्मी व वादीकी पहिचान ।

दोहा–कोखी मारे हटि रहै, अरु कोखी चढ़ि जाय ।
वादी ताको जानिये, शालहोत्र मत आय ॥ १ ॥

खून जासु पेशाबमें, स्याही लीन्हें होय ।
अरु कछु गाढ़ा सो गिरै, केवल गर्मी होय ॥ २ ॥
विलखो खून पेशाबसों, अरु लक्षासों होइ ।
जानौं वात विकार सो, और बताना जोइ ॥ ३ ॥
बूँदन होइ पेशाब जो, अतिहि दरद तिहि होय ।
करत पेशाबहि विकल ह्वै, पथरी जानो सोइ ॥ ४ ॥

दवा ।

दोहा-सुरवारी मूरी बहुरि, दोनों बीज मँगाइ ।
दोनों तोले चारि भरि, जलमें लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
दिन यकइसलौं ताहिको, रोज पिआवत जाइ ।
पथरी हयकी गिरिपरै, जो यह करै उपाइ ॥ २ ॥

अन्य मत-खून मूतनेकी दवा ।

दोहा-जाहि करे जेहि माहिमो, पहुँचत गरमी आइ ।
मूतत वाजी खून जो, शालहोत्र कहि ताइ ॥ १ ॥
औंरा तोले चारि लै, जलमें लेउ भिजाइ ।
चारि टका भरि लीजिये, भूँजे जव पिसवाइ ॥ २ ॥
औंरा लीजै जल सहित, आटामाहिं सनाइ ।
हयको देउ नहार मुख, रोग सबै बहि जाइ ॥ ३ ॥
गर्मीके महिना विषे, यहि औषधको देइ ।
औषध दीजै सात दिन, रोग वाजि हरि लेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा-सोरह मासे फिटकरी, जलसों देउ पिआइ ।
औषध कीजै सात दिन, रोग नाश ह्वै जाइ ॥

अन्य ।

सोरठा–गदापात मँगवाइ, जानौ तोले चारि भरि ।
शीतलचीनी लाइ, तोला भरि मौताज करि ॥

दोहा–पत्थर सिंहजराउको, तोला डेढ़ मँगाइ ।
सोरा मासे षट सहित, सबको लेउ पिसाइ ॥

सोरठा–औषध देउ खवाइ, पाछे पानी दीजिये ।
रोग नाश है जाय, सात रोजके मध्यमें ॥

अन्य ।

दोहा–स्याह मिर्च मँगवाइये, षट तोला भरि जानि ।
पीसि सिंघारे लीजिये, पाव एक यह मानि ॥ १ ॥
दुइ दुइ तोले लीजिये, सौंफ कररिको डारि ।
सोंचरु तोले एक भरि, मिश्री तोले चारि ॥ २ ॥
सबको पीसि मिलाइये, जवके आटामाँहि ।
हयको दीजै सात दिन, रोग नाश है जाहि ॥ ३ ॥

अथ सलसल बोलिया रोगकी दवा व लक्षण ।

दोहा–खुलिकै होइ पेशाब नहिं, अरु बूँदनते होइ ।
मानौ सलसल बोलिया, शालहोत्र मत जोइ ॥ १ ॥
अंडा लीजै मुर्गको, छिलका ताहि छिलाइ ।
पैसा भरि तादाद करि, घीमें लेउ भुँजाइ ॥ २ ॥
दाना पछि साँझको, दीजै ताहि खवाइ ।
या विधि कीजै सात दिन, रोग नाश है जाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–जवपिसान लै सेरु भरि, अजयामूत मिलाइ ।
ताहि भिजावो एक दिन, लीजै छाँह सुखाइ ॥ १ ॥

दूध मदार मँगाइकै, दीजै तामें डारि।
फिरि सुखवावै छाँहमें, श्रीधर कहो विचारि॥ २॥
ता सम तामें स्याह तिल, तिन्हैं मिलावै आनि।
कूट अति बारीक करि, शालहोत्र मत जानि॥ ३॥
नितप्रति दीजै वाजिको, दोइ टका भरि ताहि।
औषध दीजै सात दिन, रोग नाश ह्वै जाहि॥ ४॥

अन्य।

चौ०–तोले चारि चिन्हारू लावै। दुइ मासे गंधी मिलवावै॥
यह औषध लै हयको दीजै। सात दिवसमहँ नीको लीजै॥

अन्य।

दोहा–तोला भरि ले मोचरस, सात दिवस लगु जानि।
आध शेर शक्कर सहित, हयको दीजै आनि॥ १॥
देखि बताना तासुको, औ मौसम पहिचानि।
जौन मुनासिब औषधी, हयको दीजै आनि॥ २॥

अन्य।

दोहा–टका चारि भरि लीजिये, त्रिफला ताहि कुटाय।
सेर एक शक्कर सहित, हयको देउ खवाय॥

अथ जरिआन रोग।

दोहा–मनी मूत्रके सँग गिरै, कर्क तासुके होइ।
होत दूबरो जाइ अरु, जरिआनो है सोइ॥ १॥
भूँजो आटा गोटको, और चनेको जानि।
पाव पाव पक्के दुऔ, तिनको लीजै छानि॥ २॥

गूदी कदुवा बीजकी, पक्के पाव मँगाइ ।
गोंद बबूरहि तज सहित, बीजबंद अरु लाइ ॥ ३ ॥
केलाकी जर लेउ पुनि, इनको भाग समान ।
चारि चारि तोले करो, इनको जानु प्रमान ॥ ४ ॥
आध सेर शक्कर कही, पक्की तौल प्रमानि ।
पाँच सेर गोदूध लै, तौल सुपक्की जानि ॥ ५ ॥
खोवा करिकै दूधको, लीजै ताहि भुँजाइ ।
औषध सब शक्कर सहित, तामें देउ मिलाइ ॥ ६ ॥
दीजै हयको आठ पल, प्रात साँझको आनि ।
शालहोत्र मुनि यों कहो, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

अन्य ।

दोहा—केलाकी जर एक पल, मोसम गर्मी माहि ।
हयको दीजै तीनि दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥

अन्य ।

दोहा—रार लीजिये सेरु भरि, ता सम खाँड़ मिलाइ ।
हयको दीजै सात दिन, बीज बंद ह्वै जाइ ॥

अथ सुजाखरोगके लक्षण व दवा ।

दोहा—लिंग अगारा अश्वके, तहँ सुरखी कछु होइ ।
तुरी करै पेशाव जब, जरनि दरद तब होइ ॥ १ ॥
करै पेशाव रसेरसे, सूखत वाजी जाइ ।
ऐसे लक्षण जब मिलैं, तब प्रमेह दरशाइ ॥ २ ॥
चौ०—खीरा ककरी बीज मँगावै । गुखुरू और ताहि मिलवावै ॥
बहुरि कतीरा लेउ मँगाई । दश तोले सबको तौलाई ॥

दोहा-औषध तोले दश सबै, भाग समानै तासु ।
हयको देउ नहार मुख, होइ रोगको नासु ॥ १ ॥
औषध दीजै सात दिन, श्रीधर कहो बखानि ।
अथवा दीजै तीनि दिन, होइ रोगकी हानि ॥ २ ॥

अथ बंदपेशावकी दवा ।

दोहा-सोरा कलमी लीजिये, टका तीनि भरि जानि ।
गोदधिमें करि दीजिये, होइ रोगकी हानि ॥

अन्य ।

दोहा-माठाके जलमाहिमें, लेउ कपूर मिलाइ ।
कपराकी बाती करै, तापर देउ लगाइ ॥ १ ॥
सोई बाती लिंगके, छेद माँहि धरि देइ ।
होय मूत्र तिहि अश्वको, रोग सकल हरि लेइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-पाकी ॲबिली पाउ भरि, जलमें लेइ मिलाइ ।
कपरामें सो छानिकै, हयको देउ पिआइ ॥

अन्य ।

दोहा-हयको लै ठाढ़ो करै, धाम गड़रिया-माहि ।
सूंघै ताकी भूमिको, मूत्र. तुरत खुलि जाहि ॥

अन्य ।

दोहा-साबुन मिरचै स्याह लै, विष्ठ गरगवा आनि ।
लै बाती ऊपर धरै, कूपोदकसों सानि ॥ १ ॥
छिद्र पेशावहि माहिमें, बाती देइ धराइ ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तुरत. मूत्र खुलि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०--ककरी खीरा बीज मँगावै । पीसि नीरमें ताहि पिआवै ॥
धाम गड़रियाके लै जाई । सूँघत मूत्र वाइ खुलि जाई ॥

अन्य ।

चौ०-मिर्च दक्षिणी साबुन लोनू । गरगौआकी विष्ठा तौनू ॥
बाती भिजै नरासे कीजै । छूटै मूत्र रोग हरि लीजै ॥

अन्य ।

चौ०--पिपरी सोंठि दुवौ पिसवावै । लिंगमध्य बाती चलवावै॥
छूटै मूत्रधार अधिकारा । मेटै वाको सकल विकारा ॥

अन्य ।

चौ०-मिर्च कपूर साबुनै आनी । खरिल करौ पानीमें सानी ॥
बाती करौ लिंगमें कोई । बहुत पेशाब करै हय सोई ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत अश्वमूत्राधिकारवर्णन नामक त्रयोदश अध्याय ॥ १३ ॥

अथ घावकी दवा ।

दोहा--कुचिला और भेलावको, लहसुन सेंदुर धूप ।
एकै एक छटाँक लै, मिर्चा अरुणै रूप ॥ १ ॥
लेउ तूतिआ पीसिकै, दुइ तोला परमान ।
तेल लीजिये सेर यक, मलहम करौ विधान ॥२॥

चौ०-तेल कराही तप्त करावै । नींवपात रस पाव मिलावै ॥
कुचिला लहसुन मिर्च भेलावा । डारु समूचै तेल बनावा॥
पकि जावै वह देखो जबै । पीसि दवा मिलवावै सबै ॥

देखै दवा तेलमें जली। ताहि कराहीमें तब खली॥
या मलहमको नित्त लगावै। सूखै घाव नीक हो जावै॥

अन्य दवा खानेकी।

दोहा—जवाखार सैंधव जु अध, वायविडंग मिलाय।
दुकरा दुकरा भरि सबै, पीसि दिये सुख पाय॥

अथ घाव धोनेकी विधि।

दोहा—जो धोवा छतको चहै, तौ दल नींब मँगाय।
सो जलमें परिपक्क करि, धोय यही सो जाय॥ १॥
की धोवै गोमूत्रसों, कृमि न तहाँ परि जाँय।
जो कदापि कृमि देखिये, तौ करि यही उपाय॥ २॥

अथ कीड़ानाशन दवा।

दोहा—तुरती और सुलीमको, कूटि लीजिये छानि।
भरि माटीसो लेपि दे, मरि झरि हैं कीरानि॥

अथ घावसे लोहू बन्द न हो उसका दवा।

दोहा—मकरीको जारा तहाँ, बाँधि देइ मतिमान।
की कंचनरिपु बूँकि तहँ,डारि रुधिर रुकि जान॥
चौपाई—लै आवै दंबुल अखवैना। कुंदुर संग जराय तलैना॥
लै रूमी मस्तगी मिलावै। सकल दवा समभाग पिसावै॥
छतके ऊपर देउ लगाई। शोणित बन्द होइ सो भाई॥

अन्य घाव सुखानेकी दवा।

दोहा—जो जलदीमें घावको, चहै सुखाय प्रवीन।
तौ गदहाकी लीदिको, सुखै पिसाय महीन॥ १॥

लाय दीजिये घावपर, जैहै सूखि तुरन्त ।
की पुरान जूताहिको, पीसि भरै गुणवन्त ॥ २ ॥
की सबजीको पीसि भरि, देहै यहौ सुखाय ।
की पसुरी लै ऊँटकी, भरिये ताहि जलाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–लेउ फिटकरी खील करि, और सुफेदा मानि ।
लीजै सिंघजराव पुनि, तीनोंको सम जानि ॥ १ ॥
सबको सूखो पीसिकै, दीजै आनि लगाइ ।
भरि आयो जो साफ है, जखम सूखि सो जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–वस्त्र पुरानो स्याह जो, ताको देउ जराइ ।
ताहि लगावे घावपर, जलदी जखम सुखाइ ॥

अथ जखममें मांस बढ़ आवे उसकी दवा ।

दोहा–एलुवा लेउ निसोदरहि, षटमासे मँगवाइ ।
सेंदुर मासे पाँच भरि, तीनों लेउ पिसाइ ॥
सोरठा–ताको लेउ मँगाइ, मांस बढ़ि गयो होइ जहँ ॥
वीरा एक पिसाइ, तापर दीजै बाँधि सो ॥
दोहा–सीपचून सज्जी सहित, नीलाथोथा आनि ।
पुनि हर्दीकी राख लै, चारोंको सम जानि ॥ १ ॥
सूखो याको पीसिकै, दीजै जहां लगाय ।
मांस फटत मुरदा रहै, जखम अधिक परिजाइ ॥ २ ॥

अन्य मलहम ।

दोहा–तिलका तेल छटांक भरि, डारि कराही माहि ।
लेउ बिरोजा दोइ पल, डारि तेलमें ताहि ॥ १ ॥

तप्त कीजिये अग्निपर, देउ बिरोजा जारि ।
काढ़ि बिरोजा डारिये, लीजै तेल उतारि ॥ २ ॥
एक कर्ष जंगाल लै, ताको लेउ पिसाइ ।
ताते आधा मोम लै, तामें लेउ मिलाइ ॥ ३ ॥
फेरि गरम थोरा करहु, राखो ताहि धराइ ।
फाहा तासु बनाइकै, दीजै रोज लगाइ ॥ ४ ॥
कटत माँसु मुरदा रहै, पूरि जखम सो जाइ ।
जखम जौन बिगरो अहै, ताको मलहम आइ ॥ ५ ॥

अन्य मलहम वर्मका।

दोहा–बकरा मुर्दा माहिकी, चर्बी लेउ मँगाइ ।
सो तोले भरि तौलिकै, मोम तासु सम लाइ ॥ १ ॥
लेउ सफेदा डेढ़ पल, पुनि सेंदुर पल चारि ।
फूल गुलाबहि फिटकरी, नौ नौ मासे डारि ॥ २ ॥
चंदन लीजै श्वेत पुनि, दुइ तोले मँगवाइ ।
पृथक पृथक सब ओषधी, जलमें लेउ पिसाइ ॥ ३ ॥
दोइ सेर तिल तेलमें, चर्बी मोम मिलाइ ।
मन्द आँच पर ताहिको, दीजै आनि धराइ ॥ ४ ॥
चर्बी मोम दुओ जबै, तेलमाहिं मिलि जाइ ।
एक एक करि ओषधी, लीजै सबै पचाइ ॥ ५ ॥
स्याही पकरै तेल जब, लीजै तबै उतारि ।
ताहि लगावै वर्मपर, सात रोज लगु टारि ॥ ६ ॥

अन्य।

दोहा–जा वाजीकी जानुमें, वर्म होइ जो आइ ।
बकला छोलि पिआजको, तापर देउ बँधाइ ॥

अन्य बर्मकी दवा ।

दोहा–आँवाहर्दी तिल सहित, तोला आठ बखानि ।
अजवाइनि मेथी सहित, मैदालकरी जानि ॥
सोरठा––तज अरु साबुन लाइ, तीनि तीनि मासे सबै ।
सबको लेउ पिसाइ, तोला भरि तिल तैल लै ॥
दोहा––सबै औषधी तेलसो, हेलुवा लेउ पकाइ ।
याही औषधते बरम, बहुत बार सेंकवाइ ॥ १ ॥
फिरि थोरा जल डारिकै, हेलुआ लेउ पकाइ ।
लेप कीजिये बरम पर, तुरत नीकि ह्वै जाइ ॥ २ ॥

अथ तंगसे छातीमें जखम हो उसकी दवा ।

दोहा––जाकी हड्डी कटि गई, लीलबरी सो लाइ ।
छाती जाकी अति कटी, मलहम देउ लगाइ ॥ १ ॥
थैली कपराकी सियै, अजया चरबी लाइ ।
थैली तामें बोरिकै, तंग–माहिं पहिराइ ॥ २ ॥
जीन कसै ता तंगते, कवि श्रीधर यह जानि ।
छाती पोढ़ी परत है, फेरि कटति नहिं आनि ॥ ३ ॥

अथ पीठ फूलनेकी दवा ।

दोहा–जो सूजनि हयपीठि लखि, चिकनी माटी आन ।
सानि ताहि वापर धरै, मिटि है सूजि प्रमान ॥

अन्य ।

दोहा–इसबगोलको पीसिकै, तापर देइ लगाय ।
याहूसों मिटि जायगो, पीठि सोथ सुख पाय ॥

अन्य।

दोहा—की साबुन पानी गरम, धोय ताहिसों देय।
याहूसो मिटि जात है, पीठिसूज सुख लेय॥

अन्य।

दोहा—की कटु तेल लगायकै, बासी जलसे धोय।
याहूसों मिटि है सुघर, धरै जीन नहिं कोय॥

अन्य।

दोहा—पानी खूब गरम करै, तिहि पट बोरि निचोइ।
यही सेंक जो देउ नृप, पीठि—सोथ हरि लेइ॥

अथ पीठ लगनेकी दवा।

दोहा—नीलाथोथा फिटकरी, खैर पापरी रार।
करु तेल सम लीजिये, मलहम करु निरधार॥ १॥
काँसे बासन राखिकै, पीठि लगावै कोय।
या विधि औषध कीजिये, घाव नीक सो होय॥ २॥
चौ०—साबुन औ लिलबरी मँगावै। करुये तेल मध्य औटावै॥
पीठीपर लावै जो कोई। घाव नीक सो याते होई॥

अन्य।

दोहा—चून पुराना आठ भरि, पाव एक कटुतेल।
डारि चून जलमें प्रथम, फिरि कटु तेल जु घेल॥ १॥
खूब फेंटि दीजो मिलै, लै उठाइ जल त्यागि।
लकरीमें फीहा बनै, याही विधि तहँ लागि॥ २॥
कई रोज नित बार बहु, लावै छतपर जानु।
माखी तहाँ न बैठि है, सूखै जलदी मानु॥ ३॥

अन्य ।

दोहा–आधसेर लै तेल तिल, कली चून इन्द्रान ।
पानी पाव प्रमान करि, फाट लगाव विधान ॥

अन्यमत मदऊमें रगड़ लगै या पाठ कटि जाय उसकी दवा ।

दोहा–रगर लगै मदऊविषे, की थोरा कटि जाइ ।
लीलबरी जल घोरिकै, तामें देउ लगाइ ॥

अन्य ।

सोरठा–नींबपात मँगवाइ, पीसै लोन मिलाइकै ।
रोज लगावत जाइ, साफ होइ जौलौं नहीं ॥

अन्य ।

दोहा–आँबाहलदी पीसिकै, तापर देउ लगाइ ।
पाँच सात दिन माहिमें, सूखि जखम सब जाइ ॥

अन्य मदऊ फलि जाय उसकी दवा ।

दोहा–औषध कीन्हें जासुकी, सूजनि उतरै नाइ ।
माटी लेउ पकाइकै, तापर देउ लगाइ ॥ १ ॥
पाकि जाइ मदऊ तबै, फूटि फेरि बहि जाइ ।
नींबपात अरु लोनको, तापर देउ लगाइ ॥ २ ॥

सोरठा–पीव साफ ह्वै जाइ, मलहम फेरि लगाइयो ।
जखम नीक ह्वै जाइ, कवि श्रीधर यह जानियो ॥

अथ पीव छुवावके सम निकले उसकी दवा ।

दोहा–जो दधिको जल डेढ़ पल, ताको लेउ छनाइ ।
पैसा भरि पुनि चूनको, तामें देउ मिलाइ ॥

सोरठा–बाती ऊपर लाइ, सो बाती धरि जखमपर ।
फाहा देउ बनाइ, ता ऊपर सो लाइकै ॥

अन्य मलहम ।

दोहा—पाउ एक तिल तेल लै, दीजै आँच चढ़ाइ ।
घुँघुँचिल लाउ सफेद पुनि, नरके नहँ मँगवाइ ॥
सोरठा—जारि तैलके माहिं, रगरै लकरी नींबसों ।
एकमाहिं मिलि जाहि, तब धरि राखै ताहिको॥
दोहा—फीहा ऊपर ताहिको, रोज लगावत जाइ ।
जखम होइ मदऊ बिषे, जलदी नीक देखाइ ॥ १ ॥
यह मलहम नासूरमें, जो कोइ देय लगाय ।
चंगा होवे अश्व अति, जखम नीक हो जाय ॥ २ ॥

मुर्दार मांस दूर करनेकी दवा ।

दोहा—दुइ पल लैके तेलतिल, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
मोम बिरोजा दुहुनको, तोले चारि मँगाइ ॥ १ ॥
तेलमाहिं सो डारिये, पाकि खूब जब जाइ ।
तबै उतारै अग्निते, लीजै ताहि छनाइ ॥ २ ॥
तोला भरि जंगाल लै, दीजै तामें डारि ।
थोरा ताहि पकाइक, लीजै तुरत उतारि ॥ ३ ॥
जखम ऊपरै ताहिको, फीहा देउ लगाइ ।
मांस फटत मुर्दार है, जखम साफ ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अथ जखममें खुश्की आनेकी दवा ।

दोहा—रेवतचीनी तज सहित, पैदा—लकरी आनि ।
और हिरमिजी लीजिये, यक यक तोले जानि ॥ १ ॥
सबको पीसै एकमें, राखै ताहि धराइ ।
नीरमाहिं सो सानिकै, थोरा देइ लगाइ ॥ २ ॥

अथ नासूरकी दवा ।

दोहा-सेर एक तिल तेल लै, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
मालकाँगनी एक पल, तामें देउ जराइ ॥ १ ॥
नींब पात लै एक पल, टिकिया तासु बनाइ ।
तेलमाहिं सो जारिकै, डारै तिहि निकराइ ॥ २ ॥
मोम रार इन दुहुँनको, लीजै तोला चारि ।
ताहि मिलाइ पकाइकै, लीजै फेरि उतारि ॥ ३ ॥
सेंदुर मासे चारि सम, नीलाथोथा लाइ ॥
ताहि मिलाइ पकाइये, जब शीतल ह्वै जाइ ॥ ४ ॥
ताहि मिलावै जखमपर, अरु नासूरहि माहि ।
भरि आवत नासूर है, जखम नीक ह्वै जाहि ॥ ५ ॥

नासूरकी अन्य दवा ।

दोहा-नीलाथोथा मधु खदिर, फेंटि जु बाती भेइ ।
देइ नसूराहि छेदमें, मिटै रोग सुख लेइ ॥

अन्य ।

दोहा-लेउ कमीला अतिखरो, नौ मासे भरि जानि ।
कत्था मासे तीनि भरि, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
नीलाथोथा लेउ पुनि, मासे दोइ मँगाइ ।
विना बुझाये चूनको, यक मासे भरि लाइ ॥ २ ॥
गोघृत तोले तीनि भरि, इन्हैं मिलावै आनि ।
रगरै ताको जोरसों, पहर एक सो जानि ॥ ३ ॥

मलहम सबतरहके जखम जल्द पूरे।

दोहा—मोम सफेदा लीजिये, खैर पपरिया लाइ।
दो दो तोले ये सबै, तिनको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
गाजर सलगम बीज पुनि, यक यक तोले आनि।
लीजै मुर्दाशंख पुनि, दश मासे सो जानि ॥ २ ॥
आध पाव तिल तेलमें, दीजै अग्नि चढ़ाइ।
नींबपात पल एक लै, टिकिया तासु बनाइ ॥ ३ ॥
जारै ताको तेलमें, डारै फेरि निकारि।
सबै दवाई पीसिकै, दीजै तामें डारि ॥ ४ ॥
षट मासे सेंदुर बहुरि, तामें देउ मिलाइ।
रगरै लकरी नींबसों, एक रूप ह्वै जाइ ॥ ५ ॥
ताहि लगावै वाजिके, जखम जहाँ पर होइ।
कवि श्रीधर यह जानियो, जलदी नीको सोइ ॥ ६ ॥

अन्य।

दोहा—कत्था एक छटाँक भरि, दूनी रार मिलाइ।
आध पाव तिल तेलमें, तीनों देउ डराइ ॥ १ ॥
नीलाथोथा फिटकरी, दूनों खील कराइ।
दुइ दुइ मासे तौलिकै, तेऊ लेउ मिलाइ ॥ २ ॥
फूलकि थारीमाहिं धरि, कवि श्रीधर यह जानि।
धोवै ताको बार शत, एक बार अस जानि ॥ ३ ॥
फीहा ऊपर ताहिको, दीजै खूब लगाइ।
पीब छुटाति है जखमते, पूरि जल्द सो जाइ ॥ ४ ॥

अथ जखमपर वार जामनेकी दवा ।

दोहा-वार जमायो घाव पर, चहै सु तेल मँगाय ।
कड़ुइ आर थुकसों घसै, दीजै तहाँ लगाय ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत अश्वघाववर्णन
नामक चतुर्दश अध्याय ॥ १४ ॥

अथ सीनावन्दके लक्षण ।

दोहा-हयते मेहनति लीजिये, अरु ठाढ़ो करि देय ।
ताते सीना भरत है, जानि विचक्षण लेइ ॥

गर्मीके दिनोंकी दवा ।

दोहा-खील सोहागा फिटकरी, रेवतचीनी पाइ ।
गूगुरयुत सब ओषधी, सोरह तोले लाइ ॥ १ ॥
सज्जीसावुन लीजिये, तोले दश मँगवाइ ।
दो तोले हलदी सबै, पीसै गुड़हि मिलाइ ॥ २ ॥
पीड़ा बाँधै ताहिके, वजन छटाँक सुजानि ।
हयको दीजै एक नित, प्रातकाल सो आनि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा--छा मासे ले फिटकरी, लावा लेइ कराय ।
पीसि मिलावै नीरमें, वाही रोज पिआय ॥

अन्य ।

दोहा-तेलीके कोल्हू विषे, बरद फिरत जहँ आनि ।
माटी लीजै ताहिकी, अरु बाँबीकी जानि ॥ १ ॥

भैंसाके गोबर सहित, रेहू माटी आनि ।
भेड़ीकी लेंड़ी बहुरि, अरु सेंहुँड़को जानि ॥ २ ॥
भटकटाइ औरौ कही, पाव पाव सब आनि ।
लीजे सज्जी लोनको, आध पाव सो मानि ॥३॥
सबै ओषधी डारिये, यक बर्त्तनमें लाइ ।
अरु पानीको डारिकै, लीजै ताहि पकाइ ॥ ४ ॥
लीजै ताहि उतारि फिरि, जब गुनगुन ह्वै जाइ ।
ठाढ़ कीजिये अश्वको, धूपमाहिं बँधवाइ ॥५॥
काँधेते सीना तलक, छोप करै तिहि लाइ ।
एक रोजमें छा दफे, लेप किये रुज जाइ ॥ ६ ॥

अन्य ।

चौ०-तोला एक मुसब्बर लीजै । तासम और कैफरा कीजै ॥
अंडा मुरगीको यक लावै । झिकवारीको अर्क कढ़ावै ॥
दोहा-नरके लीजै केश अरु, एक हजामति जानि ।
सबै ओषधी कूटिकै, लेउ एकमो सानि ॥ १ ॥
एक अहै मौताज यह, हयको देउ खवाइ ।
पानी दीजै गर्म करि, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥२॥
तीनि रोज यह दवा करि, दाना आधा देइ ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, तुरी नीक करि लेइ॥३॥

अन्य गर्मीके दिनकी दवा ।

दोहा-गुड़ पुरान हरदी सहित, सेर एक मँगवाइ ।
साँभरि लीजै पाव भरि, सबको लेउ पिसाइ॥१॥

बोड़ी लीजै पोस्तकी, आध पाव यह जानि ।
गूगुर तोले दोइ भरि, लीजै गुड़में सानि ॥ २ ॥
याकी गोली आठ करि, प्रातहि एक खवाइ ।
फिरि टहलावै अश्वको, आइ पसीना जाइ ॥३॥
हत्थीते छाती मलै, सुखि पसीना ताहि ।
या विधि कीजै आठ दिन, छाती तब खुलि जाहि४
दाना ताहि न दीजिये, सो जानौ मनमाँहि ।
शालहोत्र मुनिके मते, तुरी नीक ह्वै जाहि ॥५॥

अन्य ।

दोहा-हरदी तोले चारि लै, महुआ छालि मँगाइ ।
हरदीके सम छालि करि, दोऊ लेउ कुटाइ ॥ १ ॥
गोली बाँधै एक फिरि, हयको देउ खवाइ ।
या विधि कीजै तीनि दिन, तो सीना खुलि जाइ २॥

अन्य ।

दोहा-सज्जी लीजै सोंठि पुनि, मैदालकरी आनि ।
तोला तोला लीजिये, श्रीधर कहो बखानि ॥१॥
हालिम तोले पाँच लै, सबको लेउ कुटाइ ।
नरके मूत्रहि माहिंमों, सबको लेउ पकाइ ॥ २ ॥
लेप कीजिये ताहिको, हयकी छाती-माहि ।
बाँधै घामें ताहिको, तब छाती खुलि जाहि॥३॥

अन्य ।

दोहा-खील सोहागा फिटकरी, मूसब्बरको लाइ ।
दुइ दुइ तोले ओषधी, लेउ सबै पिसवाइ ॥१॥

ग्यारह तोले गुड़ सहित, गोली एक कराइ ।
हयको साँझी बेरमें, दीजै ताहि खवाइ ॥ २ ॥
चौ०—दाना ताको नाहिं खवावै । राति दिवस कैजा करवावै ॥
भोर भये कैजा उतराई । चना सेरु भरि देइ खवाई ॥
फेरि गर्दनी ताहि बढ़ावै । होइ सवार खूब फिरवावै ॥
खूब पसीना ताको आवै । छातीमा कमरी बँधवावै ॥
रसे रसे ताको टहलाई । सूखि पसीना जब सब जाई ॥
तबै थानपर बाँधौ भाई । हत्थीते छाती मलवाई ॥
एक रोजमें नीक न होई । तौ दुसरे दिन कीजै सोई ॥

अन्य ।

दोहा--लीजै गूगुर टका भरि, गोमूत्रहिमें सानि ।
तप्त कीजिये अग्नि पर, हयको दीजै आनि ॥ १ ॥
या विधि कीजै सात दिन, अंग सकल खुलि जाहि ।
शालहोत्र मत जानि करि, श्रीधर कहो सराहि ॥२॥

अन्य मत ।

दोहा—शिरदै हाथ हटावई, हटै तुरत नहिं बंद ।
जोर कियेते नहिं हटै, कहिये छाती—बंद॥
चौ०—ताकी तुरत दवा करवावै । नीक होय छाती खुलि जावै ॥
देर भयेते नीक न होई । कितनौ दवा करौ बुध कोई ॥
गूगुर लेव छटाँक मँगाई । हरदी पाव एक पिसवाई ॥
पिपरामूल भरंगी पीपरि। डेढ़ पाव तीनों लै सम करि॥
लेउ मैनफल षट करि गंती। रनकी छाली औ लै पत्ती॥
मुंडी लेउ समूल मँगाई। कूटि छानि एकत्र कराई ॥
एक छटाँक वजन तिहि कजिै। साँझ सकारे घोडेदीजै ॥

अन्य ।

चौ०-बैंगन मिलै देउ दानाको । पानी गरम पिलावो नितको॥

अन्य ।

चौ०-हालिम हरदी साबुन लावै । ढाई ढाई सेर मँगावै ॥
आध सेर ले पिपरामूरी । कूटि छानि मैदा करि भूरी॥
पाँच सेर घृत शक्कर लीजै। यकइस दिन हेलुआ करि दीजै
आध सेर नित देउ खवाई। छातीबंद रोग मिटिजाई ॥
यक दिन प्रथम नीर नहिं दीजै।रोग हरै जो औषध कीजै

अन्य सर्दी गर्मीसे छाती भर जाय उसकी दवा ।

चौ०-पिपरी पिपरामूल रु सोंचर।यकयक तोला तीनि वजन कर
हर्रा पाव एक मँगवावै । पीसि छानि छिरका सनवावै ॥
तीनि रोज घोड़ेको दीज । दाना पानी बंद करीजै ॥

अन्य ।

चौ०-कंचनरिपु फिटकरी मँगावै । खील बनाय वजन करवावै॥
कालेश्वर औ बायबिडंगा । अेलि अफीम ताहिके संगा॥
मासे पाँच पाँच करु पाँचौ । हींग एक मासे लै साँचौ ॥
अजवाइनि अजमोद मँगावै । दश दश मासे सो करवावै॥
साबुन भैंसा गूगुर लीजै । तोला तोला वजन करीजै ॥
तोला तीनि पुरानि मिठाई । पीसि छानि गोली बनवाई॥
प्रथम दिवस दे शीतल नीरा।फेरि गर्म करि दे मतिधीरा॥
थानै खुलै न दाना देई । आठरोजमें नीको लेई ॥

अन्य ।

दोहा-की अकड़ा होवै तुरँग, छातीबंद कि होय ।
वायु धरे होवै किधौं, ताकी औषध जोय ॥ १ ॥

रंडबौर खारी नमक, पाव पाव सब लेइ ।
तीनि दिवस लगि दीजिये, जल अरु अशन न देइ ॥ २ ॥
जो गर्मीते बंद लखि, पानी गर्म पिआय ।
चारि घड़ा जल एक भरि, अजवाइनिहि चुराय ॥ ३ ॥
की मँगाय जर अर्ककी, एक भवँरमें भूँजि ।
उतनो ही गूगुरु मिलै, गुड़ मिलाइ दे गूँजि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–की अफीम लै एक भरि, जलमें घोरि मिलाय ।
आटा तामें सानिकै, गोला एक बनाय ॥ १ ॥
आँबाहरदी टका भरि, सज्जी उतनी आनि ।
दुओ कूटि उतनोहिं लै, महिषागूगुर सानि ॥ २ ॥
गोलेके मधि राखिकै, गाड़ि भँवरमें देय ।
पकि जावै तब काढ़िकै, षट गोली करि लेय ॥ ३ ॥
सांझ भोर नित दीजिये, युद्धधीर करि नेम ।
खुलि जैहै सीना तुरत, रहै सदा तनु क्षेम ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–छाती जाकी बंद है, सरदीते यह जानि ।
यह औषध ताको करै, शालहोत्र मत मानि ॥ १ ॥
समुदखारको लीजिये, तोला भरि यह जानि ।
लीजै पिपरी खैरकी, ताते चौगुन आनि ॥ २ ॥
ताहीके रस–माहिमें, लीजै खरिल कराइ ।
गोली बाँधै ताहिकी, उर्द समान बनाइ ॥ ३ ॥

गोली एक खवाइये, प्रातकाल तिहि लाइ ।
चारि घरीके बादसो, देइ नहारी आइ ॥ ४ ॥
चौदह दिन यहि विधि करै, अश्व तुरत खुलि जाइ ।
शालहोत्र मत जानिकै, कीजै यही उपाइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–सबै औषधी करि चुकै, अश्व खुलै जो नाहिं ।
फस्त लीजिये ताहिके, तुरी तुरत खुलि जाहि ॥ १ ॥
याहूते जो ना खुलै, कीजै और उपाय ।
दोनों तरफन आनिकै, दीजै ताहि दगाय ॥ २ ॥

अथ सब देह जकड़ जाय उसकी दवा ।

दोहा–एक छुहारे-माहिमें, देउ अफीम भराइ ।
कपरौटी तापर करो, लीजै अग्नि भुँजाइ ॥ १ ॥
चारि छुहारे आनिकै, या विधि लेइ बनाइ ।
आधा आधा अश्वको, देत निते प्रति जाइ ॥ २ ॥
पानी दीजै तप्त करि; दाना दीजै नाहि ।
या विधि दीजै आठ दिन, रोग दूरि ह्वै जाहि ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–सज्जी साबुन पोस्त लै, हालिम हर्दी लाइ ।
टका टका भरि ओषधी, लीजै सबै पिसाइ ॥ १ ॥
पाव सेर गुड़ ताहिमों, लीजै सबै मिलाइ ।
भूँजे आटा ताहिमों, गोली लेउ बँधाइ ॥ २ ॥
साँझ सबेरे अश्वको, यक यक गोली देइ ।
या विधि कीजै सात दिनं, अश्व नीक करि लेइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–साँभरि लहसुन लीजिये, टका पचीस मँगाय ।
सो दीजै दिन तीसलौं, अंग सकल खुलि जाय ॥

अन्यमत ।

दोहा–जो जकड़ो घोड़ा तुरत, हनि कोड़ा दौराय ।
खूब पसीना गलित लखि, पट दे खूब उढ़ाय ॥ १ ॥
टहलावै अतिही तुरँग, जावै अरक सुखाय ।
बंद मकानहि बाँधिये, कबहूँ पवन न जाय ॥ २ ॥
फिरि कंमरते पोंछिकै, परै न लखि यक रोम ।
सेर शराब पिआइये, अरष बढ़ै तन तोम ॥ ३ ॥
लखै फायदा करत नित, उतनी ही ले प्याइ ।
यह है अजमाइस कियो, जकड़ पैर खुलि जाइ ॥ ४ ॥
की जलमें पैरावई, लै तुरंग नित जाय ।
तबहूँ खुलि जैहै जकड़, सो अति ही सुख पाय ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा–की मदारको पात लै, देउ अढ़ाई आनि ।
मलि पाती मुख लाइ घृत, दिवस एक दै जानि ॥

अन्य ।

दोहा–आध पाव इसबंदसम, नागौरी असगंध ।
अजवाइनि उतनीहि लै, खुरासानि लखि बंध ॥ १ ॥
आँबाहरदी सम करौ, गूगुर महिष समान ।
पाव मालकाँगनि मिलै, लहसुन पाव प्रमान ॥ २ ॥
लै फिटकरी छटाँक यक, सज्जी लोट छटाँक ।
डारि सोहागा खील सम, सुधा फिटकरी पाक ॥ ३ ॥

पीसि छानि सम लीजिये, गुड़ पुरान यक सेर ।
सोरह गोली करि धरौ, साँझ भोर मुख गेर ॥ ४ ॥
दाना नीर न दीजिये, जबलौं गोली खाय ।
जो पानी दीन्हों चहै, दीजै लोह बुझाय ॥ ५ ॥
कई बेर याको सुघर, राखो है अजमाय ।
जकड़ो सब खुलिजाइ है, दवा करौ मन लाय ॥ ६ ॥

अन्य ।

चौ०-लेउ अकरकरहा मँगवाई । एक छटाँक वजन करवाई ॥
कालि मिर्च असगँध नागौरी । आध आध पावै लै धरी ॥
एक जायफर देउ मिलाई । सहद सानि गोली बनवाई ॥
चनाके आटा साथ खवावै । जकड़ा खुलै अश्व सुख पावै ॥

अथ सीनाशोथकी दवा ।

चौ०-जो घोड़ेको सूजै सीना । ताकी औषध सुनौ प्रवीना ॥
अहि केसरि अँवरा दुइ लीजै । गुरुचसत्त जातीफल दीजै ॥
दाडिमफल शक्कर औलोधा। दश २ दमरी भरि सब शोधा ॥
चौथाई घृत डारि खवावै । हरै शोथ वाजी सुख पावै ॥

अन्य ।

चौ०-कांजी खुरासानि बच आनै । गोरोचन अरु मोम विधानै
पाँच पाँच दमरी मित कीजै । सेर एक घृतमें औटीजै ॥
नितही नित वाजीको दीजै । कई रोज इमि जतन करीजै

अन्य ।

दोहा-औंरा नागश्वर गुरच, वरै सोरा आनि ।
फल अनार अरु जायफल, सैंधव सम करि जानि ॥१॥

सवा सवा भरि पीसि जल, चौथाई घृत नाय।
अवशि जानियो ताहिको, दीन्हें दुःख नशाय॥ २॥
जो घोड़के तँग लगे, छूटै यही उपाय।
जलमें कागज भेइ तहँ, लाय तंग कसि जाय॥ ३॥

अथ सर्वांग शोथ।

चौ०-जो घोड़ाके शोथा पकरै। ग्रीवा जिहि औरौ तनु जकरै॥
ताको प्रथम सेंक यह करै। घुघुवारी सैंधव करि धरै॥

अन्य।

चौ०-ता पाछे यह लेपन करै। अंगरोग घोड़को हरै॥
दोहा-अजवाइनि अजमोद लै, हींग सोंठि सम लेउ।
कारीजीरी मिर्च सों, लेपन तिहि करि देउ॥
सोरठा-जबै शोथ मिटि जाय, सूधी गर्दन होइ तब।
कीजै यही उपाय, रग छातीकी खोलिये॥

अन्य।

चौ०-तूत बकायन रंड सँभारू। अंबरबेलि धतूरा डारू॥
दाडिम लै दल और मकोई। लेउ बुद्धि जन सम करि सोई॥
जलमें चुरै बफारा दीजै। सकल शोथ हयको हरि लीजै॥

अथ मिषरोगलक्षण व दवा।

दोहा-हयके सीना माहिंमें, होत वर्म जो आइ।
दर्द होत है ताहिमें, औरौ यह दरशाइ॥ १॥
गर्म लगै करके छुए, तौन वर्म यह जानि।
दाना घास न खात है, रहत सुस्त यह मानि॥ २॥
राई सरसों जरद लै, अरु अजवायनि लाइ।
जवाखार अरु सोंठि लै, हरदी सहित पिसाइ॥ ३॥

अरु अँबिलीके पात लै, तेऊ लेउ पिसाइ।
जेती हैं सब ओषधी, तिनको देइ मिलाइ ॥ ४ ॥
सोरठा–लीजै गर्म कराइ, ताहि लगावै बर्मपर।
रेंडपात सेंकवाइ, ता ऊपरते बाँधिये ॥

चौ०–ऊपर कपरा देइ बँधाई। बहु मजबूत ताहि करवाई ॥
वर्म बैठि ताहीसे जावै। नाहिं बैठै तो फोरि बहावै ॥
पीव निकसि जब जावै ताको। नींब उसेइ धुवावै वाको॥
फिरि तापर मलहम लगवाई। होइ अराम अश्व सुख पाई॥

अन्य खानेकी दवा।

दोहा–अजवायिनि अजमोद लै, पिपरामूल मँगाय।
चीता हरदी दारु लै, और कैफरा लाय ॥ १ ॥
स्याह मिर्च सम भाग सब, कूटै सबको आनि।
पैसा साढ़े तीनि भरि, सबै औषधी जानि ॥ २ ॥
रेंडतेलको लीजिये, तोले चारि मँगाइ।
ताहीमें सब ओषधी, दीजै आनि मिलाइ ॥ ३ ॥
दाना पीछे साँझको, औषध देउ खवाय।
पानी पीजै गर्म करि, जब ठंढा ह्वै जाय ॥ ४ ॥
एक खुराक दवा कही, जानि लेउ मनमाहिं।
जबतक होइ अराम नाहिं, देत दवा नित जाहिं ॥५॥

अथ वलगीरारोगलक्षण व दवा।

दोहा–छाती भारी होइ जो, नेको चला न जाइ।
दम भरि आवै ताहिके, वलगीरा सो आइ ॥ १ ॥

हालिम हरदी सोंठि लै, सज्जी साबुन लाइ ।
लेउ सोहागा वजन सम, गुड़के साथ मिलाइ ॥ २ ॥
दोइ टका भरि ओषधी, हयको देउ खवाय ।
याको दीजै आठ दिन, तौ छाती खुलि जाय ॥ ३ ॥
कही एक मौताज यह, टका चारि भरि जानि ।
भरो सही खुलि जायगो, सात रोजमें आनि ॥ ४ ॥

अन्य वंद वंद जकड़नेकी दवा ।

चौ०—बलगीराकी औषध कही । बंद बंद जो जकड़ो सही ॥
गूगुर दुइ पैसा भरि लीजै । गऊमूत्रमें औटि करीजै ॥
प्रातै घोड़े देव खवाई । बन्द बन्द जकड़ो खुलि जाई॥

अन्य ।

दोहा—साँभरि लहसुन भाग सम, दीजै नित्त खवाय ।
जकरो सो खुलि जाइ है, लंघन ताहि कराय ॥ १ ॥
तप्त नीर नित दीजिये, दाना देउ न ताहि ।
औषध दीजै नेमसों, नीको लीजो वाहि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०—गूगुर टका एक भरि लेहू । हींग सोहागा खील करेहू ॥
अजवाइन सोंचर मिलवाई । घोड़ेको दे प्रात खवाई ॥

अन्य ।

चौ०—हींग सोहागा मासे बीसा । औषध वजन बराबरि पीसा॥
दाना मेटि मसाला दीजै । सात रोजमां नीको लीजै ॥

अन्य ।

चौ०-प्रथम छोहारा खाली करै । लै अफीम ताहीमें धरै ॥
करि कपरौटी दीजै ताही । आधा रोज खवावै वाही ॥
अश्व अंग खुलि जाय तुरंता। दाना मति दीजै बुधिमंता॥

अन्य ।

चौ०-सज्जी साँभरि बोड़ी पोस्ता। हालिम गुड़ साबुन लै दोस्ता
टंक टंक भरि औषध लेहू । पाव सेर गुड़ तामें देहू ॥

अन्य ।

चौ०-हालिम हरदी गुड़ सम लेहू । प्रात समय घोड़ेको देहू ॥
चारि घरी कैजा करि राखै । नीको होय अश्व ऋषि भाखै॥

अन्य ।

चौ०-अश्वाकी छाती हो भारी । हिलै नहीं जो दीजै टारी ॥
हफ्तम दाम फस्त खुलवावै।नाशै सकल रोग वहि जावै
जो छातीको लोहू लीजै । तौ विचार या विधिसों कीजै
प्रथम घरी यक राह चलावै । ता पाछे रगसीर खुलावै॥
गर्ममसाला दीजै ताही । क्रमते दाना दीजै वाही ॥
गर्म नीर अचवनको दीजै । छाती खुलै मानि यह लीजै॥

अन्य ।

चौ०-हालिम हरदी सोंठि सोहागा । सोंचर साबुन सज्जी पागा
गुड़सों मिलै वजन सम लेहू । टंक सोहागा तामें देहू ॥
सातरोजलौं घोड़े दीजै । छाती भरी नीक सो लीजै ॥

अथ जौगीरालक्षण व दवा ।

चौ०-दाना वाजी खायो होई । तुरतै पानी पीवै सोई ॥
ताते होत रोग तनु आई । छाती फूलि ताहिकी नाई ॥

दोहा–लीजै रेहू सोंठि अरु, वजन बरोबरि आनि ।
गरम करै जल सानिकै, ऊपर लेवै जानि ॥

खानेकी दवा ।

दोहा--लेउ सोहागा फिटकरी, कारी जीरी आनि ।
अरु कुटकीको लीजिये, भाग बरोबरि जानि ॥ १ ॥
ये सब लीजै कूटिकै, सोरह तोले आनि ।
गूगुर हरदी हींग लै, अरु हालिमको मानि ॥ २ ॥
दुइ दुइ तोले लेहु ये, सोऊ लेउ कुटाइ ।
अरु अजवाइनि लीजिये, साबुन सहित मिलाइ ॥ ३ ॥
दोऊ लीजै पाव यक, भाग बरोबरि जानि ।
तोले एक अफीम लै, सो लीजै जल सानि ॥ ४ ॥
फिरि मानुषके बार लै, तिनको लेउ जराइ ।
यवको आटा सेर भरि, सोऊ लेउ मँगाइ ॥ ५ ॥
गोली बाँधौ वीस सब, यवके आटा सानि ।
साँझ सबेरे दीजिये, यक यक गोली आनि ॥ ६ ॥

अन्य ।

दोहा--सोंठि मिरच अरु पीपरी, हींग फिटकरी लाइ ।
अजवाइनि सोंचर सहित, सबको लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
दश दश मासे औषधी, सबको लेउ मँगाइ ।
दाना दीजै नाहिं तिहि, देत ओषधी जाइ ॥ २ ॥
कही एक मौताज यह, सात रोज लगु देइ ।
रोग हरै अरु बल बढ़ै, वाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥

अन्यमत जौगीरालक्षण व दवा ।

दोहा–बहु दिन थाने बँधि रहै, करै न लीद पेशाब ।
नथुना मारि जु दम करै, रहै जकड़ि बेताब ॥

चौ०–सेंहुड़को पोढ़ा लै आवै । बित्ता बित्ता ताहि कटावै ॥
ताके बीचम लोन भराई । ऊपरते माटी थुपवाई ॥
पावकमें पकाइ सो लीजै । सूखि जाय तब बाहर कीजै ॥
ताकी माटी सकल छुटावै । पीसि कूटि कपरा छनवावै ॥
एक मास घोड़ेको दीजै । जौगीरा याहीसों छीजै ॥
पिपरी सहद खवावै कोई । जौगीरा ताके नहिं होई ॥

अन्य ।

चौ०–सोंठि वैतरा हींग मँगावै । पिपरी मिर्च श्याम लै आवै ॥
लहसुन लेउ जौन इक पुतिया । तामें डारौ अदरख बतिया ॥
जवाखार अरु लोटासज्जी । आध पाव दोनौं करि लेजी ॥
लेउ फिटकरी एक छटाँका । गनती चारि मैनफल पाका ॥
मदिरा एक सेर मँगवावै । दवा पीसि तामें सनवावै ॥
गोली करौ छटाँक प्रमाना । प्रात एक नित दीजै खाना ॥
या विधि दवा करै जो कोई । जौगीराको नाश करोई ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत सीनाशोथवर्णन
नामक पञ्चदश अध्याय ॥ १५ ॥

अथ लीदकी पहचान ।

चौ०–देखो लीदि करै जो पतरी । अति बदबोहि करै तिहि अँतरी ।
जेह्न दाना तिहि हजम न होवै । कई रोज दाना नहिं देवै ॥

गेरह रोज जु देय मसाला। मिलै टका भरि भाँग सुआला ॥
शुद्ध उदरते लीदि करावै। अश्व अराम होइ सुख पावै ॥
पेट चलै पिचकाकी सरसै। ताको भाँग देइ सुख बरसै ॥
लुगदी बनै छटांक प्रमाना। दीजै तीनि दिवस सुख माना ॥

अन्य।

चौ०–की छटाँक मेंहदी लै आवै। टका प्रमाण कतीरा नावै ॥
जीरा मासा एक जु लीजै। गूदा बेल टका भरि कीजै ॥
सबको पीसि नान्ह करि छानौ। ताको लै पानीमें सानौ ॥
आधी प्रात साँझ दे आधै। बहुतै उदर तुरैको बाँधै ॥

अथ बहुत दस्त आवै उसकी दवा।

चौ०–दस्त बहुत आवैं जिहि तुरगा। ताकी दवा करौ संसर्गा ॥
घोड़ा जो बेताब दिखावै। अरु दम बहुत करै दुख पावै ॥
करि पुरान चावरको भाता। ईसबगोल मिलाइ सुखाता ॥
दधि गाईको देउ मिलाई। तामें दस्त बंद ह्वै जाई ॥

अथ अतीसार।

दोहा–अरसीपात रु नींबको, पात फूल युत लेहि।
सरसर दमरी सकल जल, साथ पीसिकै देहि ॥

अथ आनू नाम मर्ज।

चौपाई–लीदिमाँह चिकनाई दरसै। आनू नाम मर्जको सरसै ॥
सो तुरंगको दीजै राई। याते आनू रोग नशाई ॥

अथ लीदिमें लोहू आवै उसकी दवा।

दोहा–देवदारु जर मुरहरी, अरु अँगेथु असगंध।
पारा शर मासे सकल, पीसि दिये सुख संघ ॥

अन्य ।

दोहा-अँवरा परवर मूलसम, कुकुरौंधा बुध आनि ।
चाउर साँठी मुरहरी, नित दै दशमा सानि ॥ १ ॥
अश्वजतन या विधि करै, शालहोत्र मत देखि ।
रहै अरोगी सर्वदा, नित सवार सुख पेखि ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०-हर्रा असिल सबुज्ज लै आवै । देवदारु अरु पीपरि नावै॥
महुरेठी जर असगँध आनै । पाँच पाँच दमरी सब ठानै॥
पानी साथ पिसाय सु लीजै।शालहोत्र मुनि वचन करीजै
नित ही नित्त तुरग यह पावै।लीदि बेकार रुधिर नहिं आवै

अन्य ।

दोहा-लीदि करै जो रक्तयुत, ता वाजीको देहु ।
तुरत रोग ताको हरै, नकुल मतो सुनि लेहु ॥
छंद-हर्रै महुरेठी विचारु । ले पीपरी अरु देवदारु ।
घृत साथ सानि मोथा मिलाउ । लै तुरत ताहि बाजी खवाउ ॥

अथ रक्तविहीन अतीसार ।

छंदतोमर-लीजिये जो सोराकंद । महुरेठी औ आनंद ॥
मोथे बहेरे चारु । गिरि करानिका निरधारु ।
हय होत रक्त विहीन । तिहि पिंड देउ प्रवीन ॥
सब मिटै रोगनिदान । यह कहत सुकवि विधान ।

अन्य ।

चौपाई-दोनों हर्रै गंधक लीजै । करुये तेल सानिकै दीजै ॥
रक्तविहीन दोष सब हैरै । शालहोत्र वाणी उच्चरै ॥

अन्य।

चौपाई-अरसी पत्र नींबके लेहू। पीपरकली भलीविधि देहू॥
पिंड बनाय बाजिमुख धरै। अतीसार सब याते हरै॥

अन्यमत संग्रहणी।

दोहा-शिशिर और हेमंत ऋतु, पेटु झरै जो आइ।
और बताने माहिमों, शरदी कछु दरशाइ॥ १॥
औंरागूदी बेलकी, नागरमोथा लाइ।
सौंफ फिटकरी पोस्ता, कली अनार मँगाइ॥ २॥
टका टका भरि वजन सम, सबको लेउ भुँजाइ।
आधा दीजै अश्वको, आधा देउ धराइ॥ ३॥
पानी दीजै गर्म करि, दाना दीजै नाहिं।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, पेट बंद ह्वै जाहि॥ ४॥

अथ गर्मी ऋतुमे पेट झरे उसकी दवा।

दोहा-गरमीकी ऋतु माहिमें, पेट झरत जो होइ।
होइ बताना सुरख जो, शरदी मायल सोइ॥ १॥
औंरा जीरा फिटकरी, कली अनार मँगाइ।
लेउ बरोबरि सबनको, तोले षट मँगवाइ॥ २॥
पृथक पृथक भूँजै सबै, सबको कूटि मँगाइ।
कही एक मौताज यह, हयको देउ खवाइ॥ ३॥
औषध दीजै तीनि दिन, साँझ सबेरे लाइ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, दस्त बंद ह्वै जाइ॥ ४॥

बदहजमीसे पेट झरे उसकी दवा।

दोहा-होत हाजमा जाहिते, कही ओषधी आइ।
दीजै ताहि मिलाइकै, यही दवामें लाइ॥ १॥

दाना जाको नाहिं पचै, बदहजमी दरशाइ ।
पेट झरन ताते लगै, या विधि करै उपाइ ॥ २ ॥
हलदी तामें नहिं करै, दोइ पहर लगु जानि ।
बदहजमीकी ओषधी, दीजै नाहिं न आनि ॥ ३ ॥
दाना जौलौं लीदिमें, देत देखाई ताहि ।
चारि पहर लगु ताहिको, औषध दीजै नाहिं ॥ ४ ॥
बोड़ी लेउ अनारकी, सौंफ सहित भुँजवाइ ।
मिरच स्याह अरु पीपरी, देउ बहेर मिलाइ ॥ ५ ॥
लीजै सोंचर लोनु पुनि, अजवाइनि अरु जानि ।
औषध ताले दश सबै, भाग बरोबरि आनि ॥ ६ ॥
ओषधि देउ खवाय यह, अरु कैजा करि देइ ।
याहि विधि कीजै तीनि दिन, बाजी नीको लेइ ॥ ७ ॥
पेट झरत है जाहिको, दाना दीजै नाहिं ।
कोइ होइ विकार जो, कीन्यो महिनामाहि ॥ ८ ॥
अतसिार संग्रहणी, की साधारण माहि ।
आवैं जाको दस्त सो, यही ओषधी ताहि ॥ ९ ॥

अथ कोख चढ़ जाय उसकी दवा ।

दोहा–कुटकी एक छटाँक लै, दूनी मिरचै गोल ।
मदिरा बोतल एक लै, कूटि पिलावै घोल ॥

लेप ।

दोहा–राई खारी निमक लै, पीसि लेप कर कोखि ।
शालहोत्र मुनिके मते, लेहै रुजको सोखि ॥

अधिक दौड़ानेसे जो रोग पैदा हो उसकी दवा।

दोहा-अति दौराये ते तुरै, श्वास अधिक उपजात।
ताकी श्री हरि जाति है, नकुलमते विख्यात॥
चौ०-चाउरको चूरण करि लीजै। गौके दूध मिलाइके दीजै॥

अथ उदरवायुबंद, पेट फूलनेकी दवा।

दोहा-उदर वायु जो बन्द हो, पेट फूलि तेहि जाहि।
दवा किये खुलि जाति है, यामें विस्मय नाहिं॥
चौ०-उदर होइ घोड़ेको बंदा। औषध कीजै चेतनचंदा॥
राई भाँटा तक्र मिलाई। तुरत दीजिये ताहि खवाई॥
देतै पवन लीदिको करि है। उदर विकार अश्वकी हरिहै॥

अन्य।

चौ०-प्रथम सोंठि आजवाइनि लावै। मैदा करि घटमें औटावै।
मलै उदर औ कोखि लगाई। ता पाछे यह करौ उपाई॥

अन्य।

चौ०-सोंठि सोहागा सोंचर गंधी। सहिंजनके रस गोली बंधी॥
उदर व्याधि चौरासी बाई। हरै शूल सब अश्व जु खाई॥
एक टकाकी वजन प्रमाना। पवन रोगको हरै निदान॥

अथ लीदबंदकी दवा।

चौ०-सोंठि मिर्चकी गोली बाँधौ। मूलद्वार मध्य सो साधौ।
टहलावै फेरै चित लाई। लीदि करै जो करौ उपाई॥

अन्य।

चौ०-कारीजीरी मिर्च मँगावै। खील सोहागाकी करवावै॥
सज्जी राई कुटकी लेहू। हींग टका भरि तामें देहू॥

जवाखार औ वायबिडंगा । खारी सोंचर सोंठि प्रसंगा ॥
अजवाइनि लै सब सम कीजै। अदरखरसमां गोली कीजै ॥
एक छटांक अश्वको दीजै। वायु दोष अरु गुल्म हरीजै ॥

अन्य ।

दोहा—सोंठि घीवमें सानिकै, गुदा मध्य दे मोलि ।
लीदि करै क्षण एकमें, देइ रोगको ठेलि ॥
चौ०—ककरी भांटा भरत करावै । राई पीसि तक्र मिलवावै ॥
खारी डारि अश्वको दीजै । उदरव्याधि याते हरि लीजै ॥

अन्य ।

दोहा—हींग टका भरि लायकै, घिउ कच्चे दुइ सेर ।
दूवा करिकै दीजिये, लीदि करै बहुतेर ॥

अथ वातोदर रोग ।

सोरठा—वाढ़ि पेट बहु जाय, वातोदर सो जानियें ।
ताको कहौं उपाय, शालहोत्र मत जानिकै ॥

दवा ।

दोहा—हरदी तिल औ फिटकरी, काली मिरच मँगाइ ।
टका टका भरि ओषधी, चूरण लेउ कराइ ॥ १ ॥
कुम्हड़ाकेरे फूल पुनि, अरु सेहुँड़के पात ।
राख दुहुँनकी लीजिये, एक टका भरि तात ॥ २ ॥
गाइ दहीको तोरु पुनि, टका चारि भरि लाइ ।
टका एक भरि ओषधी, ताके संग खवाइ ॥ ३ ॥
दशदिन औषध दीजिये, नितप्राति हयको आनि ।
चारि घरी दिनके चढ़े, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥

अथ जलोदररोग ल० और दवा।

सोरठा-पेट बढ़त नित जाइ, झलझलाइ ताकी नसैं।
ये लक्षण दरशाइँ, ढबढबाइ डोलति विषे ॥

दोहा-जवाखार सैंधव सहित, सोंचर सांभरि आनि।
दशदश पल ये लीजिये, सज्जी सहित बखानि ॥ १ ॥
दुइसै पल अरु लीजिये, गायमूत्र मँगवाइ।
तामें इनको डारिकै, दीजै अग्नि चढ़ाइ ॥ २ ॥
चौथे हींसा जब रहै, लीजै ताहि उतारि।
गेहूँ लीजै सात पल, दीजै तामें डारि ॥ ३ ॥
भीजि जाइँ गेहूँ जबै, तिनको लेउ सुखाइ।
तिनको फेरि पिसाइकै, दूधमाहिं चुरवाइ ॥ ४ ॥
फेरि सुखावै धूपमें, दोइ टका भरि लेइ।
टका एक भरि गुड़ मिलै, मेथीके सँग देइ ॥ ५ ॥
औषध दीजै तीस दिन, दुहूँ पहर यह जानि।
क्षुधा बढ़ै अति तासुकी, होइ रोगकी हानि ॥ ६ ॥

अथ उदरदाहकी दवा।

चौ०-दूधमाहिं पत्रजै पकावहु। मिश्री और इलाची लावहु ॥
दाह होय जिहिके हियमाही। सो हय शीतल होत सदाही॥

अन्य।

चौ०-यवजीराको मिलै सबेरे। दीजै पिंड कहत हौं टेरे॥
ग्रीषमऋतुकी ओषधि जानौ। तुरँग सुखी तनु बहु सुखमानौ

अन्य।

दोहा-लहसुन तेल मिलाइकै, जल संयुत करि देहु।
दाह मिटै हयकी सकल, वर्षाऋतुकी येहु ॥

अथ उदरज्वालाकी दवा ।

दोहा—आदी भीमकपूर लै, दुकरा भरि परमान ।
सोंठि इलाची लीजिये, दश दश मासे जान ॥ १ ॥
ता आधो पत्रज मिलै, धूपकाल अनुमान ।
माठा मिलै सु दीजिये, उदरज्वाल हर जान ॥ २ ॥

अथ अजीर्णकी दवा ।

दोहा—सोंठि बैतरा पीपरी, मिर्च हर्रकी छालि ।
अजवायन बिरिया नमक, दश दश मासे डालि ॥ १ ॥
गोदधि मिलै सु दीजिये, दाना नहीं खिलाय ।
दिवस आठयें नमक दै, तुरत अजीरण जाय ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत उदरव्याधिकथन नामक षोडश अध्याय ॥ १६ ॥

अथ विषहरण विधि ।

दोहा—तीनि भांतिके विष सबै, थावर जंगम मानि ।
कृत्रिम जानौ तीसरो, इनमें सब विष जानि ॥ १ ॥
अरुण आँखि आँसू चलैं, कोवा फाटो होइ ।
गिरै परै उठि बल करै, ऐसे लक्षण जोइ ॥ २ ॥
कंद मूल फल आदि दै, थावर विष पहिचानि ।
तिनकी ओषधि कहत हौं, लक्षण सहित बखानि ॥ ३ ॥

स्थावर—विषहरण दवा ।

दोहा—नागफली रसउत सहित, औ नारीको आनि ।
बदरीफल केसरि सहित, भाग समान बखानि ॥ १ ॥

तक्रमाहिं सो घोरिकै, हयको देहु पिआइ ।
शालहोत्र मुनि सो कहैं, थावर विष मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—असगँध मधु लै आठपल, दशफल घृतहि मिलाइ ।
सो बाजीको दीजिये, थावर विष मिटि जाइ ॥

अन्य भेद ।

दोहा—घास होत इक शरद ऋतु,ताहि बाजि जो खाय ।
प्रथमहि सूखै देह सब, फिरि पाछे मरिजाय ॥ १ ॥
मुंडी मूसरि सहित मधु, और बिजौरा लाइ ।
दोइ दोइ पल लाइ करि, लीजै क्वाथ बनाइ ॥ २ ॥
हयको दीजै तीनि दिन,उतरि तासु विष जाय ।
शालहोत्रमें यह कहो, नाहिंन और उपाय ॥ ३ ॥

जंगमविषहरण दवा ।

दोहा—जंगम विष सर्पादि हैं, ते जो काटैं आनि ।
ताके लक्षण कहत हौं, शालहोत्र मत जानि ॥

सर्प काटनेका लक्षण व दवा ।

दोहा—अंग तोरि गिरि गिरि परै, दाना घास न खाय ।
अरुण नेत्र कोवा फटैं, सर्प डसा सो आय ॥ १ ॥
लीदि बंद नहिं होति है, छलकै बारंबार ।
लार बहुत मुखते गिरै, जानौ सर्पविकार ॥ २ ॥
जटामासि रसउत सहित, बचहि कुलिंजन लाइ ।
दोइ दोइ पल तौलिकै, हयको देउ खवाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा—चंदन अरु लै उर्दको, आठ टका भरि आनि ।
हयको दीजै नीरमों, शालहोत्र मत जानि ॥

अन्य ।

दोहा—दुद्धी रसउत रूसको, बारह पल मँगवाइ ।
तासम मदिरा मेलिकै, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
गरवरिया ले बोलि सो, गरुडमंत्र पढ़वाइ ।
निर्विष कीजै बाजिको, दिये ओषधी जाइ ॥ २ ॥
निर्विष होवै बाजि जब, तब यह औषध देइ ।
साँझ सकारे सात दिन, तुरी नीक करि लेइ ॥ ३ ॥
कानोटरी अर्कजर, मिरचै सम करि लेइ ।
संग नीरमों पीसिकै, प्रात साँझ नित देइ ॥ ४ ॥

अन्य भेद ।

दोहा—छोट सँपोला घासमें, धोखे लै हय खाय ।
वारि बहुत मुखते गिरै, फूलि ग्रीव अरु जाय ॥
सोरठा—अंग फूलि सब जाइ, मन मलीन बाजी रहै ।
औषध दीजै ताहि, शालहोत्र मत जानिकै ॥
दोहा—केंचुआ लीजै पाँच पल, मिर्चे लेउ मिलाइ ।
सेरु घीउमें बाँटिकै, हयको देउ खवाइ ॥

सर्वजंगमविषहरण दवा ।

दोहा—चौराई अरु अर्कजर, लीजै अदरख पान ।
मिर्च कसौंजी अंडजर, सबको एक समान ॥ १ ॥
दूनो घीउ मिलाइकै, हयको देउ पिआइ ।
शालहोत्रमें यह कहो, विषधरको विष जाइ ॥ २ ॥

अन्य मत—साँप काटनेके लक्षण व दवा।

चौ०—ऐसी घरी साँप जिहि डसै। सो अवश्य यमपुरमें बसै॥
पशु मनुष्यको डसै भुजंगा। सो विचारि लीजै सब अंगा॥

कवित्त—मूल मघा कृत्तिका विशाखा औ भरणी शिव,
नखत फनिंदको कहत बुधिमान हैं॥
छठि आठैं पंचमी चतुरदशि और नौमी,
भौम शनि वार कहैं वेदन कथान हैं॥
रवि और चंद्रमाके ग्रहण समय काटै,
एते अहिकाटनका कछू ना जतन है॥
गरुड़ जो राखै चाहि अमृत दै अभिलाषै,
यतने तौ जात प्राणी यमके निकेत हैं॥

दोहा—ओंठ चिबुक गल जठर शिशु, उरु बाहू औ काँध।
इंद्रि काँखमें जो डसै, परै सो नर यम बाँध॥

चौ०—देवालय पुरानि फुलवाई। औ मशानकी भूमि जनाई॥
साँप धौरहरमें जो डसै। यमनिकेत निश्चय सो बसै॥
मौन होइ की भौंरी आवै। दाह स्वेद तनु पीर जनावै॥
शूल होइ की ग्रीव पिराई। हिबुके चलै जीभ ठिठुराई॥
ऊरध श्वास चलै अकुलाई। पीर होइ पेडुरिनमों आई॥
डसे उरग ये लक्षण देखै। निश्चय तासु मरन अवरेखै॥
अंगतरी घोड़ा जो गिरै। दाना घास सबै परिहरै॥
सीक करै छुलके बहुवारा। ताको काटो भुजँग विचारा॥

दोहा—जा घोड़ेको सर्पने, काटो होय सुजान।
जीभ देखि स्याही लखै, हवा करौ बुधिमान॥ १॥

गरुडमंत्र पढ़वायकै, निर्विष कीजै ताहि ।
औषध तासु खवाइये, दिना सात लगु वाहि ॥ २ ॥

दवा ।

चौ०-पानपाठिकी मूल मँगावै । एक छटाँक ताहि पिसवावै ॥
स्याह मिर्च तिहि आधी लीजै । जलके संग अश्वको दीजै ॥

अन्य ।

दोहा-लाजी कछुही मांसमें, मूल बिजौरा नाय ।
गूलरिफल सम घृत मिलै, नासु दिये विष जाय ॥

अन्य ।

दोहा-गूलरिदुद्धी लै सुघर, नागकेसरी नाय ।
गुंजाफल अरु मधु गुरुच, नासु दिये विष जाय ॥

अन्य ।

दोहा-चीत मूल अरु मालती, रस धतूरको आनि ।
पीसि नासु दे अश्वको, करि है विषकी हानि ॥

अन्य ।

चौ०-काली मिर्च नींबकी पाती । जितनै तुरँग खाय दिन राती ॥
तासों जहर शांति ह्वै जावै । औषध किये सुखी तनु पावै ॥

अथ कृत्रिमविषहरण ।

दोहा-विष जे होवें योगते, कृत्रिम कहिये ताहि ।
सहद घीउके योग ज्यों, कृत्रिम विष त्यों आहि ॥

दवा ।

दोहा-फनि केसरि पुनि कुसुम मधु, और केतकी लाइ ।
सो घोड़ेको दीजिये, कृत्रिमविष मिटि जाइ ॥

बाघने पकड़ा हो उसकी दवा ।

दोहा-दाँत लगे जहँ बाघके, फूलि तहाँ फिरि जाइ ।
पाकत फूटत फिरि भरत, नाहीं नीक देखाइ॥ १ ॥
मछरी लैकै तीस पल, तिनको लेउ पकाइ ।
जीरा पीसै पाँच पल, तामें देइ मिलाइ ॥ २ ॥
ताहि लगावै जखम पर, विष ताको मिटि जाइ ।
नीक होइ जबलौं नहीं, रोज लगावत जाइ ॥ ३ ॥

अथ कुत्ताके काटनेकी दवा ।

सोरठा-लघु बिरवा यक होइ, निकट तालकी भीटपर ।
है मंजरियुत सोइ, पाती तुलसीसम अहै ॥
दोहा-श्वेतफूल ताते कढ़ै, नहीं गन्धको लेश ।
श्वान डसे तेहि वाजिको, ओषधि जानौ वेश ॥ १ ॥
मिर्चैं पैसा एक भरि, ओषधि पाती टंक ।
याको दीजै सात दिन, विष नाशै निरशंक ॥ २ ॥

चांडालकी गोलीसे मरनवाले घोड़ेकी दवा ।

चौ०-ले गिरगिट दुइ चारि मँगाई।जलसँग पावकमध्य पकाई।
नारि भराय अश्वमुख नावै । सो गोलीसे मरै न पावै ॥

अथ माहुरकी गोली ।

दोहा-जहर शंखिया तेलिया, समुदखार हरतारु ।
स्याह धतूरे बीज लै, कुचिला तामें डारु ॥ १ ॥
पारा लेउ अफीम पुनि, और हर्दिया लाइ ।
खुरासानि अजवाइनी, अरु अजमोद मँगाइ ॥ २ ॥
आकरकरहा पीपरी, खील सुहागा आनि ।
कालेश्वर अरु मिर्च लै, सज्जी स्याह बखानि ॥ ३ ॥

नागौड़ी असगँध सहित, बहुरि लौंगको आनि ।
एक एक तोले सबै, येती ओषधि जानि ॥ ४ ॥
अर्कदूध पुनि लीजिये, तोले पाँच मँगाइ ।
खैरु पपरिया लेउ पुनि, छा तोले तौलाइ ॥ ५ ॥
मरी गाइको पित्त पुनि, तीनि अदाति सो जानि ।
खरिल कीजिये तीनि दिन, अदरखके रस सानि ॥ ६ ॥
गोली ताकी बाँधिये, छोटे चना प्रमान ।
वलगम वायु नशात है, सत्य बात यह जान ॥ ७ ॥
दाना दैकै साँझको, गोली एक खवाइ ।
यवके आटा-संगमें, अदरखरसहि मिलाइ ॥ ८ ॥
चारि घरी कैजा करै, जहरवात मिटि जाइ ।
नाशै वलगम रोग सब, सकल वायु नशि जाइ ॥ ९ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रहे केशवसिंहकृत विषवर्णन नामक
सप्तदश अध्याय ॥ १७ ॥

अथ कुलिजनरोगवर्णन ।

दोहा–तीनि प्रकार कुलिंज है, कहत सबै गुण खानि ।
ताको वर्णन करत हौं, शालहोत्र मत जानि ॥ १ ॥
आँत एक कूलन है, नाभि पिछारी जानि ।
वायु भराति है ताहिमें, करत दोष बहु आनि ॥ २ ॥
करत नहीं है लीदिको, अरु पेशाब नाहिं होइ ।
फिरि ताकति नाहिं रहति है, ये लक्षण सब जोइ ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–सोंठि चीत अजमोद लै, दुइ दुइ तोला लाइ ।
चेड़चव लौंगे दुहुँनको, दुइ तोले मँगवाइ ॥ १ ॥

आधसेर गुड़ डारिकै, पांचसेर जल माहि ।
तप्त कीजिये अग्निपर, जब आधा जरि जाहि ॥ २ ॥
ताहि उतारौ अग्निते, लीजै ताको छानि ।
फेरि पिआवै वाजिको, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥
फिरि हुकना हयको करै, औ कैजा करि देइ ।
सीताराम प्रसादते, वाजी नीको लेइ ॥ ४ ॥

अथ बेलिरोगलक्षण ।

दोहा-बेलि कहत हैं ताहिको, दोनों रानन माहि ।
अगिले दोनों पाँइमें, निकसति है वह आहि ॥ १ ॥
पहिले सूजनि होति है, दुइ दुइ राहै जानि ।
बढ़िकै सूजनि फिरि बहै, पाकि जाति यह मानि ॥ २ ॥
पाकति फूटति फिरि भरति, यह गति ताकी होइ ।
मलहम कितनो जो धरौ, नीक नहीं वह सोइ ॥ ३ ॥
जो कदाचि केहुँ जतनते, नीक कहूँ ह्वै जाइ ।
तौ निश्चय यह जानियो, निकसति है फिरि आइ ॥ ४ ॥

बेलिरोगकी दवा ।

दोहा-पहुँचा आँगुर आठको, सेंहुड़को यक लेउ ।
तामें एक भेलावँ धरि, लेपि मृत्तिका देउ ॥ १ ॥
गाड़ै ताको आगिमें, खूब पाकि जब जाइ ।
लीजै ताहि निकारि तब, माठा देउ छड़ाइ ॥ २ ॥
आटा लीजै मोठको, तामें देउ मिलाइ ।
दाना पाछे साँझको, हयको देउ खवाइ ॥ ३ ॥
एक भेलावँ बढ़ाइये, रोज दूसरे माहि ।
और यही सब विधि करै, शालहोत्र मत आहि ॥ ४ ॥

चौ०–नित प्रति एक भेलावँ बढ़ावै । याविधि चौदह रोज खवावै
एक एक घटवत फिरि जाई । शालहोत्र यह दियो बताई
दोहा–तीनि दफा यहि विधि करै, रोज बयालिसमाहि ।
दाना दीजै मोठको, सेर एक सो ताहि ॥

अन्य ।

दोहा–मिरचै तोले दोइ लै, मोठ महेला–माहि ।
दाना पाछे साँझको, हयको दीजै ताहि ॥ १ ॥
दुइ तोले भरि मिर्चको, रोज बढ़ावत जाइ ।
आधपाव पहुँचै जबै, तब फिरि नहीं बढ़ाइ ॥ २ ॥
चालिस रोज खवाइकै, क्रमते देउ छड़ाइ ।
शालहोत्र मुनि यों सबै, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०–खुरासानि अजवाइनि लेहू । गुड़ पुरान सो तामें देहू ॥
दोनों तोले दश भरि लीजै । पारा तहँ तोले भरि कीजै॥
दोहा–सबको मिलवै एकमें, काँसे थारी–माहि ।
लेइ कटोरी काँसकी, तासों घोटति जाहि ॥ १ ॥
तबलगु ताको घोटिये, जब पारा मिलि जाइ ।
साढ़े ग्यारह तासुकी, गोली लेउ बँधाइ ॥ २ ॥
गोली दीजै रोज यक, बखत शामकै आनि ।
दाना पहिले देइ करि, श्रीधर कहो बखानि ॥ ६ ॥
भूँजो आटा मोठको, सूखौ देउ खवाइ ।
दीजै सूखी घास तेहि, रोग नाश ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अथ सूखी खांसीकी दवा ।

दोहा--दिये मसाला बहुत विधि, मिटत नहीं वह आहि ।
आवति सूखी धाँस है, गरमी जानौ ताहि ॥१॥
दूध निखालिस गायको, तीनि सेर मँगवाइ ।
डारै चावर तासुमें, आध सेर पुनि लाइ ॥ २ ॥
खीर बनावै तासुकी, प्रातहि देइ खवाइ ।
ओषधि दीजै सातदिन, सूखी धाँस नशाइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–जुँदवेदस्तरके सहित, सौंफ कलौंजी आनि ।
तीनि तीनि तोले सबै, औषध कही बखानि ॥ १ ॥
तिल अरु लाही तैलको, सत्तरि तोले लाइ ।
तीनों ओषधि पीसिकै, तामें देइ मिलाइ ॥ २ ॥
तीनि रोजमें देउ सब, औषध गर्म कराइ ।
सूखी धांसनि जाइ मिटि, बड़े सबेरे खाइ ॥ ३ ॥
ओषध यतनी लेइ फिरि, तीनि रोजलौं देहि ।
वाजी मोटो होइ अरु, शालहोत्र मत येहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–अदरख पिपरी लीजिये, तोले चारि मँगाइ ।
सैंधव तोले एक भरि, तामें देउ मिलाइ ॥ १ ॥
औषध दीजै सात दिन, मोठ महेलामाहि ।
धाँसत वाजी होइ जो, तासु रोग मिटि जाहि ॥ २ ॥

अथ खांसीलक्षण ।

दाहा–घास संग काँटा कहूँ, खाइ वाजि जो जाइ ।
अटकि नरीके भीतरै, दैवयोग यह आइ ॥ १ ॥

तातें खाँसत बाजि है, और दूबरो होइ ।
घूँटि घूँटि जलको पियै, खात घास कम सोइ ॥ २ ॥
की फुंसी परिजाति है, की कछु और विकार ।
की हूखो बलगम जमै, कीन्हीं यह निरधार ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा—लकरी लावै नींबकी, थोरी टेढ़ी होइ ।
ना अति मोटी लीजिये, ना अति पातरि सोइ ॥ १ ॥
लंबी लीजै एक गज, ताको साफ़ कराइ ।
एक छोरमें ताहिके, कपरा देउ बँधाइ ॥ २ ॥
लकरीयुत घियमाहिसों, दीजै ताहि भिजाइ ।
लीजै माटी चूल्हकी, तोले डेढ़ मँगाइ ॥ ३ ॥
चौ०—स्याह मिर्च पटमासे लीजै। दोनो मिलिकै पीसि धरीजै ॥
लकरी कपरा बँधी जौन है। तापर दवा लगाउ तौन है ॥
अश्वगरे सो लकरी डाँधै। तीनिरोज याही विधि साधै॥
जब लकरीको लेइ निकारी। तब कपरातें सेंकै भारी ॥
पानी फेरि देरको प्यावै। होइ अराम अश्व सुख पावै ॥

अथ रक्तखांसीकी दवा ।

दोहा—आवत खाँसी बाजिको, रक्त गिरत ता माँहि ।
खाँसी सो है रक्त युत, जानि लेउ सो ताहि ॥ १ ॥
मिश्री लीजै एक पल, ता सम सौंफ़ पिसाइ ।
सेर एक गोदूधसँग, प्रातहि देउ पिआइ ॥ २ ॥
घास खानको दीजिये, हरी दूब मँगवाइ ।
बाँधे शीतल छाँहमें, हरी घास बिछवाइ ॥ ३ ॥

जल पीवनको दीजिये, कूपोदक यह जानि ।
औषध दीजे सात दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ४ ॥

अन्यमत खांसी व धाँसनेकी दवा ।

दोहा-मधु बच गुरच इंदारुनी, सकल पीसि छनवाय ।
लै दश मासे दीजिये, शील धाँस मिटि जाय ॥

अन्य ।

चौ०-ककरासिंगी हर्र मँगावै । अँवरा सैंधव सज्जी लावै ॥
सेंहुड़ा दमरी पाँच मँगाई।सम करि पीसि अश्वमुख नाई॥

अन्य ।

चौ०-लोध बहेरा सज्जी लीजै । सालकांगनी सम सब कीजै ॥
चालिसटंक दवा पिसवावै । पाँच सेर गुड़ तामें नावै ॥
पिंड बनाय सात दिन दीजै।खाँसी जाय व्यथा हरि लीजै

अन्य ।

चौ०-सेर एक बाहेरा लावै । अजवाइनि दुइ सेर मँगावै ॥
रूसेके पाता यक सेरा । तीनों लै हाँड़ीमें भेरा ॥
प्रथम पात हाँडीमें धरै । उपर बहेर जवाइनि भरै ॥
आधे पात उपर धरवावै । क्काथ बनाय उपरते नावै ॥
लेउ समूल कटैया गोली।ताहि क्काथ करु विधिवत सोली
जोहि हाँड़ीमें है अजवानी । तामें काढ़ा डारो छानी ॥
सो हाँड़ी चूल्हेपर धरिकै । काढ़ा पचै जवाइनि जुरिकै ॥
लेउ जवाइनि छाँह सुखाई।एक छटाँक वजन नित खाई
यकइस दिन घोड़ेको दीजै।खाँसी जाय दुःख सब छीजै॥

अन्य (छन्द पद्धरी) ।

अदरख सुचारि भरि ले मँगाय।तिहि कोरिछ मासे हींग नाय
तिहि भूँजि कुचिलि दीजै खवाय।दानाके बाद खांसी नशाय॥

अन्य ।

प०-की दै पियाज पानी पियाय।करि तौल पाँचभरि दुखविहाय

अन्य ।

प०-की वाँसपात उतनेहि मान । ताको खवाय है सुखद जान॥

अन्य ।

प०-की आध पाव ल कंटकारि । दे भुलभुलाय है धाँस हारि॥

अन्य ।

प०-की सेर जवाइनि ले पिसाय ।तिहि कपरामें लीजै छनाय ॥
वह राख तीनिदिन सोखिलाय।करिवजनचारिभरिदुखविहाय
दानाके बाद जब अस्त भान । तबहीं हयको दे यह विधान॥

अन्य ।

प०-की देइ मलाई पाव एक। पानीके बाद पुनि दिन अनेक ॥
जबलौं न मिटै हय धाँस जान।तबलौं यह दीजै बुधिनिधान॥
जो खुश्क धाँस धाँसै तुरंग। दे ताहि नमक राई औ भंग॥

अन्य ।

प०-कचरीकि चारि भरि रलि पिसान।दानाखवायदेयह विधान

अन्य ।

दोहा-देउ बहेरे शोधिकै, लोन सु कुटकी संग ।
अजवाइनि सम पीसि दै, जैहै धांस तुरंग ॥

अथ शिरदमके लक्षण व दवा ।

दोहा-करै अधिक दम अश्व जो, जानौ शिरदम तासु ।
ताहि दपटिवो जहर है, रंडीभणित प्रकासु ॥ १ ॥

दुइ सेर प्याज मँगायकै, कतरि पाव भरि लेय ।
नमक डारि तोला दुइक, आशु तुरीको देय ॥ २ ॥
याम अवधि जल देइकै, तबहीं तुरी खवाय ।
आठ दिवस यहि रीति दै, नहिं गरमी डरुलाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा–मधु वच गुर्च इँदारुनी, ता फल लेउ मँगाय ।
मासा दश सम पीसि दै, शीत श्वास मिटि जाय ॥

अन्य ।

दोहा–प्रातै खसै भिजाय नित, कइउ रोज सुखकारि ।
दाना बाद खवाइये, होय अश्व सुखकारि ॥

अथ गर्मीसे दम आवै उसकी दवा ।

दोहा–दूध सेर लै आठ भरि, चीनी अरु करपूर ।
मासा भरि तिहि घोरि दै, तीनि दिवस सुखमूर ॥

अन्य ।

सोरठा--त्रिफला सेर भिजाय, तासु जोस लै आठ भरि ।
घोरि सिता उतनाहि, तीनि दिवस प्यावो गुणद ॥

अथ शूनकपाली (मगजहीन) लक्षण ।

दोहा–जो मगमें काँपत चलै, सुधि न रहै जिहि गात ।
शून कपाली तुरँग सो, अति पीड़ै मगजात ॥

दवा ।

दोहा--सेतू लीजै प्रातही, आधी सहजर लेय ।
गोपयसों सम भाग करि, वासर मुनि तिहि देय ॥ १ ॥
गोघृत मिर्च पिसाइकै, सो तुरंगको देइ ।
महाबली सो होत है, शूनकपाली खोइ ॥ २ ॥

अथ गर्म मिजाजकी दवा ।

दोहा—शक्कर ईसबगोल लै, यवपिसान सँग देय ।
शालहोत्रके वचन यह, गर्मीको हरि लेय ॥

अन्य ।

दोहा—दधि गाईको लायकै, कपरा बाँधि झुलाय ।
पानी वाको झरि गिरै, दाना साथ खवाय ॥

अन्य प्रकार रोगलक्षण व दवा ।

दोहा—मुँह बाये वाजी रहै, मंद अग्नि अरु होइ ।
भूमि खनै अरु पाँय सों, ऐसे लक्षण सोइ ॥ १ ॥
गजपीपरि सैंधव सहित, हींग भरंगी आनि ।
कुटकी और अतीस पुनि, टका टकाभरि जानि॥ २ ॥
सबै ओषधी पीसिकै, छानै कपरा-माहि ।
धेनुदूध लै पाँच पल, कवि श्रीधर चित चाहि॥ ३ ॥
ओषधि लीजै एक पल, दूधमाहि मिलवाइ ।
डेढ़ पहर दिनके चढ़े, औषध देउ पिआइ ॥ ४ ॥
पंचमूल लै बीसपल, आठसेर जल माहि ।
ताहि चढ़ावै अग्नि पर, सात सेर जरिजाहि ॥ ५ ॥
ताहि पिआवै साँझको, कपरामाहि छनाइ ।
रहै ओषधी शेष जो, तिलके तेल जराइ ॥ ६ ॥
तैल लगावै देहमें, श्रीधर कहो बखानि ।
या विधि कीजै पाँच दिन, होइ रोगकी हानि ॥ ७ ॥

अथ राजरोगलक्षण ।

दोहा—पित्त हृदयमें बहु बढ़ै, नेत्र अरुण अरु होइ ।
करै पेशाब जु रक्तकी, अरु मल सूखो सोइ ॥

सोरठा–आवै खाँसी सूखि, शीश लचाये अरु रहै ।
देत भूँखको दूखि, दाना घास न खाइ कछु ॥ १ ॥
सूजैं पाछिल पाँइ, दुऔ कोखि मारे रहै ।
गूँथी सी परि जाँइ, ता हयकी सब देहमें ॥ २ ॥
पानी बहुत सुहाय, थानविषे अति सुख रहै ।
ये लक्षण दरशाइँ, राजरोग सो जानिये ॥ ३ ॥

दवा ।

दोहा–पीपरि लौंग कपूर अरु, बड़ी इलाची आनि ।
स्याह श्वेत जीरा दुवौ, केसरिनाग बखानि ॥ १ ॥
ज्यानोरी जैफर सहित, चंदन कहो उशीर ।
वंशलोचनहि लीजिये, सकल हरत है पीर ॥ २ ॥
लेउ मिर्च कँकोल अरु, अगरु तगरुको आनि ।
कमलगटा पुनि लीजिये, येती औषध जानि ॥ ३ ॥
चारि चारि तोले सबै, औषध लेउ मँगाइ ।
मिश्री लीजै एक पल, सबको पीसि मिलाइ ॥ ४ ॥
षट तोले यह ओषधी, जलमें पीसि मिलाइ ।
चारि घरी दिनके चढ़े, हयको देउ पिआइ ॥ ५ ॥
दिन यकइसलौं अश्वको, या ओषधिको देउ ।
सीतारामप्रतापते, वाजी नीको लेउ ॥ ६ ॥

अथ पीनसरोग लक्षण व दवा ।

दोहा–कीड़ा परत दिमागमें, गिरत नाकते आइ ।
बहुत गंधि नासा करै, विकल अश्व दरशाइ ॥

दवा ।

दोहा–जर लटजीराकी सहित, बीज कसौंजी आनि ।
कारीजीरि लुहचैन, दीजै गोघृत सानि ॥ १ ॥
टका एकभरि ओषधी, दोइ टकाभरि घीउ ।
या विधि दीजै पाँच दिन, सुखी होइ हयजीउ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–बरुणकटैया जर सहित, सेर सेर मँगवाइ ।
फिरि जल बारह सेरमें, ताको लेउ चुराइ ॥ १ ॥
तीनि सेर बाकी रहै, लीजै ताको छानि ।
पिपरी पैसा पाँच भरि, डारै तामें आनि ॥ २ ॥
ताहि कराहीमाहि करि, दीजै अग्नि चढ़ाइ ।
सहद डारिये एक पल, जब गाढ़ो ह्वै जाइ ॥ ३ ॥
यवके आटा संगमें, दीजै दिनप्रति सात ।
दाना यवको दीजिये, साँची मानौ बात ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–गंधित परिमल आनिकै, ताको रांग कढ़ाइ ।
फूँकि देइ नथुनाविषे, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥

अन्य ।

दोहा–जलसों घोरि कपूरको, डारै नथुना–माहिं ।
साँची मानौ बात यह, कीट सबै झरि जाहिं ॥

अथ गंडमाला ।

दोहा–गरेमाहि गूंथी परैं, स्रवै रुधिर तिन माहिं ।
गूंथी नीकी होइँ जो, वैसिय फिरि ह्वै जाहिं ॥ १ ॥

धनियां मिरच कपूर अरु, तिनको लेउ पिसाइ।
टका एक भरि ओषधी, ताको अर्क कढ़ाइ॥ २॥
सो लै डारै कानमें, लुबुदी देइ खवाइ।
या विधि कीजै पाँच दिन, रोग नाश ह्वै जाइ॥ ३॥
दाना दीजै मूँगको, श्रीधर कहो बखानि।
हरी दूबको दीजिये, दिन चौदहलौं आनि॥ ४॥

अन्य।

दोहा—मेंहदी पिपरी सोंठि अरु, चँदसुर दाख मँगाइ।
पुनि जर लीजै उरदकी, लोध सहित कुटवाइ॥ १॥
टका टका भरि ओषधी, चौगुन जलमें डारि।
ताहि पकावै अग्नि पर, मंद आँचको वारि॥ २॥
चौथा हिस्सा जल रहै, लीजै तबै उतारि।
ताहि छनावै बसनमों, सहद टका भरि डारि॥ ३॥
या विधि ताको पाँच दिन, मूँगमहेला देउ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, वाजी नीको लेउ॥ ४॥

अथ अंडसूजन लक्षण व दवा।

सोरठा—शोथ अंडमें होइ, छुवत माहिं जूड़ो लगै।
शालहोत्र मत सोइ, शिरा अंडकी वेधिये॥

अन्य दवा।

पिपरी मिर्च अतीस बच, कूट रेणुका आनि।
सोंठि सहित सब ओषधी, टका टका भरि जानि॥ १॥
औषध पैसा तीनि भरि, प्रातहि देउ खवाइ।
टका एक भरि ओषधी, तिलको तैल मँगाइ॥ २॥

तोले तीनि मिलाइकै, दुऔ कान डरवाइ ।
पांच रोजके भीतरै, अंडवृद्धि मिटि जाइ ॥ ३ ॥

अन्य प्रकारराजरोग ।

दोहा—अंग होइ दुर्बल सबै, फाटि जीभ गइ होइ ।
बाई होइ शरीरमें, भूँख प्यास नाहिं सोइ ॥

अन्य ।

चौ०—देत लगाम सदा दुख पावै । छाहीं ताको बहुत सुहावै ॥
भौंहन ऊपर गड़वा होई । तरुण होइ तौ जीवै सोई ॥

दोहा—कष्टसाध्य सो जानिये, तरुण तुरी जो होइ ।
जानौ वृद्ध असाध्य है, ऐसे लक्षण सोइ ॥

दवा ।

दोहा—तीनि टका त्रिफला वजन, चीत टकाभरि आनि ।
रेंडी गूदी लीजिये, चारि टका भरि जानि ॥ १ ॥
टका एक भरि ओषधी, षोडशगुण जल जानि ।
काढ़ा कीजै तासुको, श्रीधर कहो बखानि ॥ २ ॥
दोइ टका भरि जल रहै, लीजै ताहि छनाइ ।
मदिरा डारै एक पल, हयको देउ पिलाइ ॥ ३ ॥
वा अदरखरस डारिकै, ओषध दीजै प्रात ।
दश पल आमिष सुअरको, की स्याहीको तात ॥ ४ ॥
खूखो ताहि भुँजाइकै, मध्यदिवसको देइ ।
दाना दीजै तीस पल, वाजी नीको लेइ ॥ ५ ॥

अन्य ।

दोहा—सरवनि पिथवनि हर्रे पुनि, पित्तपापरा आनि ।
लीजै वायविडंग पुनि, भाग समान बखानि ॥ १ ॥

गोघृत ताहि मिलाइकै, दीजै ताको नासु।
यह औषध करु रातिको, रोग नाश अति आसु ॥२॥

अन्य।

चौ०-दश पल रक्त छागको लीजै। चारि टका भरि पानी कीजै
दोइ टका भरि गोघृत लेऊ। सैंधव पैसा यक भरि देऊ ॥
दोहा-सबको मिलवै एकमें, हयको देउ पिआइ।
चौदह दिन या विधि करै, रोग दूरि ह्वै जाइ ॥

अथ कान बाहिरा हो उसकी दवा।

दोहा-टका एक भरि लीजिये, लाही तैल मँगाइ।
रेंडपातको अर्क पुनि, ता सम लेउ मिलाइ ॥ १ ॥
हींग सोंठि मूरीबिया, नौ नौ मासे लाइ।
रेंडपातके अर्कमों, टिकिआ तासु कराइ ॥ २ ॥
अर्क सहित जो तैल है, दीजै अग्नि चढ़ाइ।
गर्म खूब जब होइ वह, टिकिया देउ डराइ ॥ ३ ॥
सोरठा-टिकिया देउ जराइ, काढ़ि डारिये ताहि फिरि।
राखै तैल धराइ, नितप्रति डारै कानमों ॥
दोहा-तीनि रोजके भीतरै, बधिर कान खुलि जाइ।
शालहोत्र मत देखिये, अधिर वर्णों आइ ॥

अथ तिल्ली बढ़ जानेपर दवा।

सोरठा-हय असवारीमाहि, कमर लगावत चलत है।
चढ़ो न ताते जाहि, ऊँचि भूमि पर वाजिसों॥
दोहा-ताकी दोनों कोखिमें, खड़ो दाग दगवाइ।
फिरि वाजीको दीजिये, या औषधको लाइ ॥ १ ॥

सोंठि मिरच पीपरि सहित, और सोहागा आनि ।
सज्जी चीता नमक पुनि, भाग बरोबरि जानि ॥ २ ॥
षट तोले यह ओषधी, तामें सहद मिलाइ ।
सात रोज लगु वाजिको, रोज खवावत जाइ ॥

अथ पैरके नस्तररोगका लक्षण व दवा ।

चौ०—चला न जाय उतानै गिरै । धरती पाउ देत नहिं परै ॥
धीरा पाँव धरत अति गाढ़ो । चलतै गहबर रहिगा ठाढ़ो
एते लक्षण जीमें आनि । सो नस्तर लीजै पहिचानि ॥

दवा ।

चौ०—सैंधव बच अजवाइनि आनौ।वाइम नस्तरसहि निजजानौ

अन्य खानेकी दवा ।

चौ०—बायबिडंग पीपरी लावै । पिपरामूल सौंफ मँगवावै ॥
पाँच पाँच टंकै सब लीजै । कूटि छानि मैदा करि दीजै॥
प्रात खवावै घोड़े आनी । वाइमनस्तरसहि निज जानी॥

अन्य ।

चौ०—गोघृत औ तिल तेल मँगावै । चहूँ चरण मालिसि करवावै
यहि विधि मर्दन कीजै प्राता।निर्मल होइ अश्वको गाता॥

अथ पाँव सूजनेकी दवा ।

सोरठा—काटै जो निज पाँव, सूजै चारौ पाँव शिर ।
याको करौ उपाव, शालहोत्र मुनि जो कहो ॥ १ ॥
खुरासानि बच आनि, वै चाँदी अरु खिरहरी ।
और चिरैता जानि, देवदारु सम टंक दश ॥ २ ॥
घृतसों सबन मिलाय, जो दीजै हयको सुघर ।
रुजको देय नशाय, शालहोत्र मुनिके मते ॥ ३ ॥

अथ विषबोलि कुष्ठ ।

दोहा—पहिले लोहू काढ़िये, चौबन्दी रग खोल ।
पीछे औषध कीजिये, शालहोत्रके बोल ॥

चौ०—प्रथम भेलावाँकी विधि कीजै।एक एक बढ़ि सौलग दीजै॥
सौंते एक एक कम करै। एक रहै तब मलहम धरै ॥

मलहम ।

चौ०—पात बबूर नींबकै लीजै। मेष शृंगकी भस्म करीजै ॥
मुर्दाशंख सोहागा लावै। अजै क्षीरमें खरल करावै ॥
खैर पापरी सेंदुर सानै । सर्षपतेल मोमको आनै ॥
सबको खरल करौ दिन एका।मलहम कीजै बुद्धि विवेका
अंग अश्वके लेपन करै। सो विषबेलि कुष्ठ सब हरै ॥

अथ चमड़ा सख्तकी तरकीब ।

दोहा—सख्त चर्म होवै जहाँ, तौ घृत नमक मिलाय ।
कई रोज लावै तहाँ, ह्वै पपरी गिरि जाय ॥ १ ॥
तौ फिटकरी लगाइ बहु, पीसि महीन सुजान ।
अतिही सुख पावै तुरँग, भाष्यो सुमति प्रमान ॥ २ ॥

अथ पित्ती उखड़नेका लक्षण व दवा ।

दोहा—परैं ददोरा गातमें, बहुत भाँति अलसाय ।
ताको पित्ती कहत हैं, जतन किये रुज जाय ॥ १ ॥
केंचुलि लेउ छटाँक यक, गेरू आधा पाव ।
गुड़ यक पाव मिलायकै, घोड़े प्रात खवाय ॥ २ ॥

अन्य मत ।

दोहा—बहुत ददोरा वाजितनु, अकस्मात परि जाहिं ।
की असवारीमें परैं, पित्ती जानौ ताहि ॥ १ ॥

लोनु घोरिकै देहमें, प्रथमहि देउ लगाइ ।
ता पाछे औषध कहौं, ताको देउ खवाइ ॥ २ ॥

दवा ।

दोहा—दुइ दुइ तोले लीजिये, गेरू सोंठि मँगाइ ।
खील सोहागाकी बहुरि, मासे छा मँगवाइ ॥

सोरठा—हरिको देउ खवाइ, मिटै ददोरा देहके ।
रोग नीक ह्वै जाइ, शालहोत्र यह है कहो ॥

अन्य ।

दोहा—बाँसपात लै सेर दश, जलमों ताहि उसेइ ।
सगरी देही बाजिकी, धोइ तासुते देइ ॥

अग्निमें जलनेकी दवा ।

दोहा—कुचिलि पिआजेको सुघर, रस सब लेइ निचोय ।
जरो जहाँ व्रण पाइये, तहाँ ताहि चुपरोय ॥

अथ बोगमारोगलक्षण व दवा ।

दोहा—मनमलीन अतिही बिकल, बहै पसीना जोर ॥
ईश दयाते हय बचै, बोगमा मारो जोर ॥

चौ०—बहुत पसीना हयके छूटै । सर्व अंगते धारा फूटै ॥
पहर एक दुइमा मरि जाहीं। नकुलमतो यह संशय नाहीं॥
ताकी दवा करौ ततकाला । रोग जानियो हयको काला
आँवाकी बहु भस्म मँगावै । लै लै अश्व बदन मलवावै॥
सूखै स्वेद साध्य तब जानौ। नाहिं सूखै असाध्य अनुमानौ॥

अन्य ।

चौ०—दुइ गुल दोउ श्रुति भीतर दागै। एकै गुल दुमनोकमें लागै
चालिस दिन नाहिं दाना देवै। बचै तौ फिरि नाहिं बोगमा होवै

अन्य ।

चौ०-बिनुआँ कंडा भस्म करावै। आँवाँ राख ताहि मिलवावै॥
दोनों भस्मकि मालिसि करै। अंग पसीना हयको हरै॥
सिंगरफ गुटिका मुनिवर भाषो। सर्वरोगपर सो पुनि राखो॥
गोली चनाप्रमान खवावै। अश्वरोग सब दूरि करावै॥

अन्य ।

चौ०-निंबुकागजीको रस लाई। लेउ पिआज अर्क निकराई॥
और पुदीनाको पिसवावै। तीनों तीनि छटाँक मिलावै॥
चनाके आटा साथ खवाई। रोग अश्वको सकल बिहाई॥
दोहा-एक ग्रंथमे जानिये, बोगभा नाम बखानि।
दूसर मत अब कहत हौं, अरष नाम सो जानि॥

अथ कमरी घोड़ाके लक्षण ।

दोहा-नीचेते ऊँचे सुघर, चाबुक मारि चढ़ाय।
साफ चढ़ै नहिं कमर कज, अड़ि कमरी लखि जाय॥१॥
निशिमें थानै बैठियो, साफ उठै कज नाहिं।
ठहर उठै कमरी लखै, तजै तुरत लखि ताहि॥२॥

दवा ।

दोहा-पांच महीनेको सुमति, पुष्ट वराह मँगाय।
तीनि भाग करि एक लै, रांधि मसाला नाय॥१॥
सेर एक गेहूँ मिलै, पकि सीरो है जाय।
तौ हालिम मैदा बनै, आध सेर तहँ नाय॥२॥

चालिस रोज खवाइये, नितको वजन बनाय ।
राखै खूब उढ़ाय पट, कमर ऐब मिटि जाय ॥ ३ ॥

अन्य ।

चौ०–लहसुन और भेलावँ जवाइनि। दुइ दुइ सेर करौ यकठाइनि
हाँडी मध्य भरावो भाई । तेल पताल यंत्र निकराई ॥
विधिसों हाँडी छिद्र करावै। लहसुन और भिलाउँ भरावै
ताके नीचे दूजी हाँड़ी । अजवाइनि तामें धरु भाँड़ी ॥
वाको तेल जवाइनि खपवै। तौनि जवाइनि घोड़े देवै ॥
एक छटॉक देउ जो बुधवर। दवा अजूबा सर्वरोग हर ॥
नवदिन करै दवा मन लाई । शालहोत्र मत दियो बताई

अथ पीठमे लचका पड़नेकी दवा ।

दोहा–लखु घोड़ेकी पीठिमें, जो लचका परि जाय ।
तौ लै चावर पीच बहु, गरमै थार भराय ॥ १ ॥
पूँछदंडि तिहि बोरिदे, खोलि पछारी देहि ।
झरझराय है झटकि अँग, मिटै लचक सुख लेहि ॥ २ ॥

अथ झोली काढ़नेकी विधि ।

दोहा–जो झोली कढ़िबे चहै, तौ यह जतन विधान ।
दाग चारि पारा करै, पसुरीपै बुध जान ॥ १ ॥
पाव एक लै सोंठि अरु, सज्जी आधा पाव ।
पाव उर्द आटा मिलै, रोटी बनै पकाव ॥ २ ॥
धरि अहराकी अग्निमें, ताको देइ जराय ॥
काढ़ि पीसि बारीख करि, पुरिया चालिस ठाय ॥ ३ ॥

जलके साथ खवाइये, नितही नित मतिमान ।
सो झोली निश्चय कढ़ै, रंगी भनित प्रमान ॥ ४ ॥

अथ सरदी गर्मीकी दवा ।

दोहा—सज्जी लौंग अफीम पुनि, अकरकरहको आनि ।
खुरासानि अजवाइनिहि, छा छा मासे जानि ॥ १ ॥
गुग्गुल हालिम कैफरा, खील सोहागा आनि ।
बच अरु हरदी सोंठि लै, यक यक तोले जानि ॥ २ ॥
साबुन तोले दोइ भरि, गुड़ पुरान मिलवाइ ।
पैसा पैसा भरि सबै, गोली लेउ बँधाइ ॥ ३ ॥
यक यक गोली दीजिये, साँझ सबेरे माहि ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, सरदी गर्मी जाहि ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा—सुमिलखार अरु शंखिया, खील सोहागा आनि ।
पुनि अफीम अरु एलुआ, मासे बीस बखानि ॥
सोरठा—सबको भाग समान, दश मासे सज्जी बहुरि ।
तिल दश टंक प्रमान, टंक टंक गोली करै ॥ १ ॥
ताहि खवावै प्रात, सर्दी गर्मी नाश करि ।
क्षुधा अधिक सरसात, हयको दीजै तीनि दिन ॥ २ ॥

अथ शीतकी दवा ।

दोहा—सहदेई अरु कूट बच, इन्द्रायनफल चारु ।
दूनी लीजै वारुणी, पिंडा करि निरधारु ॥ १ ॥
सहत सहित दीजै विधिहि, हयको साँझ सबेर ।
अश्व-शीत नाशै सकल, कहत नकुलमत टेर ॥ २ ॥

२५

अन्य ।

चौ०-गूलरिफल जो लावै आछे । सूकरमांस मिलावै पाछे ॥
औ महिषीदधि मधुहि मिलावैशीत मिटै हय पेलि खवावै

अथ घोड़ीके गर्भ न रहता हो उसकी दवा ।

दोहा-रोहू मछरी साठि पल, थोरी लेउ पकाइ ।
ताके सुरुआ माहिमों, रोटी देउ सनाइ ॥ १ ॥
अरघी घोड़ी होइ जो, ताको देउ खवाइ ।
औषध कैकै तीनि दिन, घोड़ी देइ छँड़ाइ ॥ २ ॥
गर्भ रहत है ताहिके, बच्चा नीको होइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, शालहोत्रमत सोइ ॥ ३ ॥

अथ बच्चाको देनेकी दवा ।

चौ०-गोघृत तोले तीनि मँगावै । चौबिस रत्ती हींग मिलावै ॥
सो बच्चाको देउ पिआई । दूध हजम ताको है जाई ॥

अन्य ।

दोहा-निंबूके रस माहिमों, गर्म नीर मिलवाइ ।
सोरह मासे तौलिकै, दीजै ताहि पिआइ ॥

अथ घोड़ीके दूध न हो उसकी दवा ।

चौ०-मैदा गोहूँकी लै आवै । ता सम शक्कर ताहि मिलावै ॥
ताहीके सम गोघृत लीजै । तामें मिलै एलुआ दीजै ॥
दोहा-डेढ़ पहर दिनके चढ़े, यलुआ देउ खवाइ ।
दिन यकइस लै तासुको, दूध अधिक सरसाइ ॥

अन्यमत घोड़के नवसंगमवार ।

दोहा-रवि गुरु औ बुधवार लखि, घोड़ीको हय देहि ।
साँझ सकार न दीजिये, सरा होत अच्छेहि ॥ १ ॥

लघु न्याजा जिहि अश्वको, असिल कौम तिहि जानि।
लघुयोनी घोड़ी लखै, सुभग जनै बच्चानि ॥ २ ॥

अथ घोड़ी अलंग करनेकी विधि ।

दोहा-भाँटा और मसूरको, सम करि ताहि पकाय ।
तीनि दिवस घोड़ी दिये, अतिमस्ती करि जाय ॥

अन्य ।

दोहा-की बासी रोटी दिये, ताहि अलंग जनाय ।
आखिर होत अलंग लखि, तौ घोड़ा दै जाय ॥ १ ॥
दोष तीनि दिन ताहिको, दाना नहिं दे जात ।
शुरू अलंग भराय जो, घोड़ी नहिं ठहरात ॥ २ ॥
जो गार्भिनि ह्वै जाय लखि, कम कम अंश घटाय ।
अधिक अशनते दबि गिरै, की शिशु लघु प्रगटाय ॥ ३ ॥
एक दाँय जो प्रगट शिशु, तौ अलंग नहिं काज ।
जने बादि षटदिवसपै, फिरि भराय करि साज ॥ ४ ॥
जो नजीक जनिबो लखै, घृत दे दिन चालीस ।
पाव वजन बलवान शिशु, जनिबो सुगम सुदीस ॥ ५ ॥

घोड़ेकी मस्ती और घोड़ीकी अलंग शांत करनेकी विधि ।

दोहा-बासी जल दश दिवस लै, पोतापर छिरकाय ।
है अजमायो तुरँगकी, मस्ती कम ह्वै जाय ॥

अन्य ।

दोहा-कई रोज बासी जलहि, छिरकि योनिपर देइ ।
कारि है दफा अलंगको, कहौं नकुलमत सोइ ॥

अथ घोड़ा मस्त करनेकी विधि ।

दोहा-घोड़ीकी मुत्तालिका, निजकरमें भरि लेहि ।
नथुनामें फिरि वाहिके, दे लगाय बल तेहि ॥ १ ॥

तीनि दिवस यहि विधि करै, काम बढ़ै हयगात ।
परखि योनिनेजा सुघर, घोड़ै करिकै घात ॥ २ ॥

अथ घोड़ा झरता हो उसकी दवा ।

चौ०—जीरा श्वेत कतीरा लीजै । धनियां वजन बराबरि कीजै ॥
पीसि छानि बुकुनू करवावै । चारि टका भरि साँझ भिजावै
भोर भये घोड़ेको दीजै । सात दिवसमों नीको लीजै ॥

अन्य ।

चौ०—धनियां जीरा श्वेत मँगावै । बीजा मेंहदीकेर मिलावै ॥
टका टका भरि साँझ भिजाई । सात रोज उठि प्रात खवाई
दोहा—यवको आटा पाव यक, दवा पीसि सब लेइ ।
सानि अश्वको दीजिये, रोग दूरि करि देइ ॥

अथ आखता करनेकी विधि ।

दोहा—बच्चा पैदा होय जब, मलि पोता घृत लाय ।
घोड़ी देखि न मन करै, मध्य जवानी आय ॥

अन्यमत मदन अधिक करनेकी विधि ।

दोहा—बल केवल है वीर्यको, क्षीण वीर्य जब होइ ।
बल ताको तब ना रहै, सुस्त रहै हय सोइ ॥

दवा ।

चौ०—लै कंकोल केतकी आनै । दाख खांड जेठी मधु सानै ॥
घृतसों इनको पिंड बनाई । घोड़हि देउ पुष्ट परि जाई ॥
दोहा—पीपरि मिर्चै सोंठि पुनि, टका टका भरि लेइ ।
मीनमांस पकवाइ घृत, दोइ सेर सो देइ ॥
चौ०—मदिरा दधि मधुमाखी आनै । बरियारा सम भाग बखानै ॥
यह घोड़ेको देउ खवाई । छीनो धातु पुष्ट परिजाई ॥

दोहा-कपरामें दधि बाँधिकै, सेतुआ ताहि मिलाइ।
आध सेर नित दीजिये, बूढ़ तरुण ह्वै जाइ॥ १॥
औषध दीजै पुष्टिकी, दिन एकइसलौं जानि।
दीजै ताहि प्रमाण करि, कद मोसम पहिचानि॥ २॥

अथ मदहरणाविधि।

दोहा-तालमाहिं गहदी विषे, सुर्ख कीट वह होइ।
जीवत लावै तुरतही, टका दोइ भरि सोइ॥ १॥
लीजै सिंहजराव पुनि, खदिर भाँग अरु आनि।
हयको दीजै पाँच दिन, दोइ दोइ पल जानि॥ २॥

अन्य।

दोहा-लेउ फिटकरी दोइ पल, तासम सिंहजराउ।
मासे चारि कपूर पुनि, तामें आनि मिलाउ॥ १॥
हयको दीजै सात दिन, उतरि तासु मद जाय।
दीजै चौदह रोज सो, अति सीधा ह्वै जाइ॥ २॥
सोरठा-नील दोइ पल लेइ, तासम लावै फिटकरी।
सात रोज लग देइ, मद बाजीके नहिं रहै॥

अन्य।

दोहा-नीलाथोथा फिटकरी, ताहि कपूर मिलाइ।
दीजै पैसा एक भरि, तीनि दिवस लगु लाइ॥ १॥
दूबर बाजी जो रहै, करत बदी जो होइ।
गुड़ देके मोटा करै, होत सीध तब सोइ॥ २॥

अन्य।

दोहा-झल्लापन बाजी करै, अरु बोलत जो होइ।
ताकी औषध कहत हौं, शालहोत्रमत जोइ॥ १॥

आध सेर परमान करि, गोहूँ मैदा लाइ ।
रोटी तासु पकाइ करि, बासी देउ धराइ ॥ २ ॥
मसका लीजै गाइको, पाव सेर सो जानि ।
हयको दीजै सात दिन, सो रोटीमें सानि ॥ ३ ॥
सहित कतीरा खादिर पुनि, धनिआँ ताहि मिलाइ ।
हयको दीजै सात दिन, झल्लापन मिटि जाइ ॥ ४ ॥

अथ रंग बदलनेकी विधि ।

दोहा-ऐब रहै नहिं जाहिते, पलटि रंग अरु जाइ ।
शालहोत्र मुनि जो कहो, ताको कहौं उपाइ ॥ १ ॥
प्रथमहि बार मुड़ाइकै, साबुन देइ लगाइ ।
धोवै कुम्हड़ा-नीरसों, रोज रोज सो लाइ ॥ २ ॥
लीजै साबुन फिटकरी, कुम्हड़ा-नीर मिलाइ ।
खरिल करै सो पहर भरि, ताकी विधि यह आइ ॥ ३ ॥
धरि राखै सो छाँहमें, रोज लगावै ताहि ।
एक मास यहि विधि करै, रंग श्वेत ह्वै जाहि ॥ ४ ॥

अन्य श्वेतरंग करनेकी विधि ।

दोहा-बीरबहूटी लीजिये, एक टका भरि सोइ ।
लेउ निसोदर ताहि सम, बहुत खरा सो होइ ॥ १ ॥
और लेउ हरतारको, जौन तबकी आनि ।
पीसै तीनों एकमें, ताकी यह विधि जानि ॥ २ ॥
खबहा कुम्हड़ा पेड़में, लाग जहाँपर होइ ।
ताहि छेद करि भरि दवा, बंद कीजिये सोइ ॥ ३ ॥

ताको बौंड़ा माहिमों, लगा रहै सो देइ ।
पाकि खूब जब जाइ वह, तोरि तासुको लेइ ॥ ४ ॥
जहाँ श्वेत कीन्हों चहै, डारै बार मुँडाय ।
फेरि फिटकरी पीसिकै, तापर देउ मलाय ॥ ५ ॥
वाही कुम्हड़ा नीरसों, धोवै ताको आनि ।
कवि श्रीधर यह जानियो,शालहोत्रमत जानि ॥ ६ ॥

अन्य नीलरंग करनेकी विधि।

दोहा-खबहा कुम्हड़ा एक लै, पाकि गयो जो होइ।
भरै ताहि बासन विषे, फाँकी करिकै सोइ ॥ १ ॥
गंधक लीजै सेर भरि, तामें देउ डराइ।
आगि बरत जहँ नित रहै, दीजै तहाँ गड़ाइ ॥ २ ॥
गाड़ो राखै सात दिन, लीजै फेरि निकारि ।
वाही बासन माहिं करि, धरिये तासु सुधारि ॥ ३ ॥
सोरठा-श्वेतरंग जहँ आइ, कियो चहै तहँ श्यामको।
दीजै तहाँ लगाइ, सात रोज दोनों बखत ॥
दोहा-धोवै अठयें रोज फिरि, नील रंग ह्वै जाइ ।
शालहोत्र मत देखिकै, केशव दियो बताइ ॥

अन्य माथेकी सफेद चित्ती मिटानेकी विधि।

दोहा-सोंठि बैतरा रगरिकै, अरु हरतार पिसाय ।
कइउ रोज रगरौ सुघर, चित्ती श्वेत मिटाय॥

अन्य।

दोहा-यक भाँटाको काटिकै, पानीमें दे डारि ।
मींजि तासु वापर मलै, मिटै सफेदी झारि।

अथ थनीदोष मिटानेकी विधि ।

दोहा–सज्जी चूना जल मिलै, घसि करि थनी लगाय ।
कई रोज यहि विधि करै, थनी दोष मिटि जाय ॥

अथ भौरी मिटानेकी विधि ।

दोहा–जहँ भौंरी बद देखिये, सो यहि रीति मिटाय ।
तहँकी खाल तरासिकै, सेंदुर तेल लगाय ॥ १ ॥
बार बराबरि निकरिहैं, जो तनिकौ रहि जाइ ।
फेरि दुबारा लाइयो, कहो सुधीन उपाय ॥ २ ॥

अन्यमत बदन पर चित्ती पड़े उसकी दवा ।

दोहा–बीज कुसुमके लीजिये, आधसेर परमान ।
ताहि पकाय खवाइये, दाना साथ विधान ॥ १ ॥
कईरोज दीजै तुरँग, चित्ती बदन नशाय ।
यहि समान औषध नहीं, जो कीजै मन लाय ॥ २ ॥

अथ अकरेब सितारा मिटानेकी विधि ।

दोहा–भाल सितारा अकरबै, मेटै यही उपाय ।
घिसि घिसि बार उड़ाइ दे, हरदी पीसि लगाय ॥ १ ॥
तजि सितरंग सो अंग रँग, बार निकरि हैं चारु ।
युद्धधीर यहि विधि कहौं, शालहोत्रमत सारु ॥ २ ॥

अथ अंगमें बाल बढानेकी दवा ।

दोहा–ले पुरान तंदुल पकै, तासु पीच मलि केश ।
की चावरको धोवनो, मलै बढ़ैं कच वेश ॥

अथ बछेड़ा ऊपरका ओठ अपनी ओर ऊपर खींचे उसकी दवा ।

चौ०--ओंठ बीचमें जो नस देखै। खड़ी होय ताको अवरेखै ॥
काटि देइ तबहीं वहि नसकै। हरदी नमक ताहिमें भरिकै॥
कटुकतेल तामें मिलवावे । दिनमें कइउ बेर चुपरावै ॥

अथ घोड़ा उन्मीलके आगेको हाले उसकी दवा ।

चौ०--हींग पलाशबीज मँगवावे। गुड़ घृत और बिजोरा लावै॥
मिलै कचूर भाग सम कीजे । आगू हालन मिटै जु कीजै॥

अथ घोड़ा जल्द करनेकी दवा ।

चौ०–हरदी दारुहरद लै आवै। अँवरा सरसौं तेल मिलावै ॥
पानी साथ पीसिकै देवै । यकइस दिनमें जल्द करेवै ॥

अन्य ।

चौ०–दारुहरद हरदी लै आवै । गंधक अँवरासार मँगावै ॥
पाँच पाँच दमरी भरि लीजे । तामें सरसौं तेल करीजै ॥
बासी जलसों पीसि पिआवै। नितही नित यह जतन बनावै
शालहोत्र यह वचन बखानै। जल्द होइ अति ही सुखमानै

अन्य चलनेकी दवा ।

चौ०–कुटकी पाव एक लै लीजै । गूगुर और सोहागा दीजै ॥
और अँगथुवाछालि मँगावै। अजमोदा यक भरि सब लावै
हरदी लै सबकी चौथाई । मासे अर्द्ध अफीम मिलाई ॥
सबन पीसि दिन सात खवावै । पानी एकै बार पिआवै ॥
तबलौं हयको अशन न दीजै। अठयों लावा धान सुकीजै॥
नवयें दिन बेसन हय पावै। पिंडा सात दिवसतक खावै॥

अथ अश्वकी बदी वर्णन ।

चौ०–पानी देखे अधिक डराई । पक्षी उड़त चौकरी जाई ॥
तंग कसत पर पाछे गिरै । सरपटमें नहिं फेरे फिरै ॥
होत सवार थान नहिं छाँड़ै। असवारीमें पाछ निहारै ॥
घोड़ी देखि न आगे जावै । दगे भुशुंडी पेलि परावै ॥
माजा पकरै उलटै पाछे । करत खरहरा खींचै काछे ॥
शालहोत्र इनको तजि दीनो।ए करि हैं असवारहि हीनो॥

अथ ऐब छूटनेकी विधि ।

चौ०–पानी देखे जो हय उझकै। करि समीप जलऔगी चटकै॥
आगेते पाछे बड़ गल्ला । तुरतै तुरै मारिगा हल्ला ॥
यहि विधि करै मास जब एकै।छाँड़ि देइ हय जलकी टेकै
जो हय पक्षी उड़ते भटक । ताके उपर भुशुंडी चटकै ॥
पग धायेपर करै अवाजै । फेरि कबहुँ नहिं करै अकाजै ॥
तंग लेत जो पाछू टूटै । गांठि फराकी कबहुँ न छूटै ॥
गांठि सवारीते रहै थाने।छाँड़ि देउ कछु दिवस बिताने॥
मुँहका जोर न मानै घोड़ा । खारदार दुइ दै मुख तोड़ा ॥
श्वेत दूब घृत लै मुख मलिये।रोके रुकै चलाये चलिये ॥
असवारीसों फेरि लै आवै। पत्थर चून कपोल लगावै ॥
आगे देइ सईसै वासै । पाछे जाइ तुरैके पासै ॥
रुकतीबेर चाबुकै मारै । कबहुँ तुरी अड़ थान न कारै ॥
जो घोड़ा आननकर काचो। आल बराबरि देह कमाचो॥
बाग जेरबँद ढीली वाकै । कबहुँ तुरै पाछे नहिं ताके ॥

घोड़ी देखि तुरँग जो अड़तो। ताको नकुल मसाला पढ़तो॥
खरी जु लीदि खैरकी बुकनी। सात दिवस लौं दीजै धुकनी

अन्य।

चौ०-लकरीमेंको कीरा खावै। तनुते मदन दूरि ह्वै जावै॥

अन्य।

चौपाई-अंड चिराय आखता कीजै। जासों तुरी बदी नाहिं कीजै॥
दगे भुशुंडी जो हय भागे। ताके निकट रवाइसि दागै॥
जा दिशि जाय वही दिशि दागै। चौंक छुटै कबहूँ नाहिं भागै॥

अन्य।

चौ०-मोजा पकरि करै यहि कामै। चाम तोंवरी घालि लगामै॥
मुँह मारेते तोंबरी अड़िहै। कबहुँ तुरंग न मोजा धरिहै॥

अन्य।

चौ०-करत खरहरा जो हय पकरै। घास समीपै खंभा जकरै॥
तुकता ऐंचि खंभ ढिग करै। कबहुँ तुरंग सईस न धरै॥

अन्य।

दोहा-मारै पुस्तक जो तुरग, देइ सवार गिराय।
कर सँभारि कोड़ा हनै, ताहि बुलन्द चढ़ाय॥ १॥
चढ़त चलबली जो करै, चढ़ै न देइ सवार।
थोर अशन बाहब अधिक, चढ़ि उतरै बहुबार॥ २॥
गृह साँकरमें मेलि हय, राखै तहँ जन कोय।
एक हूल मारै सँभारि, मिटै तासु बद खोय॥ ३॥

अन्य।

दोहा-अधिक चलाकी चलबली, बल दिमाक जिहि माहि।
मध्य सवारी अड़ करै, तासु भेद अस आहि॥ १॥

दौरावै बहु तुरगको, जबलौं कूवति ताहि ।
थकित होय जब तुरंगबल,खोवै गति सो ताहि॥ २ ॥

अन्य बदी छूटनेकी धूप व अंजन ।

दोहा-दुष्ट अश्वहित मंत्र अरु, यत्न पूर्वही उक्त ।
धूपांजन अब कहत जो, करौ मुनीश प्रयुक्त ॥ १ ॥
बीछि डंक अरु अस्थि लै, अतिकराल अहिमेल ।
सिद्धि करै घृत सानि सब, विषम धूप करि खेल ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा-दुवौ इलाची अगर लै, अरु उशीर बुध आनि ।
अहिकेसारि चन्दन गुरच, तैल खजूरहि सानि ॥ १ ॥
अनल डारि धूपित करै, दुष्ट अश्वके पास ।
सकल बदीको मूलते, कारक तुर्त विनास ॥ २ ॥
तीसर विष लोबान लै, दधि घृत चन्दन तेल ।
मेलि गदैला धूप करि, दोष अश्वको ठेल ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-गौसे है सब संधिमें, लेपि निशीथ प्रभात ।
धूपित करि लहि अष्टमी, दुष्ट सीध ह्वै जात ॥

अन्य बदी छूटनेका नास ।

चौ०-लघु सुंठी अरु सैंधव लीजै।पीसि महीन सुजलसों दीजै॥
नासु देय नथुनाके माहीं। बदी छूटि बहु सुख उपजाहीं॥

अथ लार बहनेकी दवा ।

छंद मंदिरा-वारुणीको लेउ बुधजन, और मिश्री जान ।
सहत औ निंबू बिजौरा, चारु चारु समान ॥

सबनको यक ठौर करि, जलकूप लेउ पचाइ ।
उदर–कृमि अरु लार नाशै, क्वाथ देइ पिआइ ॥

वारुणी विधि ।

दोहा—लै अंगूर कि दाखको, मदिरा करौ सुजान ।
ताको कहिये वारुणी, नकुलमते परमान ॥

अथ मसाहरणविधि ।

दोहा—ना वाजीकी देहमें, मासा जो परिजायँ ।
काटेते सो ना मिटै, होंहिं फेरि ह्वै जायँ ॥ १ ॥
अदरख गांठी चारि लै, सीपचून मँगवाइ ।
सेंकि सेंकि रगरै बहुत, तौ मासा मिटि जाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—चोंगली कागदकी करै, मासा ऊपर लाइ ।
एक तरफ मो ताहिके, दीजै आगि लगाइ ॥ १ ॥
सब चोंगली जरिजाय जब,मासा तब नशिजाइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, गुखुरू बहुरि नशाइ ॥ २ ॥

अथ बादी बवासीरके लक्षण व दवा ।

दोहा—क्षण क्षण वह अपशब्दको, करत तुरी जो होइ ।
ये लक्षण सो जानिये, बवासीर है सोइ ॥ १ ॥
घिउ गाईको पावभरि, गोहूँ रोटी माहि ॥ २ ॥
दीजै चालिस रोज तक, बवासीर मिटि जाहि ॥

अथ कीड़ा पड़नेका मलहम ।

दोहा—लीजै चूना सीपको, सोतौ तोले चारि ।
मासे छा पुनि तूतिया, लीजै तामें डारि ॥ १ ॥

लीजै तेल छटांक भरि, तिलको कहौं बखानि ।
रार सफेदा दुहुँनको, तोला तोला जानि ॥ २ ॥
नींव सँभारु बकायनहि, और सरीफा जानि ।
पाती लीजै सबनकी, पुनि भँगराकी आनि ॥ ३ ॥
सोरठा–तिनको रंगनु कढ़ाय, तीनि तीनि तोले सवै ।
राखै तिनहि धराय,अब मलहमकी विधि कहौं ॥
दोहा–रार चून पुनि तैल घृत, कांसे थारी माहि ।
एक उपर शतबारलौं, जलसों धोवै ताहि ॥ १ ॥
अर्क सबै तब डारिकै, फिरिकै धोवै वाहि ।
डारै औषध फिरि सबै, जब सफेद दरशाहि ॥ २ ॥
कीट होइ जिस जखममें, डारै कीट निकारि ।
लावै मलहम जखमपर, दिनमें बेरा चारि ॥ ३ ॥
फेरि परत नहिं कीट हैं, जखम सूखि अरु जाइ ।
शालहोत्रमें देखिकै, केशव वर्णे आइ ॥ ४ ॥

अथ बहुतरोगहरण औषध ।

दोहा–पात धतूर मदारके, ग्यारह ग्यारह आनि ।
मिर्चै लीजै स्याह पुनि, सौ अरु सोंठि बखानि ॥ १ ॥
मासा एक अफीम पुनि, समुदखारको लाइ ।
दोऊ एक समान करि, पात सहित पिसवाइ ॥ २ ॥
गोली बाँधै तासुकी, झलबेरी परमान ।
दीजै साँझी बेर यक, गोली एक बिहान ॥ ३ ॥
दाना दैकै साँझको, गोली देउ खवाइ ।
गोली दैकै भोरही, देउ नहारी लाइ ॥ ४ ॥

सीना जाको बंद है, अरु मटकनि जो होइ ।
सर्दीको नाशत अहै, कफको डारै खोइ ॥ ५ ॥
सर्दीके महिना विषे, अति गुणज्ञ सो आहि ।
शालहोत्रमत देखिकै, श्रीधर वर्णो ताहि ॥ ६ ॥

अथ जिसकी कमर मटकती हो उसकी दवा ।

दोहा-नकछिकनीको लीजिये, षटमासे मँगवाइ ।
दुइ दुइ तोले लीजिये, हर्दी सोंठि मिलाइ ॥ १ ॥
तोला भरि पुनि मिर्च लै, सबको लेउ पिसाइ ।
मुर्गी अंडा एक लै, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
जानो यक मौताज यह, सातरोज लगु देइ ।
दीजै दोनों बखतमें, वाजी नीको लेइ ॥ ३ ॥
औषधि देकै वाजिको, घटिका चारि बिताइ ।
तब दानाको दीजिये, तुरी नीक हो जाइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा-हर्दी तोले तीनि भरि, गूगुल तोले दोइ ।
मांस एक खरगोसको, की सियारको होइ ॥ १ ॥
आधपाव घिउ माहिमो, थोरा ताहि पकाइ ।
सबै औषधी पीसिकै, तामें देउ मिलाइ ॥ २ ॥
लीजै बँगलापान पुनि, यकतालीस मँगाइ ।
औषधमाहिं मिलाइकै, यहको देउ खवाइ ॥ ३ ॥
कही एक मौताज यह, सो दीजै दिन सात ।
दाना दीजै नाहि तिहि, तुरी नीक ह्वै जात ॥ ४ ॥
पिछले दोनों पाँइ जो, तुरी घसीटत होइ ।
ताके भातर पाँवकी, रगै द्रगावै सोइ ॥ ५ ॥

अथ मलग्रहणीलक्षण और दवा।

दोहा–जो पियरो पानी गिरै, मुख अरु नासा माहिं।
मलग्रहणीलक्षण निरखि, यतन करौं हय चाहि॥

चौ०–मधु अरु दूध मिलायक दीजै।मलग्रहणी ताकी हरिलीजै॥

अथ शिथिलतारोग–देहमें काम न रहे।

दोहा–बीजा लेउ पलाशके, टंक एक मँगवाय।
बीज केवाँच समान लै, सैंधव टंक मिलाय॥ १॥
गोघृतके सँग दीजिये, जाय शिथिलता रोग।
औषध करै विचारिकै, भाषत कोविद लोग॥ २॥

अथ विषशोधनविधि।

दोहा–बिन शोधे विष औषधी, खान न दीजौ मीत।
अतिदुखदायक होति है, करत जीव भयभीत॥

सोरठा–सुमिलखार ले जानि, जहर शंखिया होत जो।
सुनौ सकल बुधवान, विषशोधनका जतन अब॥

चौ०–प्रथम शंखियाकी विधि जानौ।एक टका भरि सो परमानौ॥
फिरि अमलोनियाँको मँगवावै।चारि टका भरि सो तौलावै
दोनों इकमें खरिल करावै। एक पहर मौताज बतावै॥
पतरी पतरी टिकिया करै। घामें सुखै और विधि धरै॥
लीजै अजयादूध मँगाई। एकसेर पक्के तौलाई॥
इक माटीकी हाँड़ी लावै। दूध डारि तिहि अग्नि पकावै॥
टिकिया कपरा पोटरि बांधै।डोरा कासि हाँडीबिच साधै॥
दूधमें बूड़ी पोटरी राखो।डोलयंत्र या विधि कहि भाखो॥
जस जस दूध कमी ह्वै जावै।तस तस पोटरीको सकिलावै॥
दूधके बाहर जबै निकारी।कपराकी तह करु तब चारी॥

तामें पोटरी फेरि बँधावे। वाको ऐसो जतन करावै ॥
पाव एक रस छिरका लावै। तिहिमां डोलयंत्र पकवावै॥
चौथाई छिरका राहि जावै।तब उतारि टिकिया जल ध्वावै
करिकै साफ सुखैकै धरै। सुमिलखार या विधि अनुसरै॥

अथ काष्ठादिविषशोधन।

सोरठा–करियारी बछनाग, और सिंगिया हरदिया।
पुनि कुचिला निर्दाग, काष्ठादी विष जो सबै ॥

चौ०–प्रथम एक विष शोधन कीजै।ताको तौलि टका भरि लीजै॥
पानी पांचसेर मँगवावै। महिषाको गोबर लै आवै ॥
माटीकी हाँड़ीमें भरै। कंडा आँच याम त्रय करै ॥
जल जरि जाय और फिरि भरै।जहर धोयकै कतरा करै॥
चारि टका भरि लै चौराई। मूल सहित लीजो पिसवाई
सेरक पानीमें घुरवावै। कतरे जहर डारि पकवावै ॥
पहर सवा इक आँच करावै।फेरि उतारि ताहि धुलवावै॥
कपरामें पोटरी करवाई। अजयादूध डेढ़ स्यर लाई ॥
हाँड़ीमें भरि अग्नि पकावै। तिहिमा डोलयंत्र करवावै ॥
जस जस दूध घटै हँड़ियामें।तस पोटरी सकिलावै वामें॥
दूध जबै थोरा रहि जावै। पानीमा तब ताहि धुवावै ॥
घामें सुखै धरौ तब भाई। दवामाहिं याको डरवाई ॥
याही विधि सब विष शोधवाई।कुचिलै मति डारौ चौराई

अथ सर्वरोगोपर काढ़ा।

छंद हरिगीतिका–भृंगराजहि लै भलीविधि मांसपिंडहि आनि।
लेउ फल इंद्रायनीके औ पुरनवाँ मानि ॥

बेल लोधो लाख लैकै सैंधवै सब सानि ।
कूपजलमें औटि लीजै अष्टअंश प्रमानि ॥

दोहा-सिद्धिअर्थ काढ़ा कहो, बाजिनके सुखहेत ।
अंगरोग नाशै सकल, तुरँग बली बहु होत ॥

अन्य ।

छंद तोमर-लै मोथ महुआ पात । अरु नागकेसरि तात ॥
सम लोन सेंहुड़ा दूध । करि क्वाथ देउ असुग्ध ॥
सब मिटैं बाजी सोग । तहँ हैरं बाइस रोग ॥
यह मानि लीजो मित्त । अति होय चंचलचित्त ॥

अन्य ।

छप्पय-दारु हर्द अरु सहद लेउ सैंधव समान करि ।
सर्षप सरस सफेद खाँड़ सौंफ मिलाय धरि ॥
औंरा सम करि देउ लेउ इमि फूल फिरंगाहि ।
सम करि तुलसी बीज डारि औषधके संगहि ॥
कीजै क्वाथ कूपजल लै सो अंश तीसरो दीजिये ।
वात पित्त कफरोग जे सब अश्वके तनु छीजिये ॥

अन्य-छंद भुजंगप्रयात ।

सुँठी हर्र लैकै सुमोथा मिलावै। तहाँ फालसी मांस पिंडा रलावै ॥
सम्मली हरिद्रा मालती मिलावै। इकबारमें तीसरो अंश प्यावै ॥

सोरठा-सन्निपात मिटिजाय, नशै तीजरो वाजिको ।
बहु उपचार बनाय, भाष्यो ग्रंथन नकुलमत ॥

चौ०-महुरेठी औ केसरिनागा । लेउ भेलावँ पात रज भागा ॥
शंखाहूलि बहेरे लेहू । त्रिफला ताहियुक्त करि देहू ॥

क्वाथ वाजिको दीजै चारू। धाँस मिटावै सुधकर सारू ॥
दिन दिन सबल करै उत्साहा। जानि लेउ काढ़ा नरनाहा ॥

अथ सर्वरोगनाशन पिंड ।

छंद—कुटकी जेती लीजिये मद्धुरेठी पिपरी प्रमान ।
वच पीसिकै मोथा मिलावहु पंच अमृत ज्ञान ॥
पिंड याको देउ हयको रोग अंगन सब नसै ।
पुष्ट होय मुनीन्द्र भाषैं चारु चरणोंसों लसै ॥
सोरठा—दूरि होत सब रोग, जा वाजीको दीजिये ।
कहत सयाने लोग, शूल आदि मिटिजाँय सब ॥

अन्य ।

चौ०—केसरिफल श्रीकमलक आनौ। तारामखिगिरिकनिकाजानौ
लै सबको करि पिंड खवावो । वाजी पवन समान चलावो

अन्य ।

छंद चर्चरी—बच कपूर मँगाय सैंधव कीजिये यक ठाँव ।
सहद पीपरि गुर्च मेलो पिंड याको नाँव ॥
देउ प्रथम खवाय वाजी होय हलको अंग।
शालहोत्र विचारिये यह वरणिये शुभ संग ॥

अन्य ।

चौ०—मिर्च स्याह अरु लहसुन लेहू। केसरिनाग युक्त करि देहू॥
मास दुगुनमें ठीको करौ । पिंड बनाय अश्वमुख धरौ ॥
दोहा—यह खवाइ सब दुख हरौ; मारग चलै सचेत ।
शालहोत्र मत पिंड यह, भाषो ग्रंथ निकेत ॥

अन्य ।

छंद हूलना—पतालफिरंग सोवरू सँगाइये ।
पंकज केसरी आनि जँभीर रलाइये ॥
रक्तदोष मिटि जाय सु पिंड बताइये ।
होत तुरी आनंद सो ग्रंथन गाइये ॥

अन्य ।

छंद नराच—तमालपत्र सालिसो सो पुहकरो समानिको ।
तहाँ सो लोध चिरञ्चिरा औ तेंदुवा प्रमानिको ॥
करौ सुपिंड दूधमो हरौ सो वातरोगको ।
सो शालहोत्र देखिकै करौ जु वाजि भोगको ॥
दोहा—लेउ चिरैता कूटिकै, छिरका मध्य पचाय ।
पिंड खवावै वाजिको, शूल सकल मिटि जाय ॥

अन्य ।

ह० गी०—मूंगको रस औटि लीजै देउ मिर्च सिलाइकै ।
सहिंजना रस औटि लीजै देउ नासु बनायकै ॥

अथ सर्वरोग—नाशन ।

छप्पय—इंद्रायनि फल चारु कमलगट्टा सुलेउ युत ।
शिलाजीत दुइ निंबु नागकेसरि विशाल अति ॥
कमलके फल औ सहद लेउ बुधिमान टंक भरि ।
मझुरेठी तिहि युक्त जानि लीज समान करि ॥
तिहि लेउ सकल घृत अठगुनो शोधि अग्नि परिपक्व करि ।
पुनि देउ वाजी पुष्ट करिहै सबै व्याधि इमि जाय हरि ॥

अन्य।

दोहा—बाम अंग हय पासुरी, नीचे लहसुन होय।
दुःख देइ अति शूल करि, गोल कठोरनि सोय॥
सोरठा—हृदय व्याधि कृश होय, वाजि अग्निसों लोह युत।
तिनहिं मिटावै सोय, सो घृत दीजै जो कहो॥

अन्य छन्द भुजंगप्रयात।

बहेरे नयेके सोहै चारि आनै। कहो टंक लैकै कुसुंभै प्रमानै॥
तुचा दाडिमै कुमकुमै लै मिलावै। सबै एककै घी गुनै अष्ट लावै॥
करै दूरि आवश्यकै चोट नासै। बढ़ै पौरुषै औ हियेमें विलासै॥
हरै तापको चारु बेगै वढ़ावै। कहौं ग्रंथकी रीति सो प्रीति भावै॥

अथ पित्तशांतिकारक घृत।

छंद—बचहि करौ जो कूटि सो भेल लाइये।
अजयाघृत लै प्रमाणसों सब मिलाइये॥
अग्निमाहिं परिपक्क सो अश्व खवाइये।
पित्त शांति करिदेत सो ग्रंथन गाइये॥

अथ खजुलीनाशक घृत।

छंद—त्रै हरदयुत करि जातु गंधक मैनशिलयुत आनिये।
पुनि तिगुन ले नवनीत ताते यहै घृत्त बखानिये॥
परिपक्क याको करहु नीको तुरी देउ बनाइकै।
जाइ खजुली वाजितनुकी अंग अंग मलाइकै॥

अन्य। चौपाई।

सहद निंबु नखगुलको आनौ। घिउ परिपक्व अठगुणौ जानौ॥
तिनमें औषध चारि मिलावै। रोग मिटै हय पेलि खवावै॥

दोहा–जिहि प्रकार सब नकुल मत, घृतको कह्यो विधान ।
रोचक चारु तुरंग हित, वरणो सुकवि-निधान ॥

अथ बछेड़ा-आरोग्यकरण विधि ।

छंद–बिन ऐब बछेरा कियो चाहि। नित भूँजि सोहागा देइ ताहि॥
मासा तीनिक पानी मिलाय। सबरोग दूरि करि तुरँग खाय॥

अन्य । छंद ।

चारौ बँदके भीतर सुजान। दागै द्वै द्वै खत करि प्रमान ।
बिन ऐब बछेरा होत आसु । कीजे सुधारि यह रीति तासु ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत फुटकररोगवर्णन नामक
अष्टादश अध्याय ॥ १८ ॥

अथ षट्‌ऋतुके उपचारवर्णन ।

दोहा–बात पित्त कफते सुमति, उपजै तुरै अजार ।
वरणौं तासु विनाशहित, नासु छ ऋतु उपचार ॥

वसंतऋतु ।

चौ०–मीनै मेष वसंत बखानौं। मास चैत बैशाख सुठानौं ॥
नींबपात रस लेउ निकारी। मोथा सोंठि बूँकि तिहि डारी॥
पात दतूनि गर्भपै गेरै । नासु दिये रुज हनत घनेरै ॥

अन्य ।

चौ०–महुआ अरु इंद्रारुनि लावै । खाँड़ और परवर रस नावै॥

ग्रीष्मऋतु ।

चौ०–वृष औ मिथुन ग्रीषमै भाखो। मास ज्येष्ठ आषाढ सुराखो॥
ग्रीषम पिपरामूल मँगावै। ताको कपरछान करवावै ॥
थोरा जल मिलायकै दीजै। नासु दिये सब रोगै छीजै॥

वर्षाऋतु ।

चौ०-कर्क सिंह वर्षाऋतु जानौ । सावन भादौं मास बखानौं॥
नींबपात बैतरा मँगावै । दुकरा दुकरा भरि सम नावै॥
जलसों पीसि नासु दे भाई । पावसमें सब रोग बिहाई॥

अन्य ।

चौ०-खाँड़ सफेद सहज सम लीजै । पीपरकी जर तामें दीजै॥
ढाई ढाई टंक सुआनौ । पीसि नासु दीजै मतिमानौ ॥

शरदऋतु ।

चौ०-कन्या तुला शरदऋतु कहिये।आश्विन कातिकमास सुलहिये
इंद्रजवा अरु जवाखार बच । तामें मिलै धतूर नासु रच॥
सरदीऋतुमें हयको दीजै । नाशै रोग परम सुख लीजै ॥

हिमऋतु ।

चौ०-धन वृश्चीक शिशिर ऋतु बरनौ।अगहन पूषमास सो जानौ
पिपरामूरि बूकिकै छानै । तामें बकरीमूत मिलानै ॥
हिमऋतु नासु वाजिको दीजै।होय सुखी अतिही दुख छीजै

शिशिरऋतु ।

चौ०-मकर रु कुंभ शिशिर ऋतु कही।माघ फाल्गुन महिनासही॥
दाडिमरस कटुतेल मिलावै । अपामार्ग गोमूत्र मँगावै ॥
लै झालरि जर सहित विधानै।नासु देइ शिशिमें सुख मानै

अन्य ।

चौ०-लहसुन पिपरामूल हि लावै । मुंडी अहिकेसरि लै नावै ॥
सबको पीसि नासु हय दजिै । होय सुखी तनु रोगहि छीजै॥

अथ सितंगका नास ।

चौ०-मुंडी सिता तालदल लीजै।पीसि कूपजलसों तिहि दीजै ॥
दीन्हें नासु तुरै सुख मानै । प्रबल सितंग तुरत ही भानै॥

कफसे रोग हो उसका नास ।

चौ०-अँवरा आँविलबेत लै आवै । अजामूत्र गोमूत्र मँगावै ॥
लोन सबै समभाग मिलावै।जलसों पीसि नासु सुख पावै॥

अथ वातरोगका नास ।

चौ०-हर्रकि बकली फोरिक लीजै । पानीके सँग नासु करीजै॥
वातरोगको तुरत नशावै । शालहोत्र यह नासु बतावै ॥

अन्य ।

चौ०-अजामूत्र कटुतेल मिलावै । की गोमूत्र तैल सँग भावै ॥
वातरोग यह नासु बिनाशै।शालहोत्र मुनि सार प्रकाशै॥

अन्य ।

चौ०-अपामार्ग पानीसों पीसै । नासु दिये अतिही सुख दीसै ॥
शालहोत्र यह सार बतावै । नासु दिये वाजी सुख पावै॥

अन्य ।

चौ०-लै अहिफेन पीपरामूरै । बायबिडँग नागेश्वर चूरै ॥
लै समभाग सुजलसों पीसै। नासु दिये वाजी सुख दीसै॥

अन्य ।

चौ०-खुरासानि वच सोंठि मँगावै। पत्थरकी जर गोघृत नावै॥
नासु दिये हय वात विनाशै।अरु शिररोग सकल सो नाशै॥

अथ तलखीका नास ।

चौ०-तलखीको केसरि दै नाशै । रिससों रुजको अन्य प्रकाशै॥

अन्य।

चौ०–दुवो सोंठि सित सिरसौ लेई। मलिकै पानी पीसिक देई॥

अन्य।

चौ०–शंखाहूली हर्रा आनै। और शतावरि कुचिला ठानै॥
समकरि जलसे पीसि बनावै।नासु दिये वाजी सुख पावै॥

अथ सर्व नेत्ररोगों पर नास।

सोरठा–नेत्ररोग कछु होय, पिपरी पीसौ शीत जल।
दीजै नासु अनोय, नैन अरोगी होत हैं॥

अन्य।

चौ०–चारि भेद जो नास बतायो। ताको शालहोत्र दरशायो॥
सीठो कटु रूखो चिकनोई। नासु चतुर विधि गुदा गनोई
मीठो पित्त वात कटु दीजै। रूखो कफको शमन करीजै॥
उत्तम टंक बयालिस दीजै। मध्यम चौंतिस टंक गनीजै॥
अधम टंक छब्बिस परमाना। शालहोत्र यह रीति बखाना

दोहा–बावन दिन उत्तम कहै, छब्बिस मध्यम जान।
तेरह दिन पुनि अधम है, यहै नासु परमान॥

छंद भुजंगप्रयात।

तुचा दाडिमै कमलगट्टा प्रमानौ। तहां श्वेत लै दूब अंकूर आनौ॥
इन्हें पीसिकै शीत पानी मिलावै। भले नासु दै रक्तदोषै मिटावै॥

अन्य। छन्द भुजंगप्रयात।

बहेर औ लौंगै सो मूत्रै मिलावै।कफै नाशको नासु सो वाजि पावै॥
घृतै क्षीर सोंठी भलो सारु आनै।नशै वायु हयके निसैसो बखानै

अन्य ।

चौ०–गुर्च सोंठि मेथी सम आनौ। सरसों तगर सकल लै मानौ॥
सन्निपात वाजीको जाई । जो यहि नासै देउ बनाई ॥

अन्य ।

सोरठा–लाख शतावरि आन, औंरा हर्र इलायची ।
देउ नास परमान, सन्निपात नाशै सकल ॥

दोहा–नासु नकुलमत जो कहे, ते हयके सुख–मूल ।
समय अवस्था रोग बल, समुझि देउ अनुकूल ॥

कुरकुरीका नास ।

दोहा–अदरखको रस लीजिये, एक छटाँकै जान ।
आध पाव गोमूत्र मिलि, और दवा पहिचान ॥

चौ०–सैंधव नमक सोंठि पिसवावै । चारों रकमैं एक मिलावै ॥
नासु देउ अश्वाको जबहीं । मिटि है शूल कुरकुरी तबहीं॥

अन्य कुरकुरीका नास ।

चौ०–सेंउढ़ा दूध कपूर मिलाई । पैसा पैसा भरि तौलाई ॥
फूल पलाश सूख पिसवाई । एक छटाँक देउ मिलवाई ॥
नासु देउ रुज नीको लीजै।मिटि है शूल कुरकुरी छीजै॥

अन्य मत–नस्य वर्णन ।

दोहा–मिष्ट सचिक्कन रूक्ष कटु, नास चारि विधि होइ ।
वात पित्त कफ रक्तको, दोष नशावत सोइ ॥ १ ॥
मिष्ट रूक्ष है वातको, कवि श्रीधर यह आनि ।
कटु अरु रूक्ष बखानिये, कफको नाशक जानि ॥ २ ॥
वात पित्त कफ रक्तते, श्रम आलस जो होइ ।
कीतौ कास–श्वास जो, ताको डारै खोइ ॥ ३ ॥

पीपरि पिपरामूल अरु, बहुरि नींबरस जानि ।
गोपय सैंधव लोन पुनि, टंक टंक सब मानि ॥ ४ ॥
सोरठा-तीनि दिवस उठि प्रात, नासापुटमें दीजिये ।
औषध मासे सात, नाशै कासश्वासको ॥

दोहा-चैतमास खसकेर रस, जवाखारको लाइ ।
दोइ ओषधी और पुनि, तामें देउ मिलाइ ॥ १ ॥
त्रिफला शक्कर दूध वट, मिलै वैद्य जो देइ ।
नासापुटमें नासु यह, सर्व रोग हरि लेइ ॥ २ ॥
माघमास फागुन विषे, तेजपत्रको आनि ।
कमल गिलोइ मिलाइये, तीनि तीनि पल जानि ॥ ३ ॥
कूपवारि युत वाजिको, नास प्रात उठि देइ ।
शालहोत्रमें यह कह्यो, रोग सकल हरि लेइ ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा-मिर्च सोंठि भूनींब अरु, सम भागहि करि लेउ ।
कूपवारि गजपल विषे, पित्तनास-कहँ देउ ॥ १ ॥
छोटि कटैया तगर पुनि, सरसौं केवल श्वेत ।
कूपवारिमें सानिकै, नासु प्रात उठि देत ॥ २ ॥
आठ टका भरि ओषधी, तीनि दिवस-महँ देइ ।
सांची जानौ बात यह, वातरोग हरि लेइ ॥ ३ ॥

अन्य ।

दोहा-श्वेत दूब चन्दन सहित, लीजै मिश्री तोय ।
दीजै याको नासु जो, रक्तदोष नाहिं होय ॥

अन्य ।

दोहा—पीपरि सैंधव सोंठि अरु, खारीलोन समेत ।
दूरि होइहै श्लेषमा, नासापुटमें देत ॥

अन्य ।

सोरठा—पात सँभारू लाइ, नासु दीजिये वाजिको ।
तौ कनार मिटि जाइ, निकसि परत बलगम्म अहै ॥

अन्य ।

दोहा—मिर्च सोंठिको कूटिये, और कसौंजी लेइ ।
होवै श्लेष्मा जाहिको, और शीत नशि देइ ॥

अन्य ।

सोरठा—कंठरोग जब होइ, लटजीरा गोमूत्र लै ।
अजामूत्रमहँ सोइ, खरिल कीजिये पहर भरि ॥

दोहा—दीजै नासापुटविषे, रोग दूरि ह्वै जाइ ।
शालहोत्र मुनि यह कहो, या सम नाहिं उपाइ ॥

अन्य ।

दोहा—आँखि ढबैली वाजिकी, बनी रहति जो होइ ।
ताकी औषध कहत हौं, शालहोत्र मत सोइ ॥ १ ॥
कमलगटाको पीसिये, बासी नीर मिलाइ ।
दीजै नासापुट—विषे, आँखि साफ ह्वै जाइ ॥ २ ॥
नेत्र कण्ठ मुख भालमों, नासापुटमें जानि ।
एते ठौरन वाजिके, होत रोग जो आनि ॥ ३ ॥
औषध दीजै नास तब, शालहोत्र मत जोइ ।
वात पित्त कफ रक्तको, दोष देत है खोइ ॥ ४ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत सर्वरोगनाशक नास्यवर्णन
नामक एकोनविंश अध्याय ॥ १९ ॥

अथ रसादि (रक्त लेनेकी) विधि।

दोहा-सात रसादिक धातु हैं, तिनको करौं बखान ।
जो जानेते जानिये, अश्वरोग पहिचान ॥ १ ॥
हयको रुधिर विकारते, होत बहुत विधि रोग ।
ताके रुधिर निदानमो, कीन्हों प्रथम प्रयोग ॥ २ ॥
रुधिर विकार विचारिकै, करौ चिकित्सा चित्त ।
औरौ भाषौं तीनि विधि, पित्त वात कफ मित्त ॥ ३ ॥
छंद-आषाढ़ करौ कम वाजि श्रौन। ताको भेषज करु बाँधि भौन॥
सहद घोरि साबुनहि देहु। ह्वै है बलिष्ठ मत ग्रंथ येहु॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

जहाँ वाजिके अंग लोहू न होई। खवावै ककू रूक्ष संगै न सोई
तहाँ वातको कोप आनै तुरंतै। करै रोगको आनि देहै दुरंतै॥

अन्य मत फस्द खोलनेकी रगें जाननेकी विधि।

दोहा-बहुत रोग ऐसे अहैं, फस्द खुलाए जाँय।
ताके मैं लक्षण कहौं, भिन्न भिन्न बिलगाय ॥
चौ०-ग्रंथ पढ़ै अरु गुरुते सीखै। अपने नयनन खोलन देखै॥
सिरामोक्ष क्रम है बहु गूढ़ा। ताको नाहिं करिहै नर मूढ़ा॥
मुनिन कछुक ग्रंथमै लिखि राखा। तिहिअनुसार करत हौं भाखा
सकल शरीर रगनको जारा। हैं विशेष एकइस रुज हारा॥
जगह ठौरके नाम बखानौ। तामें फस्द खोलिबो जानौ॥
सकल चौपयाके रग होई। याही ठौर कहै सब कोई॥
अश्वाके तनु यकइस खोलै। और पशुनके कमकम बोलै॥

अथ जिह्वामें फस्द खोलनेके लक्षण ।

चौ०-दुइ रग दुऔ तरफ जिह्वातर। दशन सामुहे ताहि कहैं नर
इनकी फस्त जु बुधजन खोलै। हलक नरकसी मुखरुजडोलै

अथ नथुनोंकी फस्दके लक्षण ।

दोहा-नथुननके भीतर अहैं, दुऔ तरफ रग दोइ ।
नेत्र श्रवण मुखरुज हरै, फस्द खुलावै कोइ ॥

अन्य काननकी फस्द ।

दोहा-दूनों श्रवणनके तरे, दुइ रग अहैं सुजान ।
जौन गई ग्रीवा तरफ, ताको करौं बखान ॥

चौ०-करनखाजुली कचको गिरना। मगजशोथ हर फस्दै खुलना

अन्य मोढ़ोंकी फस्द ।

दोहा-दुइ रग दूनो ओर हैं, मोढ़न पर बुधिमान ।
जौन गई पीठी अलँग, ताके गुण पहिचान ॥

चौ०-इन फस्दनको खोलै भाई । चारि ठौरके रोग नशाई ॥
कटि अरु पीठीमें रुज जानौ। उठि बैठमें दुख पहिचानौ॥
हाथ पाँव जो खींचै लाई । ताकी फस्दै सही खुलाई ॥

अन्य जांघोंकी फस्द ।

दोहा-दुइ रग दूनों जंघमें, गई पेटकी ओर ।
इनके खोले जात है, सुनो रोगके ठौर ॥

चौ०-सिरी खफती अरु बेहोसा । शिर दै दै मारै बड़ रोसा॥
औरौ एक रोग मुड़हलना । यतने जाँइ फस्दके खुलना ॥

अथ छातीकी फस्द ।

दोहा-दुइ रग छातीमें अहैं, गई शीशकी ओर ।
पग छातीके रोगहर, फस्द खोलु यहि ठोर ॥

अथ चारों चरणोंकी फस्दें।

दोहा-चारों चरणन घूटना, ताके नीचे जानु।
भितरी तरफ बखानिये, ताके गुण पहिचानु॥
चौ०-यक तो सुस्ती सकल शरीरा। दूजे भरा चले मग धीरा॥
कौनौ अंगहि शोथ दिखावै। कोई रोग पैरमें आवै॥
जौन चरनमें रुज पहिचानौ। तौनेही लखि फस्द बखानौ॥

अन्य।

दोहा-चारौं पगके घूटना, ताके नीचे जानु।
बहिरी तरफ बखानिये, दूसरि विधि पहिचानु॥
चौ०-गरमी देखे जो हय तनमे। कोई रुज देखै जो पगमें॥
ताकी फस्द यहै खुलवाई। नीक होइ सब दुख मिटि जाई॥

अथ गुदाके नीचे फस्द।

दोहा-दुमके नीचे एक रग, गुदातरे पहिचान।
अंडकोश रुज हरणको, मानों काल समान॥
चौ०-फस्द खुलावो रुज पहिचानी। याके किये न होई हानी॥
एक रोग कौनौ जो होई। फस्द खुलावो ताक्षण सोई॥
दोहा-वाजी रग ऐसी अहैं, बाँधे जाहिर देइ।
कोइ कोइ बिन बाँधे लखै, जो पहिचानै कोइ॥
चौ०-जौनी रगै देखि नहिं पावै। तहँके बार तुरत मुँड़वावै॥
दोहा-रुधिर लेउ परमान भरि, पीछू बंदिस खोलि।
ता ऊपर पट जल भिजै, बाँधि देउ रग ठोलि॥
चौ०-जो शोणित नहिं बंद दिखावै। ताकी जतन और करवावै॥
कपरा फूँकि भस्म भरवाई। पीतौ कागज भस्म लगाई॥

बब्बुर गोंदै पीसि मँगावै। छतके ऊपर सो चपकावै ॥
की दंबुल अखवैन भरावै । अरु रूमीमस्तंगि लगावै ॥
शोणित बंद होइ जो करिये। मनमें चिंता कछू न धरिये॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत वाजीशिरामोक्षणवर्णन नामक विंश अध्याय ॥ २० ॥

अथ वर्षभरकी चिकित्सा ।

दोहा–तीनि फसल षट ऋतु अहैं, बारह महिना जानि ।
एक शालमें होत हैं, जानि लेउ सुखदानि ॥ १ ॥
तासु चिकित्सा कहत हौं, जानि लेउ मतिधीर ।
रोग निकट आवै नहीं, मोटा होइ शरीर ॥ २ ॥

अथ तीन समय (फस्ल) कथन ।

दोहा–औषध दीजै वाजिको, रोग मुनासिब होइ ।
होइ मुनासिब फस्लको, तब गुण हयको सोइ ॥ १ ॥
रोग सरद है वाजिको, गर्मीकेरि बहार ।
औषध दीजै गर्म त्यहि, पै यह करै विचार ॥ २ ॥
ताकी औषध माहिमें, अती गर्म जो होइ ।
औषध आधे भाग करि, डारि दीजिये सोइ ॥ ३ ॥

सोरठा–अहै गरमतर जौन, होइ मुनासिब रोगको ।
हयको दीजै तौन, रोग हरै सब वाजितनु ॥

दोहा–सो बहार बरसातिमो, रोग गरम जो होइ ।
औषध दीजै गर्म त्यहि, खुश्की लीन्हें सोइ ॥ १ ॥
जौही जाड़े माहिमें, रोग रक्तकर आहि ।
औषध दीजै सरदसो, नहीं वातकर ताहि ॥ २ ॥

अथ गर्मीकी फस्ल ।

दोहा—मौसिम गर्मी माहिमो, कोप पित्तको जानि ।
राज्य रक्तकर होत है, कफको संचय मानि ॥ १ ॥
वात भई है नाश अरु, यह लीजै जिय जोइ ।
होइ मुनासिब नाहिनै, औषध दीजै सोइ ॥ २ ॥
राखै हयको याहि विधि, गर्मीकी ऋतुमाहिं ।
बांधै ऐसे पेड़में, गर्मी लागै नाहिं ॥ ३ ॥
तीनि बखतमहँ दिनविषे, दीजै नीर पियाय ।
निशिमें बांधै बाजि जहँ, प्रथम भूमि छिरकाय ॥ ४ ॥
निशिभरि राखै ओसमहँ, रोज रोज यह जानि ।
धोवै दुसरे रोज तिहि, दिनके अंत बखानि ॥ ५ ॥
यव भूंजे पिसवाइकै, शक्कर नीर मिलाय ।
हयको भोजन दीजिये, हरी घास मँगवाय ॥ ६ ॥
होइ मिजाज मुनासिबै, लेउ विहार विचारि ।
औषध दीजै भूँखकी, कवि श्रीधर निरधारि ॥ ७ ॥
होइ मुनासिब फस्द जो, ताकी तारू-माहि ।
खोलि दीजिये फस्दको, कही तासु विधि आहि ॥ ८ ॥
कोऊ पंडित यह कहत, मधु माधवमो जानि ।
कोप होत है रक्तको, सफरा राज्य बखानि ॥ ९ ॥

अथ वर्षाकी फस्ल ।

दोहा—राज्य होत है वातको, अरु संजय जिय जानि ।
शांत रक्त अरु पित्त है, कफको कोप बखानि ॥

सोरठा–क्षुधा मंद परिजाइ, बाजी जाति कनारि है ।
औषध दीजै ताहि, जासों होइ कनार नहिं ॥

दोहा–देइ दवाई वाजिको, पीपरि सोंठि अँगाइ ।
दोनों हर्रै सहित पुनि, गऊमूत्र भिजवाइ ॥ १ ॥
कटुकतैलके साथमें, हयको देउ खवाइ ।
दीजै गरम मिजाजको, तिलको तेल मिलाइ ॥ २ ॥
औषध दीजै साँझको, रोग न आवै तीर ।
हरियरि घास खवाइये, देउ कुआँको नीर ॥ ३ ॥
बाँधै शीतल छाँहमें, वायु लगत जहँ होइ ।
देउ धुवां करवाइ तहँ, मच्छड़ भय नहिं सोइ ॥ ४ ॥
धोवै तिसरे रोज प्रति, वाजीको सुखदानि ।
दीजै वर्षानीर नहिं, सो बलगमकी खानि ॥ ५ ॥

अथ जाड़ेकी फस्ल कथन ।

दोहा–कोप होत है वातको, कफकी शांति बखानि ।
पित्त खून संचय अहै, कवि श्रीधर यह जानि ॥ १ ॥
बाँधै ऐसे ठौर–जहँ, लागै नहीं बयारि ।
दिनको बाँधै धूपमहँ, श्रीधर कहो विचारि ॥ २ ॥
भोजन दीजै वाजिको, हर्दी सोंठि पिलाइ ।
गुड़ या शक्कर साथमें, तौ मोटो ह्वै जाइ ॥ ३ ॥
मेहनति लीजै वाजिसों, जैसी इच्छा होइ ।
देउ मसाला भूँखको, वाजीको गुण सोइ ॥ ४ ॥

अथ ऋतुउपचारवर्णन ।

दोहा–अब वाजिनको कहत हौं, षटऋतुको उपचार ।
तामें भोजन विविधाविध, शालहोत्रको सार ॥ १ ॥

भिन्नभिन्न भोजन कहौं, ऋतु ऋतुको अतिधीर ।
जासों पौरुष अति बढ़ै, मोटो होइ शरीर ॥ २ ॥

अथ वसंतऋतुवर्णन ।

दोहा-धीउ वाजिको दीजिये, यवकी रोटी-माहि ।
आठ टकाभरि वजन घृत, शालहोत्र मत आहि॥

मसाला ।

दोहा-त्रिफला लीजै तीनि पल, लोन एक पल साथ।
हयको दीजै नित्यप्रति, यह भाष्यो मुनिनाथ॥

अन्यमत ।

दोहा-मीन मेष संक्रांति कहि, चैत्र और वैशाख ।
ऋतु वसंत सो जानिये, नकुलमते सो भाष ॥

छं०तो०-ऋतु है वसंत सुभाग । जहँ फूलियो वन बाम ॥
तहँ भँवर गुंज अनंत। जनु मैन बीज वयंत ॥
हय होत उर उत्साह। तहँ चाहिये नरनाह ॥
नितही फिरावत वाजि। पुनि चढ़ै ते नृप साजि ॥
तिहि निंबु देउ सलोन। सह तैल भाषत कोन ॥
कछु जानियो जब रोग। तब और औषध भोग ॥

दोहा-एकै ठौर न राखिये, होत वाजि आलस्य ।
मंद अग्नि तासों बढ़ै, भक्षण भक्षत सस्य ॥

अन्य दवा ।

छंद-यवकूट बराबरिही भुँजाइ। तिहि मोटा अरदावा पिसाय॥
दीजै वसंत सुखतुरै होत। अति मोटो तनु बल अधिक होत

अन्य ।

चौ०-चैत मास अरदावा दीजै । हरदी तैल लोन युत कीजै ॥

अन्य ।

चौ०-पानीके सँग सत्तू पावै । कबहूँ तुरँग न गरमी आवै ॥

अन्य ।

चौ०-ऋतुवसंत चैतै वैशाखा । सैंधव घृत अरु तेलक चाखा॥
घाम न खाय तो रहै अरोगी । फेरै अति आलस संयोगी॥

अथ ग्रीष्मऋतु ।

दोहा-ग्रीषम ऋतुहि बखानिये, जेठ अषाढ़ प्रमानि ।
वृष अरु मिथुन सुजानिये,बुधजन लीजै मानि ॥ १ ॥
ग्रीषमऋतुमें दीजिये, यवके सेतुआ लाइ ।
देउ मसाला तिर्फला, खांड़माहिं मिलवाइ ॥ २ ॥

छंद छप्पय-तप्त तरणि आकाश धरणि जलचर थला ।
विकल होत सब मृगा दुखित वनचरनला ॥
जरत नदी नद पीन सकल व्याकुल विहंगगन ।
चीरं भीज बहनीर धीर लवेत पटोर तन ॥
यहिविधि तप ग्रीषम मिटै गृही गुलाबसुगंध अतिं ।
तहँ चहिय तरुनि पंकज नयनि चंद्रवदनि इमि हंसगति

दवा ।

चौ०-ग्रीषमशीतल भोजन दीजै । औ हयको घृत पान करीजै॥
शिरामोक्ष हयके अँग करौ। सो घृत पिंड तासु मुख धरौ॥

दोहा-यहि प्रकार जो कीजिये, वाजीको उपचार ।
होय सबल अंगन बढ़ै, नकुलमते अनुसार ॥

अन्य।

चौ०-ग्रीषम जेठ अषाढ़ कहीजै। औ बचदे है शीतल कीजै॥
घृत अरु भात देय नितही नित। नाशै रोग होय तमु सुखहित

अथ वर्षाऋतुवर्णन।

दोहा-वर्षाऋतुमें जानिये, कर्क सिंह संक्राति।
सावन भादौं मास है, समुझि लेउ यहि भांति॥

कुण्डलिया-वर्षामें नहिं कीजिये, तुरँग सवारी रीत।
निर्बल याते होत है, जानि लेउ तुम मीत॥
जानि लेव तुम मीत, कूपजल पीवन दीजै।
लै सर्षपको तेल अंगमें मर्दन कीजै॥
कहै नकुल तहँ बाँधु वायु ना लागै भाई।
होय सबल सो पुष्ट सकल बाधा मिटि जाई॥

मोदक कथन।

चौ०-अंतर दै एक दिवस खवावै। लोन टका दो तौलि मँगावै॥
सूख रहै तनु औ मुख जानै। क्षीर पिआइ निदान बखानै

दोहा-यहि प्रकार वर्षासमय, सेवहु वाजि विनोद।
शालहोत्र मत समुझिकै, रहै न उरमें खेद॥

अन्य।

चौ०-साँठीके चावर गुण सेरै। खीर पकाय दूध सँग गेरै॥
गोघृत शक्कर देउ मिलाई। घोड़ेको नित प्रात खवाई॥
यहि विधि खीर खवावै भाई। ताजा है सब सुख उपजाई

अन्य।

दोहा-सावन भादौंमें चही, जो वर्षाऋतु जानि।
गोहूंको गजरा भलो, घीउ खांड़सों सानि॥

अन्यमत ।

दोहा–सावन भादौं मास दुइ, ऋतु वर्षाकी जानि ।
गोहूँ दरिया खीर करि, देउ खाँड़सों सानि ॥ १ ॥
दूध होइ जो तीस पल, तौ दरिया पल चारि ।
सात टका भरि खाँड़ पुनि, श्रीधर कहो विचारि ॥ २ ॥
यासों कम दीजै नहीं, शालहोत्र मत जानि ।
शत पल दरियाते अधिक, देत नहीं सुखदानि ॥ ३ ॥
दूध लीजिये सतगुणा, आधी शक्कर जान ।
खीर दीजिये अश्वको, कद अरु भूँख समान ॥ ४ ॥

अन्य ।

दोहा–खीर दीजिये मोठकी, यही प्रकार बनाय ।
फेरि मसाला दीजिये, खीर हजम ह्वै जाय ॥

खीर हजम होनेका मसाला ।

दोहा–हर्दी लीजै चारि पल, दुइ पल सज्जी आनि ।
हयको दीजै साँझको, दाना पाछे जानि ॥
चौ०–बीस टका भरि दरिया कीजै। यतना ताहि मसाला दीजै॥
कमज्यादा दरिया जो कीजै। तिहि मौताज मसाला दीजै॥

अथ शरद–ऋतु–वर्णन ।

दोहा--आश्विन कार्तिक मासमें, कन्या तुला प्रकास ।
शरदऋतुहि ताको कहैं, मानि लेउ विश्वास ॥
कुण्डलिया–आई जानौ शरदऋतु, कीजै यही विचार ।
दीजै नीको बाजिको, खीर खाँड़ आहार ॥

खीरखाँड़ आहार शरदमें भोजन दीजै।
दूध औटिकै शीत रातिको पान करीजै॥
और मधुर दे वाहि उदर करि सक सितलाई।
देउ सोंठ घृत पिंड रीति ऐसी चलि आई॥

अन्य।

दोहा—आश्विन कातिक शरद ऋतु, सोंठ मूँग अधिकात।
काचो दानो दीजिये, औ हरदी गुड़ प्रात॥

अन्य। चौपाई।

शरद ऋतू औ आश्विन कातिक। भातपकाय देइ रुज नाशक॥
चीनी दूध भात मलि दीजै। औ तड़ागजल पिया करीजै॥
उठि प्रभात अरदावा दीजै। सकल दुःख अश्वाको छीजै॥

अन्यमत।

दोहा—आश्विनकातिक शरदऋतु, जानि लेउ मनमाहिं।
लालि मिठाई दीजिये, सोंठ महेला माँहि॥ १॥
होइ मिठाई तीस पल, तौ हरदी पल चारि।
दीजै दुपहर मध्यमें, श्रीधर कहो विचारि॥ २॥
हर्दीकी विधि यह अहै, पयमें देउ भिजाइ।
भीजी राखै तीन दिन, छाहीमो सुखदाइ॥ ३॥
गुड़ मिलाइकै दीजिये, हर्दी हयको सीत।
शालहोत्र मुनिके मते, जानि लेउ यह रीत॥ ४॥

अथ हेमन्तऋतुवर्णन।

दोहा—ऋतु हेमंत बखानिये, अगहन पूसै मास।
वृश्चीकै धन होत हैं, नकुल मते विश्वास॥

छंदनाराच--जबै हेमंत आवई क्रिया करै यहै भली।
जहाँ न पवन लागई बँधाइये तुरी थली॥
घृतै कछू पिलाइये चलाइये सो मंद ही।
विचारि वाजि राखिये सो पाइये अंनद ही॥

अन्य ।

छंद–हिमऋतु जब आवै तेल पिआवै अष्ट टंक परमान मनौ॥
दिन यकइस दीजै पुनि गुनि लीजै खुद दिखवावै भाँति भनौ॥
दिन बीस प्रमानौ यह मत जानौ जौंके अंकुर आनि लहौं॥
वाजी अनुरागै वायु न लागै शालहोत्र यह मते कहौं॥

अन्य ।

छंद–दाना जौं दीजै यह गुणि लीजै अग्निमाहँ परिपक्क करौ॥
जब जौं नाहिं पावै चना खुलावै शुद्ध सकल सब भाँति करौ॥
जब चना न पावै माष मँगावै पीसि मिलावै तेलु तही॥
यहि भाँती पालौ बाजि बिशालौ शत्रुन घालौ जंगमही॥
दोहा–दाना वरणे जे सबै, तिनमें मोठ बिसेखि।
भाष्यो चेतन चंद यह, शालहोत्र मत देखि॥
छंद–सब भैषजमहँ कुरथी देहु। घृत तैल वाजिकहँ पंथ एहु॥
करु अग्निमाहँ परिपक्क सोय। जब जौं न होइ तब चना देय॥
दोहा–ताते जौं दीजै तुरी, अच्छी भांति पकाय।
होइ बली दूषणरहित, ऋतु हेमंत सुख पाय॥

अन्य ।

चौ०–अगहन पूसै हिमऋतु भाषौ। घोड़ेको छाहीमें राखौ॥
उरद पकाय देइ घृत नाई। कीतौ तिलका तेल मिलाई॥
चढ़ै थोर अतिही सुख पावै। रोग हरै सब शोक नशावै॥

अन्य ।

दोहा—मोठ महेला दीजिये, घीव बीस पल सानि ॥
कीतौ करुवा तैलको, आठ टका भरि आनि ॥ १ ॥
मोठ महेलामाहिमो, ताहि नहारी देइ ।
शालहोत्र मुनिके मते, यही रीति करि लेइ ॥ २ ॥

अथ शिशिरऋतु वर्णन ।

दोहा—शिशिर ऋतुहिमें जानिये,माघ फाल्गुन मास ।
मकर कुंभ संक्रांति है, चेतनचंद प्रकाश ॥
चौ०—माघ फाल्गुन शिशिर ऋतु कही। तेल मँगाइ देनेको चही॥
बसु पल यकइस दिन मुख नावै । हरियर जौ की चना खवावै॥
की हरिअरि मसुरी मँगवावै । घृत अरु तेल मिठाई पावै ॥
लहसुन मेथी निमक सु दीजै । होइ पुष्ट तनु रोगै छीजै ॥
दोहा—माघ फाल्गुन शिशिर ऋतु, घीउ महेला सान ॥
मिर्च साथ सो दीजिये, होइ महा बलवान ॥ १ ॥
शिशिर माघ फाल्गुन कहो, दाना दीजै मोठ ॥
गुड़के साथ खवाइये, मिर्च पीपरी सोंठ ॥ २ ॥

अथ बारहों महीनोंके रातिब, सावन भादोंका वर्णन ।

दोहा—खरे चनाके दिउल करि, तिनको लेउ पिसाइ ॥
तामें नीर मिलाइकै, लीजै खूब पकाइ ॥
सोरठा—अठगुन नीर मिलाइ, ताहि पकावै पहर भरि ।
जब गाढ़ा ह्वै जाइ, लीजै ताहि उतारि तब ॥
दोहा—धरि राखै सो राति भरि, अठगुण दूध मिलाइ ।
ताको मीसै हाथसों, नाहिं गुलथी रहि जाइ ॥

सोरठा—ताहि खवावै आनि, साठ रोज नित बाजिको ।
की चालिस दिन जानि, कीतौ दीजै वीसदिन ॥
दोहा—बेसन आधी खाँड़ लै, की तौ गुड़हि मिलाइ ।
दीजै दुपहरके बखत, प्रथमहि नीर पिआइ ॥

अन्य विधि ।

दोहा—गोहूँ दरिया सेर भरि, नीरमाहिं पकवाइ ।
अठगुण माठा डारिकै, लीजै फेरि पकाइ ॥ १ ॥
सोंचर लीजै दोइ पल, तामें देउ मिलाइ ।
दोइ पहर दिनके चढ़े, हयको देइ खवाइ ॥ २ ॥
दीजै चालिस रोज तक, बीस रोजकी मानि ।
करत मिठाईते अधिक, तौन फायदा जानि ॥ ३ ॥

अथ आश्विन—कार्तिक—वर्णन ।

दोहा—मोठपत्र फलिका सहित, डारै ताहि खुँदाइ ।
अश्व अगारी माहिं सो, दीजै ताहि धराइ ॥ १ ॥
थोरी थोरी रोजप्रति, ताहि बढ़ावत जाइ ।
मन्द मन्द करि घासको, दीजै सबै छुड़ाइ ॥ २ ॥
तेल कटुक लै आठ पल, दुइ पल लोन मिलाइ ।
कद अरु बैस विचारिकै, दीजै रोज खवाइ ॥ ३ ॥

अथ अगहन, पौष, माघ, फाल्गुन—भोजनविधि ।

दोहा—जानहु शिशिर हेमन्तमें, बहुविधि भोजन आहि ।
जासों मोटा होइ हय, औ पौरुष सरसाहि ॥

अथ चैत-वैशाख—भोजन—विधि ।

दोहा—मधु माधव महिना विषे, दही तीनि पल लाइ ।
बाँधै कपरा माहिमों, जब पानी चुइ जाइ ॥ १ ॥

सहद मिलावै चारि पल, हयको देउ खवाइ ।
की सेतुआको दीजिये, खाँड़ सु तासु मिलाइ ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा–खबहा कुम्हड़ा छोलिकै, घीमें ताहि भुँजाइ ।
गुड़में ताको पागिकै, हयको देउ खवाइ ॥ १ ॥
कुम्हड़ा दीजै तीस दिन, शालहोत्र मत जानि ।
सेतुवा दीजै जेठमों, यहौ मतौ उर आनि ॥ २ ॥

अथ मसाला ।

दोहा--चारि टका भरि तिर्फला, तासम खांड़ मिलाइ ।
दाना देकै साँझको, हयको देउ खवाइ ॥

अथ ज्येष्ठ–अषाढ़–भोजनविधि ।

दोहा--खरी लीजिये बीस पल, सो अरसीकी होइ ।
दूना दूध मिलाइकै, आनि भिजावै सोइ ॥ १ ॥
मोठ सहेला साथमें, हयको देउ खवाइ ।
दश दिन दीजै याहि विधि, दशपल और बढ़ाइ ॥ २ ॥
दोइ मास तक दीजिये, खरी दूध मिलवाइ ।
शालहोत्र मुनि यों कहैं, तुरी नीक ह्वै जाइ ॥ ३ ॥

मसाला ।

दोहा–कचरी लीजै दोइ पल, पल भरि सोंचर आनि ।
तीनि टकाभरि तिरफला, यवके आटा सानि ॥ १ ॥
डेढ़पहर दिनके चढ़े, हयको देउ खवाइ ।
दोइ घरी कैजा करै, पाछे नीर पिआइ ॥ २ ॥

अथ बारहो मासके उपचार–चैत्र–वैशाखवर्णन ।

दोहा--औंरा हर्र बहेर पुनि, सैंधव लोन मँगाइ ।
एक एक पल लायकै, चारों लेउ पिसाइ ॥ १ ॥
कोबरको रसु डारिकै, ताहि खवावै आनि ।
नाशै आलस बल बढ़ै, मधु माधवमा सानि ॥ २ ॥
बाँधे राखै बाहिरै, शीतल छाहीं–माहि ।
औषध दीजै प्रात ही, मंदअग्नि मिटि जाहि ॥ ३ ॥
सोरठा–धूप होइ जब आनि, भीतर बाँधै थानपर ।
शालहोत्र मतजानि, कवि श्रीधर वर्णन कियो ॥

अथ ज्येष्ठ–आषाढ़–वर्णन ।

दोहा–आठ टका भरि तैल घृत, दोऊ लेउ समान ।
तामें डारौ अर्कको, दूध टका परमान ॥ १ ॥
एक एक दिन बीच दे, ताहि खवावत जाहि ।
हरी दूब अरु दीजिये, मास अषाढ़हि माहि ॥ २ ॥

अथ सावनवर्णन ।

दोहा–लहसुन सोंठि जवाइनी, आठ आठ पल आनि ।
दोइ सेर गुड़माहिमों, इनको लीजै सानि ॥ १ ॥
दीजै पिंडा बाँधिकै, तीनि रोज लग नित्त ।
सावन महिना माहिमो, हरी घास दे मित्त ॥ २ ॥

अथ भादौवर्णन ।

दोहा--दूध विषे जल डारिकै, चौथे अंश प्रमानि ॥
प्यावै भादौं मासभरि, रोग नाश यह जानि ॥

अथ आश्विनवर्णन ।

दोहा–दूध लीजिये साठि पल, करै अधाउट ताहि ।
ताहि पिआवै वाजिको, आश्विन भरि निर्बाहि ॥ १ ॥
लेउ बकैना फलनको, पुनि रनिके फल लाइ ।
दोनौं लीजै पाँच पल, रोज खवावत जाइ ॥ २ ॥
या विधि करै कुवाँर भरि, कवि श्रीधर मतिधीर ।
आलस नाशै बल बढ़ै, मोटा होइ शरीर ॥ ३ ॥

अथ कार्तिकवर्णन ।

दोहा–मोठपत्र फलिका सहित, हयको दीजै नित्त ।
नीर पिआवै तालको, थोरा फेरै मित्त ॥ १ ॥
देउ मसाला वाजिको, कहो जु आश्विन माहि ।
मोटा होत शरीर है, अरु आलस नशि जाहि ॥ २ ॥

अथ अगहन–पौष–वर्णन ।

दोहा–मार्गशीर्ष अरु पौषमें, बाँधै घामें माहि ।
मोठ चना अरु उर्दको, देउ महेला ताहि ॥ १ ॥
देउ मसाला भूँखको, फेरत नितप्रति जाइ ।
तौ बल बाढ़ै वाजिको, आलस तासु नशाइ ॥ २ ॥

अथ माघ–फाल्गुन–वर्णन ।

दोहा–माघफाल्गुन मासमें, मोठ महेला माहि ।
तैल मिलावै पांच पल, रोज खवावत जाहि ॥

अथ तीनोंकाल–वर्णन ।

दोहा–त्रिफला दीजै खांडसों, ग्रीषम और वसंत ।
रोग हरै तनु बल बढ़ै, जानि लेउ बुधिमंत ॥

अन्य ।

चौ०-सहद पंदरह टंक मँगावै । ग्यारह टंक कूट लै आवै ॥
बच्च दश टंक लेउ मँगवाई । पीसि छानि मैदा करवाई ॥
यवके आटा साथ खवावै । अश्वाके तनु सुख उपजावै ॥

अथ वर्षाकाल ।

दोहा-हरदी वर्षा शरदमें, घोड़े दीजै नित्त ।
नित्त नेवाला दीजिये, सुखी रहै तनु चित्त ॥
चौ०-वर्षाजलसो तुरँग न भीजै । धुवाँ बयारि धूरि धोईजै ॥
हरियरि दूब कूपजल पीजै। दाना नमक मिलै तिहि दीजै ॥

अन्य ।

चौ०-घुड़बच पंद्रह टंक मँगावै । लोनके पानी साथ पिसावै ॥
आटामें पिंडा करि दीजै । बात पित्त कफ किर्म हरीजै ॥

अन्य ।

चौ०-चूना और कपूर मँगावै । टका टका भरि दोनौं लावै ॥
ऊँबरिके पानीमें दीजै । सात रोजमें किर्मि हरीजै ॥

शीतकाल ।

दोहा-त्रिकुटा दीजै गुड़ सहित, हेम शिशिर ऋतु माह ।
शीतकाल व्यापै नहीं, कहत कविनके नाह ॥
चौ०-लहसुन मिर्चा अरुण मँगावै। टका टका भरि नित्त खवावै
दाना खाय होत तब दीजै । ताके पाछे कैजा कीजै ॥

अथ आह्निकवर्णन ।

दोहा-राति रहै घरि चारि जब, देउ सईस जगाइ ।
होइ सईस नपाक जो, देउ ताहि अन्हवाइ ॥

चौ०–फेरि सईस पास हय आवै। लीदि उठावै थान बनावै॥
फिरि दानाको देइ खवाई। मूठिक दीजै घास हलाई॥
दोहा–घास खाइ दुइ चारि मुँह, कैजा देइ कराइ।
करै खरहरा चारि घरि, सो हयको सुखदाइ॥
सोरठा–यक उरमाल भिजाइ, पोंछै हयकी आंखिमहँ।
अंड लेउ पुछवाइ, पाछे दोनौं कुक्षि फिरि॥
दोहा–भयो चहै असवार जो, हयको लेउ कसाइ।
दोइ घरीलौं फेरिकै, फिरि टहलावै धाइ॥ १॥
फेरि खरहरा कीजिये, दीजै घास हलाइ।
खाइ रहै सुखसों तुरी, शालहोत्र मत आइ॥ २॥
डेढ़पहर दिनके चढ़े, देउ मसाला ताहि।
दोइ घरी कैजा करै, फिरि जल दीजै वाहि॥ ३॥
सोरठा–पावत रातिब होइ, जलके पाछे दीजिये।
नाहिन दीजै सोइ, पावक दाना होइ सो॥ १॥
थोड़ी घास खवाइ, दोइ घरी कैजा करै।
दीजै घास हलाइ, खात रहै सुखपूरबक॥ २॥
दोहा–दाना दैकै सांझको, थोरी घास खवाइ।
फेरि मलै घरि चारि लौं, कैजाको करवाइ॥
सोरठा–गर्मीकी ऋतु माहि, पहर एक दिनके रहे।
फिरि जल दीजै ताहि, शालहोत्र मुनि यों कहैं॥
दोहा–एक बखत जल दीजिये, दोइ पहर दिन माहि।
जाड़ेके महिना विषे, रहै बढ़ावत ताहि॥
सोरठा–मलै वाजिको आनि, पहर एक दिन जो चढ़ै।
चारि घरीलौं जानि, फेरि वढ़ावै वाजिको॥

दोहा-फिरि दानाको दीजिये, बखत साँझको पाइ ।
रहै बढ़ाये ताहिको, कैजा देउ कराइ ॥ १ ॥
भयो चढ़े असवार जो, गर्मीऋतुके माहि ।
फेरै ठंढे बखतमें, शालहोत्र मत आहि ॥ २ ॥
सोरठा-जाड़ेकी ऋतु माँहि, चारि घरी दिनके रहे ।
तब सो फेरै ताहि, साँझलगे यह जानिये ॥
दोहा-नहीं होइ असवार जो, सब महिननमों जानि ।
बागडोरि पर खोछिकै, देखै वाजी आनि ॥
सोरठा-सब महिननमो जानि, दोइ घरी दिनके रहे ।
देखै वाजी आनि, बागडोरि पर खोलिकै ॥ १ ॥
दाना दीजै नाइ, होइ अनमनो वाजि जो ।
जासों कसरि नशाइ, देउ मसाला भूँखको ॥ २ ॥
दोहा-सब विधि वाजी सुख लहै, ताकी या विधि आहि ।
देउ मसाला भूँखको, गयो पहर निशि माहि ॥ १ ॥
देइ मसाला नितप्रति, जाड़ेकी ऋतु जानि ।
एक रोजको बीच दै, गर्मीकी ऋतु मानि ॥ २ ॥
घास अगारी माहिमें, दीजै ताको डारि ।
खाइ चहै तब घासको, सो जाई रुज हारि ॥ ३ ॥

अथ दानावर्णन ।

दोहा-तासों जौं जैसे बनै, दीजै सब ऋतुमाह ।
सूखा कै गोला भुँजै, होत वाजि चितचाह ॥
चौ०-जाको वाजि खाय जौं सदा । विन अहार मासै रह लदा ॥
शूल न होइ खाँस नहिं आवै । मलवेकार रक्त हरि जावै ॥

सोरठा-मिलै न जो जिहि ठांव, चना देय तत्काल ही।
जो न चनाको नाँउ, दीजै मोठ समेत महि ॥

अन्य।

सोरठा-मूँग देइ अभिराम, मोठ मिलै ना जाहिको।
होइ सकल बलधाम, तैल सहित दीजै तुरी॥१॥
वाजी दाना हेत, और अन्न दीजै नहीं।
भाष्यो ग्रंथ निकेत, दिये दोष बाढ़ै सदा॥ २ ॥

अन्य मत।

दोहा-उत्तम दाना मोठको, मध्यम चना बखानि।
साधारण यव जानिये, कवि श्रीधर सुखदानि ॥१॥
मोठ महेला दीजिये, जाड़ेकी ऋतुमाहि।
जौ अरु चना भुँजाइकै, करि अरदावा ताहि ॥२॥

सोरठा-गर्मीकी ऋतुमाँहि, अरदावाको दीजिये।
चना दराय भिजाइ, सो दीजै वरषातमों॥

सूखे चनाके देनेकी विधि।

सोरठा-लीजै चना मँगाइ, सटर कंकरी बीनिकै।
हयको देउ खवाइ, या विधि दीजै सालभरि॥

अथ देशविभागसे दानाविधि।

दोहा-जौको दाना दीजिये, सिंध नदीके पार।
महिला यमुना पारमें, कीन्हों यह निरधार ॥ १ ॥
शाह जहानाबादके, चारौं तरफ बखानि।
मोठ महेला दीजिये, कवि श्रीधर सुखदानि॥ २ ॥

मध्यदेश पूरब लगे, वाजि मिजाजहि जानि ।
माफिक जौन मिजाजके, दाना दीजै आनि ॥ ३ ॥
सोरठा–पित्तप्रकृति जो होइ, यवको दाना दीजिये ।
वातप्रकृति हय सोइ, देउ महेला मोठको ॥
दोहा–कफको होय मिजाज ज्यहि, चना देउ तिंह आनि
रक्त मिजाजहि माहिमें, अरदावाको जानि ॥ १ ॥
टका तीस परमानसों, कम ज्यादा नहिं देइ ।
टका तीनिसैसे अधिक, दाना कबहुँ न लेइ ॥ २ ॥
या विधि दाना दीजिये, कद अरु भूँख विचारि ।
जासों बाजी सुख लहै, सो लीजै निरधारि ॥ ३ ॥
शारँगधर अरु नकुलमत, शालहोत्रको पंथ ।
सो विचारि अनुसार मत, भाषा कीन्हों ग्रंथ ॥ ४ ॥

अथ चना देनेकी विधि ।

दोहा–चना पत्र फलिका सहित, बिरवा लेउ मँगाइ ।
तिनको जलमें धोइकै, दीजै धूप धराइ ॥ १ ॥
जबै जायँ ऐलाइ वै, लीजै तबै खँदाय ।
आठ टका भरि तेलको, जलमो लेउ मिलाय ॥ २ ॥
लीजै सोंचर लोनको, चारि टका भरि जानि ।
ताहि मिलावै तैलमें, शालहोत्र मत मानि ॥ ३ ॥
तामें बिरवा सौदिकै, हयको देउ धराइ ।
खात रहै सो राति दिन, दाना देउ छँड़ाइ ॥ ४ ॥
मंद मंद करि घासको, हयको देउ छँड़ाइ ।
सौंदे बिरवा खाइ नहिं, ताकी यह विधि आइ ॥ ५ ॥

सोरठा-जब बिरवा ऐलाइ, हयको दीजै काटिकै ।
तैल लोनको लाइ, दीजै बेसन सानिकै ॥ ६ ॥
दोहा-खुइदि माहिं जस गुण अहै, तस याको दरशाइ ।
दीजै चालिस रोज लौं, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥

अथ खुइदि देनेकी विधि ।

सोरठा-खुइदि हरी जब होइ, गांठि परन अरु लागई ।
हयको दीजै सोइ, अब देनेकी विधि कहौं ॥
दोहा-बाँधै ऐसे थान हरि, जहाँ न लागै बाइ ।
और अँधेरा कीजिये, लघु दरवाज रखाइ ॥ १ ॥
दीजै चालिस रोज नित, हरी खुइदिको आनि ।
की तौ दीजै तीसदिन, श्रीधर कहो बखानि ॥ २ ॥

अथ खुइदिके बाद यह मसाला दे ।

दोहा-लालि मिठाई बीस पल, यतनी अदरख जानि ।
लहसुन लीजै ताहि सम, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
ताके हिस्सा तीन करि, प्रातहि एक खवाय ।
चारि घरी कैजा करै, जानि लेउ मनलाय ॥ २ ॥
डेढ़ पहर दिनके रहे, दूसर हिस्सा देइ ।
एक घरी कैजा करै, बाजी रुज हरि लेई ॥ ३ ॥
साझ समयमें दीजिये, तीसर हिस्सा ताहि ।
चारि घरी कैजा करै, जानि लेउ मन माहि ॥ ४ ॥
हल्दी लीजै चारि पल, दुइ पल सज्जी लाइ ।
पहर एक रजनी गये, हयको देउ खवाइ ॥ ५ ॥
याहि विधि दीजै खुइदिको, शालहोत्र मतजानि ।
औरौ भोजन विधि कहौं, सो अब लीजै मानि ॥ ६ ॥

अथ खिचड़ी देनेकी विधि ।

दोहा-डेढ़ पाव चावर सहित, दालि अढ़ाई पाउ ।
दालि होइ सो मूँगकी, दुइ पल अदरख लाउ ॥ १ ॥
धोवै ताको नीरमें, फिरि भूँजै घी माहि ।
ताहि मींजिये हाथसों, एकमाहिं मिलि जाहि ॥ २ ॥
हल्दी लीजै चारि पल, दुइ पल सज्जी लाइ ।
खिचरी माहि मिलाइकै, पिंडा लेउ बनाइ ॥ ३ ॥
बासर बीते पहर दुइ, हयको देउ खवाइ ।
दीजै चालिस रोज लौं, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥ ४ ॥

अथ मोठकी खीर ।

छंद-पकवाय महेला मोठ क्यार । लीजौ उतारि तब दूध डार॥
मीठा मिलाय तब आँच राखि । लखि पको खूब धरु भूमि भाषि॥
दाना बदले याही खवाइ । जो थोर होय नहिं जल मिलाइ ॥
नहिं वजन तासु कीन्हों प्रमान । मौका जितनो तित करु विधान

अथ वछेड़ेकी तैयारीकी विधि । छंद पद्धरी ।

अतिसेर दूध औटै चढ़ाय । गोहूँ दरिया यकसेर नाय ॥
जब पकै खाँड़ यकसेर घेलि । पानी पिआय हय बदन मेलि॥
दरि मिर्च चारि तोले सुजान । यक पाव मेलु तामें पिसान ॥
याको खवाय तब देइ नीर। दीजै यहि विधि नाहिं भलो खीर॥

अन्य । छंद पद्धरी ।

हर्दी हांड़ीमें धरु कुटाय । तिहिको प्रभात लै आधपाय ॥
पयमें भिगोय वसु याम राषि । यहि खाय नहारी तबहिं भाषि॥
यक पाव करै कम कम बढ़ाय । दिन चालिसलौं यह तुरँग खाय॥
अति करत आशु ही देह पुष्ट । जो होय बुरो लखि परत सुष्ट ॥

अन्य। छंद पद्धरी।

यक सेर चना बेसन भुँजाय। तिहि सानि चारि रोटी पकाय ॥
यक सेर दूध अरु खांड़ लाय। दै सानि दिवस चालिस दिढ़ाय॥
पानी पिआय फिरि देउ याहि। अति निबल अश्व सो सबल ताहि

अन्य। छंद पद्धरी।

लखि हरितबालि जौंकी मँगाय। जित अश्व खाय सो दे खवाय॥
मुख रुकै तबहिं गलियाइ देय। यक पहर बाद गुड़ सेर लेय ॥
दै कबहुँ पाव अदरख मिलाय। यक पाव कबहुँ लहसुन खवाय॥
यहि रीति करै तबलौं सुजान। जबलौं रहि हरियर जौ प्रमान॥
जौ भूँजि चहै दीजै सुजान। करि आध सेर घीसें मिलान ॥
चालीस रोज दीजै बनाय। दाना तबलौं नहिं तिहि खवाय ॥
राखै हय जहँ अति ही अँधेर। बारै चिराग निशिहू सबेर ॥
जो करि पेशाब अरु लीदि लेइ। हयके तनमें सो लेपि देइ ॥
हत्थी खरहर कुछ नहिं मिलाहि। दिन चालिसलौं याही निवाहि॥
जब दिवस पूर खोलै तुरंग। तब देखै तैयारीक ढंग ॥

अथ शिशु तैयारीकी चाशनी।

दोहा-जौं पिसानकी रोटिको, अति महीन करवाय।
सर्षपतैलहि सानिकै, शिशुको देइ खवाय ॥

अन्य।

चौ०-अजवायनि अजमोद मँगावै। खुरासानि अजवायनि लावै॥
लहसुन साँभरि सम करि लीजै। यव पिसानमें गोला कीजै॥
साँझ सकारे गोली दीजै। शिशुको रोग सकल हरि लीजै॥

अन्य ।

सोरठा-शिशु तुरंगको देय, हालिम टंकनखार लै ।
अतिमोटो सो होय, ऊपर दूध पियाइय ॥

अन्य ।

चौ०-कनिक माँड़िकै घोरै पानी । झीने कपरा लीजै छानी ॥
ताहि औटिकै लाटी कीजै । प्रातकाल घोड़े शिशु दीजै ॥

अन्य ।

सोरठा-हरदी गोपय संग, वाजी बालक दीजिये ।
गात बढ़ै सब अंग, वर्ष एकलगु जो करौ ॥

अन्य ।

चौ०-अजवाइनि दूनौ मँगवावै । हरदी हरैं जंगी लावै ॥
साँभरि मिलै सुचूरण करै । सकल अजीरण शिशुको हरै ॥

अन्य ।

चौ०-हालिम हरदी सज्जी लेहू । मिर्च भरंगी मेथी देहू ॥
पोस्ता दाना सरसौं राई । कंचनरिपुकी खील कराई ॥
कुंड कुंड भरि यहि सब लेहू । पल अफीम तिहिमाहीं देहू ॥
चूरण करि सब एकम लीजै । टंक टंक नित प्रातै दीजै ॥
वायु अजीरण खातै हरै । भूँख चौगुनी सैंधव करै ॥

अन्य ।

चौ०-राई साँभरि भाँग मँगावै । अजवाइनि कालेश्वर लावै ॥
गऊमूत्रसों भिजै सुखावै । दुइ टंकै परभात खवावै ॥
भूँख चौगुनी लागै ताही । बात रोगको दूरि कराही ॥

अन्य ।

चौ०-सुरभी दूध सेर दश लीजै । दुइ टंकै हालिम तिहि दीजै ॥
खीर करौ गुड़ सैंधव खाता । अश्वा बहुत पुष्ट ह्वै जाता ॥

अथ दुर्बल घोड़ेकी दवा।

दोहा-आधपाव चँदसुर मिलै, दूध सेर भरि माहि।
औटि तुरँगको दीजिये, मांस बढ़ै तनुचाहि॥ १॥
कृशतनु अबल तुरंगको, पावसमें घृत देइ।
अनलकोप ताको करै, रोग हरै सुख होइ॥ २॥

अथ तैयारीकी विधि।

चौ०-चावल चौदह पाव मँगावै। सेर पाँच गोदूधहि लावै॥
डेढ़पाव शक्कर बुध लीजै। भात पकाय एक करि दीजै॥
यहि विधि यकइस रोज खवावै।दुर्बल बहु तनु मांस बढ़ावै॥

अन्य।

चौ०-सेर पाँच गोदूध औटिकै। निशिमें देय दृढ़ै तनु अतिकै॥

अन्य।

चौ०-पकवै मोथी तिलके तेलै। देय तुरँग दुइ मास महेलै॥
असवारी नहिं तापर करै। अतिहि मोट ह्वै बलको धरै॥

अन्य।

चौ०-अरदावा तिल तेल मिलावै।यकइस दिन लघु तुरै खवावै॥
की अरदावामें घृत दीजै।बाँधि मास भरि बहु सुख लीजै॥

अन्य।

चौ०-कारे उरद कि मसुरी मेलै। मेथी चुरै मेलि तिल तेलै॥
यही महेला अश्व खवावै। मांस बढ़ै सब रोग नशावै॥

अन्य।

चौ०-मास एक यव खुइदि खवावै। चना हरितकी मसुरी पावै॥
अतिहि मोट हय बलको धारै।शालहोत्र मत यहै विचारै॥

अन्य ।

चौ०–यवकी दरिया खीर खवावै । याहूसों बल बहुत बढ़ावै ॥

अन्य ।

चौ०–बच्चहि कच्चा क्षीर पियावै । सैंधव मेलै बहु सुख पावै ॥
युवा अश्वको औटि खवावै। अति बल रोस दिनौदिन आवै

अथ जौंकी दरिया देनेकी विधि ।

दोहा–यवकी बाली सेर दश, पक्की तौल मँगाइ ।
तिनको सींकुर झुरसिकै, लीजै फेरि कुटाइ ॥ १ ॥
लाल मिठाई सेरु भरि, तामें देउ मिलाइ ।
पै भूसा नहिं काढ़िये, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
याको दीजै साँझको, दाना दीजै नाहि ।
बाजी मोटा होइ बहु, औ पौरुष सरसाहि ॥ ३ ॥

अथ हल्दी देनेकी विधि ।

दोहा–हल्दी लीजै आठ पल, ताको लेउ पिसाइ ।
दूध अध [illegible] बीस पल, तामें देउ भिजाइ ॥ १ ॥
चारि घरी भीजत रहै, ताकी यह विधि आइ ।
मोठ महला साथमो, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥
दीजै चालिस रोज लगु, यत्ती यत्ती लाइ ।
बहुविधि भोजन बाजिके, कहँलौं वरणे जाइ ॥ ३ ॥
सोरठा–[illegible] भोजन माहि, वेला ताकी नहिं कही ।
[illegible] दुपहरके माहि, पानी दैकै दीजिये ॥ १ ॥
जब भोजनको देइ, होइ नहीं असवार तब ।
जानि मतो यह लेइ, पै खाली नित फेरिये ॥ २ ॥

दोहा--जो असवार भयो चहै, तो दौरावै नाहिं ।
और कुदावै नाहिनै, मन्द मन्द लै जाहिं ॥ १ ॥
कही जौन औताज है, तामें लेउ विचारि ।
कम ज्यादा करि दीजिये,कद अरु भूँख निहारि ॥ २ ॥

अथ महेलाकी विधि ।

छंदप०--जो चहै महेला गुणद कीन।मेथी मिलाय पकवै प्रवीन॥
खावै तुरंग बहु गुण बढ़ाय। हय उदर व्याधि सगरी नशाय ॥

अन्य। छंद पद्धरी ।

कच्चा दाना जो तुरँग खाय। ताको तरकरिकै तिहि खवाय ॥
यह हजम करै दाना जु खाय। किंञ्चितहि मसाला तुरँग पाय॥
की सौंफ लेय दश सेर आनि। आधी भुजाय दोउ कूटि धानि॥
दाना खवाय दे आध पाय। अतिही सुखदायक तुरँग खाय ॥

अथ हलुवा बनानेकी विधि। छंद पद्धरी।

ले सेर अढ़ाई घृत मँगाय। उतनी प्रमाण हरदी पिसाय ॥
अदरख पीसै उतनै सुजान । मेथी लै पीसै सो प्रमान ॥
दीजै कराहमें घृत चढ़ाय। दे छोड़ि खूब हरदी पकाय ॥
तब अदरख औ मेथीको डाल। सब भूँजि खूब कीजै सुलाल ॥
दे पांच सेर मीठा मिलाय। दश सेर दूध तिनमें रलाय ॥
जब ह्वै जावै हलुआ सुढार। तब लेउ आगिपर सो उतार ॥
दे पावसेर हय जल पिआय। यक सेर तलक कम कम बढ़ाय॥
अकसीर समुझु हकमें तुरंग। जाड़ेतक करि दीजै हिरंग ॥

अथ मूँगका हलुवा देनेकी विधि ।

दोहा–अदरख हल्दी खांड़ घिउ, औरौ मूँग पिसान ।
एती चीजैं लेउ सब, तिनको भाग समान ॥ १ ॥
घीसों चौथे भाग कम, लेउ पिआजु मँगाइ ।
घीमें भूँजै ताहिको, डारै फेरि कढ़ाइ ॥ २ ॥
हल्दी आदि पिसानको, घीमें लेउ भुँजाइ ।
पृथक पृथक ये भूँजिये, मन्द आँच करवाइ ॥ ३ ॥
खाँड़माहिं जल डारिकै, लेउ जलाउ बनाइ ।
हल्दी आदि पिसानको, तामें देव मिलाइ ॥ ४ ॥
दीजै चालिस रोज लौं, ताकी यह विधि आहि ।
आठ आठ पल चारि दिन, फेरि बढ़ावै ताहि ॥ ५ ॥
अठयें दिनते तीस पल, रोज खवावत जाइ ।
युवा वाजिको को कहै, बूढ़ तरुण ह्वै जाइ ॥ ६ ॥

अथ सामान्य मोटा करनेकी विधि ।

दोहा–श्याह मिर्च पीपरि सहित, पिपरामूल बखानि ।
लीजै राई सोंठि पुनि, बीस बीस पल जानि ॥
चौ०–मेथी हालिम हर्दी लावे । तीस तीस पल सो तौलावै ॥
तीस टका भरि जो घृत लावै । ताते दूनी खाँड़ मिलावै ॥
दोहा–खोवा लीजै गाइको, पाँच सेर यह जानि ।
तौल पोखता जानियो, श्रीधर कहो बखानि ॥ १ ॥
सबको भूँजै घीउमों, एक माहिं मिलवाइ ।
शीतल करिकै ताहिको, पिण्डा लेउ बनाइ ॥ २ ॥

टका अठारह तौलिकै, रोज खवावत जाइ।
जाड़ेके महिना विषे, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥ ३ ॥
पानी दीजै बाजिको, दोइ पहर दिन माहि।
दीजै चालिस रोज लगु, बूढ़ युवा ह्वै जाहि ॥ ४ ॥

अथ चारो रोगन देनेकी विधि।

दोहा—जर्द स्याह रोगन दुवौ, शूकर चर्बी आनि।
तिनको कीजै भाग सम, औरौ साबुन जानि ॥

बनानेकी विधि।

दोहा—घियके चौथे भाग करि, हल्दी लेउ मँगाइ।
घीमें ताको भूँजिये, राखै फेरि धराइ ॥
सोरठा—घी बाकी रहि जाइ, डारि कराही माहिं सो।
ता तर आगि बराइ, तीनौं रोगन मिलै करि ॥
दोहा—चारौं रोगन पघिलिकै, एक रूप ह्वै जाइ।
हल्दी भूँजी जो धरी, तामें देउ मिलाइ ॥
सोरठा—लीजै फेरि उतारि, जब ठंढो ह्वै जाइ वह।
पिंडा करौ सुधारि, दश दश पलके तौलिकै ॥
दोहा—यक यक पिंडा बाजिको, दीजै रोज खवाइ।
चालिस दिनमो बल बढ़ै, तुरी मोट ह्वै जाइ ॥

अथ पिण्डादि—वर्णन।

दोहा—कहत यथामतिसों अहौ, शालहोत्र मत जानि।
पिंडादिक जे बाजिके, करैं रोगकी हानि ॥ १ ॥
मधुमाखी मोथा सहित, हरैं सैंधव आनि।
पिंडा बाँधौ भाग सम, गऊमूत्रमो सानि ॥ २ ॥

हयको दीजै पाँच दिन, मन्द अग्नि मिटि जाइ ।
भोजन अति रुचि सों करै, दिन दिन तुरी तजाय॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—लटजीरा तेंदूसहित, पुहकरमूल तमाल ।
लोध दुग्ध युत पिंड करि, वात मिटै ततकाल ॥

अन्य।

दोहा—धूप मूँगके जूसमें, बचको लेउ मिलाइ ।
सैंधव युत करि दीजिये, अग्निदाह मिटि जाइ ॥

अन्य।

दोहा—मिश्री दूध कपूर पुनि, एला पत्रज लाइ ।
सैंधवयुत करि दीजिये, अग्निदाह मिटि जाइ॥ १ ॥
ग्रीषमऋतुमें जानिये, कोप पित्तकर होइ ।
तब यह औषध दीजिये, चौरेहनी सो मोइ ॥ २ ॥
लीजै लहसुन तैल पुनि, छाग मासु मिलवाइ ।
ताहि खवावै बाजिको, बात पित्त मिटि जाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा—दूध खाँड़ अरु महिषि घृत, ताहि कपूर मिलाइ ।
सो लै दीजै बाजिको, कफको देत नशाइ ॥

अन्य।

दोहा—आँरा गोरोचन सहित, बीज बरेरा लाइ ।
सो लै दीजै बाजिको, गुल्म हृदय मिटि जाइ ॥

अन्य।

दोहा—सहदेई बच कूटि पुनि, अरु इंद्रायनि आनि ।
अतिहि श्वासको हरति है, वरुण सहित सो जानि॥ १ ॥

सज्जी लोन प्रियंगु पुनि, और बहेरा लाइ।
यह घोड़ेको दीजिये, तौ खांसी मिटि जाइ॥ २॥

अन्य।

दोहा-हल्दी सोंचर पीपरी, अरु इन्द्रायन लाइ।
सो घोड़ेको दीजिये, मूतकर्क मिटि जाइ॥

अन्य।

दोहा-जेठीमधु पीपरि सहित, देवदारुको जानि।
गंधक बहुरि हरीतकी, भाग समान बखानि॥ १॥
गोली ताकी बाँधिकै, हरिको देउ खवाइ।
लीदि करै जो रक्तयुत, सो पीड़ा मिटि जाइ॥ २॥

अन्य।

चौ०-दूनी हल्दी गंधक लाई। करुये तेलहि पिंड बनाई।
सो घोड़ेको देउ खवाई। रक्तविकार तुरत मिटि जाई॥

अन्य।

दोहा-वटकलिका अरु नींब लै, अरसीपत्र मिलाइ।
सो घोड़ेको दीजिये, अतीसार मिटि जाइ॥

अन्य।

दोहा-जो घोड़ेकी देहमें, कृमि अव्रण ह्वै जाइ।
थूहर रंडा पात लै, ताको देउ खवाइ॥ १॥
कद अरु मोसम देखिकै, बहुरि मिजाज विचारि।
पिंडादिक तब दीजिये, श्रीधर कवि निरधारि॥ २॥

अथ तुरंग तेज करनेकी विधि।

दोहा-पीपरि सैंधव सोंठि पुनि, सरसों तेल गिलोय।
अँमिलबेत पुनि लीजिये, सम करि सबै मिलोय॥ १॥

औषध यकइस दिनलगे, रोज पाँच पल देइ।
नाशै आलस बल बढ़ै, जल्द तुरत करि लेइ॥ २॥

दोहा—त्रिफला कुटकी चीत लै, मोथा बायविडंग।
औषध दीजै पाँच पल, खरी मदके संग॥

अन्य।

दोहा—रहसनि पीपरि मधु सहित, केसरि श्रीफल आनि।
औरौ लीजै तालफल, ताकी गूदी जानि॥ १॥
औषध भाग समानसों, चारि टका भरि लेइ।
दीजै प्रातहि सात दिन, अति चंचल करि देइ॥ २॥

अथ बहुत कोश चलानेकी विधि।

चौ०—काला साँपु बड़ा लै आवै। तनु नहिं फूटै रुधिर न आवै॥
ताके मुहँमें चना भरावै। गंती यकशत कम न करावै॥
माटीके घट भीतर धरिकै। मोहराबंद बहुत विधि करिकै॥
भूमि खोदि यक गड़हा करै। ताके भीतर घटको धरै॥
आसपास बहु लीदि तुपावै। चालिस दिन यहि भाँति रखावै
ताके पीछे घट खुलवाई। सर्पके मुँहके चना धुवाई॥
घामें सुखै राखु धरि भाई। तीनि चनाको रोज खवाई॥
शीतकालमें ताहि खवावै। तुरँग बहुत सो वृद्धि करावै॥
बहुत दौर दमकस परमानै। दक्षिणके उस्ताद बखानै॥
सत्तरि साठि कोश लगु दौरै। दवा प्रमान कीन शिर मौरै॥
ऐसी दवा और नहिं कोई। की सत्तू दाना सँग देई॥

अथ बरजातिया सर्प खिलानेके गुण।

दोहा—ज्यों सुमेरु गिरि अचल है, औ शस्त्रनमें बान।
त्यौं बाजीको सर्प है, सब औषध परमान॥ १॥

बरजतिया अहि मारिकै, घुड़शालामें राषि।
देउ ताहि ऋतु शिशिरमें, नकुलमते यह भाषि ॥२॥
चौ०-ज्यों रविकिरण तिमिर हरि लेई। त्यों सब सुख बाजीको देई
शिशिर खवावै सुनु बुधवंता। करत सकल रोगनको अंता॥

अथ मिठाई खिलानेके गुण।

दोहा-मीठामें गुण तीन हैं, शिता खांड गुड़माहि।
अति गुणदायक सोखकृत, बदी करै गुड़ चाहि॥

अन्य।

दोहा-तिल लै खूब कुटाइये, गुड़ सम देउ मिलाइ।
पिंड बनाइक दीजिये, सेर नित्त यहि भाइ॥
चौ०-माघमास घोड़ेको दीजै। अति बल करै रोगको छीजै॥

अथ तिल देनेकी विधि।

दोहा-एक सैकरा साठि पल, कारे तिल मँगवाइ।
ता सम अरसी लीजिये, दोऊ लेउ भुँजाइ॥
सोरठा-तिलको लेउ कुटाइ, हर्दीको गादा बहुरि।
अदरख लेउ मँगाइ, चारौं चीजैं भाग सम॥
दोहा-चारोंके सम लाल गुड़, तामें देउ मिलाइ।
चालिस पिंडा कीजिये, रोज खवावत जाइ॥ १॥
दीजै चालिस रोज लगु, बाजी मोटा होइ।
जाड़ेकी ऋतु देखिकै, हयको दीजै सोइ॥ २॥

अथ जलेबी देनेकी विधि।

दोहा-सेर एक सो दीजिये, पाँच सेर लगु जानि।
देउ जलेबी बाजिको, श्रीधर कहो बखानि॥ १॥

स्याहमिर्च लै दोइ पल, अरु अदरख पल चारि ।
हयको दीजै आनि करि, लोन दोइ पल डारि ॥ २ ॥

अथ मेषकी सींग देनेकी विधि ।

दोहा–सींग मेषको लीजिये, अग्निमाहिं भुँजवाइ ।
जरे सींगको लीजिये, खूब मिहीं कुटवाइ ॥ १ ॥
माटीकी हाँड़ी-विषे, ताको देउ धराय ।
तामें सहद मिलाइकै, कवि श्रीधर सुखदाय ॥ २ ॥
ना अतिगीली कीजिये, ना सूखो रहि जाइ ।
हाँड़ी पर परिया धरै, माटी देउ लगाइ ॥ ३ ॥

चौ०–फिरि दुइ सेर कंडा लै आवै । हाँड़ीके तर तिनहिं जरावै॥
हाँड़ी जबहीं जाइ जुड़ाई । औषध तासों लेउ कढ़ाई ॥
पीपरि मिर्च सोंठि लै आवै । सोंचर सज्जी लोन मिलावै॥
सूख सहतरा तामें दीजै । पीसि कपरछन सबको कीजै॥
षटमासे अरु मासे तीनी । एक एक ओषधि कहि दीनी॥
सबै ओषधी लेउ मिलाई । ओषधि सींग समान कराई ॥

दोहा–ओषधि पैसा एक भरि, गूगुर मासे तीनि ।
ओषधि दीजै वाजिको, प्रथम दिवस कहि दीनि॥

सोरठा–उतने गूगुर माहिं, ओषधि पैसा दोइ भरि ।
हयको देउ खवाइ, जानौ दुसरे दिन विषे ॥

दोहा–ओषधि पैसा एक भरि, रोज बढ़ावत जाइ ।
दीजै बासर सात लौं, गूगुर उतनै लाइ ॥ १ ॥
औषध पैसा पाँचभरि, तामें लेउ मिलाइ ।
चारि टका भरि खांडको, घोड़े देउ खवाइ ॥ २ ॥

या विधि दीजै सात दिन, फिरि याही विधि जानि।
औषध पैसा पाँच भरि, आध पाव घिउ सानि ॥ ३ ॥
दीजै वासर सात लौं, वात रोग नशि जाइ।
मोट होइ अरु बल बढ़ै, चोट पुरानी जाइ ॥ ४ ॥

अथ तैयारीकी दवा।

चौ०-लेउ बकैना-पात मगाई। हरियर ताजे नरम सुहाई ॥
पीसि महीन सेर यक लीजे। आध सेर यव आटा दीजै॥
साँभरि-नमक पाव अध लीजै। पिंड बनाइ अश्व मुख दीजै
एक मास भरि देउ खवाई। ताजा होइ बहुत सुख पाई॥

अथ महेला ताजा हो, झोंझ बढ़े।

दोहा-सागु चकैड़ा लीजिये, वर्षाऋतुमें जानु।
जबलौं नहिं फूलै फरै, करौ जतन यह मानु ॥
चौ०-पाँच सेर यह सागु मँगावै। चारि सेर मोथी लै आवै ॥
आध पाव लै साँभरि नमका। पकै महेला देउ तुरँगका ॥
एक माह यह जतन करीजै। रिष्ट पुष्ट बहु झोंझ बढ़ीजै॥

अथ पानी पिलानेकी विधि।

दोहा-कर्क आदि इमि रीतिते, भाषो मकर प्रयंत।
दीजै पानी तुरँगको, एक दाँइ बुधवंत ॥ १ ॥
कुंभ प्रथम द मिथुन लगु, तीनि बेर जल देय।
तुरँग सुखी दिन प्रति सदा, जानि लेउ बुध सोय ॥ २ ॥

अथ ईंगुरगुटिका।

दोहा-सुमिलखार ईंगुर सहित, त्रिकुटा गुग्गुल आनि।
शोधा विष पुनि लीजिये, टंक टंक सब जानि ॥ १ ॥

लौंगैं अदरख पान पुनि, खील सोहागा आनि ।
एक एक प्रति दोइ पल, श्रीधर सुकवि बखानि॥ २ ॥
खरिल कीजिये दोइ दिन, अदरखके रसमाहि ।
झलबेरियाकी सदृशही, गोली बाँधै ताहि ॥ ३ ॥
आटा भूँजे जवनको, वह गोली तिहि संग ।
हयको देउ खवाय सो, रहै न रोग प्रसंग ॥ ४ ॥

अन्य ईंगुरगुटिका–शोधनविधि ।

दोहा–विष अरु ईंगुर शंखिया, तोले तोले आनि ।
पपरी लीजै खैरकी, बारह मासे आनि ॥ १ ॥
लेउ अकरकरहा बहुरि, अरु अजमोद मँगाइ ।
छाछा मासे दुहुँनको, कवि श्रीधर तौलाइ ॥ २ ॥
अदरखको रस डारिकै, दिनभरि खरिल कराइ ।
तोला भरि पारा बहुरि, तामें देउ मिलाइ ॥ ३ ॥

अन्य दवा ।

दोहा–बँगलापान मँगाइकै, ताको अर्क कढ़ाइ ।
एक दिवस फिरि ताहिमें, लीजै खरिल कराइ ॥ १ ॥
माटी बाँबीकी बहुरि, सोरह मासे आनि ।
ताते तिगुना लीजिये, दूध मदार बखानि ॥ २ ॥
फेरि खरिल ताको करै, जब रस रहै समान ।
शालहोत्र मुनि कहत हैं, गोली तासु विधान ॥ ३ ॥

ईंगुरगुटिकाका गुण ।

दोहा–कफ अरु वात विकारते, रोग जिते सब होइ ।
देतै गोली एकके, तुरतै डारै खोइ ॥

सोरठा-महिना जाड़े माहिं, यक यक गोली तीनि दिन ।
जवके आटामाहिं, जाय खवावत वाजिको ॥
दोहा-राह चलेपै ना थके, की तो थकिगा होइ ।
दीजै गोली एक तिहि, भरत नहीं है सोइ ॥

अथ सर्वरोगों पर हियातवटी ।

दोहा-सिंगरफ तोला चारि भरि, शंखिया सुमिल समान ।
उतनो भूँजा कनकरिपु, सम पपरी खदिरान ॥ १ ॥
बेसन तोला चारि भरि, लखि अदरखरस सान ।
दश रत्ती ओजन बनै, ताकी वटी विधान ॥ २ ॥
देइ सबेरे अश्वको, अति गुणदायक जानु ।
सकल रोग हर जानु यह, वटी हियात प्रमानु ॥ ३ ॥

अथ सर्वरोगो पर अमृतवटी ।

चौ०-ईंगुर सुमिलखार भँगवावे । टंक टंक भरि वजन करावे ॥
गूगुर लौंग सोहागा आनै । पैसा पैसा भरि परमानै ॥
पीपरि मिर्च मेलि सन करै । अदरख पान अर्कमा धरै ॥
खरिल करै दिन तीनि बनाई । गोली चना प्रमाण कराई ॥
दोहा-अमृत वटिका दीजिये, भूँजे आटा-माह ।
सर्वरोगहर बल करै, मिटै जहर जो छाह ॥

इति श्रीशालहोत्रसग्रह केशवसिहकृत वर्षभरकी चिकित्सा कथन
नामक एकविंश अध्याय ॥ २१ ॥

अथ मांस देनेकी विधि ।

दोहा-आमिष दीजै छागको, कद अरु भूँख विचारि ।
छाग होइ बलवानसो, यह राखो निरधारि ॥ १ ॥

आमिष लीजै साठि पल, ताको साफ कराइ ।
ताको फेरि पकाइये, हर्दी दही लगाइ ॥ २ ॥
घीव लीजिये आठ पल, दुइ पल लेइ पिआज ।
गरममसाला डारिकै, ताहि पकावै साज ॥ ३ ॥
हाड निकारै मांसके, रोटी मीसि खवाय ।
सुरुवा राखै नाहिनै, दीन्हों जतन बताय ॥ ४ ॥

आमिष व गूदा देनेका मसाला ।

चौ०—एक टका भरि मिरचै लावै । ता सम हर्दी आनि मिलावै ॥
अदरख और मिठाई लीजै । आठ टका भरि दोनों कीजै ॥
दोहा—सो पानीके प्रथम ही, हयको देउ खवाय ।
पानी देके बाजिको, दीजै आमिष लाय ॥

मेषका मांस देनेकी विधि ।

दोहा—लीजै आमिष मेषको, चालिस पल तौलाइ ।
कही पकावन विधि अहै, ताही विधि पकवाइ ॥ १ ॥
जौकी रोटी बीस पल, ताम लीजै सानि ।
दश पल डारै ताहिके, संग मद्यको आनि ॥ २ ॥
बूढ़ तुरंगम होइ जो, दीजै चालिस रोज ।
बाजी होइ जवान जो, ताको बीसै रोज ॥ ३ ॥

मसाला ।

दोहा—लहसुन मिर्चै सोंठि पुनि, एक एक पल आनि ।
सरसों सैंधव एक पल, श्रीधर कहो बखानि ॥
सोरठा—याको देइ खवाइ, दोय घरी कैजा करे ।
फिरि जल दीजै लाइ, ता पीछे आमिष कहो ॥

शूकरका मांस देनेकी विधि।

दोहा–पल पचास तौलाइये, शूकरमांसहि जानि।
ताहि पकावै नीरमें, केवल हर्दी सानि॥ १॥
गूलरके फल सात पल, महिषी दही मिलाइ।
दीजै बूढ़े वाजिको, मोट सही ह्वै जाइ॥ २॥
कही क्षुधाकर ओषधी, सो दीजै नित लाइ।
या विधि दीजै साठि पल, बूढ़ तरुण ह्वै जाइ॥ ३॥

अखनी देनेकी विधि।

दोहा–एक सैकरा साठि पल, आमिष छाग मिलाइ।
थोरे घीमें भूजिये, थोरी हर्दी लाइ॥ १॥
फेरि चुरावै नीरमो, अखनी लेउ कढ़ाइ।
ताकी विधि अब कहत हौं, जानि लेउ सुखदाइ॥ २॥
ताहि बघारै घीउमें, तीनि बार यह जानि।
दीजै चालिस रोज लग, सो रोटीमें सानि॥ ३॥

मसाला।

दोहा–जवाखार साँभरि सहित, सोंचर सैंधव आनि।
चारौ लीजै एक पल, दुइ पल कचरी जानि॥ १॥
कुटकी मिर्चै सोंठि पुनि, डेढ़ टका भरि लेइ।
एक रोजको बीच दै, सो वाजीको देइ॥ २॥
फल भोजन जिनके कहे, शालहोत्र मतमाहि।
यह औषध सबमें उचित, जानि लेउ तुम ताहि॥ ३॥

मुर्गा देनेकी विधि।

दोहा–मुर्गा दीजै बीस दिन, की चालिस दिन जानि।
छुट्टा मुर्गा सो चुनै, नितप्राति एक बखानि॥

सोरठा—लीजै ताहि पकाइ, जौन पकावन विधि कही ।
हड्डी तासु कढ़ाइ, बासी रोटी सानिकै ॥ १ ॥
हयको देउ खवाय, औषध दीजै गरम नहिं ।
साँक रोग नशि जाय, दीजै वात बचाइ जो ॥ २ ॥

अन्य मांस देनेकी विधि ।

दोहा—तीतर लवा बटेरको, और कपोत बखानि ।
मांस दीजिये ए सबै, सकल रोग हर जानि ॥

मांस पकानेकी विधि ।

दोहा—आठ टका भरि घीवमें, प्रथमहिं भूँजे आनि ।
फेरि पकावै नीरमें, पहर एक यह जानि ॥ १ ॥
गोहूँ रोटी बीस पल, तामें लीजै सानि ।
पानी देकै वाजिके, ताहि खवावै आनि ॥ २ ॥
जा वाजीके तनुविषे, वातरोग जो होइ ।
रोटी दीजै मोठकी, बहुरि गर्म करि सोइ ॥ ३ ॥

अथ मुर्गीके अण्डा देनेकी विधि ।

दोहा—अंडा दीजै वाजिको, ताकी यह विधि आहि ।
प्रति दिन एक बढ़ाइये, दश वासर लौं ताहि ॥
सोरठा—ग्यारह दिनमें वाहि, दश अंडा अरु दीजिये ।
फिरि नव वासर माहि, दिनप्रति एक घटाइये ॥
दोहा—प्रति अंडाके भाग अध, लीजै खांड़ मिलाइ ।
ताते आधा घीव लै, सोऊ लेउ मिलाइ ॥
चौ०—दुइ मासे अदरखरस लीजै । प्रति अंडामें ताको दीजै ॥
माठे महेलामें सनवाई । कच्चे अंडा रोज खवाई ॥

दोहा--बल जाको घटि गयो, अरु जलदी थकिज्जाइ ।
या विधि अंडा दीजिये, जोरु तासु सरसाइ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि ।

दोहा--अंडा दीजै बीस दिन, दिनप्रति एक बढ़ाइ ।
एक एक कमती करै, क्रमसों देउ छुँड़ाइ ॥ १ ॥
हरदी मासे दोइ लै, ताको लेउ पिसाइ ।
एक एक अंडा विषे, दीजै ताहि मिलाइ ॥ २ ॥
सो रोटी सँग भिजैकै, हयको देउ खवाइ ।
शालहोत्र मत कहत हौं, दिन दिन बल सरसाइ ॥ ३ ॥
ढीलो वाजी जो चलै, देह हलावत होइ ।
या विधि अंडा दीजिये, चुस्त चलत पुनि सोइ ॥ ४ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि ।

दोहा--दिनप्रति अंडा दश कहे, सो चालिस दिन देइ ।
ताकी विधि अब कहत हौं, जानि तासुको लेइ ॥ १ ॥
घीमों अंडा भूँजिकै, दुइ पल हर्दी लेइ ।
अंडनके सम खांड़को, दोनों तामें देइ ॥ २ ॥
ताहि खवावै वाजिको, कवि श्रीधर यह जानि ।
मोटा वाजी होत है, बाढ़ै बलकी खानि ॥ ३ ॥

अंडा देनेकी अन्य विधि ।

दोहा--अंडा दीजै वाजिको, ताकी यह विधि जोइ ।
पहिले दिनमें एक द, दूजे दिनमें दोइ ॥ १ ॥
तीजे दिनमें तीनि दै, या विधि और बढ़ाइ ।
दीजै चालिस रोज सो, हयको आनि खवाइ ॥ २ ॥

सहद रुपैया दोइ भरि, प्रति अंडामो जानि ।
साढ़े दश मासे बहुरि, अदरखके रस सानि ॥ ३ ॥
अंडाके रस माहिमो, दोऊ देउ मिलाइ ।
भूँजो मोंठ पिसान लै, तामें ढील सनाइ ॥ ४ ॥
मोटा वाजी होइ अरु, बल ताको अधिकाइ ।
औरौ बहुत कहा कहौं, बूढ़ तरुण ह्वै जाइ ॥ ५ ॥
सोरठा–विप्रवर्ण जो होइ, अंडा ताको नहिं परै ।
जानि लेउ जिय सोय, औरौ विधि यक कहत हौं ॥
दोहा–अंडा जाको नहिं परै, अरु मुर्गाको मांसु ।
ताकी यह पहिचान है, प्रथमहि कीजै तासु ॥ १ ॥
सूर्यऋचा आकृष्ण है, पढ़े कानमें तासु ।
या अंडा या मुर्गको, तुमको देहौं मासु ॥ २ ॥
यह कहि दीजै कानमें, दीजै राति बिताइ ।
कवि श्रीधर यह जानियो, शालहोत्र मत आइ ॥ ३ ॥
प्रात भये फिरि देखिये, जब लौं आवैं आँसु ।
ताको अंडा देइ नहिं, अरु मुर्गाको मांसु ॥ ४ ॥
हठ करि कोऊ देइ जो, तौ रोगी ह्वै जाइ ।
वाजी दूबर होइ अरु, अकसर करि मरि जाइ ॥ ५ ॥

अथ मछली खिलानेकी विधि ।

दोहा–रोहू मछरी साठि पल, तिनकी खल कढ़वाइ ।
घीमें तिनको भूँजिकै, पानीमो पकवाइ ॥ १ ॥
काँटा डारे काढ़ि सब, दश पल घीउ मिलाइ ।
मोटी रोटी साथमें, हयको देउ खवाइ ॥ २ ॥

चौ०–निर्बल अश्वहि देउ खवाई। चालिस दिनमाँ बल बढ़िजाई
अति बूढ़ो बाजी जो होई। या सम औषध और न कोई॥

मछली देनेकी अन्य विधि।

दोहा–रोहू मछरी दोइ लै, साठि साठि पल होइ।
की कम ज्यादा होइ कछु, या परमानहि सोइ॥ १॥
तिन मछरिनकी देहमें, देउ पिंडोर लेपाइ।
भुँइमें गड़वा खोदिके, कंडा देउ भराइ॥ २॥
ता मधि मछरी गाड़िकै, दीजै आगि लगाइ।
कवि श्रीधर यह कहत हैं, तापर और उपाइ॥ ३॥
बारबार घिउ डारिकै, मछरीके मुखमाहि।
सुर्ख होइ जौलौं नहीं, तौलौं डारत जाहि॥ ४॥
सोरठा–पाकि खूब जब जाइ, खाल काँट सब काढ़िये।
हयको देउ खवाइ, मोटी रोटी सानिकै॥ ५॥

मसाला।

दोहा–सोंठि मिर्च अरु पीपरी, टका टका भरि आनि।
सो छिरका मधि सानिकै, हयको दीजै मानि॥

अन्य मछलीके मूड़ देनेकी विधि।

चौ०–दश शिर रोहूके लै आवै। घीमें तिनको आनि भुँजावै॥
तिनको भेजा लेउ कढ़ाई। बेसनमों फिरि ताहि सनाई॥
दश दिन यहि विधि रोज खवावै। दशदिनते दश और बढ़ावै
बीस रोज या विधिसों दीजै। फेरि और दश ज्यादा कीजै
दोहा–तीस तीस फिरि दीजिये, दिन चालिसलौं जानि।
शालहोत्र मुनिके मते, अश्व होइ बलखानि॥ १॥

बूढ़े हयको दीजिये, करि अछरीको प्रेम ।
युवा वाजिको देइ नहिं, शालहोत्रको नेम ॥ २ ॥

अथ बकरेका शिर देनेकी विधि ।

चौ०—यक बोकराको शीश मँगावै।नितप्रति प्रात पकाइ खवावै॥
यकइस दिनलौं या विधि कीजै।वृद्ध अश्वको ज्वान करीजै॥

रुधिर देनेकी विधि ।

चौ०—यक बोकराको रुधिर मँगावै।प्रात खवाइ जवान करावै॥
यकइस दिनलौं नितप्रति दीजै।वृद्ध अश्वको ज्वान करीजै

चर्बी देनेकी विधि ।

चौ०—बोकरा की चर्बी मँगवावै । एक पाव नित प्रात खवावै ॥
यकइस दिन याहूको दीजै।वृद्ध होइ तिहि ज्वान करीजै॥

अथ बड़ियाँ देनेकी विधि ।

दोहा—उर्दद्दालिकी लीजिये, बत्तिस पलै भिजाइ ।
कच्चरा ताको पीसिकै, बरियाँ लेउ बनाइ ॥ १ ॥
धरि राखै सो राति भरि, हयको, देउ खवाय ।
शालहोत्र मुनिके मते, दीन्हों जतन बताय ॥ २ ॥

अन्य ।

दोहा—बरियां दीजै वाजिको, दहीमाहिं भिजवाइ ।
राई लहसुन सोंठि पुनि, चारि कर्ष मिलवाइ ॥

अन्य ।

दोहा—लाल मिठाई तीस पल, कीजै तासु जलाउ ।
तामें बरियां भिजैकै, हयको सोइ खवाउ ॥ १ ॥

वश दीजिये माघभरि, और मासमो नाहि ।
वाजी मोटा होइ बहु, बाढ़ै पौरुष ताहि ॥ २ ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत मांसवर्णन
नामक द्वाविंश अध्याय ॥ २२ ॥

अथ मसाला साठिया-चौपाई।

जवाखार अरु पापरखारी । सज्जीखार मैनफल डारी ॥
बच अरु पिपरामूरि मँगावै । अजवायनि खुरसानी लावै ॥
लेउ कैफरा और फिटकरी । सैंधव सोंचर लोन साँभरी ॥
पक्के कुआँ कि काई चँदसुर । कटु तुँबरी दल अर्क लेउ बर ॥
यहि षोडश लै दवा पिसावै । एकै एक छटाँक मँगावै ॥
कुटकी कूट भरंगी मेलै । बीज चकैड़ा मिरचै गोलै ॥
घुड़रहसनि अरु हींग मँगाई । तुचा बकैना फलको लाई ॥
मुर्रा अरु हुरहुरके पाता । दश अध पई लेउ सम ताता ॥
हरदी मिरचा धनिआ लावै । हैसिमूलकी छालि मँगावै ॥
भँगरैला असगँध अजमोदा । गेरु धुरिय अरु कंजक गूदा ॥
रूसकटैया गोलि नवाली । दूनो जरका तुचा निकाली ॥
काराजीरी पिपरी लावै । घुघुआरी का गूद मिलावै ॥
मालकाँगनी गूगुरभैंसा । डारु सोहागा भूँजि महीसा ॥
लीजै दवा सत्तरह आनी । पाव पावकी है परमानी ॥
राई देशी भाँग मँगावै । दुइ दुइ सेर वजन करवावै ॥
सोवा सोंठि पाव लै तीनी । सेर अढ़ाई लहसुन देनी ॥
अर्क फूल बंडार जु लीजै । मूल धतूरे तुचा करीजै ॥

टका टका भरि तीनों मेलौ । कचरी सेर एक तिहि घेलौ ॥
देशी अजवायनि लै त्रिफला । बाँसपात औ अदरख मेला॥
फल इंद्रायनि पाक फूँकिके । मेथी रंडपात जोगियाके ॥
यहि नौ औषध करौ विधाना । आध आध सेरै परमाना ॥
राई लेउ बनरसी भाई । सेर एक तामें मिलवाई ॥
सहिंजनजरकी छालि मँगावे । और पुराना गुड़ लै आवे ॥
दश दश सेर दुऔ परमानै । सकल पीसि कपरामें छानै ॥
भैंसीकेरो दही मँगावै । तामें औषध सब सनवावै ॥
घामें सुखै पीसि फिरि लीजै । तामें छिरका मर्दन कीजै ॥
तुचा सहींजन सिल पिसवावै। एक कराही जल भरवावै ॥
तामें छाली देव भराई । पीछे डारु मिठाई भाई ॥
दूनों जब पानीमें चुरै । ताके पाछे औषध भरै ॥

दोहा–सकल पकावै एकमें, जब पानी जरि जाय ।
तबहीं धरै उतारिकै, घामें लेइ सुखाय ॥ १ ॥
आध पाव नित दीजिये, तुरँग अरोगी होय ।
भूँख बढ़ै तनु बल करै, उदर व्याधि हरि लेय ॥ २ ॥

अथ प्रथम मसाला बत्तीसा सर्व रोगोंपर ।

दोहा–जिस ओषधिका वजन नहिं, यामें कुछ दरशाय ।
वह ओषधि चोखी लियो, टका टका भरि भाय ॥

चौ०–पिपरी लहसुन पिपरामूरी । कुटकी बायबिडंग कचूरी ॥
मिर्च सोहागा काराजीरी । अजवायनि हरदी बहुपीरी ॥
बच गूगुर अरु हर्र मँगाई । सज्जी जवाखारको लाई ॥
मेथीऽ सोंठि मैनफल लेहू । बीज कसौंजी तामें देहू ॥

चीतो बीज पवाँर विधारौ। कालेश्वर जीरा विधि न्यारौ॥
सेर आध विजयाको लीजै। हींग टका भरि तामें दीजै॥
लेउ सोहागा और फिटकरी। भूँजि खील सो दूनो वरी
साँभरि सोंचर सैंधव खारी। आध सेर लीजै यह चारी॥
मानुषकी खुपरी लै आवै। महिषा सींगै ताहि मँगावै॥
दुइ दुइ पलकी राख करावै। ताही क्रमते हींग मिलावै॥
पीसि छानि सब औषध लीजै। चनाके आटामें तिहि दीजै॥
टका टका भरि ताहि खवावै। रोग जाय सब बल उपजावै

अथ द्वितीय मसाला बत्तीसा।

चौ०-मँगरैला औ भाँग भरंगी। सोंठि सोहागा सोवा संगी॥
कुटकी कूटि कैफरा कचरी। मेथी धनियां लहसुन पिपरी॥
दोनों मिर्च मैनफल राई। त्रिफला डारु फिटकरी भाई॥
अजवाइनि असगँध अजमोदा। बच बंडार पीत बहु हरदा
अजवाइनि लीजै खुरसानी। सातौ खार मिलावौ आनी॥
काराजीरी हींग मँगावै। अदरख अरु मुर्री लै आवै॥
सम करि भाग कूटि बहु पीसा। चूरण कहिये यह बत्तीसा
टका टका भरि प्रात खवावै। अश्वाके कोइ रोग न आवै॥

अथ तृतीय मसाला बत्तीसा।

चौ०-हरदी अजवायनि अरु राई। हालिम मँगरैलाको लाई॥
धनियाँ काराजीरी सोवा। सौंफ हर्र वैशाखी मोवा॥
हर्रै जंगी गूगुर माई। काकजंघ मेथी मँगवाई॥
पिपरी सोंठि पीपरामूरी। सनवीजा बंडार सुनौरी॥

खसरा बावभरं गजपीपरि। केफर लीजै चीत शतावरि॥
लोध भिलावाँ मैदा सोथा। आँग मैनफलको करु साथा॥
सकल दवा सम भाग पिसावै। अश्वै प्रात छटाँक खवावै॥
होय तयार रोग सब खोवै। नकुलमतो बत्तीसा देवै॥

अथ चतुर्थ मसाला बत्तीसा।

चौ०—घास जवास इँदारुनि आनै। रंडमूल दल अर्क प्रमानै॥
बीज कसौंजी औ कुकुरौंधा। कनकबीज दुधियायुत पौधा
साँभरि अँगरैलाको लीजै। गोभीरै खरपुरना कीजै॥
गुम्मा सहिंजन छालि मँगावे। कलपनाथ कालेश्वर लावे॥
मेहदी सेहुँड़ बबुरकी छाली। मेथी हरैं हरदी घाली॥
जीरा सीककेर अरु राई। मुंडी लेउ सनाय मँगाई॥
पचगुरिया पँवारके बीजौ। नैरपात अजवायन लीजौ॥
सकल दवा सम भाग पिसावै। दशयें अंश नमक डरवावै॥
देउ नहारी संघ छटांका। रोग हरै बढ़ि क्षुधा धड़ाका॥

अथ मसाला सोरहिया।

चौ०—राई हरदी लोन मँगावे। सोंठि सोहागा सोवा लावे॥
पिपरी पिपरामूरि जवाइन। त्रिफला मिलै करौ यक ठाइन
बच्च बंडार जु हींग मँगावे। लहसुन लै सम भाग पिसावै॥
टका टका भरि घोड़े दीजै। सोरह गुणको जाल करीजै॥

अथ मसाला बाराही चिकित्सा।

दोहा—मधु सैंधव कुकुरौंधा, हर्रा समहि मिलाय।
गऊमूत्र यव अरदवा, घालि दिये अतिखाय॥ १ ॥

केला केथरापातलै, श्वेतखाँड़ घृत आनि।
सन करि हयको देइ नित, अधिक क्षुधाकर जानि ॥२॥

अथ मसाला कामधेनुचूर्ण वातरोगपर।

चौ०-लहसुन मेथी मिरचै गोली। पिपरामूल भरंगी मेली ॥
लेउ सोहागा कैकै फुकनी। तामें डारु तमाखू थुकनी ॥
लेउ भेलावँ मैनफल हरदी। तोला दुइ दुइकी करु गरदी
सुनफर लेउ भाँग मँगवाई। तोले चारि चारि मेलवाइ॥

दोहा-सबको कूटि यकत्र करि, सहिंजनरसमें सानि।
दुइ तोलाकी वजन करि, गोली तासु विधानि ॥ १ ॥
कामधेनु याको कह्यो, हयको देउ सुजान।
उदर शूल मंदाग्नि हर, अतिहि गुणनकी खान॥ २ ॥

अथ मसाला भस्मावती-दाना चारा बढ़ानेका।

चौ०-सोंठि बेतरा मिर्चै पीपरि। कुटकी चारौ सेर सेर धरि ॥
कालानमक सेर लै आधो। कूटि छानि एकैमें साधो ॥
प्रात छटाँक अश्वको दीजै। बढ़ै खुराक रोग तनु छीजै॥
भस्मावंती याको नामा। नकुलमतेको है अभिरामा ॥

अथ मसाला क्षुधाकरण।

चौ०-गोदधि दुइ मन लेउ मँगाई। छालि सहींजनछा सेर लाइ॥
सैंधव साँभरि सज्जी लीजै। सोंचर खारी तामहँ दीजै ॥
राई लहसुन काराजीरी। अजवाइनि हरदी बहु पिपरी॥
बायबिडंग लीजिये संग। खील सोहागा करि यक अंग॥

दोहा-कूटि छानि दधिमें मिल, घामें देउ धराइ।
टका टका भरि दीजिये, जब औषध उफनाय ॥ १ ॥

ग्रीषम ऋतुहि बचायकै, जो घोड़ेको देय ।
होय बलिष्ठ शरीर तिहि, क्षुधा अधिक सो होय ॥ २ ॥

अन्य मसाला क्षुधाकरण ।

चौ०—सज्जी अजवाइनि औ राई । सांभरि बायबिडंग कटाई ॥
सोंचर सैंधव सम करि लीजै।वजन बराबरि ये सब कीजै
कारा जीरी औ चौंराई । लहसुन पिपरामूर मँगाई ॥
दोहा—कूटि छानिकै दीजिये, सोठ सहेला माहिं ।
टका टका भरि वजन नित, यहि सम औषध नाहिं ॥

अन्य ।

चौ०—नींबि बकैना और कसौंजी ।कंज सहित पौधी चारौंजी॥
ता पाछे विषखपरा लीजै । सेर सेर ये सब करि दीजै॥
अदरख पान मिर्चको लेहू । करि गुटका घोड़ेको देहू ॥
चालिस दिन अश्वा जो पावै।क्षुधा अधिक बहु अंग बढ़ावै
सोरठा—भूँजे आटा माहिं, प्रातसमय नित दीजिये ।
बल दिन दिन सरसाय, चेतनचंद प्रमाण यह ॥

अथ मसाला तैयारीका ।

चौ०—सेर एक महुआ मँगवावै। अरसी सहित भार भुँजवावै॥
अजवाइनि मेथी औ भाँगा। टका टका भरि खील सुहागा
सकल पीसि मैदा करवाई । सेर दोय गुड़ देउ मिलाई ॥
एक दिनाकी है सौताजा।दिन यकइस याही विधि साजा॥
दोहा—जाय बंद नाहिं दीजिये, देखत मोटा होय ।
शालहोत्र इमि उच्चरै, बढ़ै पराक्रम सोय ॥

अन्य ।

चौ०—हरदी सेर आठ लै आवै,।सुरभी क्षीरमध्य भिजवावै ॥
दिना सात लौं भीजा करै । छाँह सुखाय पीसिकै धरै ॥

सेर एक सोंठीको लावै । दुइ सेर गोघृत आनि मिलावै ॥
पाँच सेर गोहूंकी मैदा । सकल मिलाइ धरौ कह चंदा ॥
पावसेर तिहि नित्य निकारै।दूध खाँड़ सँग हलुआ करै ॥
दोहा-या विधि औषध कीजिये, एक मास नित प्रात ।
चेतन चन्द प्रमाण यह, मोटा ह्वै है गात ॥

अथ तुच्छाहारी मसाला ।

दोहा-तुच्छ करै आहार जो, दुर्बल रहै शरीर ।
तुच्छ अहारी नाम तिहि, रोग सुनौ मतिधीर ॥ १ ॥
अजवाइनि अजमोद लै, हरैं दूनौं आनि ।
साँभरि संग खवाइये, भूँख ताहि अधिकानि ॥ २ ॥

अथ वलगम व तैयारीका मसाला ।

चौ०-कुटकी कूट रु काराजीरी । कालेश्वर हरदी वहु पीरी ॥
वायविंडग सोहागा लीजे । भूँजि फिटकरी तामें दीजे ॥
मिर्च कंज औ पिपरामूरी । पीपरि सोंठि समेत कचूरी ॥
त्रिफला अँविलतासुको लीजै।असगँध नागौरी तिहि दीजै
अजवाइनि मेथी औ राई । लेउ पुरानो गुरहि मिलाई ॥
सव एकत्र करि सम पिसवावै।औषधते गुड़ दून मिलावै ॥
आध सेरका पिंड वनाई । घोड़ेको दे प्रात खवाई ॥
वलगम जहरवातको नाशै । नीक होय औ रूप प्रकाशै ॥

अन्य ।

दोहा-लौंग मिर्च औ पान ले, अदरख पिपरामूरि ।
नित नेवाला दीजिये, रोग रहै तिहि दूरि ॥

अथ ताजा होनेका मसाला ।

चौ०-राई मेथी हालिम हरदी । पीसि छानि कीजै सब गरदी ॥
दोहा-डेढ़पाव तिहि लीजिये, गोहूँ दारि यक सेर ।
तीनि सेर गोदूधमें, साँझ भिजै दे भोर ॥ १ ॥
घोड़ा दुर्बल देखिकै, चालिसादिनं नित देय ।
रोग हरै बहु बल करै, हृष्ट पुष्ट तनु होय ॥ २ ॥
चौ०-सोवा अजवाइनि दुइ सेरै । राई लहसुन उतनै गेरै ॥
लेइ पिआज सेर दुइ छीली।आध सेर साँभरि तिहि मेली
छंद-सब कूटि दही दश सेर राषि।धरु सात रोज घामें सो भाषि
ले पाउ कि आटा आध सेर । कै बूट माथ हय वदन गेर॥

अन्य क्षुधाकरण मसाला ।

दोहा-गुड़ तीनि सेर गोमूत्र सँग, दीजै ताहि पकाय ।
भूँख बढ़ै बहु बल करै, सुंदर वदन दिखाय ॥

अन्य ।

चौ०-मिर्च लेउ कंकोल मँगाई । मिर्चा अरुण बराबरि लाई ॥
केवड़ाकी जर खाँड़ मँगाई । जेठी मधु सज्जी मिलवाई॥
सातौ दवा बराबरि लीजै । एकै टंक मात्र नित दीजै ॥
दोहा-गुड़ दुइ स्यर घृतमें मिलै, पिंड करौ नितएक ॥
सात रोज लग दीजिये, हृष्ट पुष्ट तनु झेक ॥

अथ निर्बल घोड़ेको मसाला ।

चौ०-मेथी सोरह टंक पिसावै । ईंगुर औ कंकोल मँगावै ॥
गंधपसार श्याम जो लीजै।और बिजौरा सम सब कीजै॥

सोरठा–अवल सवल ह्वै जाय, जो हयको कीजै जतन ।
दवा किये रुज जाय, शालहोत्र इमि उच्चरै ॥

अथ वृद्ध घोड़ेको मसाला ।

दोहा–आमिष चुरै मधु दधि मिलै, दीजै वृद्ध तुरंग ।
चौदह दिन नित दीजिये, होय युवा सम अंग ॥

अथ घोड़ेकी तैयारीका मसाला ।

चौ०–पिपरी पिपरामूल भरंगी । तोला दुइ दुइ करु यक संगी ॥
अदरख पाव एक मँगवावै । मिरचै आध पाव मिलवावै ॥
गनिकै लौंग एकइस लीजै । बँगलापान एक शत कीजै ॥
कूटि छानि मैदा करवावै । तोला भरि सो नित्त खवावै ॥
जौके आटा सानिक दीजै । तुरँग तयार बहुत सुख लीजै ॥

अथ पाचकका मसाला ।

दोहा–मिर्च जवाइनि मैनफल, पिपरी वचहि मिलाय ।
सज्जी सैंधव बीरिया, सम करि सकल पिसाय ॥ १ ॥
बड़े अश्वको दीजिये, दुइ पैसा भरि रोज ।
लघुको पैसा एकभरि, दे छिरका सँग मौज ॥ २ ॥

अन्य ।

चौ०–हर्रा हर्र जवाइनि लोनू । पीसि छानि बरतन धरु तौनू ॥
एक छटाँक साँझ भिजवावै । प्रात निहारी साथ खवावै ॥

अथ खुराक बढ़नेका मसाला ।

दोहा–नमक भाँग अरु काचरी, राई सब सम आनि ।
कूटि सबै आटा मिलै, अशन बाद दै जानि ॥

अथ कम पानी पीनेका मसाला ।

दोहा–तोला चारि जवायनी, दाना बाद खवाय ।
पीवै पानी बहुत सो, अति ही सुख दरशाय ॥

अथ अठरोजा मसाला ।

दोहा–कहौं मसाला अठरोजा, अठयें दिन जो देइ ।
भूँख बढ़ै बहु अश्वकी, कोइ रोग न होइ ॥
चौ०–सोंचर नमक भेलावां लीजै । आध आध सेरै दोउ कीजै॥
आधसेर अजमोद मिलावै।तिहि पाछे विधि और बतावै॥
बायबिडंग कूट अरु बचुकी।सोंठि और मीरोरफलनकी॥
सोवा बीज बनरसी राई । घुड़बच लोटा सज्जी लाई ॥
नरकचूर अरु काराजीरी।बीज पलाश ताहिमें डारी ॥
यहि बरहौ औषध तौलावै।पाव पाव सम वज़न करावै॥
पीसि कूटि सब छानि धरीजै।दुइ तोला अठयें दिन दाज

अथ मसाला भस्मावंती चूर्ण ।

दोहा–भूँख बढ़ै वादी हरै, चारा हजम कराइ ।
भस्मावंती नाम यहि, कहो मसाला आइ ॥ १ ॥
अजवाइनि अजमोदको, लोटा सज्जी लेउ ।
घुड़बच सोंठी बैतरा, मिलै ताहिमें देउ ॥ २ ॥
सोवा बीज समीत है, ये षट औषध जानु ।
आध आध सेरै कही, यह परमान बखानु ॥ ३ ॥

चौ०–नरकचूर औ कुटकी बचुकी। काराजीरी बकली हड़की॥
बीज पलाश रु बायबिडंगा। चारौं नमक करौ यक संगा॥
पाव पाव सब वजन करीजै। एक छटांक हींग तिहि दीजै
राई जौन बनरसी भाई। सेर अढ़ाई तौलि मिलाई॥
सकल दवा पिसवाइ छनावै। माटीके बरतन धरवावै॥
नितप्रति एक छटांक खवावै। बरहौं स्वास रोग नहिं आवै॥
मीठ पिसान मिलै सनवावै। पिंड बनाइ अश्व मुख नावै

अथ तैयारीका मसाला।

दोहा–हर्र बहेरा आँवरा, कुटकी कचरी जान।
मेथी अजवाइनि सहित, राई कहौं बखान॥
चौ०–यह सब दवा सेर स्यर लीजै। साँभरि नमक तीनि स्यर दीजै
यह सब दवा कूटि छनवावै। महिषी तक्रहि मिलै सरावै॥
आधपाव नित तुरँगहि दीजै। होइ बलिष्ट पुष्ट तनु लीजै॥

अथ भूख बढ़नेका मसाला।

दोहा–रिंघिनि जर हालिम सहित, बायविडंग मँगाइ।
अजवाइनि अजमोद लै, सोंठि चिरैता लाइ॥ १ ॥
पात सँभारू ढाँखके, अरु औंराके जानि।
पुनि लहसुनको लीजिये, सैंधवलोन बखानि॥ २ ॥
अजवाइनिको लीजिये, दूनो भाग प्रमान।
आधे भागहि हींग लै, सबको भाग समान॥ ३ ॥

सबको गुड़में सानिकै, गोली लेउ बँधाइ ।
औषध तोले चारि भरि, दीजै रोज खवाइ ॥ ४ ॥

अन्य क्षुधाकरण मसाला।

दोहा–खुरासानि अजवाइनिहि, कुटकी वायबिडंग ।
सात सात तोले सबै, काराजीरो भंग ॥ १ ॥
साँभरि सोंचर लोन लै, खारी लोन मँगाय ।
दुइ दुइ पल ये लीजिये, सबको लेउ पिसाय ॥ २ ॥
धरै एक बासन विषे, गऊमूत्र मँगवाइ ।
तामें भिजवै सात दिन, लीजै फेरि सुखाइ ॥ ३ ॥
गोली ताकी बाँधिकै, दिन यकइसमें देइ ।
दाना पाछे साँझको, क्षुधा अधिक कै लेइ ॥ ४ ॥

अन्य।

दोहा–काराजीरो लीजिये, हर्दी कुटकी आनि ।
फूल कटैयाके बहुरि, बीज तमाखू जानि ॥ १ ॥
लीजै सज्जी लोन पुनि, टका टका भरि आनि ।
गदहपुरैना पात अरु, कंजागूदी सानि ॥ २ ॥
पाँच पाँच पल दुहुँनको, सबके साथ पिसाइ ।
एक टका भरि दीजिये, क्षुधा तासु सरसाइ ॥ ३ ॥

अन्य।

दोहा-अजवाइनि अजमोद पुनि, सोंठि पीपरी आनि ।
घुड़बच पिपरामूल अरु, अदरख मिर्च बखानि ॥ १ ॥
राई जीरा स्याह लै, कचरी लेउ मँगाइ ।
औंरा हर्र बहेरकी, बकली लेउ कढ़ाइ ॥ २ ॥
सोंचर सैंधव लोन पुनि, खारी लोन बखानि ।
येती औषध सबनकी, पाउ पाउ भरि जानि ॥ ३ ॥
जवाखार साँभरि सहित, पाउ एक भरि आनि ।
तोला भरि पुनि हींग लै, पीसै सबको सानि ॥ ४ ॥

सोरठा-दही माहिं सो सानि, डारै सिरका सेर दुइ ।
धूममाहिं सो आनि, धरि राखै तिहि तीन दिन ॥

दोहा-दोइ टका भरि वाजिको, दीजै आइ खवाइ ।
दाना पाछे साँझको, और क्षुधा सरसाइ ॥

अन्य।

दोहा-सोंठि सोहागा फिटकरी, कुटकी बायबिडंग ।
मिर्च कैफरा हींग पुनि, अरु घुड़बचके संग ॥ १ ॥
जीरा लेउ सफेद पुनि, सबकर भाग समान ।
गोली बाँधै तासुकी, झलबेरा परमान ॥ २ ॥
साँझ सबेरे वाजिको, यक यक गोली देय ।
नितप्रति देउ खवाय सो, क्षुधा अधिक तिहिं लेय॥ ३ ॥

अथ गर्मीके दिनोंमें क्षुधाकरण मसाला ।

दोहा–लै अजवाइनि पाव भरि, हर्र सेरु भरि आनि ।
जवाखार पुनि लीजिये, तोले चारि बखानि ॥ १ ॥
दही गाइको सेर दुइ, तामें लेउ पकाइ ।
औषध पैसा चारि भरि, दीजै रोज खवाइ ॥ २ ॥
दाना दैकै साँझको, हयको दीजै आनि ।
क्षुधा तासुकी अति बढ़ै, होइ रोगकी हानि ॥ ३ ॥

अथ क्षुधाकरण और बलगम वगैरह जानेका मसाला ।

दोहा–आँरा हर्र बहेर पुनि, गोली मिर्च मँगाइ ।
काराजीरी लेउ पुनि, अरु अजवाइनि लाइ ॥ १ ॥
पीपरि पिपरामूल अरु, हल्दी राई आनि ।
लीजै अदरख सौंफ पुनि, हालिम सोंठि बखानि ॥ २ ॥
सोरठा–पाव पाव ये आनि, दुइ तोले पुनि हींग लै ।
तोले चारि बखानि, खुरासानि अजवाइनिहि ॥
दोहा–कालेश्वर घुड़बच सहित, सोंचर साँभरि आनि ।
आधे आधे पाव सब, जवाखारको जानि ॥ १ ॥
खील सोहागाकी बहुरि, आध पाव मँगवाइ ।
गूगुरु तोले चारि भरि, सबको लेउ पिसाइ ॥ २ ॥

टका टका भरि ओषधी, हयको देउ खवाइ ।
दाना दैकै साँझको, कैजा देउ कराइ ॥ ३ ॥
तासु क्षुधा बहुतै बढ़ै, बलगम जाइ नशाइ ।
बिस रोज यह ओषधी, रोज खवावत जाइ ॥ ४ ॥
पीछे जाहि कनारके, क्षुधा मन्द परिजाय ।
यहि चूरणते वाजिको, अतिहि गुणाकर आय ॥ ५ ॥

अन्य क्षुधाकरण मसाला।

दोहा–खुरासानि अजवाइनिहि, राई हर्दी आनि ।
खारी मेंहदीपात पुनि, पाउ पाउ ये जानि ॥ १ ॥
चरसों सज्जी सोंठि तज, अरु घुड़बचको लाइ ।
यक यक देउ छटाँकसों, पुनि फिटकरी गनाइ ॥ २ ॥
काराजीरी फिटकरी, कुटकी बायबिडंग ।
बीज कटैया मिर्च पुनि, अरु कालेश्वर संग ॥ ३ ॥
सोरठा–साँभरि सौंफ मँगाइ, आधे आधे पाव य ।
लोटा सज्जी लाइ, इन्दरजव गूगुर सहित ॥ १ ॥
खील सोहागा लाय, दुइ दुइ तोले तौलि सब ।
तोला हींग मिलाइ, पुनि अजवायनि पाव भरि ॥ २ ॥
धरिये बासन–माहिं, सबै ओषधी कूटिकै ।
डारत तामें जाहि, गऊ–मूत्र मँगवाइकै ॥ ३ ॥

भीजि ओषधी जाइ, मोहरा देइ लिसाय तब ।
लीदि माहिं गड़वाइ, खोलै चालिस दिन नहीं ॥ ४ ॥
फिरि लीजै निकसाइ, कीट परत हैं ताहिमें ।
लीजै ताहि सुखाइ, फिरि ताको धरि राखिये ॥ ५ ॥
दोइ टका भरि लाइ, हयको देउ नहार मुँह ।
क्षुधा अधिक ह्वै जाइ, शालहोत्रमें है कह्यो ॥ ६ ॥
दोहा-गोहूँ आटा सँगमें, चालिस रोज खवाइ ।
या औषधको दीजिये, जाड़की ऋतु पाइ ॥ १ ॥
क्षुधा बढ़ै अरु बल बढ़ै, मोटा होइ शरीर ।
चारि टकाभरि दीजिये, हरै शूलकी पीर ॥ ४ ॥

अथ शूल कुरकुरीकी आटा ।

चौपाई-बायबिडंग जवाइनि लाव । आध पाव दूनौ तौलावै ॥
कुकुरौंधेकी पाती लीजै । साँभरि नमक ताहिमें दीजै ॥
पाव एक दूनौं लै धरिये । पीसि कूटि जल मिलै पकैये
सीर गरम जब जानौ भाई।पाव एक गुड़ मीठ मिलाई॥
नारि भराय पियाय सु दीजै।मिटै कुरकुरी शूल हरीजै॥

अन्य ।

चौ०-मूँगजूस सेर आधक लीजै । घुड़बच दुइ तोला करि दीजै
एक छटाँक सहींजन छाली।जलमें पीसि देउ मुख घाली

अन्य ।

चौ०-बड़ी हर्रकी बकली लावै । कटुक चिरैता पीसि मिलावै ॥
रसके शिरकामें सनवाई । तीनों तीनि छटांक कराई ॥
पिंड बनाइ अश्वमुख नावै । शूल कुरकुरी नाश करावै ॥

इति श्रीशालहोत्रसंग्रह केशवसिंहकृत मसालावर्णन नामक
त्रयोविंश अध्याय ॥ २३ ॥

समाप्तमिदं चिकित्सा काण्डम् ।

वैद्यक-ग्रन्थाः ।

नाम	की. रु. आ.
अष्टाङ्गहृदय-(वाग्भट) मूल, ...	४-०
अष्टाङ्गहृदय-(वाग्भट) सूत्रस्थान-सर्वाङ्गसुन्दरा, पदार्थचन्द्रिका, हेमाद्रि (आयुर्वेदरसायन) और कठिन स्थलपर टिप्पणीसहित,(शेष स्थान छपते हैं)	६-०
अष्टाङ्गहृदय(वाग्भट)सूत्रस्थान-भाषाटीका और संदिग्ध विषयोंपर संस्कृत टिप्पणीसहित सूत्रस्थान (शेष स्थान छप रहे हैं)	३-०
अमृतसागर-भाषा ।	३-०
अमृतसागर- ,, ,, ... रफ कागज	२-८
अर्कप्रकाश-(लंकापति रावणकृत) भाषाटीकासहित	१-८
अनुपानदर्पण-भाषाटीकासहित ।	१-०
अनुभूतयोगावली-चिकित्साग्रन्थ ।	०-१२
अजीर्णतिमिरभास्कर-भाषा ।	०-६
अजीर्णमञ्जरी-भाषाटीकासहित ।	०-४
आयुर्वेदसुषेणसंहिता-भाषाटीकासहित....	१-४
आयुर्वेदचिन्तामणि-भाषाटीकासहित	२-८
आयुर्वेदसूत्र-भाषाटीकासहित, ...	०-८
आरोग्यशिक्षा-भाषा	०-७